रावणपुत्र मेघनाद

लंका का राजकुमार

केविन मिसल

'एक युवा काल्पनिक कथाकार' - द हिंदू

Table of Contents

सामने का कवर
शीर्षक पेज
पाठक के लिए
प्रस्तावना
1. मेघनाद
2. सुपर्निका
3. मेघनाद
4. सुपर्निका
5. मेघनाद
6. लक्ष्मण
7. मेघनाद
8. सुपर्निका
9. मेघनाद
10. लक्ष्मण
11. मेघनाद
12. सुपर्निका
13. मेघनाद
14. लक्ष्मण
15. मेघनाद
16. सुपर्निका
17. मेघनाद
18. प्रमीला
19. मेघनाद
20. लक्ष्मण
21. प्रमीला
22. मेघनाद
23. मेघनाद

24. सुपर्निका
25. प्रमीला
26. लक्ष्मण
27. प्रमीला
28. सुपर्निका
29. मेघनाद
30. प्रमीला
31. लक्ष्मण
32. मेघनाद
33. मेघनाद
34. लक्ष्मण
35. सुपर्निका
36. प्रमीला
37. लक्ष्मण
38. सुपर्निका
39. मेघनाद
40. प्रमीला
41. मेघनाद
42. सुपर्निका
43. प्रमीला
44. सुपर्निका
45. प्रमीला
46. सुपर्निका
47. मेघनाद
48. लक्ष्मण
49. सुपर्निका
50. मेघनाद
51. सुपर्निका
52. सुपर्निका

53. मेघनाद
54. लक्ष्मण
55. मेघनाद
56. मेघनाद
57. मेघनाद
58. प्रमीला
कॉपीराइट

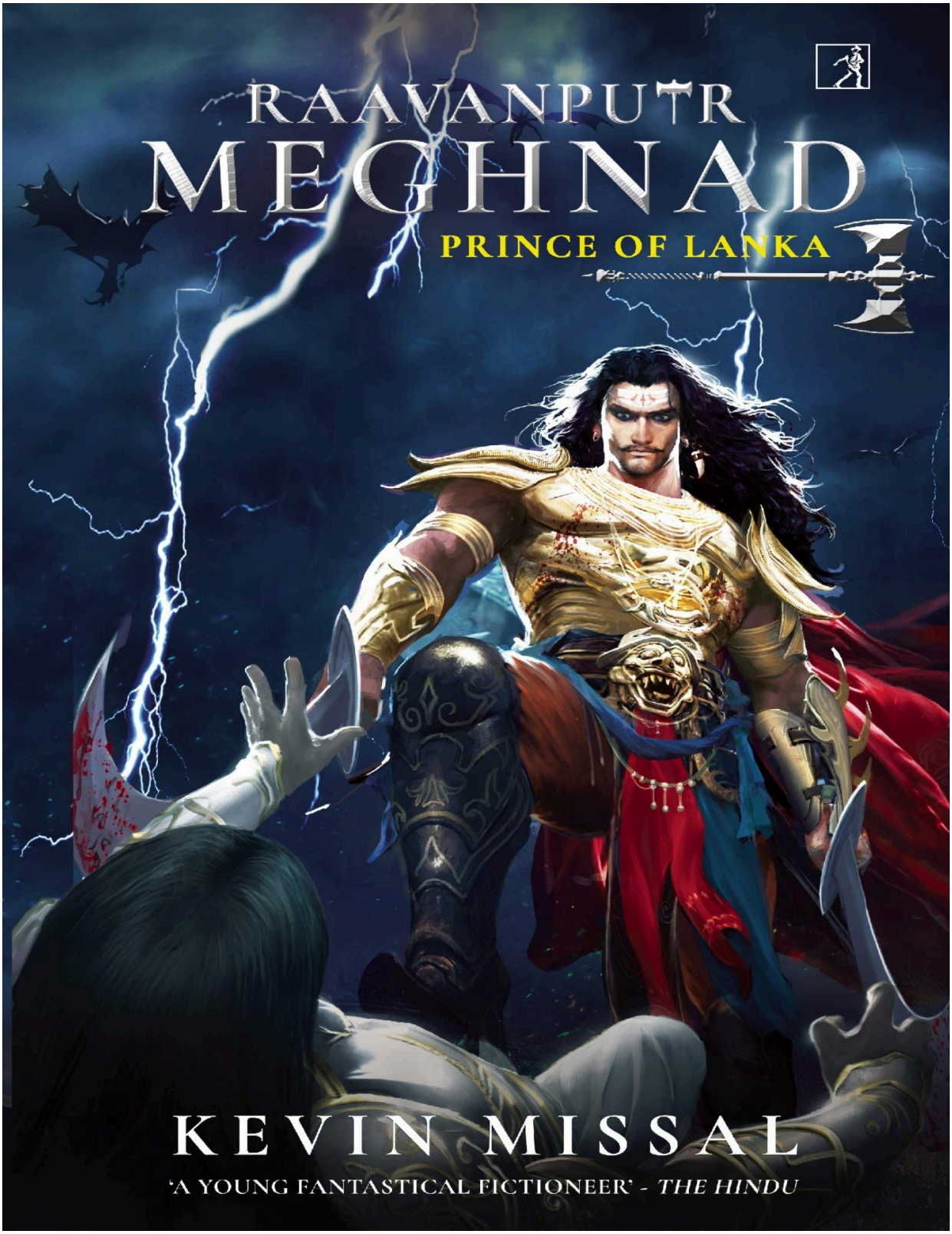
RAAVANPUTR
MEGHNAD
PRINCE OF LANKA
KEVIN MISSAL
'A YOUNG FANTASTICAL FICTIONEER' - THE HINDU

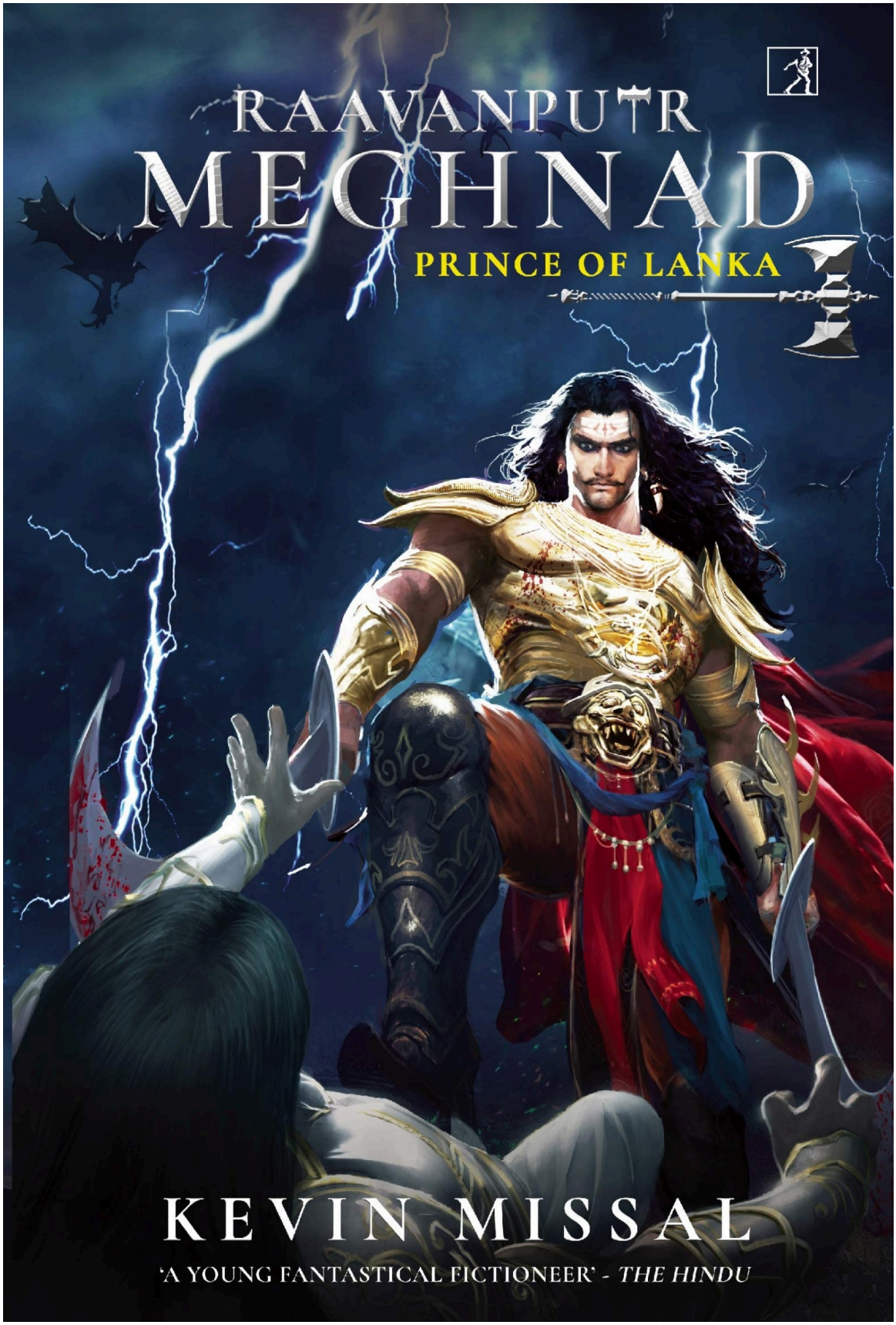
RAAVANPUTR
MEGHNAD
PRINCE OF LANKA
KEVIN MISSAL
'A YOUNG FANTASTICAL FICTIONEER' - THE HINDU

रावणपुत्र मेघनाद

केविन मिसल

SIMON &
SCHUSTER

London · New York · Sydney · Toronto · New Delhi

A CBS COMPANY

पाठक के लिए

पढ़ने से पहले, मैं आपसे कुछ बातें स्पष्ट करना चाहता हूँ। यह रामायण पर आधारित पुस्तक नहीं है। रामायण के कई पात्र इसमें शामिल नहीं हैं क्योंकि वे मेरी कहानी के लिए आवश्यक नहीं थे। इस पुस्तक में मेरा पूरा ध्यान और कथानक रावणपुत्र मेघनाद के दृष्टिकोण पर केंद्रित है।

इसके अलावा, रावणपुत्र मेघनाद की कहानी की आवश्यकताओं के अनुरूप, कुछ दृश्यों और स्थितियों की कल्पना और पुनर्निर्माण किया गया है और यह मूल ऐतिहासिक स्रोत के प्रति पूरी तरह से वफादार नहीं है।

इसे पढ़ने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। अब आप पृष्ठ पलट सकते हैं।

प्रस्तावना

लक्ष्मण

यह युद्ध का सातवां महीना था...

लक्ष्मण को अब मृत्यु का ज्ञान हो चुका था।

वह एक व्यक्ति, मेघनाद की वजह से इसके करीब पहुंच गया था।

लेकिन आज नहीं। शक्तिशाली रावण का पुत्र आज प्रकट नहीं हुआ था और लक्ष्मण खुश थे। उन्हें लगभग अपनी किस्मत पर गर्व महसूस हो रहा था।

उम्मीद है कि मेरी किस्मत अच्छी बनी रहेगी।

जैसे ही लक्ष्मण ने अपने पैरों तले दबे राक्षस के पेट में तलवार धंसाई, उन्होंने अपने चारों ओर राघव - अपने भाई, विष्णु के अवतार - को ढूँढा। वह कहीं दिखाई नहीं दिए। युद्ध विकराल रूप ले चुका था, धधकते रेगिस्तान की सीमाओं में धंसी हुई गहरी लाल मिट्टी, जहाँ नारंगी सूरज अपनी लाल किरणें बिखेर रहा था।

ढेरों लाशों की दुर्गंध हवा में फैल गई, और तलवारों के टकराने और हड्डियों के कुचलने की आवाज लक्ष्मण के कानों में गूंज रही थी।

वह कमजोर महसूस कर रहा था। उसके घावों में दर्द हो रहा था।

लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी थी।

आज हम जीत के बेहद करीब हैं।

लक्ष्मण को महसूस हुआ जैसे किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया हो — विशाल भुजाओं ने उसे कसकर जकड़ लिया था, मानो उसकी सांसें रुक रही हों। उसे अपनी सांसें लगभग कांपती हुई महसूस हो रही थीं।

वह बेहोश हो रहा था।

चलो भी!

उसने खुद को जकड़े हुए बंधन से छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन जितनी ज्यादा उसने कोशिश की, उतना ही वह कमजोर महसूस करने लगा।

उसकी तलवार उसके हाथों से गिर गई थी और भारी-भरकम भुजाओं के कारण अब उसके शरीर की स्थिति और भी खराब हो रही थी।

उसने अपना सिर थोड़ा घुमाकर उस सांवले रंग के राक्षस की ओर देखा, जो उसकी सांस फूलने का कारण था।

लानत है तुम पर!

अपनी पूरी ताकत से उसने खुद को पीछे धकेला, अपना दाहिना पैर ज़मीन पर जमाया और फिर और संघर्ष करते हुए, गिरी हुई कटारों में से एक की ओर झुकने की बेताब कोशिश की, लेकिन उसके प्रयास व्यर्थ गए। उसने अपने वानर सैनिकों को पुकारा, लेकिन वे अपनी-अपनी लड़ाइयों में व्यस्त थे। और इससे पहले कि वह कुछ और कर पाता...

उसने यह सुना।

तुरहियां बज उठीं और भारी पहियों की आवाज युद्ध के मैदान में सुनाई दी।

नहीं।

उसकी निगाहें समेत सबकी निगाहें उस रथ की ओर मुड़ गईं जिस पर एक भारी-भरकम, बलवान व्यक्ति डटकर खड़ा था। वानर भय से कांप उठे। राक्षस तालियां बजाने और दहाड़ने लगे।

और वह इसका कारण जानता था।

वह कोई और नहीं बल्कि...

इंद्रजीत, जिसे मेघनाद के नाम से भी जाना जाता है, इस युद्ध का अद्वितीय योद्धा था।

लगता है आज मेरी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी। मुझे मौका मिलते ही उसे मार देना चाहिए था।

वह लंबा था और उसने काले रंग का कवच पहन रखा था जिस पर एक चमकता हुआ गोला जगमगा रहा था। उसके माथे पर तिलक लगा था और लाल बिंदी थी, जो भगवान शिव के उपासकों के माथे पर लगे चिह्नों के समान थी। उसकी त्वचा कोयले की तरह काली थी और उसकी घनी मूंछें थीं।

उसके पास दो तलवारें थीं - एक उसकी कमर से लटक रही थी और दूसरी उसकी पीठ पर सूअर की खाल से बने म्यान में बंधी हुई थी।

लक्ष्मण को पकड़े हुए राक्षस ने पुकारा, 'मेरे राजकुमार! इसे मार डालो।'

लक्ष्मण ने राक्षस से खुद को दूर धकेलने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। उन्होंने भीड़ में अपने मददगार को ढूंढने की व्याकुलता से कोशिश की, इस उम्मीद में

कि कोई उनकी मदद के लिए आगे आएगा।

लेकिन वहां कोई नहीं था।

मेघनाद आगे बढ़ा और उसकी सेना वानरों से लड़ती रही। उसकी विशालकाय उपस्थिति लक्ष्मण की स्थिर आकृति पर हावी हो रही थी। लक्ष्मण ने रावणपुत्र के सूक्ष्म लक्षणों को देखा - उसकी हल्की धूसर आँखें बाईं भौंह पर बने निशान से और भी निखर रही थीं।

'इसे मार डालो, मेरे राजकुमार!' राक्षस ने फिर से उपहास किया।

लक्ष्मण अपने आकर्षण का इस्तेमाल कर सकते थे, लेकिन आज नहीं। इंद्रजीत ने अपनी प्रतिष्ठा मूर्ख बनकर नहीं, बल्कि अपने कार्यों में दृढ़ निश्चय दिखाकर अर्जित की।

और उनका यह गुण तब स्पष्ट हो गया जब उन्होंने अपनी तलवार निकाली और लक्ष्मण की ओर घुमाई...

लक्ष्मण ने भय से अपनी आँखें बंद कर लीं, उसकी धड़कन तेज़ हो गई। एक पल के लिए, वह दर्द महसूस करना चाहता था, लेकिन नहीं कर सका। व्याकुल होकर उसने अपनी आँखें खोलीं और महसूस किया कि राक्षस की पकड़ ढीली पड़ रही है, तलवार उसके सिर में फंसी हुई थी और लड़खड़ा रही थी, खून बहता हुआ नीचे ज़मीन पर गिर गया।

राक्षस का वध उसके ही राजकुमार मेघनाद ने किया था - जो इंद्र का वध करने वाला और अमरावती का विजेता था। वह कई परमाणु हथियारों का स्वामी था और इतना अजेय था कि उसकी भागीदारी उसके पिता रावण की विजय का कारण बनी।

लेकिन उनके कार्यों से कुछ और ही पता चलता था।

लक्ष्मण के लिए इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक बात यह थी कि जिस व्यक्ति ने इतने दिनों से उसे जान से मारने की कोशिश की थी, उसी ने अभी-अभी उसकी जान बचाई थी।

'आप ऐसा क्यों करेंगे?'

और निकुम्बिला हिल्स की घटना के बाद आप कैसे जीवित हैं?

मेघनाद ने कोई भावना नहीं दिखाई। वह भावहीन था; मानो अपने ही लोगों को मारना उसे प्रभावित न करता हो। लक्ष्मण तब तक असमंजस में रहा जब तक उसने मेघनाद की हरकतें नहीं देखीं।

वह घुटनों के बल बैठा था। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और लक्ष्मण को सौंप दी, मानो वह आत्मसमर्पण कर रहा हो।

और फिर लक्ष्मण को घोर आश्चर्य हुआ जब उसने ये शब्द कहे— 'मुझे मार डालो।'

युद्ध से 450 दिन पहले...

1. मेघनाद

जब वह अंदर आया तो भीड़ चुप हो गई।

उनके पैर भव्य इंद्रसभा के ग्रेनाइट फर्श पर पड़े, जो देवताओं का खुला न्यायालय था। पूरी इमारत अर्धवृत्ताकार थी। एक भाग में आम नागरिक रहते थे - गंधर्व, जो देवताओं के सेवक थे; अप्सराएँ, जो सुंदर स्त्रियाँ थीं; और मानव प्रवासी जो इल्लावर्ती के कष्टों से बचकर स्वर्गलोक, अमरावती राज्य के केंद्र में आए थे। और दूसरे भाग में वे पंद्रह फुट ऊँचे स्तंभ थे जिन पर देवताओं के राजा और रानी बैठते थे। लोगों की मान्यता के अनुसार, स्वर्ग कोई जन्नत नहीं बल्कि एक विशाल द्वीप था, जो इल्लावर्ती से मीलों दूर स्थित था।

इस युग के इंद्र, रोचना, वहाँ आगे की ओर झुके हुए थे, उनके चांदी जैसे बाल उनके चेहरे के दोनों ओर लहरा रहे थे। उनके वस्त्र सफेद थे और उनका चेहरा पीला-सा था। उनकी दाढ़ी साफ थी और उनका हावभाव वीर भावपूर्ण था।

लेकिन मेघनाद को वह लहराते बालों वाली एक दुबली-पतली लड़की के समान प्रतीत होता था।

उनकी पत्नी साची कद में छोटी और चमकीली आँखों वाली थीं, जो किसी रानी के लिए उपयुक्त नहीं थीं। वास्तव में, वह किसी भी साधारण महिला की तरह दिखती थीं।

कैसे उबाऊ!

मेघनाद को उम्मीद थी कि देवों की रानी किसी देवदूत जैसी दिखेगी। लेकिन अफसोस!

गार्डों ने मेघनाद को आगे धकेल दिया जहाँ वह ऊपर से मोज़ेक से छनकर आ रही चमकदार, पारदर्शी रोशनी में रह सके। रोसाना को उसे घूरते हुए देखकर मेघनाद मुस्कुराया और अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।

'मालिक, मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। लेकिन सच कहूँ तो, मैं एक महिला से बात करना पसंद करूँगा,' मेघनाद ने कंधे उचकाते हुए कहा, तभी उसे बांधने वाली जंजीरों से चरमराहट की आवाज आई।

मेघनाद के बगल में खड़े गार्ड ने कहा, 'हमने उसे अनाधिकृत रूप से प्रवेश करते देखा।'

रोचना ने सिर हिलाया। 'तुम दशानन के पुत्र हो, है ना?' यह इंद्र तो युवा था। मेघनाद ने सुना था कि इंद्र दो सौ से तीन सौ वर्ष तक जीवित रहते थे, केवल इसलिए कि वे स्वर्गलोक में सोमलता पौधों से बने सोमा पेय का सेवन करते थे। वर्षों पहले, वे इसे इलवर्ती में भी बनाते थे। सोमा में वृद्धावस्था रोधी गुण होते थे और पूर्ण क्षमता से सेवन करने पर अपार शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करता था, हालांकि यह कमजोर दिमाग वाले व्यक्ति के मस्तिष्क को नुकसान पहुंचा सकता था, जिससे वह पागल हो सकता था।

'दोषी,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

'तुम्हारे पिता को जंजीरों में बांधकर सड़क पर सबके सामने रखा गया है ताकि लोग उन पर हंस सकें। लेकिन उन्हें बचाने के लिए सेना भेजने के बजाय, तुम यहां अकेले आ गए हो?' रोकाना हंस पड़ी।

अपने पिता के साथ हुए दुर्व्यवहार को देखकर मेघनाद के मन में गुस्सा उबल रहा था, लेकिन उसने इसे ज़ाहिर नहीं होने दिया। उसे संयमित और शांत रहना था। मेघनाद ने अपने पिता को बाहर देखा था - नग्न और बेहोश, एक लंबे धातु के खंभे से बंधे हुए। उसका दिल बैठ गया।

वे उनका और हमारे साम्राज्य का अपमान कर रहे थे।

लेकिन आखिरकार, यह उसके पिता की ही गलती थी।

उसका मकसद सीधा-सा था - अमरावती जाकर चिंतामणि पत्थर चुराना, जो परमाणु हथियार बनाने के लिए आवश्यक ज्वलनशील तत्व थे। इस हथियार का इस्तेमाल वे अयोध्या और दुश्मन राज्य के सहयोगी इल्लावर्ती के अन्य अजेय राज्यों के खिलाफ कर सकते थे। मेघनाद ने इसके लिए एक चतुर योजना बनाई थी, लेकिन नहीं! उसके पिता सीधे हमला करना चाहते थे, क्योंकि वे आवेगी और अहंकारी थे और इसी वजह से... उन्होंने अपने साम्राज्य का गौरव अमरावती की सड़कों पर छोड़ दिया था।

'अह... हाँ,' मेघनाद ने सिर हिलाया।

रोकाना और साची दोनों जोर से हँसे। भीड़ भी उनके पीछे-पीछे चलने लगी, जबकि मेघनाद शांत रहा।

तो क्या आपके पास कोई और योजना नहीं थी? कोई बेहतर योजना?

मेघनाद ने विषय बदलते हुए कहा, 'जानते हो, मैंने जिस पिछले इंद्र के बारे में पढ़ा था, वह काफी उबाऊ और रूढ़िवादी था। तुम तो मेरे जैसे ही लगते हो।'

'पहले के इंद्र तो कमज़ोर थे! लेकिन अब हमें देखो – हमने उस व्यक्ति को पकड़ लिया है जिसने इल्लावर्ती देश में आतंक मचा रखा था, जिसने उसके कई राज्यों पर विजय प्राप्त की थी। हम लंका की ओर अभियान चलाकर तुम्हें पकड़ने ही वाले थे। लेकिन इससे पहले कि हम कुछ कर पाते, तुम्हारे पिता को यहीं आना पड़ा। यह तो मानो घोड़े के मुँह में उपहार था,' रोचना ने कर्कश स्वर में कहा, और भीड़ इंद्र के लिए जयकार करने लगी, जिसने खुशी से अपनी छाती पीट ली।

मेघनाद ने यह सब शांत भाव से सुना, और उसे अपने शैक्षणिक दिनों की याद आ गई जब उसे अमरावती और उसके विभिन्न इंद्रों का इतिहास पढ़ाया गया था। सब मानते थे कि इंद्र एक ही होता है, लेकिन वास्तव में कई थे। यह उपाधि एक देव राजा से दूसरे देव राजा को विरासत में मिलती थी।

इसकी शुरुआत देवेंद्र से हुई, जो हिरण्यकश्यप के समय में जीवित थे। फिर सत्यजीत आए, जो महाबली के समय के थे और उन्होंने इल्लावर्ती में सोम पत्थरों को उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ताकि मानव और आदिवासी लोग उनके औषधीय गुणों का लाभ उठा सकें। इसके बाद सत्यजीत अपनी सेना और अपने पीछे आने वाले मानवों के साथ स्वर्ग लौट गए। सत्यजीत से पहले सोम पत्थर आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं थे, बल्कि देवताओं द्वारा कुछ ही लोगों को सीमित मात्रा में दिए जाते थे। सत्यजीत ने इसे सबके लिए सुलभ बना दिया, हालांकि इसके अधिकांश स्थान गुप्त रखे गए थे।

'जी हां, जी हां,' मेघनाद ने अपने चेहरे पर ऊबा हुआ भाव लिए सीटी बजाई।

रोकाना ने मुस्कुराते हुए अपने पहरेदारों को आदेश दिया, 'इसे ले जाओ और कौवों के लिए, ठीक इसके पिता के बगल में लटका दो...'

'क्या मैं कह सकता हूँ कि आपकी पत्नी बहुत खूबसूरत हैं?' मेघनाद ने कहा, तभी शाही अंगरक्षकों ने उनकी बांहें पकड़ लीं। 'अरे, उनके स्तनों को तो देखो! कौन उन्हें छूना नहीं चाहेगा?'

रोकाना ने अपनी नाक फुलाई और भीड़ सन्नाटे में आ गई। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?' वह खड़ा हो गया और अपने आदमियों को आदेश दिया। 'उसे मार डालो! मेरे सामने उसका सिर काट डालो!'

तुरंत ही ब्लेड बाहर निकाले गए और उसकी गर्दन के पास लाए गए।

मेघनाद ने जवाब में हल्की सी हंसी दी।

‘रुको!’ तीसरे इंद्र ने गरजते हुए कहा, ‘अरे राक्षस, तुम क्यों हंस रहे हो?’

मेघनाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'अच्छा, तुमने मुझसे पूछा था कि क्या मेरे पास कोई और योजना है?' मुस्कुराते हुए उसने आगे कहा, 'दरअसल, मेरे पास एक योजना है!'

मेघनाद ने अपनी जीभ के नीचे छिपाई हुई एक छोटी सी गोली मुंह से थूककर सीधे ज़मीन पर गिरा दी। गोली से लाल धुएं का एक घना गुबार निकला। जब उसने देखा कि उसके आसपास के पहरेदार घबराकर खांसने लगे हैं, तो उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और उस पिन पर ध्यान केंद्रित किया जिसे उसने अब तक अपने कोट की आस्तीन के नीचे छिपा रखा था। उसने पिन को बाहर निकाला और अपनी जंजीरों के तालों में फंसाकर उन्हें खोल दिया। अगले ही पल उसने अपनी आंखें खोलीं और जैसे ही धुआं छंटने लगा, वह भागने लगा।

लेकिन अपने पिता की ओर दौड़कर उन्हें बचाने के बजाय, वह विपरीत दिशा में चला गया।

मुझे चिंतामणि पत्थरों का पता लगाना होगा।

2. सुपर्निका

मुझे उम्मीद है कि यह वही है।

अपने जासूसों द्वारा व्यक्तिगत रूप से दी गई सूचना के आधार पर साधु के घर को देखकर मीनाक्षी जान गई कि वह सही जगह पर है।

'क्या आप वाकई यह करना चाहती हैं?' उसकी दासी कुम्बिनी ने पूछा, जिसका सिर अंडे के आकार का था और भुट्टा चबाते समय उसके दांत पूरी तरह से दिखाई दे रहे थे।

वे बैंगनी रंग के, लिनेन से सजे कारवां के अंदर थे, जिसे उनकी सेना द्वारा ले जाया जा रहा था, वही सेना जिसे मीनाक्षी के भाई दशानन द्वारा वित्त पोषित किया गया था।

‘अगर उन्होंने जो देखा वो सच है, तो इसका मतलब है कि हमें विजेता मिल गया है, मेरी प्यारी,’ मीनाक्षी मुस्कुराई और अपने लंबे, नुकीले नाखूनों से गाल के ऊपरी हिस्से को खुजलाया। वो अपने इन्हीं नाखूनों के लिए मशहूर थी और श्रीलंका में तो उसे सुपर्निका ही कहा जाता था।

‘तुम्हारे काम हमेशा रहस्यमय होते हैं,’ कुम्बिनी ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘मुझे उम्मीद है कि तुम्हें पता है कि तुम क्या कर रहे हो।’

मीनाक्षी की आंखों के सामने उसके पति विद्युत की छवि कौंध गई और फिर उसने आंसू रोकते हुए अपनी आंखें बंद कर लीं। 'बेशक, मैं जानती हूं। मैंने उन्हें उन्हीं की वजह से खोया है और जब तक मैं उनका सिर नहीं काट देती, तब तक मैं हार नहीं मानूंगी।'

वह उस कारवां से बाहर निकली जो साधु के घर से कुछ ही गज की दूरी पर रुका हुआ था। और वह चलने लगी, लेकिन इससे पहले उसने कुम्बिनी को दूर रहने का आदेश दिया।

उसे इसे स्वयं देखना था।

उसे उसे अपनी आँखों से देखना था।

उसे क्या पता, जासूस झूठ गढ़ रहे हों। लेकिन उसकी आंखें झूठ नहीं बोल सकती थीं।

जब वह अपने राक्षस सैनिकों के साथ झोपड़ी के पास पहुँची, तो उसने तीन लोगों को देखा: एक सुंदर और युवा सांवली स्त्री थी, जो एक लड़के के साथ तलवारबाजी कर रही थी। लड़के के कंधे तक लंबे, खुले बाल थे और उसने सफेद धोती पहनी हुई थी। दूसरा लड़का उलझे बालों वाला था और जले हुए लट्ठों पर खाना पका रहा था।

मीनाक्षी ने खांसते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तीनों वहीं जम गए।

‘दोस्तों, दखल देने के लिए माफी मांगती हूं।’ मीनाक्षी मुस्कुराई।

उलझे बालों वाला लड़का आगे आया और सुरक्षात्मक मुद्रा में महिला को पीछे धकेल दिया। उसने अपने सीने को एक लंबी केसरिया शॉल से ढका हुआ था।

'हाँ?'

‘मैं जनस्थान की रानी मीनाक्षी हूँ,’ मीनाक्षी ने पंचवटी के जंगलों के दूर छोर की ओर इशारा करते हुए कहा, जहाँ ढलते सूरज की रोशनी में लंबे, आकर्षक काले मीनारें

स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। 'मैं शिकार से लौट रही थी, तभी मेरी नज़र यहाँ इतने प्यारे लोगों के समूह पर पड़ी।'

'क्या कोई समस्या है?' लड़के ने विनम्रता से पूछा।

'मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा। मुझे उम्मीद है कि आपको यह एहसास होगा कि पंचवटी, जहां आप और आपके दोस्त हैं, दंड राज्य के अधिकार क्षेत्र में आता है - मेरा राज्य।'

उलझे बालों वाले उस व्यक्ति ने अपने जबड़े भींच लिए। 'दशानन के राज्य की बात कर रहे हो?'

'बिल्कुल वही बात है, मेरी प्यारी। वो पहले जीत हासिल करता है और फिर अपने भाई-बहनों को ज़िम्मेदारी सौंप देता है, जैसे उसने मुझे सौंपी है।' मीनाक्षी हंस पड़ी। 'चलो अंदर बात करते हैं।' और जैसे ही वो चलने लगी, उसने अपना हाथ उठाया।

'नहीं।'

'नहीं?' उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'तुम रानी को मना कर रहे हो? क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि जिस ज़मीन पर तुम खड़े हो, उसका मालिक कौन है?'

उस पल लड़के ने अटकते हुए गले में अटकी बात को निगल लिया। 'मेरा मतलब... मुझे माफ़ करना... मेरा मतलब यह कहना था कि जब मेरे दोस्त अंदर चले जाएं तो हम यहीं बात कर सकते हैं। सिर्फ़ हम दोनों।'

मीनाक्षी ने लड़की के चेहरे पर ईर्ष्या की एक झलक देखी। और उसने अपने माथे पर लाल सिंदूर लगाया, जो उसके भूरे बालों पर फैला हुआ था। वह उसका पति है।

'ठीक है।'

लड़के ने खुले बालों वाले लड़के को आदेश दिया, 'लखन! इसे अंदर ले जाओ।' और उसने मीनाक्षी के सैनिकों पर एक नज़र डाली।

लखन ने सिर हिलाया और लड़की के साथ तम्बू के अंदर चला गया। यह सब हो जाने पर लड़के ने मीनाक्षी की ओर देखा और कहा, 'आप आगे बढ़ सकती हैं, मेरी देवी।'

'एक मानव के लिए राक्षस से बात करना काफी विनम्रतापूर्ण है।'

क्या मेरे पास कोई विकल्प है?

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और पास आकर उसकी निगाहें उसकी गठीली छाती और गढ़े हुए कंधों पर टिक गईं... लेकिन वह कुछ और ही खोज रही थी, एक

नक्काशी। 'तुम कहाँ से आए हो?'

'कहीं नहीं। हम म्लेच्छा हैं।'

मीनाक्षी ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। 'मैं समझ गई।' वह झूठ बोल रहा था। उसका व्यवहार स्पष्ट रूप से राजसी था। 'मैंने सुना है कि अयोध्या के राजकुमार को उनकी पत्नी और भाई के साथ देखा गया था। क्या आपको लगता है कि ये खबरें सच हैं या...?'

यह सुनकर वह एकदम जम गया।

यह वही था। मेरे जासूस सही थे।

अयोध्या के निर्वासित राजकुमार भगवान राघव ने पूछा, 'आप क्या चाहते हैं?'

मुझे इस जमीन पर टैक्स चाहिए, मुझे पूंजी की जरूरत है।

हमारे पास पैसे नहीं हैं।

'तुम्हें मुझे कुछ देना होगा, मेरे प्यारे।' मीनाक्षी आगे बढ़ी, चेहरे पर बेतहाशा मुस्कान लिए राघव से कुछ ही इंच की दूरी पर खड़ी थी, उसकी निगाहें उसकी छाती पर किसी निशान को तलाश रही थीं।

उसने बचाव में अपनी शॉल ऊपर खींच ली। राघव असहज हो गया। 'हम शिकार करते हैं... हम... उम्म... शिकार का माल आपस में बाँट सकते हैं।'

मीनाक्षी राजकुमार की नीली आँखों को निहार रही थी। यह अयोध्या का प्रसिद्ध राजकुमार था, वह व्यक्ति जो इतना शक्तिशाली था कि आसानी से किसी को भी मार सकता था।

लेकिन अगर वह राघव था... तो उसने इसके बारे में सुना होगा। यह झूठ भी हो सकता है। यह एक मिथक भी हो सकता है।

मीनाक्षी को इसका पक्का पता लगाने का एकमात्र तरीका पता था। और अपनी शर्मिंदगी के बावजूद, उसने राघव को बाहों में भर लिया, उसकी आँखें राघव की आँखों से मिलती हुई थीं और उसने उससे कहा, 'तुम मुझे और क्या दे सकते हो?' उसके लंबे नाखून राघव के शॉल की रूपरेखा को छू रहे थे।

'मैं विवाहित हूँ, महोदया।'

'तुम कितने प्यारे हो।' और उसने अपने हाथ उसके सीने पर फेरते हुए शॉल नीचे खींच दिया, जिससे उसका नंगा सीना दिखाई देने लगा...

उसने तुरंत उसे पीछे धकेल दिया।

उसके पीछे खड़े सैनिकों ने अपनी तलवारें उठा लीं, लेकिन मीनाक्षी ने हाथ से इशारा किया कि उन्हें पीछे हट जाना चाहिए क्योंकि उसकी नजर उस चीज पर पड़ी जिसके लिए वह इतनी दूर आई थी, जिसके बारे में उसने लंका में शहर के जासूसों से राघव के बारे में सुना था लेकिन विश्वास नहीं कर पा रही थी, वही चीज जो उसके बदले का हथियार बनेगी।

यह श्रीवत्स चिन्ह की आड़ी-तिरछी रेखाएं थीं—भगवान विष्णु का चिन्ह, जो उन्होंने अपने युग के धर्म को प्रदान किया था, और जो उन्हें विष्णु का अवतार बनाता है। उसने बचपन में अपने दादा सुमाली से इसके बारे में सब कुछ सुना था।

और जब राघव को एहसास हुआ कि मीनाक्षी किस बात पर घूर रही है, तो उसने अपना शॉल ऊपर खींच लिया।

राघव चिल्लाया, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! तुम टेढ़ी आंखों वाले, काले रंग के नीच इंसान!'

उसी क्षण लक्ष्मण और वह स्त्री तम्बू से बाहर आए। वह स्त्री स्पष्ट रूप से सीता थीं, और मीनाक्षी ने उनके बारे में काफी कुछ सुन लिया था।

मीनाक्षी ने आह भरी। उसके मन में कई योजनाएँ चल रही थीं, लेकिन उसने राघव की तुच्छ टिप्पणी से आहत होने का प्रदर्शन करना उचित समझा। 'तुमने मुझे ठुकरा दिया। तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।' और इतना कहकर वह वापस वैन की ओर चल पड़ी और अंदर बैठ गई।

काफिला आगे बढ़ा और मीनाक्षी ने हांफते हुए खुद को संभालते हुए एक और गहरी सांस ली।

'क्या तुम ठीक हो?' कुम्बिनी ने उसकी पीठ थपथपाई, उसकी छोटी-छोटी आंखें ध्यान से देख रही थीं।

'यह वही है। निश्चित रूप से वही है। और उसके पास वह चीज है।'

'यह अच्छा नहीं है क्या?' कुम्बिनी मुस्कुराई।

'हाँ।' उसने मुस्कुराते हुए अपनी दासी को गले लगा लिया। विद्युत की मृत्यु के बाद से ही वह इस दिन का लंबे समय से इंतजार कर रही थी। और उसे अवतार थाली में परोस कर मिल जाता।

लेकिन अब, हर चीज की योजना एकदम सटीक तरीके से बनानी होगी।

'आप इसे कैसे करना चाहते हैं?' कुम्बिनी ने पूछा।

मीनाक्षी ने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, उसने अपने गाउन के किनारे लटकते हुए खंजर को निकाला और तुरंत उसकी धार को अपनी नाक के पास लाकर उसकी नोक को काट दिया। उसके शरीर में असहनीय दर्द की लहर दौड़ गई और खून तेजी से बहने लगा।

'हे मेरी देवी! आपने ऐसा क्यों किया?' कुम्बिनी चीख पड़ी।

लेकिन आह भरने के बजाय मीनाक्षी मुस्कुराई। उसने आह भरते हुए कहा, 'मेरे प्यारे, मुझे ठीक-ठीक पता है कि मैं क्या करने वाली हूँ और कैसे करने वाली हूँ।'

3. मेघनाद

मेरा पीछा किया जा रहा है।

मरुत हर जगह थे। सुनहरे कवच और भूरे रंग की चमड़ी वाले देव रक्षक द्वारों पर कतार बनाकर खड़े थे। मेघनाद के लिए चिंतामणि पत्थरों की ओर जाने वाली अमरावती की गलियाँ और सड़कें उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक कठिन थीं।

सौभाग्य से, वह भेस बदले हुए था।

भागते ही वह इंद्रसभा के बाहर एक अंधेरे कोने में भागा और लंका में मिट्टी से बनाई गई अपनी कृत्रिम नाक निकाली। उसने उसे पहना और फिर अपनी कमर में लगी एक छोटी थैली से एक लंबी शॉल निकाली, जिससे उसने अपना चेहरा और सिर ढक लिया, ताकि उसके विशिष्ट तैलीय बाल और मूंछें छिप जाएं।

एक बार जब यह काम हो गया, तो वह वापस सड़कों पर सबके सामने छिप गया, टेढ़े-मेढ़े तरीके से चलता हुआ, जानबूझकर झुककर एक झुकी हुई नाक वाली बूढ़ी औरत की तरह व्यवहार करता था।

और हैरानी की बात यह थी कि किसी ने ध्यान नहीं दिया। सड़कें मरुतों से भरी हुई थीं जो नागरिकों पर नजर रख रहे थे, लेकिन इंद्रसभा के बाहरी मैदानों की हलचल से दूर जाती एक बूढ़ी महिला को देखने की किसी ने परवाह नहीं की।

और तभी मेघनाद ने ध्यान दिया। एक मारुत, जो बाकी मारुतों से छोटा था, उसका पीछा करने लगा था।

मेघनाद के हर कदम के साथ, मारुत एक और कदम बढ़ा लेता था। मेघनाद को लग रहा था कि उसकी धड़कन गले तक आ गई है, और वह दुआ कर रहा था कि कहीं वह उसे पकड़ न ले।

क्योंकि सच कहें तो, वह अमरावती में अकेला था। लेकिन उसके पास एक योजना थी।

वह नालंदा उद्यान की ओर बढ़ रहा था - जो आम नागरिकों के बैठने, बातचीत करने और वहां उगने वाले कई रसीले फलों का आनंद लेने के लिए वनस्पतियों का एक खुला भंडार था।

लेकिन इसमें चिंतामणि पत्थर भी रखे हुए थे।

इस राज्य में फैली लंबी, सफेद मीनारों, किलों और झोपड़ियों के बीच से ये उद्यान दूर से ही दिखाई देते थे। हालांकि, ये उद्यान इंद्र के महल से कुछ ही गज की दूरी पर थे।

यहां सूरज छिपा हुआ था, और आसमान गरज रहा था और गरज के साथ शांत हो रहा था। लोग अजीब तरह से बेचैन लग रहे थे, तेज गति से चल रहे थे, फिर भी भ्रमित थे।

मेघनाद ऐसे टहल रहा था मानो वह सचमुच एक बूढ़ी औरत हो, तभी उसकी नज़र कोने से एक मारुत पर पड़ी जो उसका पीछा करते हुए उसके आगे आ रहा था। मेघनाद ने अपना चेहरा छिपा लिया और बूढ़ी औरत की कर्कश आवाज़ में, जो उसने मायावी वेश बदलने के प्रशिक्षण के दौरान सीखी थी, पूछा, 'क्या बात है, लड़के?'

मारुत एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया। 'महोदया, आप कहाँ जाने की योजना बना रही हैं? आपकी उम्र के किसी व्यक्ति के लिए यहाँ रहना खतरनाक है।'

‘ओह, मैं समझ गया,’ मेघनाद ने राहत की सांस लेते हुए कहा, यह महसूस करते हुए कि मारुत उसके अभिनय को नहीं समझ पाया, ‘क्या आप कृपया मुझे नालंदा का रास्ता दिखा सकते हैं? मुझे कुछ बेर तोड़ने हैं।’

'जी हां, महोदया।'

उसने मेघनाद को भीड़ से बाहर निकाला और बीच में आने वाले पुरुषों और महिलाओं को धक्का देकर आगे बढ़ाया। एक विधर्मी के जादूगर की तरह गायब हो जाने की फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी; कई लोग कांप रहे थे और चिल्ला भी रहे थे

मानो उनके बीच भूत प्रकट हो गए हों। उनका कहना था कि उसने माया का जादू इस्तेमाल किया है, जो राक्षसों के पास मौजूद एक भ्रम है।

मेघनाद ने दबी आवाज़ में उपहास किया क्योंकि बहुत से लोग नहीं जानते थे कि माया जादू नहीं, बल्कि विज्ञान के साथ मिश्रित कृत्रिम भ्रम की कला थी। धुएँ का बम एक ऑक्सीकारक, ईंधन, सोडियम बाइकार्बोनेट और इन सबको एक साथ रखने के लिए एक पिसे हुए कार्बनिक रंग का मिश्रण था।

मेघनाद ने अपनी गति को नियंत्रित किया और एक घोंघे की तरह सुस्ती से आगे बढ़ा।

यह सब हंगामा किस बारे में है?

'महोदया, एक राक्षस खुला घूम रहा है,' मरुत ने कहा और वह बाकी सभी पहरेदारों की तरह वीर भाव से भरा हुआ लग रहा था। वे गोरे और सुंदर थे, उनकी आंखें सुनहरी थीं। 'हम स्थिति को काबू में करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन तब तक, मेरा सुझाव है कि आप बेर तोड़कर अपने घर लौट जाएं।'

'बिल्कुल, मैं समझ गया। देखो बेटा, मुझे अपने बच्चों के लिए कुछ खाना लाना है। वे बहुत भूखे हैं।' उसने खांसा और बहुत कोशिश की कि वह अतिरंजित न लगे।

'मैं समझ गया,' मारुत ने सिर हिलाते हुए कहा, जब वे अंततः नालंदा उद्यान के भीतर पहुँचे, जहाँ चौड़े गलियारे, छोटे चबूतरे और हर तरह के फलदार पेड़ थे, जिनकी घनी छाया रंग-बिरंगी गुलाबी झाड़ियों और पौधों पर पड़ रही थी। लेकिन सबसे खूबसूरत दृश्य पृष्ठभूमि में बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ थीं और वह जानता था कि वे क्या थीं - मेरु पर्वत, सप्तऋषियों का दिव्य निवास, मानव जाति के द्रष्टा।

मेघनाद ने देखा कि आसपास कोई नहीं है और वह रुक गया। 'बहुत-बहुत धन्यवाद, बेटा। तुम्हें मेरा आशीर्वाद है।'

'बिल्कुल, महोदया,' उसने मुस्कुराते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

मेघनाद ने कृतज्ञतापूर्वक उसे हिलाया।

और तभी उसने देखा कि मेघनाद की हथेली को देखकर मारुत की आँखें चौड़ी हो गईं। और उसे इसका कारण समझ में आ गया।

हथेली पर झुर्रियां नहीं थीं।

'मैडम, मैं आपका चेहरा देखना चाहता हूँ।' मारुत ने कहा। 'सुरक्षा कारणों से।'

मेघनाद का दिल ज़ोर से धड़क रहा था, लेकिन वह जानता था कि उसे क्या करना है।

उसने अपने चेहरे से शॉल हटाया, जिससे उसकी मुस्कान प्रकट हुई। तुरंत ही उसने शॉल को मारुत की ओर झटक दिया, जिससे मारुत की आँखें चौंधिया गईं और मेघनाद ने मारुत की जकड़ी हुई तलवार को पकड़ लिया।

मारुत पीछे हट गया और मेघनाद ने तलवार उसके दिल में घोंप दी।

और फिर, उसने इसे घुमा दिया।

मारुत दर्द से कराह उठा और फिर बेजान होकर गिर पड़ा।

मैं इतना बेवकूफ नहीं हो सकता।

उसने अपने हाथ की ओर देखा और फिर अपनी कृत्रिम नाक हटा ली, और उस रहस्यमयी वनक्षेत्र की ओर चल पड़ा जो उस स्थान पर व्याप्त था। यहाँ हवा बहुत तेज़ बह रही थी, जबकि प्लेटफार्मों के नीचे बहने वाली खाई प्रकृति की गोद में जमी हुई थी। यहाँ सब कुछ इतना निर्मल था।

उसने लाल और नीले रंग से चिह्नित रेडियोधर्मिता लोकेटर निकाला। यह मेघनाद के चाचा, वैज्ञानिक कुंभकरण द्वारा आविष्कार किया गया एक छोटा उपकरण था। यह पेंडुलम वाले कंपास जैसा दिखता था और यदि कोई रेडियोधर्मी धातु पास में होती तो यह लाल रंग से चिह्नित तरफ दोलन करता था।

मेघनाद नदी का जायजा लेने लगा, शांत भाव से चलते हुए उसकी निगाहें झूले पर टिकी हुई थीं। दशानन की व्यर्थ विजय से बहुत पहले ही जासूसी रिपोर्टों में बताया गया था कि रेडियोधर्मिता लोकेटर ले जाते समय उन्हें कुछ संचरण मिले थे। उस समय वे केवल अपने शत्रुओं की जासूसी करने आए थे, लेकिन यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि चिंतामणि पत्थर रेडियोधर्मी थे। और उन्होंने मेघनाद और दशानन को विस्तार से बताया था कि वे पत्थर कहाँ स्थित हैं।

और यह नालंदा गार्डन में स्थित इस चमकीली नदी में था।

वह पानी के करीब झुका और अपना हाथ उसमें डाला। उसे अपनी हथेली में क्रिस्टल के गोले महसूस हुए, जो पानी में धंसे हुए थे। फिर उसने पत्थरों का अध्ययन करने के लिए अपना हाथ बाहर निकाला।

'चिंतामणि,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

देव राजा को यह नहीं पता था कि जिन पत्थरों को वह धरती से निकालकर चमकने के लिए नदी में बहाता था, वे भले ही हानिरहित थे, लेकिन रेडियोधर्मी थे। यदि उन्हें किसी संपीड़ित पात्र में किसी अन्य तत्व के साथ मिला दिया जाए, तो उससे बम बन सकता था। यह सब वैज्ञानिक था, लेकिन बहुत से लोगों को इसकी परवाह नहीं थी क्योंकि विज्ञान उनके लिए अभी भी कुछ नया था, कुछ अनजाना सा।

लेकिन कुंभकरण के आविष्कारों और खोजों के कारण राक्षसों ने इसे अपना लिया था, विशेषकर दशानन ने, जो अपने शत्रुओं के विरुद्ध शस्त्रागार में बम बनाना चाहता था। उसने इन्हें अस्त्र नाम दिया।

और मेघनाद को बमों के साथ प्रयोग करना बहुत पसंद था। उन्हें बम और उनसे जुड़ी हर चीज़ से प्यार था, बम बनाने से लेकर विस्फोट तक।

मुझे एक बड़ा बैग चाहिए।

मेघनाद की योजना नदी से यथासंभव अधिक से अधिक चिंतामणि पत्थर एकत्र करने की थी। लेकिन वह यह काम अकेले नहीं कर पाएगा।

मुझे बैकअप चाहिए।

उसे अपने भाइयों को फोन करना पड़ा।

उसने अपनी जेब से एक और छोटी गेंद निकाली। उन्हें अलग-अलग आकार का बनाया गया था ताकि उनमें अंतर किया जा सके। उसने जो गेंद निकाली वह बड़ी और हरे रंग की थी।

इससे काफी ध्यान आकर्षित होगा।

अपनी पूरी ताकत से उसने आतिशबाजी का गोला हवा में उछाला। हरे कागज में लिपटे उस गोले के अंदर कई ज्वलनशील तत्व थे, जो आसमान में जाते ही खुल जाते। फेंकने के दबाव और ऑक्सीजन के कारण, गोला इतनी ज़ोर से फटा कि मेघनाद ने अपने कान बंद कर लिए।

यह एक गूंजने वाली ध्वनि थी, लेकिन इसमें न तो कोई रंग दिखाई दिया और न ही आग निकली। इसके बजाय, इससे घरघराहट जैसी आवाज निकली।

यह मदद के लिए एक पुकार थी, उन भाइयों के लिए जो राज्य के बाहर तैनात थे। उन्हें शहर में प्रवेश करने के लिए किसी संकेत की आवश्यकता थी, इस मामले में, एक तीव्र ध्वनि वाले संकेत की। यह ध्वनि कुछ देर तक आकाश में गूंजती रहेगी ताकि वे नालंदा उद्यानों का पता लगा सकें।

योजना सीधी-सादी थी। मेघनाद नालंदा के बागों का पता लगाने के लिए अंदर जाएगा और पत्थर मिलते ही वह मदद के लिए बुलाएगा।

लेकिन अगला कदम सबसे कठिन होगा।

लेकिन इससे पहले कि यह कदम उठाया जा सकता, मरुत उस आवाज़ से आकर्षित होकर उद्यान में प्रवेश कर चुके थे। राक्षस राजकुमार को देखते ही उन्होंने अपनी तलवारें निकाल लीं और उसे घेर लिया, जबकि वह अपने चेहरे पर शांत मुस्कान लिए अकेला खड़ा था।

आशा है कि मेरे वे आवारा भाई जल्दी लौट आएंगे।

मेघनाद ने अपनी मुट्ठी कसते हुए और वहां मौजूद दर्जन भर मारुतों को देखते हुए कहा, 'अच्छा, हम किस बात का इंतजार कर रहे हैं?'

4. सुपर्निका

‘जो व्यक्ति इस प्रतीक का उपयोग करेगा, वही राक्षस साम्राज्य का अंत करेगा।’

उसके दादा सुमाली के ये शब्द अब भी उसके कानों में गूंज रहे थे। बुढ़ापे में वह पागल हो गया था। दशानन ने उसे गंभीरता से लेना बंद कर दिया था, और पांच पोते-पोतियों में मंझला भाई खारा ने भी। सुमाली के बाल बिल्कुल सफेद हो गए थे और उसने अपने खून से दीवारों और फर्श पर श्रीवत्स का चिन्ह बनाना शुरू कर दिया था।

मीनाक्षी को आज भी वह समय याद था जब वह अपने पिता के कमरे में दाखिल हुई तो उसने देखा कि फर्श पर खून बिखरा हुआ था और वह एक कोने में बेसुध पड़े थे।

वो भयानक था।

और जब तक उसने इसे अपनी आँखों से नहीं देखा, तब तक यह प्रतीक एक मिथक ही था। कई लोगों का मानना था कि भगवान विष्णु रावण के भय से पीछे हट गए थे, इसलिए विष्णु का अवतार इस युग में प्रकट नहीं होगा, लेकिन यह सच नहीं था।

उसका सैनिक यहीं था और वह छिपा हुआ था, इसलिए किसी को उसकी पहचान पता नहीं चल पाती।

लेकिन अब मुझे इसके बारे में पता चल गया है।

उसने अपने पिता से पूछे गए अपने प्रश्न को याद किया।

‘आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह हमारा अंत कर देगा?’

क्योंकि वह धर्म का पक्ष लेता है और हम अधर्म का। हमने जो अत्याचार किए हैं—अगर इतिहास ने हमें कुछ सिखाया है, तो वह यही है कि अवतार आएगा और हमें पराजित करेगा।

चाहे वो जादुई दृश्य हों या महज एक अनुमान, ये सच हो सकता था। इस युग में किसी ने भी अवतार की शक्ति नहीं देखी थी।

अब तक तो ऐसा ही था।

सुमाली ने एक और बात का ज़िक्र किया था—रहस्य। लेकिन इसे साकार करने के लिए, उसे अपनी योजना को सबके सामने लाना ज़रूरी था।

जब उसका काफिला जनस्थान के द्वार के सामने रुका, तो उसने राज्यपाल खारा को अपने भाड़े के सैनिकों के साथ खड़े देखा—पिशाच वंश के निर्मम सैनिक। पिशाच स्याही से रंगे, भाड़े के योद्धा थे जो स्वभाव से नरभक्षी थे। खारा पंचवटी से लौटने पर उनका स्वागत करने आया था, क्योंकि उसे लगा था कि वे शिकार पर गए हैं।

जैसे ही वे पास आए, कुम्बिनी ने कहा, 'क्या तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है? क्या तुम सचमुच अपने पिता की बातों पर विश्वास करते हो? तुम गलत भी हो सकते हो।'

“फिर वो खूबसूरत कमीना,” उसने राघव के बारे में कहा, “मर जाएगा और हम कुछ और योजना बनाएंगे। लेकिन इसे आजमाने में क्या हर्ज है।” उसने अपने खून बहते नाक पर रुमाल रखा। “अब, मेरी प्यारी बहन, देखो मैं कैसे अभिनय करती हूँ!”

काफिला रुका और मीनाक्षी रोते हुए उससे बाहर निकली। खारा का चेहरा भावहीन हो गया, और मीनाक्षी सिसकियाँ लेने लगी। वह कद में छोटा, गंजा, थोड़ा निकला हुआ पेट वाला और काले चमड़े के तंग ओवरऑल पहने हुए आदमी था। उसे देखकर खारा भयभीत हो गया और चिंता से आगे बढ़ा। 'क्या हुआ?' उसने मीनाक्षी के कंधों को थाम लिया। 'तुम्हारे साथ यह किसने किया?'

‘वहाँ...’ उसने अपनी नाक दबाई, जिससे खून समान रूप से बहने लगा और खारा डर गया। ‘पंचवटी में एक अजनबी आदमी था। मैं उससे करों के बारे में बात करने गई थी, लेकिन उसने मुझ पर हमला कर दिया।’

‘तुमने अपने सैनिकों को कुछ करने के लिए क्यों नहीं कहा?’ वह चिल्लाया और फिर उसने मीनाक्षी के पीछे खड़े सैनिकों की ओर देखा। ‘तुम सबने कुछ क्यों नहीं किया? तुम्हें उसका सिर काट देना चाहिए था!’

अरे! मैं भूल ही गया था कि मेरे पास बैकअप है। मुझे कुछ सोचना पड़ेगा।

‘नहीं, मैं उसे चोट नहीं पहुँचाना चाहती थी। वह... भाग गया।’ वह मनगढ़ंत बातें गढ़ने की कोशिश कर रही थी, लेकिन खारा इतनी बेखबर और चिंतित थी कि वह बातों के पीछे छिपे अर्थ को समझ ही नहीं पा रही थी।

‘वो कमीना! मैं उसका सिर काट दूंगा।’ उसने अपने पिसाच भाड़े के सैनिकों को आदेश दिया। ‘रथों को चलाओ और जब वो मूर्ख मिले तो उसका सिर काट दो। उस जगह के हर कोने की तलाशी लो। हम उसकी पहचान कैसे करें?’

‘उसके साथ उसकी पत्नी और एक दोस्त हैं। वे कुल तीन लोग हैं।’ मीनाक्षी ने भाड़े के सैनिकों को उकसाया।

पिसाच ने सिर हिलाया और घोड़े से चलने वाली गाड़ियों को खोजने के लिए शहर के अंदर की ओर चल दिया।

खारा ने मीनाक्षी के कंधों को सहलाया और उसे गले लगा लिया। मीनाक्षी के पीछे कुंबिनी आई और उसने कुंबिनी को प्रणाम किया। 'मुझे खुशी है कि मेरी बहन सुरक्षित है। मीनाक्षी, तुम्हें आराम करना चाहिए।'

‘मैं बस गुस्से में हूँ।’ उसने सिर हिलाया। ‘तुम उनके साथ क्यों नहीं जा रहे हो?’

'किसके साथ?'

‘तुम्हारे आदमी।’

खारा ने घबराकर कंधे उचकाए। 'उह... मुझे करना चाहिए, है ना?'

‘बिल्कुल। आपकी बहन की इज्जत कलंकित हुई है।’

खारा ने सिर हिलाया। 'जी हां, मेरी प्रिय।' उसने उसका हाथ चूमा और शाही रथ को खोजने के लिए अपने बाकी आदमियों के साथ शहर के अंदर दौड़ पड़ा।

कुंबिनी मीनाक्षी के बगल में खड़ी होकर मुस्कुराई और बोली: 'अच्छा, यह काम कर गया।'

‘देखते हैं कि क्या यह राघव वाकई हमारे लिए कोई खतरा है।’ मीनाक्षी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

और अगर वह नहीं है तो?

मीनाक्षी की मुस्कान फीकी पड़ गई। 'तो मेरा बदला टल जाएगा या... इससे भी बुरा, वह कभी पूरा ही नहीं हो पाएगा।'

5. मेघनाद

वह मौत की तलवार से बाल-बाल बच गया।

एक क्षण के लिए, उसने अपने सौभाग्य पर भरोसा किया और फिर उसकी निगाहें उस मारुत पर पड़ीं जिसने तलवार को तेजी से हवा में लहराया - मेघनाद की त्वचा को छूने की उम्मीद में।

लेकिन मेघनाद लुढ़क कर ज़मीन पर गिर पड़ा। मरुत कोई मज़ाक नहीं थे। पहली बात तो यह कि उनके पास देवों जैसा कवच था, जिसका मतलब था कि उनकी शारीरिक बनावट बेहद मज़बूत थी। दूसरी बात, वे निर्दयी थे... और हाँ, एक निजी सेना के हिसाब से दिखने में भी काफी अच्छे थे।

मेघनाद एक कुशल योद्धा था यदि उसे हथियार चलाने का अवसर मिलता। लेकिन उसे यह अवसर नहीं मिला। इसके बजाय, मरुत उसे चारों ओर से घेरे हुए थे और उस पर हमला करने की तैयारी कर रहे थे।

उसे पता था कि उसे क्या करना है। और यह एक अचूक तरीका था।

वह भागा।

और वह उस निर्मल नदी से भाग गया जिसमें चिंतामणि पत्थर थे और उन मरुतों से भी भाग गया जो उसका पीछा कर रहे थे।

और फिर अचानक वह रुक गया।

मरुत लोग असमंजस में थे, क्योंकि उनकी सुनहरी कवच शुष्क, गर्म धूप में चमक रही थी।

'इससे पहले कि तुम मुझे जान से मारने की कोशिश करो और... मुझे खून बहने से मरने के लिए छोड़ दो, मेरे पास तुम सबके लिए एक प्रस्ताव है।'

मरुतों ने असमंजस में एक-दूसरे को देखा।

‘तुम राक्षस साम्राज्य में क्यों नहीं शामिल हो जाते? मेरा मतलब है, हम वाकई कमाल के लोग हैं, मेरी बात मानो।’ उसने लापरवाही से अपने हाथ जेब में डाल लिए।

‘राक्षस तो राक्षस हैं!’

मेघनाद ने अपनी मूंछें घुमाईं। 'क्या मैं तुम्हें राक्षस जैसा दिखता हूँ? मेरा मतलब है, मैं इतना सुंदर हूँ कि इस तरह के अपमानजनक शब्द का इस्तेमाल मेरे लिए ठीक नहीं

है।'

मरुत की तलवार आगे की ओर फेंकी गई, जो मेघनाद की गर्दन को छूकर निकल गई। देव सैनिक मेघनाद की ओर बढ़ने लगे।

महान।

'तुम्हारा ध्यान भटकाने का हथकंडा और जादू यहाँ काम नहीं आएगा। हमने तुम्हें घेर लिया है।' एक गार्ड ने धीमी, एकरस आवाज़ में कहा।

'सचमुच?' मेघनाद मुस्कुराया, और उसने अपनी बेल्ट से एक और बम निकाला, जिसे उसने अपनी बातों से गार्डों का ध्यान भटकाते हुए निकाला था।

'आपके पास?'

फिर वह नीचे फिसला और बम को उनकी ओर लात मारी, जिससे एक तेज, चकाचौंध कर देने वाली रोशनी उत्पन्न हुई और वे वहीं स्तब्ध रह गए। मेघनाद ने अपनी आँखें बंद कर लीं और भागने के बजाय...

वह वहीं रुका रहा और अंधाधुंध वार करते हुए उसने मारुतों पर हमला करना शुरू कर दिया। मेघनाद ने उनके गले पर तीखे प्रहार किए, उनकी भुजाएँ मरोड़ दीं और फिर उनके ही हथियारों से उनके माथे पर वार कर दिए।

'वह अदृश्य है! वह हमें मार रहा है!'

बेवकूफों। मैं अदृश्य नहीं हूँ। मैं यहीं हूँ। बस तुम मुझे देख नहीं सकते।

जैसे ही स्टन बम का असर कम होने लगा, उसने महसूस किया कि बचे हुए मारुत होश में आ रहे थे और अपनी विशाल ऊंचाई के कारण, उन्होंने तुरंत मेघनाद को जमीन पर गिरा दिया।

घबराहट के मारे गले में अटकी बात को दबाते हुए उसने महसूस किया कि एक दर्जन गार्डों में से वह केवल चार को ही बेहोश करके मार पाया था। बाकी आठ अब अपने हथियार उठा रहे थे और उसकी ओर बढ़ रहे थे।

आगे खड़ा गार्ड सबसे तेज था, उसने मेघनाद का गला पकड़ लिया और उसे ऊपर उठा लिया, जबकि मेघनाद उससे बचने के लिए छटपटाने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन उसका दम घुट रहा था। और उसे लग रहा था कि उसका अंत निकट है।

'अरे धूर्त! तुमने कौन सा जादू कर रखा है!'

'ये... विज्ञान है...' मेघनाद का चेहरा लाल हो गया था। उसकी नसें तन गई थीं, क्योंकि उसने ऊपर से हेलीकॉप्टर के पंख की आवाज़ सुनी और वह समझ गया कि

यह क्या है।

उन सभी पर हावी दिखने वाली उस वस्तु की छाया ने भी इसका भेद खोल दिया।

'और वो भी...' मेघनाद ने अपने सहायक यंत्र, पुष्पक विमान की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर उसके दोनों भाई खड़े थे, '...विज्ञान है। लेकिन मनोरंजन के लिए, आप इसे जादू कह सकते हैं।'

और उसने घबराए हुए मारुत को उसके पैरों के बीच लात मारी। मारुत ने अपनी पकड़ ढीली कर दी और मेघनाद अपने पैरों पर खड़ा हो गया, उसने अपनी कलाई घुमाई और फिर अपनी तलवार से पहरेदार के गले में वार कर दिया। खून बह निकला और बेजान मारुत पीछे गिर पड़ा।

पांच बचे थे।

लेकिन वे सभी विमान को भय और आनंद के भाव से देख रहे थे।

'वह क्या है?'

क्या वह एक पक्षी है?

'क्या यह... किसी दूसरी दुनिया से है?'

विमान ज़मीन के करीब आया और एक संकुचित, पृथक सिलेंडर में हल्के तापमान पर जलते सोमा पत्थरों से चलने वाला गर्जना करता इंजन धीरे-धीरे शांत होने लगा। इसका आकार रथ जैसा था, लेकिन हवा में उड़ने के लिए इसके दोनों ओर गिद्ध जैसे पंख थे, जबकि इसके दो लीवर - एक इंजन चालू करने के लिए और दूसरा उसे धीमा करने के लिए - आगे की ओर थे, और बीच में एक अर्धवृत्ताकार पहिया था जो विमान की दिशा निर्धारित करने में मदद करता था।

और उस रथ पर उसके भाई खड़े थे...

अतिकाय और अक्षय।

सबसे पहले अतिकाया ने अपने त्रिशूल के साथ वाहन से कूदकर अचंभित मारुतों पर झपट्टा मारा। अपने हथियार को कुशलता से चलाते हुए उसने दो मारुतों को बड़ी आसानी से मार गिराया। उसके घुंघराले बाल थे, लंबी दाढ़ी थी और नाक पर निशान था।

दूसरे, अक्षय ने अपना धनुष और बाण निकाला और अपनी ओर बढ़ते हुए मारुत पर लगातार छह बाण चलाए। वह कद में छोटा था, अभी किशोरावस्था के अंतिम दौर में था और उसके बाल पतले थे। वह थोड़ा मोटा भी था।

लेकिन वह एक कुशल तीरंदाज था।

उसने तीर सीधे उनकी आंखों में दागे... ठीक वैसे ही जैसे उसे सिखाया गया था।

जब यह सब समाप्त हो गया, तो मेघनाद ने अपने भाइयों को लंका से लाया हुआ बोरा लाने का आदेश दिया। वे नदी के पास पहुँचे और बोरे को नदी में डुबोकर उसमें क्रिस्टल भरने लगे।

'इन्हें कभी खोजा क्यों नहीं गया?' अतिकया ने चिंतामणि के रेडियोधर्मी तत्वों के बारे में बात करते हुए अविश्वास से हंसते हुए कहा।

'क्योंकि वे दूरदर्शी नहीं थे, छोटे भाई। हमेशा याद रखना, महत्वाकांक्षी बनो, नहीं तो तुम्हारे राज्य में राक्षस आकर तुम्हें लूट लेंगे...' अक्षय के इस कथन पर हंसने पर वह रुका, 'हमारी तरह।'

अक्षय ने कहा, 'दादा, आपकी योजना बहुत ही शानदार थी। हमने तो राज्य के बाहर भी उसकी आवाज़ सुनी।' उसका इशारा उस ऑक्सीजन-संवेदनशील आतिशबाजी की ओर था जिसे मेघनाद ने मदद के लिए उन्हें बुलाने के लिए फेंका था।

'हाँ, हाँ,' अतिकया भाइयों में छोटा था और प्रशंसा जताते समय विद्रोही स्वभाव का था। 'मुझे अब भी समझ नहीं आता कि हमने विमानों पर सीधे कब्ज़ा क्यों नहीं किया, बजाय इसके कि तुम पहले चुपके से अंदर घुसे, पकड़े गए, और फिर अपने भेष का इस्तेमाल करके पत्थरों का पता लगाया।'

"क्योंकि, मेरे प्यारे उतावले भाई, विमान बहुत शोर करते हैं और इतने बड़े हैं कि कोई भी उन्हें देख सकता है। हमारे पास उद्यानों का पता लगाने के लिए पर्याप्त समय नहीं होगा, क्योंकि तब तक देव सेना के तीरों से हम घिर चुके होंगे। साथ ही, अगर संयोगवश हम बिना देखे उद्यानों तक पहुँच भी गए, तो विमान के क्षतिग्रस्त होने का खतरा था, और तुम यह भी जानते हो कि हमारे पास ये बहुमूल्य मशीनें बहुत कम संख्या में हैं और इन्हें बनाना काफी कठिन है। हम इन्हें युद्ध में इस्तेमाल करने का जोखिम नहीं उठा सकते," मेघनाद ने अपने हठी भाई को समझाया।

अतिकाया ने कंधे उचका दिए।

लेकिन मेघनाद जानता था कि वे दोनों उससे प्यार करते हैं। 'क्या सब खत्म हो गया?'

अक्षय ने सिर हिलाकर यह दिखाया कि बोरी भर गई थी।

मेघनाद मुस्कुराया। 'मैं इससे अनेक वैष्णवास्त्र बनाऊंगा ताकि हम उनका इस्तेमाल अपने शस्त्रागार में कर सकें।'

अक्षया ने पूछा, 'आप इसे ऐसा क्यों कहते हैं?'

'क्योंकि देव कथाओं में यह धारणा है कि चिंतामणि पत्थर भगवान विष्णु से प्राप्त हुए हैं, इसलिए यह एक व्यंग्यात्मक नाम है क्योंकि विष्णु संरक्षक हैं और यह अस्त्र... इसे मेरा विनाश का हथियार समझो, हा हा।' मेघनाद की आँखें दुष्ट आनंद से चौड़ी हो गईं।

वे सभी विमान की ओर चले गए, उसे पीछे की ओर, कांच के बक्से में रखे धातु के सिलेंडर के ठीक बगल में रखते हुए।

जैसे ही अतिकाय और अक्षय ने लीवर को धकेलना शुरू किया, उन्होंने देखा कि और भी मरुत वहाँ आ रहे हैं। मेघनाद पीछे बैठा था, उसने अक्षय का धनुष-बाण छीन लिया और उन पर तीर चलाने लगा। लेकिन उसके तीरों से ज्यादातर लोग घायल हो गए और इसी वजह से बाकी मरुत अपने साथियों का हालचाल जानने के लिए इंतजार कर रहे थे।

'उन्हें कभी मत मारो। शरीर का कोई महत्व नहीं रह जाता।' मेघनाद ने अपने छोटे भाइयों को समझाया।

विमाना इंजन गर्जना करने लगा और तेज़, भारी हवा में हवा में स्थिर हो गया, जैसे ही उन्हें ज़मीन से पचास फीट ऊपर उठाया गया। आसमान अब इतना करीब था कि वे उसे छू सकते थे और महसूस कर सकते थे।

मेघनाद ने अतिकाय को आदेश दिया, 'मुझे इंद्र के महल के बाहर ले चलो।' अतिकाय ने पहिए को आगे बढ़ाते हुए विमान को धकेला और उसकी गति बढ़ा दी। 'हम अब अपने पिता को मुक्त कराने जा रहे हैं।'

'दादा, आपने हमें यह हिस्सा कभी नहीं समझाया।' अक्षया हकलाते हुए बोली।

'हाँ,' अतिकाया ने कंधे उचकाते हुए कहा। 'क्या तुम्हारे पास कोई योजना है या हम सीधे नीचे जाकर उसे बचा लेंगे?'

"नीचे उतरकर उसे बचाना हमारी मौत का कारण बन सकता है। हमारे पिता को एक ऐसी जगह पर पुतले की तरह लटका दिया गया है जहाँ ज़्यादातर पहरेदार चौकन्ने हैं। हमें उनका ध्यान भटकाना होगा।" वह रुका। "और हाँ, यह हिस्सा इस बात पर निर्भर था कि हमें चिंतामणि पत्थर मिलते हैं या नहीं, क्योंकि अब मुझे पता है कि उनका

ध्यान कैसे भटकाना है।" मेघनाद ने संपीड़ित सिलेंडर और सोमा पत्थरों को देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा।

अतिकया और अक्षय ने घबराहट से एक-दूसरे की ओर देखा।

अमरावती ने मेरे पिता की प्रतिष्ठा को धूमिल कर दिया।

अब मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा।

6. लक्ष्मण

हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी।

आंखें खोलते ही उसे आग और मौत का नजारा दिखा। लक्ष्मण को एक तीव्र ऊर्जा का अनुभव हुआ जिसने उसे अपने तरकश और धनुष को पकड़ने के लिए प्रेरित किया, और वह अपनी स्थिर स्थिति से सक्रिय स्थिति में आ गया।

इससे पहले उसे तलवार की मूठ से चोट लगी थी और होश में आने से पहले वह एक मिनट के लिए होश से बाहर हो गया था।

राघव एक कोने में धनुष और बाण लिए हुए था, वह सटीक निशाने लगा रहा था और पिशाच को भगाने के लिए कटार और तलवारों का भी इस्तेमाल कर रहा था।

सीता कहीं नजर नहीं आ रही थीं। अचानक ही उनके सामने एक तलवार प्रकट हुई। लक्ष्मण घबराकर एक कदम पीछे हट गए, तभी उनकी नजर एक पिशाच पर पड़ी - स्याही से रंगा हुआ, कीड़े जैसे दांतों वाला, दुष्टतापूर्ण मुस्कान लिए हुए। लक्ष्मण ने एक तीर निकाला और पिशाच के सिर में मार दिया। पिशाच कांपते हुए पीछे गिर पड़ा।

वे ज़्यादा नहीं थे। केवल एक दर्जन से कुछ ज़्यादा ही थे, लेकिन वे ज़्यादातर राघव की ओर जा रहे थे मानो... मानो वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति हो।

हालांकि लक्ष्मण सीता मां को लेकर चिंतित थे।

मुझे उसे ढूंढना होगा।

वह दौड़ते हुए आगे बढ़ा। उसने धनुष पर तीन तीर चढ़ाए और आते हुए पिसाख पर एक-एक करके तेजी से तीर चलाने लगा।

एक के सिर पर चोट लगी, दूसरे का गला फट गया, जबकि तीसरे ने उसे रोक दिया...

जीवित बचे पिशाच ने लक्ष्मण के ऊपर से छलांग लगा दी।

लक्ष्मण ने तुरंत अपने धनुष का इस्तेमाल दोनों के बीच बाधा डालने के लिए किया। अपने जन्मजात नुकीले दांतों से पिशाच लक्ष्मण का चेहरा कुतरने की कोशिश कर रहा था, लेकिन लक्ष्मण ने पास पड़ी एक चट्टान को पकड़कर उसके सिर पर जोरदार प्रहार किया, जिससे उसकी खोपड़ी में गड्ढा हो गया।

उठकर उसने गिरे हुए पिसाच द्वारा पहने गए कवच को ध्यान से देखा। उसने पाया कि उस पर राक्षस साम्राज्य का प्रतीक चिन्ह खुदा हुआ था।

इसमें उस औरत का हाथ जरूर है। पहले हमें हमारे राज से बेदखल किया जाता है और फिर हमारे साथ ऐसा बर्ताव किया जाता है। और क्या कारण हो सकता है?

और तभी उसने सीता के रोने की आवाज़ सुनी। यह आवाज़ जंगल से आ रही थी।

पिशाच की तलवार छीनकर वह जंगल में चला गया, और राघव को पिशाच से निपटने के लिए अकेला छोड़ दिया।

लक्ष्मण ने खुद को घने पेड़ों, घने आवरणों और भयानक कोहरे के बीच पाया, जिससे उसकी रूह कांप उठी। आगे बढ़ते हुए उसने पेड़ों की खुशबू महसूस की और चिल्लाया: 'सीता माँ!'

उसकी रक्षा करना उसका कर्तव्य था।

मैं किस तरह का जीजा हूँ?

उसे लगभग खुद पर तरस आ रहा था।

और तभी उसने देखा कि उसकी ओर कुल्हाड़ी लहराई जा रही है।

उसे लगभग एक पल का समय लगा, लेकिन वह घुटनों के बल बैठ गया। कुल्हाड़ी उसके पास से गुजर गई।

जैसे ही वह संभला, उसने एक आकृति को अपनी ओर दौड़ते हुए देखा। वह विशालकाय, सांवला और तेल लगी त्वचा वाला था... और अपने भारी-भरकम शरीर के साथ वह किसी राक्षस जैसा लग रहा था, इससे पहले कि वह लक्ष्मण को ज़मीन पर पटक दे।

दर्द से कराहते हुए लक्ष्मण की तलवार पर पकड़ ढीली पड़ गई। जैसे ही उसने तलवार को पकड़ने की कोशिश की, राक्षस ने अपने दोनों मुक्कों से उसकी उस भुजा

पर प्रहार किया, जिससे वह बाण चलाता था।

यह वाला नहीं!

उसके शरीर में तेज दर्द की लहर दौड़ गई और उसकी आंखों के कोनों में आंसू भर आए।

राक्षस ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मर जा, उत्तरवासी। मेरे हाथों।'

लक्ष्मण का हाथ तुरंत अपने तरकश की ओर बढ़ा, उसने एक बाण निकाला और राक्षस की आंख में मार दिया, जिससे वह भय से चीखते हुए पीछे गिर पड़ा।

'तुमने जल्दबाजी में बोल दिया,' लक्ष्मण ने बाणों का उपयोग केवल अपने धनुष के साथी के रूप में ही नहीं, बल्कि एक तलवार के रूप में भी करना सीख लिया था।

'मदद करना!'

उन्होंने सीता माँ की आवाज़ फिर सुनी।

'सीता देवी!' लक्ष्मण चिल्लाया।

'मैं यहाँ हूँ!'

फिर उसे आवाज़ की दिशा सुनाई दी—दक्षिण की ओर से। वह हिलने लगा, लेकिन उसे अपनी दाहिनी कलाई में दर्द महसूस हो रहा था और वह बेसुध लटक रही थी।

मैं गोली नहीं चला सकता।

उसने अपने सामने रथ देखा, जिस पर एक गंजा राक्षस खड़ा था और सीता माता को पकड़े हुए था।

उसकी यह मजाल!

लक्ष्मण सुनहरे रथ के बगल में दांत पीसते हुए खड़ा हो गया। 'उसे छोड़ दो।'

लेकिन राक्षस ने उसकी बात नहीं मानी। उसने एक हाथ से उसकी कमर को और कसकर पकड़ लिया, जबकि वह उसे दूर धकेलने की कोशिश कर रही थी, वहीं दूसरे हाथ से उसने तलवार चला रखी थी।

'तुम लोग हमारी महिलाओं को चोट पहुँचाते हो और हम इसे चुपचाप सह लेते हैं? जब हम ऐसा करते हैं, तो यह गलत है? क्योंकि तुम्हारी महिलाएं पवित्र हैं...' उसने मिथिला की गोरी राजकुमारी की ओर देखा, 'और हमारी महिलाएं कुतिया हैं?'

हमने किसी को चोट नहीं पहुंचाई।

राक्षस ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'उसकी नाक भी उसी तरह काटी जाएगी, जैसे तुमने हमारी स्त्री की काटी थी।'

लक्ष्मण को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है, लेकिन उसका दाहिना हाथ कमजोर था और उसे कुछ करने का रास्ता निकालना ही था।

राक्षस ने तलवार को सीता माता की नाक के पास ला खड़ा किया, जिस पर सीता माता ने सिसकते हुए कहा, "सावधान!" लक्ष्मण ने राक्षस से बचने के लिए बाईं ओर छलांग लगाई।

देखते ही देखते राक्षस भ्रमित हो गया और लक्ष्मण के पीछे-पीछे छलांग लगाने लगा, तभी लक्ष्मण ने नीचे गिरने से पहले अपना एक और बाण निकाला और सीता माता की ओर फेंक दिया।

और उसने उसे पकड़ लिया, और उस मामूली सी चूक का फायदा उठाते हुए उसे राक्षस के गले में गहराई तक घुसा दिया।

रथ से गिरते हुए भयभीत और रक्तरंजित राक्षस को सीता माता वहीं छोड़कर चली गईं, जो अपने घाव को पकड़कर खून बहने से रोकने की कोशिश कर रहा था। सीता माता वहां से दौड़कर लक्ष्मण को कसकर गले लगा लिया।

लक्ष्मण ने पूछा, 'वह कौन था?'

‘वह दंड राज्य का राज्यपाल और रावण का भाई था।’ उसकी आँखों में चिंता की चमक आ गई।

‘ठीक है, मेरी देवी,’ राक्षस सम्राट का नाम सुनते ही लक्ष्मण का दिल बैठ गया। ‘लेकिन मुझे खुशी है कि आपने अपना बचाव अच्छे से किया।’

उसके चेहरे पर आंशिक रूप से कीचड़, गंदगी और निशान थे, फिर भी वह मुस्कुराई।

हालांकि, इस सारी अराजकता, युद्ध और आतंक के बीच लक्ष्मण यह नहीं समझ पा रहा था कि यह हमला क्यों हुआ।

उसे लगा कि हमने उसकी नाक काट दी है।

मीनाक्षी इन सबके साथ कौन सा खतरनाक खेल खेल रही है?

7. मेघनाद

अगर उसने इसे सही तरीके से नहीं किया, तो उनका विमान फट सकता है।

और सिर्फ वही नहीं, उसके भाई भी उसके साथ मरेंगे।

मुझे अपनी जान की परवाह नहीं है। लेकिन मेरी माँ इस बात पर रोती थी कि मैं कितना लापरवाह आदमी था, कि मैंने अपने छोटे भाइयों की देखभाल नहीं की।

और अपनी मां को निराश करने का ख्याल उसे सताता रहता था।

मुझे इसे सही तरीके से करना होगा।

वे हवा में थे, बादलों के बीच और ठंड बिल्कुल सटीक थी। वह महसूस कर सकता था कि हवा उसकी आत्मा को जकड़ रही है और उसे टुकड़े-टुकड़े कर रही है। उसने अपने सीने के चारों ओर काली कमीज़ कस ली और साथ ही अपने विस्फोटक पर काम करता रहा।

सिलेंडर आगे की तरफ था।

सबसे पहले, उसने सोमा पत्थर लिए और अपने पास मौजूद हथौड़े से एक पत्थर को तोड़कर उसे तब तक बार-बार पीसा जब तक वह चूर-चूर न हो गया। उसने उसे सिलेंडर के एक हिस्से में डाल दिया - उस हिस्से में जहाँ नीला पदार्थ चमक रहा था। फिर दूसरे सिरे पर उसने चिंतामणि पत्थर का क्रिस्टल लगाया। उसने सिलेंडर को धीरे-धीरे हिलाते हुए दोनों पत्थरों को मिलाना शुरू किया।

‘आप क्या कर रहे हैं, दादा?’ अक्षय ने पूछा, और उनके बगल में बैठकर, सुरक्षा के लिए रखे गए तीरों से अपने तरकश को फिर से भरने लगा।

मेघनाद ने मुस्कुराते हुए कहा, 'रेडियोधर्मी तत्वों को मिलाकर विखंडन करना।'

‘एक बम? बिल्कुल वैसा ही जैसा तुमने बहुत पहले बनाया था?’ अतिकाया ने कहा, तेज हवाओं के कारण उसके बाल पीछे की ओर लहरा रहे थे।

मेघनाद को अपना पहला बम याद आया जो उसने केवल सोमा से बनाया था। यह भगवान रुद्र, दूसरे शिव, के बचे हुए ग्रंथों से बना था, जिनके पास पशुपतास्त्र नामक परमाणु हथियार था। यह बहुत समय पहले की बात है, वराह के समय की, जो विष्णु के तीसरे अवतार थे। मेघनाद के लिए यह मुश्किल था क्योंकि वह तब बच्चा ही था और उसे परमाणु भौतिकी का बहुत कम ज्ञान था। लेकिन जब राक्षसों को सत्यजीत, जिन्हें दूसरे इंद्र के नाम से भी जाना जाता है, द्वारा उपचार के लिए छोड़े गए सोमा के गुप्त भंडार मिले, तो उन्होंने इसे दवा के रूप में इस्तेमाल करने या नशा करने के बजाय इससे हथियार बनाए।

यह सब नजरिए की बात है।

पशुपतास्त्र का प्रयोग राक्षस अत्यंत कठिन परिस्थितियों में ही करते थे। लेकिन वह हमेशा और अधिक बनाने के लिए जुनूनी था...

जो वह अभी कर रहा था!

लेकिन यह खतरनाक था। पहला, अगर विखंडित कणों को ज़ोर से मिलाया जाए तो विस्फोट हो सकता है। दूसरा, मिश्रण के तुरंत बाद, ज़मीन पर गिरने पर ज़रा सा भी झटका लगना विस्फोट का कारण बन सकता है।

और उन सबकी मौत हो सकती है।

'हो गया।' उसने मुस्कुराते हुए क्रिस्टल और पाउडर के बैंगनी रंग के मिश्रण को दिखाया जो तेज़ी से चमक रहा था।

अक्षया विस्मय से देखता रह गया, जबकि अतिकया ने अपना सिर घुमाकर देखा। 'वाह!' वह मुस्कुराया और फिर अपना आपा खो बैठा...

रथ छोटा होता चला गया और एक पल के लिए मेघनाद को लगा कि हथियार उसके हाथों से फिसलकर जमीन पर गिर रहा है...

उनकी मुस्कान फीकी पड़ गई।

और फिर मेघनाद ने विस्फोटक सिलेंडर को अपने टखने के कोने पर पकड़े हुए अपना पैर आगे बढ़ाया।

लेकिन वह इसे लंबे समय तक नहीं कर सका।

'इस उड़ान का नियंत्रण अपने हाथ में लो!' मेघनाद ने आदेश दिया।

तेज हवा के कारण विमान अभी भी अस्थिर था।

'इसे नीचे उतार दो, शायद हम इन हवाओं से सुरक्षित हो जाएं!' मेघनाद ने अपने टखने की ओर झुकते हुए सुझाव दिया।

अगर यह गिरेगा तो फट जाएगा।

यह फर्श पर नहीं गिर सकता।

उसने सिलेंडर को पकड़ लिया और राहत की सांस ली, तभी अचानक विमान झटके से नीचे गिर गया, ठंडी हवाओं से दूर धकेलते हुए नीचे की ओर चला गया।

मेघनाद का हाथ सिलेंडर से फिसल गया और हवा में लटक गया...

नहीं।

उसने दांत पीसते हुए अपनी जगह से छलांग लगाई और सिलेंडर को पकड़कर कसकर गले लगा लिया...

जब विमान सीधा हुआ और उसके आसपास सब कुछ हिलने-डुलने लगा, तो उसने सिलेंडर को यथासंभव कसकर पकड़ लिया।

'माफ़ कीजिए!' अतिकाया ने अपनी जगह पर वापस आकर कहा। 'हमें तेज़ हवाओं से बचना था इसलिए हमें यह कठोर कदम उठाना पड़ा, नहीं तो यह संभव नहीं होता।'

'अगर मेरे पास परमाणु बम न होता, तो मैं तुम्हारी इस बहादुरी की सराहना करता,' मेघनाद ने पसीना पोंछते हुए सीधा खड़े होकर कहा। 'अब इसे आगे ले चलो।' उसने अतिकया को आदेश दिया, और शहर के केंद्र के ऊपर खड़े विमान की ओर इशारा किया।

अक्षय ने पूछा, 'योजना क्या है?'

मेघनाद को यह बात पूरी तरह से पता थी, एक-एक छोटी बात तक।

वे इंद्रसभा के करीब थे और वह वैजयंत को देख सकता था, जो इंद्र का महल था, जो निचले टावरों के बीच काले मेहराबों और शंकु के आकार के शीर्षों के साथ एक सफेद, चमकते प्रकाशस्तंभ की तरह खड़ा था।

मेघनाद ने अतिकाय से कहा, 'जब मैं कहूँ तो तुम्हें तेज़ी से चलना होगा। और तुम्हें वैजयंत महल की ओर बढ़ना होगा...' जहाँ दशानन को एक धातु के खंभे पर लटकाकर सबके सामने अपमानित किया जा रहा था।

अतिकाया ने सिर हिलाया, हालांकि वह असमंजस में था।

'क्या आप इसे गिराने वाले हैं, दादा?' अक्षया की भोली-भाली छोटी-छोटी आँखें मेघनाद की ओर देख रही थीं।

अभी नहीं।

'लेकिन तुम बहुत से नागरिकों को मार डालोगे,' उसने कहा, 'बच्चों को, माताओं को... निर्दोषों को।'

इंद्रसभा के आसपास की पूरी बस्ती की भौगोलिक स्थिति देखकर मेघनाद कुछ पल के लिए सोचने लगा। हर कोई चींटियों जैसा दिख रहा था और उसे ऐसा लग रहा था मानो वह कोई देवता हो... उन पर राज कर रहा हो। उसे ऐसा करना ही था, क्योंकि दशानन के चारों ओर तैनात पहरेदारों का ध्यान भटकाना ज़रूरी था।

लेकिन उन्हें यह करना ही था...

क्योंकि उनके शासक इंद्र ने अपने पिता के साथ जिस तरह का व्यवहार किया, उनका अपमान किया, मानो राक्षस कुछ भी नहीं हैं।

वे कुछ खास हैं। वे, नहीं, हम, सबसे शक्तिशाली हैं। और मैं उन्हें, उन सभी को, यह दिखाऊंगा।

'मुझे करना ही होगा। साम्राज्य के लिए। हमारे पिता के लिए।' उसने अक्षय की ओर मुस्कुराते हुए सिलेंडर नीचे गिरा दिया... जिससे सैकड़ों निर्दोषों की जान जाने का खतरा था।

8. सुपर्निका

वह अपने आदमियों के शवों के बीच से गुजरी।

राजकुमार अपनी पत्नी और भाई लखन (जिन्हें लक्ष्मण के नाम से भी जाना जाता है) के साथ रवाना हुए थे। समस्याएँ शुरू होने से पहले ही उनकी पत्नी ने अयोध्या में तैनात जासूसों के दल से सारी जानकारी प्राप्त कर ली थी।

अयोध्या की राजनीति सम्मान और वचन पालन पर आधारित थी, इसलिए राघव के वनवास में रहने का एकमात्र कारण दशरथ का वचन निभाना था। दशरथ ने अपनी दूसरी पत्नी कैकेयी से जन्मे पुत्र भरत को अपने बाद अपना उत्तराधिकारी बनाने का वादा किया था। राघव को उनकी लोकप्रियता के कारण चुना गया था, लेकिन कैकेयी ने इसकी अनुमति नहीं दी। उन्हें यह भी समझ थी कि यदि राघव राज्य में रहे, तो विद्रोही, यानी उनके प्रिय लोग, उनके पुत्र के विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे और भरत की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। इसी कारण राघव ने सर्वोच्च बलिदान दिया: उन्होंने स्वयं को वनवास में भेज दिया ताकि राज्य और उनके भाई को कोई नुकसान न पहुंचे।

मीनाक्षी को किसी व्यक्ति में ऐसा नेक और वीर गुण बहुत पसंद आया। पंचवटी के जंगलों में इन शवों को देखकर वह निश्चित रूप से समझ गई कि राघव वास्तव में राक्षस साम्राज्य के किसी भी प्रतिद्वंद्वी से कहीं अधिक शक्तिशाली था।

और उसका अच्छा उपयोग किया जा सकता है।

मीनाक्षी रथ की ओर चलीं, जहाँ बुरी तरह घायल खारा उसके पास ही संघर्ष कर रहा था। वह अकेली आई थीं, क्योंकि कुम्बिनी केवल एक दासी थी और उसे मीनाक्षी के सारे काम नहीं देखने चाहिए थे।

विशाल वृक्षों ने उसे घेर लिया, शवों की भयानक दुर्गंध उसकी नाक में घुस गई। उसने अपने रुमाल से दुर्गंध को छुपाने की कोशिश की। सन्नाटे की आवाज़ और अवतार के आसन्न आतंक की अनुभूति धुंध के बीच गूंज रही थी।

मीनाक्षी ने देखा कि खारा गले में तीर लगने से जूझ रहा था और रथ के दरवाज़े पकड़ने की कोशिश कर रहा था, उसके खून से सने हाथ उसे पोंछ रहे थे। मीनाक्षी को देखते ही उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई और उसके चेहरे पर एक हल्की, फीकी मुस्कान आ गई।

'मदद...' उसने मरती हुई आवाज में पुकारा। 'कृपया...'

मीनाक्षी खारा के पास घुटनों के बल बैठ गई, पट्टी बंधी नाक में चुभन हो रही थी और वह भौंहें चढ़ाकर उसे देख रही थी। 'क्या तुम्हें दर्द हो रहा है? क्योंकि विद्युत को भी बहुत दर्द हुआ था। क्या तुम्हें याद है तुमने उसके साथ क्या किया था?'

खारा दहशत भरी निगाहों से मीनाक्षी को देख रहा था, जब उसने उसके गले में फंसे तीर को पकड़ा और उसे उसके मांस में और गहराई तक धकेल दिया।

वह कराह उठा और पृष्ठभूमि में गौरैया चहचहाने लगीं।

'उसने तुम पर भरोसा किया, लेकिन तुमने उसे धोखा दिया, कमीने!' उसने दांत पीसते हुए कहा। 'तुम मेरे भाई थे और तुमने मेरे जीवन के प्यार का कत्ल कर दिया!' उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'क्या तुम्हें पता है मैं यहाँ क्यों आई हूँ? यह देखने के लिए कि तुम सचमुच मर गए हो या नहीं। लेकिन तुम कीड़े, तुम अभी तक नहीं मरे!' उसने उसे और अंदर तक धकेल दिया और ऐसा करते हुए उसके चेहरे पर खून के छींटे पड़ने लगे।

लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।

'वह मेरा रक्षक होगा, वह मेरा बदला होगा। राघव शक्तिशाली है। तुमने उसके पास दुश्मन लाए और वह सुरक्षित है, उसका परिवार सुरक्षित है, और वह निश्चित रूप से शक्तिशाली है। वह अवतार है।'

उसकी आखिरी टिप्पणी सुनकर खारा की आंखें चौड़ी हो गईं।

'हां, उसी प्रतीक के साथ, वही प्रतीक जिससे पिताजी डरते थे। लगता है हमारा अंत निकट है। और मैं इसमें अपना हाथ बटाने के लिए बहुत खुश हूं।'

और अंत में उसने तीर की धार को तब तक गड़ाए रखा जब तक खारा की आँखें जम नहीं गईं। उसने अपने चेहरे से खून पोंछा और खड़ी हो गई।

पिताजी सही थे। वह पागल नहीं थे। वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। राक्षस साम्राज्य के अंत के बारे में उनका ज्ञान, उनका रहस्य, अब मेरा हथियार है।

लेकिन उस रहस्य को अंजाम देने के लिए, उसे अगला कदम उठाना ही था।

उसे उस व्यक्ति को मारना पड़ा जो उसके पति की अन्यायपूर्ण मौत के लिए जिम्मेदार था।

उसका सबसे बड़ा भाई।

रावण।

9. मेघनाद

विस्फोट बहुत भीषण था।

ऊपर से वह देख सकता था कि लोगों के शव किस प्रकार क्षत-विक्षत पड़े थे, इमारतें चकनाचूर हो चुकी थीं और चारों ओर धुआँ फैला हुआ था। नर्सें मदद के लिए दौड़ पड़ीं, जबकि पहरेदार भारी अफरा-तफरी में थे और नुकसान का जायजा लेने की कोशिश कर रहे थे। पूरा इलाका दहशत में डूबा हुआ था। इंद्रसभा आधी टूट चुकी थी और एक तरफ से ढह रही थी, बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के जले हुए शवों के ऊपर।

मेघनाद को खुद नहीं पता था कि उसे कैसा महसूस हो रहा है।

लेकिन वह यह जरूर जानता था कि उसे क्या महसूस नहीं हो रहा था - पछतावा।

इन लोगों के लिए मेघनाद के मन में कोई सहानुभूति नहीं थी, लेकिन जब उसने अपना सिर घुमाकर अक्षया को देखा - मासूम, पलकें झपकाती आंखों वाली युवा, स्वस्थ राक्षसी अक्षया को देखकर मेघनाद को एहसास हुआ कि उसने अभी-अभी एक उदाहरण पेश किया है।

अच्छा या बुरा... यह तो अभी तय होना बाकी है।

'क्या हम बुरे हैं, दादाजी?' अक्षया हकलाते हुए बोली।

मेघनाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'हम भले ही स्वर्ग में हों, लेकिन लंका में हम नायक हैं। और भाई, यही सबसे ज़्यादा मायने रखता है।' उसने अक्षय के बाल खींचे और मुस्कुराते हुए कहा, 'याद रखना, हम अपनी ज़मीन के लिए, अपनी विरासत के लिए लड़ रहे हैं।'

दशानन के सबसे छोटे बेटे ने विनम्रता से सिर हिलाया।

इसी बीच अतिकाय ने विमान को नीचे की ओर धकेलने में कामयाबी हासिल कर ली, जहाँ इंद्र का विशाल महल स्थित था। लोगों की अफरा-तफरी के बीच उतरते समय मेघनाद ने सभी की आँखों में राक्षसों का भय स्पष्ट रूप से देखा।

महल में सफेद संगमरमर की एक सीढ़ी थी, जो इतनी चौड़ी और विशाल थी कि महल के द्वार तक जाती थी। देवताओं की मूर्तियाँ - अग्नि, वरुण और पूर्व इंद्र - विशाल और ऊँची खड़ी थीं। और इनके बीच में...

उसके पिता एक खंभे पर लिपटे हुए थे, खून बह रहा था और वे बेहोश थे।

लेकिन पूरी तरह से जीवित।

विमान जमीन पर पड़ा था, और हमले के धुएं से उसके फेफड़े झुलस रहे थे। उसने आग और चीखें सुनीं। उसने अपने द्वारा पैदा किए गए अंधेरे की गंध महसूस की।

आसमान में अफरा-तफरी मच गई, अचानक तेज बिजली कड़की।

मेघनाद अपनी तलवार को हाथों में कसकर पकड़े हुए अपनी जगह से आगे बढ़ा।

वह खंभे की ओर बढ़ा और एक हाथ से उसे खींचकर अलग कर दिया और जमीन पर रख दिया।

उसके पीछे खड़े लोगों ने यह सब देखा, लेकिन किसी ने कुछ नहीं किया। कुछ ने गार्डों को बुलाया, और कुछ चुप रहे।

मेघनाद ने अपने पिता को बांधने वाली रस्सियों को तोड़ दिया - वे विशालकाय शरीर वाले थे, लेकिन घायल और जख्मी थे, उनकी दाढ़ी वाले चेहरे से खून बह रहा था और उनके सुंदर बाल अब चिपचिपे और तैलीय हो गए थे। उसने अपने पिता को उठाया और विमान में ले आया, उन्हें पिछली सीट पर बिठाया तभी उसे यह आवाज सुनाई दी...

'दशनन का पुत्र!'

मेघनाद ने मुड़कर देखा तो इंद्र-रोचना सीढ़ी के शीर्ष पर खड़े थे और उनके दोनों सिरों पर पांच-पांच मरुत थे।

'तुम अभी भाग सकते हो लेकिन मैं तुम्हारा पीछा करूंगा और तुम्हारे पूरे कबीले का संहार करूंगा,' इंद्र की आंखें क्रोध से लाल हो गईं, उसका मुंह कठोर हो गया।

अक्षय ने विमान के अंदर से विनती की, 'चलो चलते हैं। उससे लड़ने की कोई जरूरत नहीं है।'

‘हाँ, मैं इस बात पर उससे सहमत हूँ।’ अतिकाया ने कहा। ‘हमारे पास पिताजी हैं।’

मेघनाद ने एक पल सोचा।

मैं या तो यहाँ से चला जाऊँ या फिर आखिरकार इस कमीने से लड़ूँ।

मेघनाद ने अपने भाइयों से फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे ढक लो।'

अक्षय को इसका अर्थ समझ आ गया और उसने अपना धनुष-बाण उठा लिया। मेघनाद ने अपनी तलवारें उठाईं और तुरंत सीढ़ियों की ओर दौड़ पड़ा।

रोकाना को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने मारुतों को उसकी ओर निर्देशित किया।

जैसे ही मेघनाद मारुत पर हमला करने के करीब पहुंचा, अक्षय के तीर की सटीकता के साथ एक तीर रक्षक के चेहरे को चीरता हुआ निकल गया।

और एक और व्यक्ति भी था, जो मेघनाद के करीब आया था।

मेघनाद ने अपने ठीक सामने एक मारुत को प्रकट होते देखा। मारुत ने ढाल से तीर को चकमा दिया और ढाल से मेघनाद पर प्रहार किया, लेकिन मेघनाद तुरंत अपने पैरों के बीच लुढ़क गया। उसने कलाबाजी करते हुए हवा में ऊंची छलांग लगाई और मारुत का सिर धड़ से अलग कर दिया।

मेघनाद की निगाहें गाउन पहने इंद्र की ओर गईं, जिनके चेहरे पर अब भय स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

जैसे ही और अधिक मरुत उसके पास आए, वह शांत भाव से सीढ़ियों से ऊपर चला गया। मेघनाद ने अपने दाहिने हाथ के इशारों से अक्षय के तीरों को उन पर निर्देशित किया - एक तीर उसके गले में लगा, जबकि दूसरा घुटनों में लगा, और वह खून से लथपथ सीढ़ियों से नीचे गिर पड़ा।

आखिरी मारुत मेघनाद और इंद्र के बीच आ गया... और मेघनाद ने उसे तलवार की मूठ से तीर मारकर सीढ़ियों से नीचे फेंक दिया।

मेघनाद, गर्जन के देवता रोचना के बगल में खड़े होकर बोले, 'मैं यह देखने का इंतजार कर रहा हूँ कि क्या तुम मुझे अपने वज्र से प्रहार करोगे। वह कहाँ है?' उनका इशारा उस हथियार की ओर था जो इंद्र के पास था और जो बिजली की ऊर्जा से बना था।

मेघनाद ने इंद्र के चेहरे पर घूंसा मारा, जिससे वह गिर पड़ा। फिर मेघनाद ने इंद्र का गला पकड़कर उसे तलवार की मूठ से बार-बार पीटना शुरू कर दिया। मेघनाद ने

रोचना को तब तक लगातार मारा जब तक कि उसका चेहरा चोटिल होकर खून से लथपथ नहीं हो गया और उसकी आंखें सूज गईं।

'बस करो!' अक्षय ने विमान से पुकारा।

मेघनाद ने अधमरी हालत में पड़े इंद्र को देखते हुए आह भरी। 'मैं तुम्हारी पत्नी को अपने साथ ले जाना चाहता था। लेकिन फिलहाल मैं तुम्हारा इस्तेमाल कर सकता हूँ।'

और उसके पास एक योजना थी।

वाह, यह तो बहुत बढ़िया योजना थी।

'तुम्हें मेरे पिता को इस तरह ले जाकर उनका अपमान नहीं करना चाहिए था। यह बहुत गलत था।' और उसने रोकाना के सफेद बालों को पकड़कर उसे सीढ़ियों से नीचे घसीटना शुरू कर दिया।

रोकाना का सूजा हुआ चेहरा हर सीढ़ी से टकरा रहा था, जिससे सफेद सीढ़ियों पर खून बह रहा था। लोग और मारुत उसे भय और विस्मय से देख रहे थे कि कैसे एक दुष्ट राक्षस ने उनके देवता को हराया, अपने जादुई बम से उनके शहर को नष्ट किया और उनके खनिज लूट लिए।

मेघनाद ने अपने पिता को खंभे से बांधने वाली रस्सियों को पकड़ लिया और उन्हीं रस्सियों से उसने बेहोश इंद्र को विमान के ठीक सामने बांधना शुरू कर दिया। अक्षय और अतिकाय यह सब देखकर अचंभित रह गए, जब उन्हें आखिरकार समझ आया कि मेघनाद क्या कर रहा है।

जब मेघनाद का काम पूरा हो गया, तो वह वापस अपनी सवारी पर सवार हो गया और अतिकाया ने लीवर का इस्तेमाल करके उन्हें आसमान में उड़ा दिया।

सभी नागरिकों ने अपनी निगाहें ऊपर उठाईं, क्योंकि मेघनाद ने निर्दयतापूर्वक उनकी ओर हाथ हिलाया, जो उनके सामने अब तक का सबसे बड़ा खलनायक था।

'इस दिन को याद रखना। याद रखना। याद रखना। क्योंकि यह वह काला दिन है जिसकी याद तुम्हें हमेशा आती रहेगी...' वह जोर से चिल्लाया, और उसके शब्दों से सब कांप उठे, 'मेघनाद के क्रोध का – उस व्यक्ति का, जिसने एक देवता को पराजित किया।'

10. लक्ष्मण

कोई आ रहा था। लेकिन वे काफी दूर थे।

राघव ने पूछा, 'वह कौन है?'

'ये कैसे-कैसे वनवासी हैं! इससे क्या फर्क पड़ता है? हमने अपना घर खो दिया!' लक्ष्मण चिल्लाया। 'ये खूनी, आदिवासी अछूत!'

उनके घर की उस जर्जर झोपड़ी के बाहर बैठे हुए, जहां वे कुछ समय से रह रहे थे, उनके अंदर हताशा उमड़ रही थी।

'इल्लावर्ती तो राक्षसों, वानरों और न जाने किन-किन आदिवासियों के लिए नहीं है!' लक्ष्मण ने अपनी नाक फुलाते हुए कहा। 'यह हमारे लिए है, मानवों के लिए, सभ्य लोगों के लिए। उस औरत की वजह से हम सब खतरे में हैं, हमने अपना घर खो दिया है और हम अपना... भी खो सकते थे।'

राघव ने अपने हाथ ऊपर उठाए और उस घुड़सवार से ध्यान हटाकर लक्ष्मण की ओर देखा। 'और कुछ मत कहो। भगवान विष्णु ने हमें अपनी सुरक्षा का आशीर्वाद दिया है।'

लक्ष्मण ने सिर हिलाया। वे विष्णु में नहीं, बल्कि अपने भाई में विश्वास रखते थे। वे एक आदर्श नायक, एक शांत और संयमित राजा थे। और वे इतने सम्माननीय थे कि उन्होंने भरत जैसे अयोग्य राजा के लिए अपना सिंहासन छोड़ दिया।

कभी-कभी बहुत अच्छा होना भी नुकसानदायक होता है।

'हमें जनस्थान जाकर उन सभी को मार डालना चाहिए। दरअसल, भाई, यह वनवास समाप्त होते ही मैं स्वयं एक कार्य दल का नेतृत्व करके यहाँ के सभी आदिवासियों का सफाया कर दूँगा और इस भूमि को केवल मानवों का क्षेत्र बना दूँगा,' लक्ष्मण ने दाँत पीसते हुए कहा, उसके मुँह से झाग निकल रहा था।

"हम तब तक किसी की हत्या नहीं करते जब तक कि हमें विवश न किया जाए। भगवान ब्रह्मा ने स्वयं इन जनजातियों की रचना की है। चाहे अच्छा हो या बुरा, ये हमारे भाई-बहन हैं," लक्ष्मण के सांवले भाई ने उत्तर दिया। राघव उत्तर के राजा के हिसाब से काफी सांवले थे। "और हर जनजाति की तरह, मानवों में भी, भाई... बुराई भी है, जैसे

कि हमने जिससे लड़ाई की, और अच्छाई भी है।" उन्होंने लक्ष्मण के कंधे पर थपथपाते हुए कहा, "और लोगों में अच्छाई को पहचानने की दृष्टि होनी चाहिए।"

लक्ष्मण ने अनिच्छा से सिर हिलाते हुए अपने होंठ चाटे और संदिग्ध दिखने वाले घुड़सवार की ओर मुड़ा। वह अब उनके काफी करीब आ चुका था। लेकिन इससे पहले कि वह अपने भाई को कोई संकेत दे पाता, सीता माँ टूटी हुई झोपड़ी के अंदर आईं और एक छोटा पीतल का कटोरा ले आईं, जिसे उन्होंने कसकर गले लगाया और मन ही मन मुस्कुराईं।

लक्ष्मण को याद नहीं था कि सीता माँ ने क्या पकड़ रखा था, लेकिन वह देख सकता था कि राघव सीता माँ को गले लगा रहा था और कह रहा था, 'यह सुरक्षित है।'

'केवल यही एक चीज मायने रखती है।'

और फिर लक्ष्मण को याद आया कि यह वही छोटी थाली थी जिसमें भगवान राघव और देवी सीता ने अपने विवाह के बाद अपना पहला भोजन एक साथ किया था।

और चोट लगने के बावजूद, अपना घर खोने के बावजूद, उन्होंने छोटी-छोटी चीजों में उम्मीद पाई।

काश मैं भी वैसा हो पाता।

उन्होंने अपनी अंगूठी को रगड़ा, जो उनकी पत्नी उर्मिला ने उन्हें उपहार में दी थी। क्या मुझे उनकी याद आती है? यह एक मजबूरी की शादी थी, लेकिन वह एक अच्छी साथी थीं।

शायद जब मैं वापस आऊँगा, तब सब ठीक हो जाएगा। मैं राघव और सीता माँ की तरह निपुणता सीख लूँगा।

और तभी उन्हें वह आवाज़ सुनाई दी। घोड़े के खुरों की आहट। सवार आखिरकार उनके पास पहुँच गया था। लक्ष्मण ने देखा कि जिसे वह इस भूमि का निवासी समझ रहा था, वह एक जाना-पहचाना चेहरा था।

कितना घिनौना चेहरा!

काले लबादे को हटाते ही, सामने सांवली रंगत वाली राक्षसी खड़ी थी, जिसकी आंखें तिरछी थीं और नाक पर पट्टी बंधी थी। और वह अकेली थी।

'तुमने ऐसा क्यों किया...?' लक्ष्मण तुरंत खड़े हो गए, अपना धनुष निकाला और बाण उसकी ओर तान दिया। 'तुमने हम पर विपत्ति लाई!'

लेकिन राघव ने तुरंत अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

‘अरे राक्षस! अरे नरभक्षी! अरे डायन! तुम आदिवासियों का नाश होगा!’ लक्ष्मण चिल्लाया, लेकिन राक्षसी शांत थी।

और राघव भी ऐसा ही था, हालांकि उसने राक्षसी से कठोर स्वर में कहा: 'क्या बात है?'

‘मैं यहाँ शांति के लिए आई हूँ।’ उसने आत्मसमर्पण करते हुए अपने हाथ ऊपर उठा लिए। ‘मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं है। जब खारा, जिसे तुमने मारा था, ने शिकार के दौरान लगी मेरी चोट देखी, तो उसे लगा कि यह तुमने किया है और वह इतना जल्दबाज़ था कि उसने तुम्हें मारने के लिए अपने भाड़े के सैनिकों को इकट्ठा कर लिया। मुझे बहुत अफ़सोस है। मुझे समझाने का समय भी नहीं मिला।’

लक्ष्मण ने राघव के शांत चेहरे पर एक नजर डाली। 'क्या तुम सचमुच उसकी बात पर विश्वास करते हो?' उसकी व्याख्या में तर्क का कोई अंश नहीं है।

‘कोई बात नहीं। ये तो मामूली झगड़े हैं,’ राघव ने आह भरी। ‘महारानी, आप अभी भी यहाँ की रानी हैं और मैं अपने पिछले गुस्से के लिए क्षमा चाहता हूँ। मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था। मेरी भावनाओं ने मुझ पर काबू नहीं रखा।’

क्या उसे खेद है?

‘आप जैसे महान पुरुष का आदर न करना असंभव है।’ राक्षसी मुस्कुराई। ‘मैं राक्षस साम्राज्य की ओर से क्षमा मांगती हूँ और इस विवाह की पवित्रता को ठेस पहुँचाने के लिए आपकी पत्नी को क्षमादान भेंट करती हूँ।’ राक्षसी घुटनों के बल बैठ गई और अपने हाथ में एक माणिक्य से बना ताबीज दिखाया। ‘यह लंका के सक्रिय ज्वालामुखियों से निकलने वाली भट्टियों से बना है। यह बहुत दुर्लभ और बहुमूल्य उपहार है। आप चाहें तो इसे शहरों में भोजन के बदले दे सकते हैं और आपको बदले में भरपूर भोजन मिलेगा।’

इसे मत लो। इसे मत लो।

राघव ने उसे सीता के हाथों से ले लिया। ‘और कृपया खड़ी हो जाइए,’ उसने राक्षसी से कहा, जो तुरंत खड़ी हो गई। ‘कोई भी स्त्री किसी पुरुष के सामने घुटने नहीं टेकती।’ उसने मुस्कुराते हुए माणिक ताबीज सीता माता को सौंप दिया और उन्हें इसे स्वीकार करने का इशारा किया। ‘बहुत-बहुत धन्यवाद।’

‘मुझे जाना होगा।’ राक्षसी ने धीरे से मुस्कुराते हुए अपने घोड़े पर सवार होकर प्रस्थान किया।

उसके जाते ही लक्ष्मण ने राघव से कहा, 'मुझे उम्मीद है कि हम इसे यूं ही फेंक रहे हैं।'

सीता माता ने आपत्ति जताते हुए कहा, 'हम क्यों आपत्ति करें? उन्होंने कृपा करके इसे हमें उपहार में दिया है।'

'उसकी वजह से हम खतरे में हैं। और उसे सब पता है...' लक्ष्मण ने राघव की छाती की ओर इशारा किया, जहाँ भगवा दुपट्टे के नीचे श्रीवत्स का चिन्ह छिपा हुआ था।

राघव ने लक्ष्मण के कंधे पर हाथ फेरते हुए कहा, 'भाई, हर किसी में बुराई देखना बंद करो। वह यहाँ माफी मांगने आई है और एक बड़ा दिल वाला इंसान हमेशा माफ कर देता है। हमेशा। चाहे कुछ भी हो जाए।'

लेकिन क्या होगा अगर यह महज़ माफ़ी न हो? क्या होगा अगर यह उससे कहीं ज़्यादा हो? एक और जाल? सीता माँ ने अपने गले में पहने माणिक्य को घूरते हुए देखा, और लक्ष्मण के मन में सवाल उठने लगे...

इस राक्षसी ने उनके लिए और क्या योजना बनाई है?

11. मेघनाद

'घुटने टेककर मेरे चरणों को चूमो।'

लड़की ने सिर झुकाया और ठीक वैसा ही किया जैसा उसे आदेश दिया गया था।

इंद्र के साथ उनके मिलन को कुछ दिन बीत चुके थे और आज उनके नए नाम के लिए उनका राज्याभिषेक था...

लेकिन बाहर जश्न मनाने के बजाय, वह अपने कमरे में था जहाँ नग्न स्त्रियाँ इधर-उधर घूम रही थीं। वे अप्सराएँ थीं - इतनी सुंदर युवतियाँ, जो बोलती नहीं थीं, उसकी आँखों में आँखें डालकर नहीं देखती थीं, बल्कि अपने स्वामी के आदेश का पालन करती थीं।

लड़की ने फिर से उसके पैर चूमे और वह हँसते हुए अपनी कुर्सी से आगे झुका और उस औरत के होंठों पर चुंबन किया। 'आह,' वह आनंद से कराह उठा, 'मुझे यह आज़ादी बहुत पसंद है। क्या तुम जानती हो...' उसने उसका ठोड़ी पकड़ लिया, थोड़ा ज़ोर से, लेकिन उसने विरोध नहीं किया क्योंकि वह उसकी दासी थी। 'यहाँ अपनी

जगह बनाने के लिए मैंने कितना कुछ खोया है? मैंने एक ऐसे आदमी को मार डाला जिसे लोग भगवान मानते हैं और आज उसे सबके सामने सूली पर चढ़ाया जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने मेरे पिता को चढ़ाया था। तुम जानती हो मैं क्या हूँ?'

लड़की चुप रही।

मेघनाद की मुस्कान गायब हो गई और डर से चीखती हुई महिला की ठुड्डी पर उसकी पकड़ और कस गई। 'बोलो, नीच।'

'हे भगवान?' उसने घबराकर जवाब दिया।

'नहीं। मैं वो आदमी हूँ जिसे तुम भगवान को मारने के लिए बुलाती हो।' उसने हंसते हुए अपनी पकड़ ढीली की और उसे नीचे धकेल दिया।

मेघनाद अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया, जबकि तीन महिलाएं उसके पैर से लिपट गईं और उसे पालतू जानवरों की तरह चूमने और चाटने लगीं। उसने साइड टेबल से शराब का गिलास उठाया और उसमें से घूंट भरते हुए अपने नए नामकरण समारोह में कही जाने वाली सभी बातों के बारे में सोचने लगा।

मेरे पिता मुझ पर बहुत गर्व करते।

दशानन के बिस्तर पर आराम करने के बाद से वह अपने पिता से नहीं मिला था। लेकिन उसने अपनी माँ से सुना था कि उसके पिता को उस पर गर्व है।

वह आज सबके सामने बताएगा कि मैं कितना महान हूं।

दरवाजे पर दस्तक हुई थी।

मेघनाद ने महिलाओं को भगा दिया और अपने कपड़े पहनने लगा—अपनी धोती और एक लंबी सुनहरी शेरवानी। फिर वह दरवाजे की ओर बढ़ा और उसे थोड़ा सा खोला, जहाँ उसने सात फुट लंबे, चौड़े कंधों वाले एक राक्षस को देखा, जो आगे से गंजा था, लेकिन पीछे लहराते बाल थे। उसकी आँखें धँसी हुई थीं, मानो वे बड़े, लटके हुए एयर बैग हों।

वह कुंभकरण थे—दशनन के दूसरे भाई, मेघनाद के चाचा और लंका के सेनापति। एक सम्मानित वैज्ञानिक, आविष्कारक और राजकुमार के गुरु।

'अब समय आ गया है।' उनकी आवाज भारी थी।

'बहुत बढ़िया।'

'क्या अंदर कोई मेहमान है?' कुंभकरण ने पूछा।

मेघनाद ने मुस्कुराते हुए दरवाजा बंद कर दिया। 'कोई खास व्यक्ति नहीं।'

वे मोमबत्ती की रोशनी से जगमगाते गलियारों में आगे बढ़ने लगे, जिन पर राक्षस साम्राज्य के प्रतीक चिन्ह चमक रहे थे। उनकी परछाइयाँ नाच रही थीं, मेघनाद की फुसफुसाहट से थोड़ी देर के लिए रुक गईं: 'तो कैसा दिख रहा है? तैयारियाँ?'

कुंभकरण ने अपने हाथ पीछे बांध रखे थे। 'हमेशा की तरह शानदार, बच्चे। तुमने अच्छा किया।' मानव जाति में उन्हें विशालकाय माना जाता था, भले ही उनकी लंबाई सामान्य असुर के बराबर ही थी। लेकिन वामन अवतार के साथ युद्ध के बाद असुर लगभग विलुप्त हो चुके थे।

मेघनाद को खुशी का एहसास हो रहा था।

'भले ही आज आपके पिता यहां नहीं हो सके।'

मेघनाद ने हैरानी भरी नजरों से उसे देखा। 'ऐसा क्यों? अमरावती से लौटने के बाद से तो मेरी उससे मुलाकात ही नहीं हुई।'

मुझे पता है। उसे किसी ज़रूरी काम से जाना पड़ा था।

'आज का दिन महत्वपूर्ण था।' मेघनाद को धोखा महसूस हुआ; गुस्सा आया। वह अपने पिता की उपस्थिति चाहता था। 'मेरे लिए। उन्हें यह समझना चाहिए था।'

और वो करता भी है, बेटा। उसे तुम पर गर्व है। लेकिन मीनाक्षी ने उसे जनस्थान से फोन किया था। उसने एक कौआ भेजा था। लगता है उसने उसे कुछ ऐसा बताया था जिसकी वजह से वो कुछ दिन पहले जल्दी में आ गया था।

महान!

और मेघनाद को तो पता भी नहीं चला। उसे अंधेरे में रखा गया, लेकिन इसमें उसकी भी गलती थी - वह पिछले कुछ दिनों से अपनी जीत का जश्न मनाते हुए, अपने कमरे में मौजूद महिलाओं के साथ इतना व्यस्त था कि उसे नींद नहीं आ रही थी।

कुंभकरण ने आगे कहा, 'वह चाहता है कि तुम नागलोक के लिए रवाना हो जाओ।'

'क्यों?' वह रुका।

'कोई फर्क नहीं पड़ता कि!'

'मेरे पास कोई विकल्प नहीं है, है ना?' वह मन ही मन बड़बड़ा रहा था। वह अपने गुस्से को खुद पर हावी होने दे रहा था।

नामकरण से ज़्यादा महत्वपूर्ण और क्या हो सकता है? मेघनाद सोचने लगा। लंबे नाखूनों वाली सुपर्निका ने कौवे के संदेश में क्या कहा था? वह उत्सुक था।

'और माँ? क्या वो भी चली गईं?'

‘वह उसके साथ चली गई। तुम्हें पता ही है रानी कैसी होती है, बच्चे।’

हमेशा अपने पति का पक्ष लेने वाली, अपने बच्चों के प्रति उदासीन। मेघनाद को इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। 'और मुझे यकीन है कि अतिकया भी अब इस दुनिया में नहीं है।' उसने दशानन के लाडले बेटे का जिक्र करते हुए कहा।

'हां।' गलियारे के अंत तक पहुंचते ही उसने उदास भाव से सिर हिलाया।

‘फिर और कौन बचा?’

‘मैं,’ कुंभकरण ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा और मेघनाद तुरंत उसके शब्दों में छिपी जहरीली बात समझ गया। उसने अपने करीबियों के सामने सावधान रहने के लिए अपनी जीभ दबा ली। ‘और अक्षय। तुम्हारे पिता ने उसे किष्किंधा जाने को कहा है। जाहिर है, वाली अपने राज्य के आसपास के विद्रोही गुटों से निपटने के लिए दशानन की मदद चाहता था और तुम्हारे पिता को लगता है कि सबसे छोटे शावक को भेजना ही समझदारी है। लेकिन अक्षय ने कहा कि वह इस राज्याभिषेक के बाद ही वानर राज्य के लिए रवाना होगा।’

‘अक्षय, मेरे प्यारे भाई!’ मेघनाद मुस्कुराया, लेकिन वह अब भी निराश था, क्योंकि वह बाहर निकला जहाँ एक विशाल खुले न्यायालय भवन के चारों ओर भीड़ जमा थी। बीच में एक झंडा फहराया गया था और रक्षक एक सुनहरे चबूतरे के चारों ओर मंडरा रहे थे, जिसके केंद्रीय स्तंभों पर लंबे-लंबे बैनर लगे हुए थे।

मेघनाद कुंभकरण के साथ चबूतरे पर चढ़े, तभी उन्होंने अक्षय को जमीन पर बैठे अनेकों लोगों के बीच ताली बजाते देखा। लंका की राजधानी लंकापुरी के सभी राक्षस और राक्षसनियां अक्षय की ओर देख रहे थे और मेघनाद अपने इस कार्य पर प्रसन्न होना चाहते थे... लेकिन वे प्रसन्न नहीं हुए।

उनके पिता यहाँ नहीं थे।

केवल बाकी लोग ही थे।

और उसे अपने लिए दुख हुआ क्योंकि उसके बिना, यह कभी भी पर्याप्त नहीं था।

लेकिन मैदान के बीचोंबीच, लंबे धातु के खंभे में, उसने अपना इनाम देखा: घायल गर्जन देवता, देवों के राजा - इंद्र, जिनका सिर झुका हुआ था और उनके चिकने, गंदे बाल उनके नग्न शरीर पर बिखरे हुए थे। वे कमजोर दिख रहे थे, उनकी पीली त्वचा से पसलियां उभरी हुई थीं।

जब कुंभकरण ने राजकुमार मेघनाद की वीरता और महानता का बखान किया, तो उन्होंने देखा कि हर कोई उनसे कितना प्रभावित था। और ये केवल राक्षस ही नहीं थे, बल्कि मानव, पिशाच और म्लेच्छ जाति के लोग भी थे—हर वर्ग और जाति के लोग उनके नाम पर जीवन व्यतीत करते और आनंदित होते थे।

मेरे पिता यहाँ नहीं हैं।

वह किसी जरूरी काम से गया होगा। वरना वह नहीं जाता।

मैं उसकी स्वीकृति पाने के लिए सब कुछ करता हूँ, और बदले में मुझे केवल उसकी अनुपस्थिति ही मिलती है...

फिर भी, वह जानता था कि उसे अपने पिता की सेवा करनी है, इस सिंहासन की सेवा करनी है और इस साम्राज्य की सेवा करनी है क्योंकि वह इसमें विश्वास करता था, क्योंकि उसे इसमें आस्था थी। क्योंकि जीवन में उसके लिए इसके अलावा और कुछ भी मायने नहीं रखता था।

वह किसी और के लिए खड़ा नहीं हुआ।

और इसलिए उसने अपने गुस्से को दबा दिया, उसे अंदर ही अंदर सुलगने दिया।

कोई बात नहीं। ऐसा होता रहता है। मुझे इसके साथ जीना होगा। वह हमेशा से मेरे जीवन में अनुपस्थित रहा है।

जब से उसने तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में भाग लेना बंद किया, तलवारबाजी के प्रशिक्षण से लेकर उसकी पहली जीत तक—वह कभी भी उसे देखने के लिए मौजूद नहीं था। वह हमेशा उसे बधाई देता था, लेकिन कभी भी स्वयं उपस्थित नहीं हुआ।

जब कुंभकरण ने मेघनाद का हाथ पकड़कर ऊपर उठाया तो उसने अपनी नाक के नथुने फुला लिए।

‘अब से, उसकी वीरता और शौर्य के लिए, उसे ...’ कुंभकरण ने घोषणा की, ‘रावणपुत्र इंद्रजीत – अमरावती का विजेता, इंद्र का संहारक!’ और उसने अपना खाली हाथ भूखे-प्यासे इंद्र की ओर इशारा किया, जो बेहोश होकर खंभे से बंधा हुआ था।

सबने उनके लिए तालियाँ बजाईं। और मेघनाद ने किसी तरह मुस्कुराते हुए जनता की ओर हाथ हिलाया, जब उन्होंने वे दो शब्द सुने जो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई उनसे कहने की हिम्मत करेगा: 'हम आपत्ति जताते हैं!'

12. सुपर्निका

वह आ रहा था।

जनस्थान स्थित अपने महल के खाली, अंधेरे गलियारों में गूंजते उसके भारी कदमों की आहट उसे सुनाई दे रही थी। लेकिन वह विचलित नहीं हुई। उसकी योजना पूरी तरह से तैयार थी। वह लोहे की जाली वाली खिड़कियों और बैंगनी पर्दों से शहर को देख रही थी, जिनसे उसकी दृष्टि बाधित हो रही थी।

यह शहर अपने गुंबदनुमा वास्तुकला को छोड़कर बाकी शहरों जैसा ही था। मीनारों की जगह इसमें अर्धवृत्ताकार, गेंद के आकार के परिसर थे जो लोगों के घरों का काम करते थे। यहाँ अधिकतर मानव जाति के लोग रहते थे, कुछ वानर और राक्षस भी थे। आसमान में बादल छाए रहते थे और शहर के बाहरी इलाके में रेगिस्तान फैला हुआ था, जहाँ विशाल मेहराबदार दीवारें खड़ी थीं। इसके आगे दंडक वन फैला हुआ था, जहाँ वानर साम्राज्य किष्किंधा छिपा हुआ था, जो यहाँ से दिखाई नहीं देता था।

नीचे, अपने महल के पास, उसने दशानन के आदमियों को देखा। वे उसके पुष्पक विमान के पास थे, और अपनी जान की बाजी लगाकर उसकी रक्षा कर रहे थे।

वह अपनी पत्नी से भी ज्यादा उस मशीन से प्यार करता है।

दरवाजा दोनों तरफ से जोर से टूटकर खुल गया, उसकी आवाज उसके कानों में चुभ गई और उसे लगा जैसे उसकी धड़कन रुक गई हो।

मुझे इस मामले में सावधानी बरतनी होगी।

उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा, बल्कि शांत रही और अपने भाई की आँखों में आँखें नहीं मिलाईं—जिसे वे रावण कहते थे। उसने यह ख्याति इसलिए कमाई थी क्योंकि वह जहाँ भी जाता, लोग डर के मारे चीखने लगते थे।

लेकिन भीतर ही भीतर मीनाक्षी उसे किसी और से ज़्यादा जानती थी। एक सीधा-सादा, संस्कारी लड़का, उससे अलग गोरा, दिल से कवि, धर्मनिरपेक्ष, लेकिन उसकी एक बड़ी कमजोरी थी: औरतें। उसकी वासना हमेशा उस पर हावी हो जाती थी और यह एक ऐसा दोष था जिसे वह बोझ की तरह अपने कंधों पर ढोता था।

'क्या यह सच है?' पीछे से एक गरजती हुई आवाज आई, लेकिन मीनाक्षी मुड़ी नहीं।

'हाँ।'

जैसे-जैसे उसका भाई उसके करीब आता गया, उसे अपने पीछे उसकी परछाई महसूस होती गई, उसकी कठोर, दागदार उंगलियां उसके कंधों को छूती हुई उन पर टिक गईं। हालांकि, पर्दों की छाया ने उसके चेहरे को ढक रखा था - उसके आकर्षक, दाढ़ी वाले चेहरे को।

“लेकिन मंदोदरी को पूरा यकीन है कि उसने शिशु को मरते हुए देखा था।” उसने उसके कानों में फुसफुसाते हुए कहा।

'शायद उसकी आँखों ने झूठ बोला।' उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। 'तुमने मुझे बताया था कि बच्चे के पास ताबीज था?'

'जन्मजात उपहार, हाँ।'

‘एक रूबी?’

‘लंका की गहराइयों से।’ दशानन ने आगे कहा।

मैंने देखा। उसने इसे पहना हुआ था।

उसने आह भरी, उसकी गहरी, भारी साँस मीनाक्षी के कानों में धीरे से गूंजी। 'वह किसके साथ थी?'

‘अयोध्या से निर्वासित राजकुमार।’

‘राघव राम,’ उनकी आवाज भारी हो गई, उसमें गुस्सा झलक रहा था। ‘मैं उसे जानता हूँ। वह एक अच्छा आदमी है। लेकिन एक सक्षम शासक नहीं।’

अच्छा आदमी? मुझे उसके बारे में उसकी धारणा बदलनी होगी।

‘मुझे पता है। तुम क्या करोगी?’ मीनाक्षी ने आगे पूछा।

और तभी उसके भाई की परछाई उससे ओझल हो गई और मीनाक्षी ने गहरी सांस ली। उसका सिर थोड़ा घूमकर देखने पर पता चला कि दशानन अपने भारी-भरकम शरीर को उठाकर कुर्सी पर रख रहा है, धुंधले कमरे की परछाई अभी भी उसके चेहरे को ढके हुए है। 'मुझे नहीं पता। मैं क्या करूं? मंदोदरी आप पर विश्वास नहीं करती।'

‘वह ऐसा कभी नहीं करती। लेकिन क्या मैं हमेशा सही नहीं रहा हूँ?’

दशानन ने उदास भाव से सिर हिलाया। मीनाक्षी उस अंधेरे कमरे में तनाव महसूस कर सकती थी—वह बहुत बेचैन थी। वह दशानन की दुविधा को भांप गई। ‘भरत पहले से ही हमारे लिए एक समस्या है। वह हमारे सहयोगी राज्यों से लड़ रहा है और हमारी सीमाओं को नष्ट कर रहा है। अगर उसे पता चल गया कि मैंने सीता के साथ क्या किया है, तो वह हमें नष्ट करने के लिए अपने प्रयास और भी बढ़ा देगा।’

‘क्योंकि वह अपने भाई से प्यार करता है?’

'हाँ।'

दशानन पीछे की ओर झुक गया, उसका सिर आगे की ओर निकला हुआ था, उसका शरीर पूरी तरह से ढीला पड़ गया था। मीनाक्षी उसके पीछे जाकर खड़ी हो गई और उसकी गर्दन में बाहें डाल दीं, साथ ही उसने एक गहरी साँस ली। हालाँकि उसके मन में उसे जान से मारने की तीव्र इच्छा थी, पर वह जानती थी कि वह इतनी शक्तिशाली नहीं है। दशानन उसके लिए बहुत ताकतवर था।

और वह बहुत डरी हुई थी।

उसे शब्दों से खेलना पसंद था, लेकिन अपने दुश्मन, अपने भाई को इतना करीब देखकर, उसे अपने किए पर थोड़ा पछतावा भी होने लगा - वह हेरफेर कर रही थी और वर्षों पहले किए गए एक अपराध के लिए एक अनावश्यक युद्ध शुरू कर रही थी।

क्या मैं यहाँ गलत हूँ? क्या मैं क्षमाशील हो सकता हूँ?

नहीं।

‘तुम क्या करने वाले हो?’ उसने उससे दोबारा पूछा।

‘मुझे नहीं पता।’ उसने कहा, उसका सिर उसकी ओर मुड़ा और उसकी लाल आँखें अंधेरे में चमक उठीं।

मीनाक्षी को महसूस हो रहा था कि उसकी योजना विफल हो रही है। और उसे कुछ करना ही था। 'खारा की हत्या कर दी गई है।'

‘मैंने सुना।’ दशानन ने हार मानकर आह भरी।

‘उसे राघव ने मारा था।’ उसने उपहास उड़ाते हुए कहा।

दशानन ने गुस्से से मानो मानव के हाथों मारे जाने का क्रोध उमड़ पड़ा हो, तुरंत ही सामने की मेज पर मुट्ठी पटकी। फिर भी, उसकी आवाज़ संयमित और शांत थी जब उसने कहा: “यह सुनकर मैं पूरी रात रोया, लेकिन तुम मेरा नियम जानते हो। अगर हमारे परिवार का कोई राक्षस युद्ध में मरता है, तो हम उसका बदला नहीं लेते क्योंकि वह अपने कर्मों का फल भुगत रहा है। इसलिए चाहे कितना भी दुख हो, उसे यही मिलना चाहिए था।”

मीनाक्षी अपने भाई के मूर्खतापूर्ण नियमों से अवगत था। लेकिन फिर भी, अपने अनुशासन के कारण ही वह पूरे इल्लावर्ती पर विजय प्राप्त करने और भगवान शिव के

लिए मंदिर बनवाने में सक्षम हुआ। उससे पहले, राक्षसों को अनैतिक, जंगली जानवर माना जाता था।

'इतने कम आदमियों के साथ जाकर वह इतना मूर्ख कैसे हो सकता है?' दशानन ने पूछा।

'वह बहुत जल्दबाज़ था। मुझे समझ नहीं आता क्यों,' मीनाक्षी ने अपनी मुस्कान छुपाते हुए कहा। 'मुझे लगता है राघव तुम्हारी भविष्य की योजनाओं में कांटा बनने वाला है। और क्या तुम्हें सच में लगता है कि सीता उसके साथ सुरक्षित है? वह तो उससे भी ज़्यादा खतरे में है।'

दशानन ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उनकी चुप्पी ने बहुत कुछ कह दिया।

'भाई, अगर वो वही है जो हम सोच रहे हैं, तो कृपया उसे वहीं वापस ले आओ जहाँ वो होनी चाहिए, उस आदमी के पास जिसने हमारे भाई को मारा।' मीनाक्षी कुर्सी के पास घुटनों के बल बैठ गई, दया की भीख मांगते हुए उसके पैरों पर हाथ रख दिए। 'अगर वो सीता के वंश के बारे में जानने के बाद उसे नुकसान पहुँचाए तो क्या होगा?'

दशानन ने फिर से मुट्ठी पटकी। 'तुम सही कह रहे हो। मुझे उसे बचाना ही होगा।'

अंत में।

'तुम किसके साथ जाओगे? तुम्हें अकेले ही जाना चाहिए।' मीनाक्षी ने उसे समझाया क्योंकि अकेले जाने से उसकी असमय मृत्यु हो सकती थी।

'नहीं। मारीची, विद्याधर मेरे साथ होंगे।' उन्होंने जनस्थान के दरबार के मायावी और जादूगर का जिक्र किया। 'और मेरा पुत्र अतिकाय भी। साथ ही, मेरी सेना की एक टुकड़ी भी। मैं अकेला नहीं जाऊंगा। मैं राघव का सिर लेकर आऊंगा और सीता को सुरक्षित वापस लाऊंगा।' वे खड़े हो गए। मीनाक्षी ने उनके बगल में खड़े होकर उनका पूरा चेहरा देखा और उनके चेहरे पर एक कोमल, उदास मुस्कान थी। 'लेकिन क्या यह सचमुच वही हैं?'

'हां। यह वही है।'

'मैं भी माणिक देखना चाहता हूँ। राघव के विरुद्ध युद्ध छेड़ने से पहले मैं उसे देखकर अपने संदेह दूर करना चाहता हूँ, क्योंकि युद्ध छेड़ने का अर्थ होगा भारत के विरुद्ध युद्ध। इसके लिए मुझे पहले भेष बदलना होगा।' वह मन ही मन योजना बना रहा था।

लेकिन मीनाक्षी का मानना था कि अगर वह अपनी सेना के साथ भी जाएगा तो मारा जाएगा, क्योंकि राघव विष्णु का अवतार था।

उन्होंने आगे कहा, 'मैं निश्चित रूप से जानना चाहता हूं कि मिथिला की राजकुमारी वही बच्ची है जिसे मैंने कई साल पहले खो दिया था। मैं जानना चाहता हूं कि क्या वह वास्तव में मेरी बेटी है।'

13. मेघनाद

यह ब्राह्मणवाद नामक एक धार्मिक संप्रदाय था।

वे ही लोग आपत्ति जता रहे थे।

मेघनाद ने सफेद वस्त्र धारण किए हुए ऋषियों को भीड़ के बीच से मशालें लिए हुए प्रवेश करते देखा। उनके आगे उनके एक अधेड़ उम्र के, झुर्रियों वाले नेता थे जिन्हें मेघनाद जानता था - गुरु प्रचेता।

प्राचेता ब्राह्मण धर्म के एक लोकप्रिय प्रचारक थे, जो इल्लावर्ती परंपरा का पालन करते हुए भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु की पूजा करते थे। प्राचेता का संप्रदाय केवल प्राकृतिक देवताओं की ही पूजा नहीं करता था, बल्कि वे स्वयं लंका के मानव समुदाय के प्रवक्ता भी थे।

और यही एक समस्या थी।

'आपको किस बात पर आपत्ति है?' मेघनाद ने चबूतरे से ही पूछा। भीड़ ने अब हूटिंग नहीं की।

'हमारे समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचा रहे हो,' प्रचेता ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, हालाँकि उसकी आँखों के ऊपर बहुत कम बाल बचे थे। वह ऐसे शिक्षक जैसा लग रहा था जिसके अधीन कोई भी सीखना नहीं चाहेगा, क्योंकि वह बहुत सख्त और मनमानी करने वाला था। 'वह आदमी...' उसने रोचना की ओर इशारा करते हुए कहा, '... हमारा देवता है, कम से कम वह हमारे देवता की उपाधि धारण करता है... भगवान इंद्र।'

मेघनाद ने हैरानी से कहा, 'वह एक राजा है! वह देवता नहीं है। देवता इस तरह पराजित नहीं होता।'

‘लेकिन उनकी उपाधि तो देवत्व का प्रतीक है!’ प्रचेता क्रोधित होकर बोला। ‘भगवान दशानन ने हमसे वादा किया था कि इस द्वीप पर हमारे धर्म का सम्मान किया जाएगा। वास्तव में, वे हमारे ही एक देवता – भगवान शिव – के अनुयायी हैं।’

मेघनाद दांत पीसते हुए असहाय होकर कुंभकरण की ओर देखने लगा। लेकिन इससे पहले कि कुंभकरण कुछ कह पाता, मेघनाद ने प्रचेता से कहा, 'उससे बात करो। मुझे परवाह नहीं। उसने मुझे तुम्हारे देवता को शहर के बीचोंबीच स्थापित करने की अनुमति दी है, इसलिए मुझे यकीन है कि जब तुम उसे इस पूरे दृश्य के बारे में अपनी शंकाएं बताओगे, तो वह तुम्हारा साथ नहीं देगा।'

तभी प्रचेता को एहसास हुआ कि वह एक पोखर में है।

दशानन ने सब कुछ राजनीति के नाम पर किया। और मेघनाद जानता था कि दशानन लंका में सभी धर्मों को स्वीकार करने के लिए तैयार था, क्योंकि इससे असहिष्णुता कम होगी और विद्रोह भी कम होंगे। यह सब शांति के नाम पर किया गया था।

‘महामहिम,’ प्रचेता ने फुसफुसाते हुए कहा, ‘क्या आप पहले हमारी बात सुन सकते हैं?’ वह सावधानी से आगे बढ़ा। ‘तो हमारे पास एक प्रस्ताव है।’

मेघनाद बूढ़े व्यक्ति की बात सुनने के लिए आसन से आगे झुका। 'स्पष्ट कीजिए, गुरुजी। मैं व्यापारिक सौदों को सुनने के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ।'

प्रचेता ने अपने आसपास का जायजा लेते हुए हताशा से कहा, 'आपको यह समझना होगा कि बहुत से मानव जो वर्षा के लिए भगवान इंद्र की पूजा करते हैं, इस तरह के विधर्म से भयभीत हैं। और वे इस मुद्दे को हमारे सामने लाए हैं। और अगर आप इसे नहीं बदलते हैं, तो वे विद्रोह शुरू कर देंगे।'

‘क्या तुम मुझे धमकाने की कोशिश कर रहे हो?’ मेघनाद ने अपने जबड़े भींच लिए।

नहीं, महाराज। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि आपको इस बारे में समझदारी से काम लेना होगा। मुझे पता है कि यह दिन आपके लिए महत्वपूर्ण है। दरअसल, आपने अकेले दम पर एक युद्ध जीता है। लेकिन अगर मैं कहूँ कि मैं आपको इससे भी अधिक मूल्यवान कुछ दे सकता हूँ तो कैसा रहेगा?

मेघनाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'मैं सुन रहा हूँ।'

‘हम निकुम्बिला में एक सीरम विकसित कर रहे हैं।’

मेघनाद की निगाहें दक्षिण की ओर घास से ढकी पहाड़ियों पर टिक गईं, जो पृष्ठभूमि में लावा से भरे ज्वालामुखियों से बहुत दूर थीं। 'एक सीरम?'

'यह सोमास जैसा है। यह उन सभी जड़ी-बूटियों और पौधों का मिश्रण है जो हमें इलवार्टी में मिले हैं, जो दुर्लभ किस्म के हैं।'

'एक धार्मिक व्यक्ति जो विज्ञान में रुचि रखता है?' मेघनाद मुस्कुराया।

प्रचेता को विज्ञान से प्रभावित व्यक्ति के रूप में देखे जाने पर खुशी नहीं थी, लेकिन उसने अपनी बात जारी रखी। 'यह बहुत शक्तिशाली और नशीला भी है। यह कोशिकाओं के पुनर्जनन के लिए अच्छा है। आपके घाव जल्दी भरेंगे। अगर यह सब खत्म होने के बाद मैं आपको वहां ले जाऊं तो मैं आपको इसके बारे में सब कुछ बता सकता हूं।'

और बदले में मुझे सबको यह कहना होगा कि मैं आपसे सहमत हूँ और इंद्र स्वर्ग वापस चला जाता है?

'हां, जनता के लिए।'

मेघनाद एक कठिन दुविधा में फंसा हुआ था। एक तरफ उसकी प्रतिष्ठा का सवाल था, तो दूसरी तरफ यह शक्तिशाली सीरम। वह यह भी जानता था कि प्राचेता अपनी इच्छानुसार किसी भी प्रकार की औषधीय जड़ी बूटी बना सकता है और दशानन उसके नवाचारों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, बल्कि वास्तव में उन्हें बढ़ावा देगा।

'ठीक है,' मेघनाद ने सिर हिलाया और चबूतरे पर खड़ा रहा, तभी कुंभकरण उसके करीब आ गया।

मेघनाद ने उसे प्रचेता के साथ हुए सौदे के बारे में बताया और अंत में कुंभकरण ने कहा: 'यह सिर्फ सीरम के लिए मत करो। अपने पिता के लिए और इस शहर की शांति के लिए करो। मुझे लगता है कि वह हमारे मानव समुदाय की भावनाओं को आसानी से भूल गया और इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। वह बहुत व्यस्त था। हम ऐसा नहीं कर सकते...' उसने इंद्र के शरीर की ओर इशारा करते हुए कहा, '...हम ऐसा नहीं कर सकते। यह गलत है। मुझे इसके बारे में पहले सोचना चाहिए था। मैं क्षमा चाहता हूँ।'

मेघनाद ने सिर हिलाया। उसे नहीं पता था कि वह जो कर रहा था वह लोगों के लिए था या सीरम के लिए।

लेकिन फिर भी उसने ऐसा कर दिया।

‘इसे नीचे लाओ,’ उसने अपने अंगरक्षकों को आदेश दिया और सभी को संबोधित करते हुए कहा, ‘मुझे खेद है, देवियों और सज्जनों, लेकिन हमें सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए और यह शर्म की बात है कि मैंने ऐसा नहीं किया। वास्तव में, स्वार्थी होकर और केवल अपनी खुशी के बारे में सोचकर मैंने दूसरों की भावनाओं की घोर उपेक्षा की।’

पहरेदार उसे नीचे खींच रहे थे और भीड़ खामोश, लगभग निराश सी थी। लेकिन गुरु प्रचेता मुस्कुरा रहे थे, क्योंकि आज उनकी जीत हुई थी।

मेघनाद ने अपने अंगरक्षकों को आदेश दिया, “इसे स्वर्ग वापस भेज दो। इसे विमान में बिठाकर ले जाओ।” अक्षय और कुंभकरण के साथ चबूतरे की सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए उसने अपना सिर हिलाया।

मेघनाद के हालिया आदेशों का पालन कर रहे शहर के कमांडर के पास पहुँचते ही उसने लगभग दबी आवाज़ में कहा, ताकि कोई उसे सुन न सके: 'उसे वापस मत भेजो। उसे कोठरी में ही मार डालो और उसके शव को ठिकाने लगा दो। लेकिन किसी को पता नहीं चलना चाहिए। ठीक है?'

कमांडर ने सिर हिलाया।

मेघनाद ने मुड़कर अपने चाचा और भाई को देखा, जो स्तब्ध थे और उन्होंने स्पष्ट रूप से मानव समुदाय के प्रति उसके विश्वासघात को सुन लिया था। 'क्या? एक आदमी को वही करना पड़ता है जो उसे करना चाहिए, है ना?'

14. लक्ष्मण

'मदद करना!'

उसने यह सुना।

उसने भी ऐसा ही किया।

और उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा।

जंगल से आ रही आवाज को सुनकर लक्ष्मण ने अपनी आंखें सिकोड़ लीं - यह वही जंगल था जिसमें राघव आज रात के भोजन के लिए खरगोश का शिकार करने गया था।

‘क्या वो वही थे?’ सीता माँ लक्ष्मण के बगल में खड़ी थीं। ‘हाँ, बिल्कुल वही हैं।’

बिल्कुल, ऐसा ही था। लक्ष्मण लकड़ी काट रहा था जिसका इस्तेमाल वे अपने लिए एक नई कुटिया बनाने में करेंगे। लेकिन वह जानता था कि उसे जंगल में जाना होगा।

लेकिन तभी सीता मां जंगल की ओर दौड़ने लगीं। लक्ष्मण ने उनका हाथ पकड़ लिया और वे रुक गईं, उन पर गुर्राते हुए बोलीं, 'क्या! हमें उसकी मदद करनी होगी।'

मुझे पता है, मुझे पता है। लेकिन राघव तुम्हें खोने का जोखिम नहीं उठा सकता।

सीता मां ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ‘मैं नहीं मरूंगी। लेकिन अगर हमने अभी कुछ नहीं किया, तो वह मर जाएगा।’ लक्ष्मण सोच में पड़ गया, जबकि सीता उसे डांट रही थी। ‘अगर उसकी मृत्यु हुई, तो इसका दोष तुम्हारा होगा!’ उसकी चौड़ी, काजल लगी आंखों ने लक्ष्मण को भयभीत कर दिया। लक्ष्मण को उसके शब्दों में जहर महसूस हो रहा था।

‘मैं जाऊंगा।’ लक्ष्मण दुविधा में फंस गए थे कि उन्हें अपने भाई की बात माननी चाहिए जिसने उन्हें सीता मां के साथ रहने के लिए कहा था या उन्हें अपने कर्तव्य को दरकिनार करके अपने भाई की मदद करने जाना चाहिए।

सीता ने अपने जबड़े भींच लिए। लक्ष्मण समझ गया कि वह इस जगह पर नहीं रहना चाहती, बल्कि जंगल में अपने पति की रक्षा करना चाहती है। 'मैं भी आपकी मदद कर सकता हूँ।'

‘मुझे पता है तुम कर सकते हो। लेकिन अगर राक्षस हों तो...’ और लक्ष्मण ने अपनी बात को दोबारा सुनकर उसका औचित्य साबित करना जारी रखा।

‘लक्ष्मण! मदद करो!’

लक्ष्मण का दिल मुंह में आ गया। उसके माथे से पसीने की बूंदें टपकने लगीं।

‘मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे कारण मेरे पति की मृत्यु हो!’ और वह लक्ष्मण की बात अनसुनी करते हुए आगे बढ़ने लगी।

'कम से कम जंगल के अंदर रहते हुए मेरे करीब रहना,'

सीता माता ने लक्ष्मण का हाथ थाम लिया, जबकि लक्ष्मण आगे-आगे चल रहे थे। उनके बीच कड़वाहट बढ़ती जा रही थी। सीता माता लक्ष्मण को ज़्यादा पसंद नहीं करती थीं। शायद इसलिए क्योंकि उन्होंने सीता की बहन उर्मिला का साथ छोड़कर अपने भाई के वनवास के दौरान उनका साथ दिया था।

एक भाई होने के नाते, उसका पीछा करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं था। एक पति होने के नाते, तुम्हारा कर्तव्य मेरी बहन के साथ रहना था। अगर तुम इतना आसान काम भी नहीं कर सकते, तो मुझे नहीं पता कि हम तुम पर भरोसा कर सकते हैं या नहीं— क्योंकि तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जो अपने साधारण कर्तव्यों से भागता है और अपनी मर्जी से काम करता है, न कि वह जो उसे करना चाहिए।

उसके ये शब्द लक्ष्मण को आज भी चुभते थे।

जंगल घना और अंधेरा होता गया। कोहरा हर मिनट और भी घना होता गया। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, नारंगी सूरज की झलकियाँ गायब होती गईं और शाम ढलने लगी।

'राघव!' लक्ष्मण चिल्लाया।

लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

'हे भगवान!' सीता मां डर के मारे फूट-फूटकर रोने लगीं। 'हे भगवान, मुझे उम्मीद है कि वह जीवित हो।'

'वह ठीक हैं, मेरी पत्नी। वह ठीक हो जाएंगे।'

'आशा करो।'

'बस मुझे छोड़कर मत जाओ। चाहे कुछ भी हो जाए।' उसने सीता माँ की ओर देखा और उनके चेहरे पर अपने देवर के प्रति संदेह का भाव था।

मैं उसे मुझ पर भरोसा भी नहीं दिला पा रहा हूँ। बहुत खूब!

तभी उसे यह आवाज सुनाई दी, जब धूप में सूखे पत्ते उसके पैरों के नीचे चरमरा रहे थे। यह एक भयंकर गर्जना की आवाज थी - राक्षसों की गर्जना।

और देखते ही देखते जंगल के खुले मैदान से दर्जनों राक्षस निकल आए, जिनकी त्वचा काली थी, बाल तेल से सने थे और माथे पर सफेद रंग की लकीरें थीं, जो भगवान शिव के प्रति उनकी भक्ति को दर्शाती थीं। लेकिन उनके हथियार पीतल के बने थे, जो लक्ष्मण के धनुष-बाण और सीता माता के हंसिया जैसे साधारण हथियारों से कहीं बेहतर थे।

मंदबुद्धि आकाश में चमकते हुए, राक्षस उनके चारों ओर एक घेरे में जमा हो गए। और उनके बीच में, एक दुबला-पतला लड़का था जिसके हाथ में त्रिशूल था, कद में छोटा लेकिन स्वभाव से राजसी, कीमती गहनों से सजा हुआ।

‘उसे जाने दो। हमें उसकी ज़रूरत नहीं है।’ लड़के ने कहा। ‘लेकिन तुमने अंकल खारा को चोट पहुँचाई है, इसलिए तुम्हें शांति मिलनी चाहिए।’

लक्ष्मण ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने सीता माता की पहनी हुई चुन्नी ली और उसका एक सिरा अपनी कमर से बांध लिया, जबकि दूसरा सिरा सीता माता की कमर से बांध दिया, जिससे वे दोनों एक साथ सिमट कर बैठे। 'वह मेरे साथ रहती है। राघव कहाँ है?'

लड़के ने भावहीनता से कहा, 'उसके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है।'

लक्ष्मण सीता माँ की सिसकी सुन सकता था। वह अपने पति के लिए चिंतित थीं।

‘वह कहाँ है?’ वह चीख पड़ी।

‘मदद करो!’ राघव की आवाज घने जंगल से आई।

लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अच्छा, तुम्हें तुम्हारा जवाब मिल गया। अगर तुम चाहो तो जा सकते हो। हम तुम्हें कुछ नहीं करना चाहते।'

सीता मां ने लक्ष्मण से नजरें मिलाईं, तभी लक्ष्मण ने कहा: 'नहीं, मेरी देवी। यह एक जाल है।'

हर पल तनाव बढ़ता जा रहा था। लक्ष्मण सीता माँ को विचार करते हुए महसूस कर सकते थे, लेकिन जब उन्होंने एक और बात सुनी तो उनका निर्णय अंतिम हो गया।

'मदद करना!'

लानत है!

‘मुझे करना ही होगा। मुझे खेद है। मेरी निष्ठा उसके प्रति है। मुझे उसे बचाना ही होगा,’ सीता माँ ने दुख से अपना सिर झुकाया और फिर उन्हें बांधने वाली गाँठ तोड़कर वहाँ से भाग गईं। उनके गुजरने पर राक्षस कराह उठे, लेकिन राक्षस बालक ने कहा, ‘उसे जाने दो।’

लक्ष्मण अब अकेले थे और राक्षस उनके करीब आ रहे थे। वहीं दूसरी ओर, लड़का मुस्कुरा रहा था।

‘तुम यही चाहते थे, है ना?’ लक्ष्मण ने अपने जबड़े भींच लिए।

‘बिल्कुल।’ लड़के ने कहा। ‘तुम्हें और उसे अलग करना ज़रूरी था। पिताजी उससे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहते थे...’

पिता?

'आपके पिता कौन हैं?'

‘तुमने उसके बारे में तो सुना ही होगा। रावण।’

उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। लंका का कुख्यात राजा। मानव जाति का खौफनाक राक्षस।

‘अरे, और मेरे शिष्टाचार कहाँ गए? मैं अतिकाय हूँ, रावण दशानन का दूसरा सबसे छोटा पुत्र।’ अतिकाय मुस्कुराया। ‘और मुझे आपको मारने का आदेश दिया गया है,’ उसने विनम्रता से कहा।

लक्ष्मण ने तुरंत तीन बाण निकाले और मुड़कर एक के बाद एक तीन राक्षसों को मार गिराया। जैसे ही अन्य राक्षस पास आने लगे, वह पेड़ों की ओर छलांग लगा गया।

शाखाओं को पकड़कर वह शिखर तक पहुंचा और खुद को संतुलित करते हुए उसने अपने तीर निकाले और अतिकाया के आदमियों पर तीरों की बौछार कर दी।

लेकिन अतिकाया होशियार थी।

उसने अपने आदमियों को उस पर हथियार फेंकने का आदेश दिया।

और उन्होंने ऐसा ही किया—लक्ष्मण की ओर तलवारें चलाई जा रही थीं, लेकिन लक्ष्मण एक डाल से दूसरी डाल पर कूदकर उनसे बच रहे थे। गुरुकुल में उन्होंने कलाबाजी के बारे में जो कुछ भी सीखा था, वे यहाँ उसका उपयोग कर रहे थे...

उसका पैर लकड़ी के लट्ठे से फिसल गया। फिसलने से उसे ज़ोर का झटका लगा और वह तुरंत अपना संतुलन खो बैठा और ज़मीन पर गिर गया।

जैसे ही उसने उठने की कोशिश की, उसे कुछ दिखाई दिया।

एक त्रिशूल हवा में तेजी से आया और उसे भेद दिया!

त्रिशूल उसके सीने में घुसते ही उसके शरीर में एक तीव्र, झकझोर देने वाला दर्द दौड़ गया, जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसने देखा कि अतिकाय आराम से लक्ष्मण की ओर बढ़ रहा है और त्रिशूल को बाहर निकाल रहा है, जबकि लक्ष्मण मुश्किल से साँस लेते हुए त्रिशूल के तने से टिका हुआ है।

खून रिस रहा था और उसे महसूस हो रहा था कि उसकी जिंदगी धीरे-धीरे खत्म हो रही है।

'तुम्हें अपनी संख्या का अंदाजा नहीं होगा। हम बहुत ज्यादा हैं, जबकि तुम... तुम सिर्फ एक हो।'

लक्ष्मण ने अपनी आँखों के कोने से कुछ देखा। और वह जानता था कि वह क्या था। थकावट से भरी मुस्कान के साथ उसने कहा: 'नहीं... एक भी नहीं।'

‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ अतिकाया ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

और फिर अचानक आकाश से बाणों की वर्षा होने लगी। वे इतने तीव्र गति से और इतनी जबरदस्त ताकत से राक्षसों की ओर आ रहे थे कि वे इधर-उधर भागने लगे और यह समझने की कोशिश करने लगे कि वे कहाँ से आ रहे हैं।

हवा सरसराई और खुले मैदान से उछलकर बाहर आया - भगवान राघव प्रकट हुए।

लकड़ी की हल्की रोशनी में उसका प्रतीक चिन्ह चमक रहा था, और वह एक के बाद एक और तीर चलाकर राक्षसों को घायल कर रहा था।

अतिकाय स्तब्ध रह गया और लक्ष्मण अपनी हताश अवस्था में अतिकाय को भयभीत देख सका।

विष्णु के अवतार बड़ी सहजता से राक्षसों का इस हद तक शिकार कर रहे थे कि अतिकाय को पता चल गया था कि उनकी संख्या आधी हो गई है।

‘पीछे हटो! पीछे हटो!’

वह होशियार है। उसे पता है कि कब आत्मसमर्पण करना है।

अतिकया तुरंत ही बचे हुए लगभग एक दर्जन राक्षसों के साथ भाग निकला, और वे जंगल के अंधेरे में भाग निकले, अपने वंश के शवों को खून से सने धूल भरे खेतों में पीछे छोड़ते हुए।

राघव तुरंत लक्ष्मण के पास दौड़ा और उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया। 'भाई, तुम बहुत घायल हो...'

‘मैं ठीक हूँ।’ लक्ष्मण कराह उठा। मुझे ऐसा नहीं लगता। ‘सीता माँ कहाँ हैं?’

वह तुम्हारे साथ थी।

'नहीं, उसने आपकी मदद के लिए पुकार सुनी और वह उस दिशा में चली गई।'

राघव ने दांत पीसते हुए कहा, ‘मैंने मदद के लिए पुकारा नहीं। वह दुष्ट विद्याधर था। मैं खरगोश का शिकार कर रहा था, तभी वह बूढ़ा आदमी आया। उसने कुछ हल्की-फुल्की बातें कीं और फिर चला गया। शायद उसने मेरी आवाज की नकल की होगी। आप जानते ही हैं विद्याधर कैसे होते हैं? वे नकल करने में माहिर होते हैं। जब मैंने जंगल से कई बार अपनी ही आवाज सुनी, तो मैं उसका पीछा करते हुए उसके पास पहुंचा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हमारी लड़ाई हुई और जब मुझे पता चला कि वह दशानन की सेना से था, तो मैंने उसे मार डाला। उसके बाद मैं यहां आ गया। रास्ते में मुझे सीता नहीं मिलीं।’

‘जब तक कि... रास्ते में किसी ने उसे पकड़ न लिया हो,’ लक्ष्मण ने ज़मीन पर मुट्ठी पटकी। ‘हमें बहकाया गया। अतिकाय ने कहा कि वह मुझे और सीता माता को अलग करना चाहता था क्योंकि...’

और फिर उन दोनों को एक आवाज़ सुनाई दी। किसी मशीन के गरजते हुए इंजन की आवाज़। लेकिन यह ज़मीन से नहीं, बल्कि ऊपर से आ रही थी।

और उन दोनों ने विमान को देखा और विमान पर उन्होंने एक आकृति देखी, एक आदमी की परछाई।

और एक महिला।

राघव ने अपने स्तब्ध और भयभीत भाव से लक्ष्मण के साथ एक नजर साझा की, क्योंकि दोनों को एहसास हो गया था कि क्या हो रहा है - सीता मां का अपहरण कर लिया गया था।

15. मेघनाद

मेघनाद ने बीच में ही रुक गई बातचीत को याद करते हुए पूछा, 'नागलोक में क्या है?'

वे निकुंबिला पहाड़ियों के भीतरी हिस्से में पहुँच चुके थे, जहाँ हरे-भरे चरागाहों की सीढ़ियाँ थीं, बैंगनी रंग के पेड़ और काँटेदार लताएँ घनी छतरियों से लटक रही थीं। ज़मीन पर गिरे पतझड़ के पत्ते धूल भरी ज़मीन पर बिछे हुए थे, जो धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ते हुए ग्रेनाइट के मंदिरों तक जाती थी।

बाहर की शिलाएँ पथरीली थीं और मंदिर में कांच के पत्थरों से बने चमकदार गोले थे। सूखी पत्तियों की तीव्र गंध फैली हुई थी, जिसके बीच-बीच में पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

कुंभकरण ने कहा, 'यह महत्वपूर्ण बात है। आपके पिता का मानना है कि भारत में आतंकवाद के मद्देनजर हमें वास्तव में एक सहयोगी की जरूरत है।'

मेघनाद ने अपनी मूंछों को दोनों सिरों से घुमाते हुए कहा, 'अनंत से? वह आदमी तो हमेशा तटस्थ रहा है। नागाओं को युद्ध में किसी एक पक्ष का साथ देने में हमेशा से ही समस्या रही है। आप यह जानते ही हैं।'

कुंभकरण ने कहा, 'हमने उन्हें एक विकल्प दिया था। लेकिन शायद आपको वह पसंद नहीं आएगा।'

मेघनाद ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और यह पूछना ही चाहा कि दूसरा विकल्प क्या है, तभी गुरु प्रचेता ने ज़ोर से कहा, 'हम पहुँच गए हैं।' वह और उनके धार्मिक संप्रदाय के साथी मेघनाद, कुंभकरण और अक्षय को एक प्राचीन मंदिर में ले आए थे, जिसकी भव्यता अब लुप्त प्रतीत हो रही थी।

मेघनाद लंका के इस हिस्से में कभी नहीं आया था, लेकिन अब उसे पछतावा हो रहा था कि काश वह पहले ही आ गया होता। यह मुख्य शहर से दूर था और ज्वालामुखियों के नज़ारे पेश करता था, एक छोटी सी घाटी के निकट स्थित था जहाँ निर्मल नीला जल बहता था।

‘बहुत खूब। और यह शानदार वास्तुकला हमारे सीरम का स्रोत कैसे है?’ मेघनाद ने पूछा।

'सीरम अंदर ही बनता है,' प्राचेता ने कहा और उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया।

मेघनाद द्वार पर पहुंचा, जहां उसने लबादा ओढ़े पहरेदारों को खड़े देखा। वे शाही पहरेदार नहीं थे, बल्कि स्वयं उस संप्रदाय के थे—गंजे, विशालकाय शरीर वाले पहरेदार, जिन्होंने उन्हें अंदर जाने से रोकने की हिम्मत दिखाई।

‘क्या?’ मेघनाद ने प्राचेता की ओर मुड़कर पूछा।

‘तुम्हारा भाई। वह हथियार लिए हुए है,’ प्रचेता ने अक्षय की ओर इशारा किया, जो धनुष और बाण लिए हुए था।

'इसलिए?'

'मंदिर के अंदर हथियार ले जाना किसी भी हालत में मना है।'

‘क्या तुम्हें एहसास है कि यह हमारी ज़मीन है? तुम यहाँ अपनी बेतुकी बातें थोप नहीं सकते...’ मेघनाद की बात अधूरी रह गई जब कुंभकरण ने उसे कोहनी मारी और गुस्से से घूरते हुए कहा, ‘ठीक है, ठीक है। अक्षय, कृपया जो करना है करो।’

अक्षय ने अनिच्छा से अपना तरकश और धनुष रक्षक को सौंप दिया।

फिर वे उस स्थान में प्रवेश कर गए।

मंदिर की दीवारों पर अनगिनत मशालें जल रही थीं, जो ऊपर तक फैली हुई थीं। दीवारों पर एक विचित्र, भयावह डिज़ाइन बना हुआ था जो उन पर एक भयानक छाया

डाल रहा था। सफेद वस्त्र पहने पुरुष भिक्षुओं की तरह चल रहे थे और ब्राह्मण धर्म के प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन कर रहे थे। और इन सबके बीच, एक विचित्र स्त्री की विशाल मूर्ति खड़ी थी, जिसके हाथ त्रिशूल और एक कटा हुआ सिर था, और वह देखने वालों पर अपनी जीभ से प्रहार कर रही थी। यह मूर्ति कांसे की बनी थी।

‘आपके पिता ने हमें लंका भर में जिन मंदिरों का निर्माण करने की अनुमति दी है, उनमें हमारे पास ऐसे कई अद्भुत नमूने हैं,’ प्रचेता ने कहा। ‘यह देवी काली हैं। उनकी शक्ति का आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे।’

ब्राह्मण धर्म में इतने सारे देवता थे कि उनमें से किसी एक को चुनना लगभग असंभव था।

मेघनाद ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'हाँ, बिल्कुल। क्या मुझे इससे प्रभावित होना चाहिए? मैं तो इस सब के बजाय सीधे सीरम देखना चाहता हूँ।'

मेघनाद के व्यवहार से प्राचेता निराश थी, लेकिन मेघनाद को इसकी कोई परवाह नहीं थी। उसके लिए यह मामला बहुत सरल था।

इधर-उधर भटकने के बजाय सीधे मुद्दे पर आइए।

प्रचेता ने अपने एक पुजारी को उसे लाने का इशारा किया। पुजारी के एक संदूक लेकर लौटने पर मेघनाद ने सीटी बजाई और अपनी मूंछें घुमाईं। उस संदूक में पंखों के बीच एक अजीब सी नली रखी थी। उसका रंग लाल था।

'हम इसे काली का रक्त कहते हैं, इसके रंग के कारण और इसके निर्माण स्थल के कारण,' प्रचेता ने कहा।

मेघनाद ने वासना भरी निगाहों से उसे छूने की कोशिश की, तभी प्राचेता ने तुरंत उसके हाथों को झटक कर हटा दिया।

‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई...’ मेघनाद ने गुस्से में कहा जब कुंभकरण ने उसे फिर से धक्का दिया।

खून-खराबे के लिए...

मेघनाद ने गुस्से पर काबू पाते हुए आह भरी। 'क्या?' उसने थूकते हुए कहा।

‘आप इसे छू नहीं सकते, बिलकुल नहीं। यह सिर्फ देखने के लिए है, ताकि आप हमारे वादे पर विश्वास कर सकें,’ प्राचेता ने समझाया।

मैं इसे छू क्यों नहीं सकता?

‘क्योंकि इससे पहले आपको एक यज्ञ करना होगा, एक तरह से प्रार्थना करनी होगी,’ प्राचेता ने मूर्ति के सामने रखे तकिये की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘ताकि आपको उनका यह आशीर्वाद प्राप्त हो सके।’ फिर उन्होंने सीरम की ओर इशारा किया। ‘ध्यान रहे, हमने इसका पर्याप्त परीक्षण नहीं किया है। हम इतना जानते हैं कि एक बार इसे लेने के बाद, चोट लगने के बाद या युद्ध में जाने से पहले इसे लगातार लेना आवश्यक है, क्योंकि यह आपके एड्रेनालाईन को बढ़ाता है और आपको आवश्यक शक्ति प्रदान करता है, कुछ-कुछ सोमा की तरह। लेकिन सोमा के विपरीत, काली का रक्त एक बार लेने के बाद लगातार लेना पड़ता है, क्योंकि ऐसा न करने पर इसके दुष्प्रभाव दिखाई देते हैं।’

कुम्भकरण ने हस्तक्षेप किया, 'कैसा?'

‘कल्पना कीजिए कि आप इसे लेकर युद्ध में जाते हैं। आपकी ऊर्जा चरम पर होगी, लगभग दैवीय। आप अपनी क्षमता के अनुसार असंभव करतब दिखाएंगे। लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद, आपके पास ऊर्जा नहीं बचेगी, यहाँ तक कि जो थोड़ी बहुत ऊर्जा अभी है, वह भी नहीं बचेगी क्योंकि आप इस सीरम के कारण इसे बड़ी मात्रा में खर्च कर रहे होंगे। इसलिए पूरी ऊर्जा बनाए रखने के लिए आपको इसे लेते रहना होगा, अन्यथा अगले युद्ध तक आप बहुत कमजोर हो जाएंगे। आपको हमेशा इस सीरम की आवश्यकता होगी। यह एक वरदान है...’ प्रचेता ने निराशा से सिर हिलाया। ‘और एक अभिशाप भी, क्योंकि आप चरम सीमाओं पर काम कर रहे होंगे - मुझे संदेह है कि आप कमजोर होना चाहेंगे।’

मेघनाद जानता था कि कुछ भी बिना कीमत चुकाए नहीं मिलता। इस दुनिया में हर चीज का एक सकारात्मक और निस्संदेह एक नकारात्मक पहलू होता है।

लेकिन उन्हें एक बात पसंद नहीं थी।

मुझे यज्ञ क्यों करना है?

क्योंकि आप इस सीरम को देवी काली के आशीर्वाद से ग्रहण करेंगे, क्योंकि यह उन्हीं की देखरेख में बनाया गया है।

‘लेकिन मैं ऐसा नहीं करूँगी,’ मेघनाद ने मूर्ति की ओर देखते हुए कहा। ‘मेरे लिए तो यह पत्थर का एक टुकड़ा है। और इससे भी बुरा, यह एक स्त्री की पत्थर की मूर्ति है।’

प्राचेता ने ताबूत बंद कर दिया। 'और मुझे लगता है, आप महिलाओं का सम्मान नहीं करते।'

‘अगर वे ज़रा भी सम्मानजनक व्यवहार करतीं, तो मैं करता। मैं उनका सम्मान करना चाहता, लेकिन आप देखिए, वे वेश्याओं, बच्चे पैदा करने वाली और गृहिणियों के अलावा कुछ नहीं हैं,’ मेघनाद ने कंधे उचकाते हुए कहा।

अक्षय ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'दादा, मां ऐसी नहीं हैं।'

मेघनाद यह बात पूरी तरह भूल गया था कि उसके साथ एक भोली-भाली बच्ची है। उसने अक्षया की ओर मुड़कर कहा, 'लेकिन क्या इसने कभी कोई भूमि जीती है, मेरी प्यारी?'

अक्षय ने विनम्रतापूर्वक अपना सिर हिलाया।

या किसी सेना को पराजित किया?

वह चुप रहा।

‘मां ने हमें जन्म देने के अलावा कोई उत्पादक काम नहीं किया – तीन लड़के। अगर हमारे बीच कोई स्त्री होती, तो वह आज पिता के साथ शासन नहीं कर रही होती।’ मेघनाद ने कुंभकरण की ओर देखा, जो ज्यादा कुछ नहीं बोला, बल्कि शरमाते हुए अपनी नाक रगड़ रहा था। ‘हां, तो’ मेघनाद ने प्रचेता की ओर मुड़कर कहा, ‘मैं किसी स्त्री के सामने घुटने नहीं टेकूंगा।’

‘लेकिन यह कोई स्त्री नहीं है! यह तो हमारी देवी हैं!’ प्रचेता ने विस्मय से कहा।

‘एक महिला देवी?’ मेघनाद खिलखिलाकर हँसा। ‘समुदाय के लिए उसने क्या किया है सिवाय... अरे... उसकी जीभ देखो, बच्चों को डरा रही है?’

‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!’ प्रचेता ने कहा। ‘हम उन सभी राक्षसों की सूची बना सकते हैं जिन्हें उसने निगल लिया है...’

मेघनाद ने हाथ उठाया। “ज़रूर, प्यारी। बहुत-बहुत धन्यवाद। हम जानना चाहेंगे। लेकिन सीरम काफी दिलचस्प लग रहा है। तो, मैं इसे अभी लेना चाहूंगा...” यह कहकर उसने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

लेकिन प्राचेता ने एक बार फिर उसका हाथ झटक दिया।

मेघनाद ने दांत पीसते हुए प्राचेता का गला पकड़ा और उसे जमीन से ऊपर उठा लिया। “इसे मुझे दे दो...”

प्रचेता का दम घुटने लगा, उसकी आंखें बाहर निकल आईं और उसके झुर्रीदार चेहरे के किनारे की नसें फड़कने लगीं।

और उसी क्षण मेघनाद को तीव्र दर्द का अनुभव हुआ। किसी ने उसे घूंसा मारा था। उसने प्रचेता के गले पर अपनी पकड़ छोड़ दी और महसूस किया कि किसी ने उसके मजबूत, मांसल शरीर को पकड़कर उसे मंदिर से बाहर धकेल दिया और धूल के गुबार के बीच उसे जमीन पर पटक दिया।

मेघनाद ने खड़े होते ही अपने कपड़ों से धूल झाड़ी। कुंभकरण और अक्षय उसके पीछे-पीछे आए और उसके बगल में खड़े हो गए। मेघनाद जोर से चिल्लाया, "तुम ऐसा नहीं कर सकते। मैं अपनी सेना लाऊंगा और तुम सब को नष्ट कर दूंगा।" लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। पुरोहित अंदर चले गए और मेघनाद के चेहरे पर द्वार बंद कर दिए।

कुंभकरण को खांसी आ गई।

'क्या?' मेघनाद ने गुस्से से कहा।

कुंभकरण ने आगे कहा, 'आप उनके साथ कुछ नहीं कर सकते। देश के कानून उनके धर्म की रक्षा करते हैं और वे जितने चाहें उतने नियम बना सकते हैं, और आपको उनका पालन करना होगा।'

'पिताजी ऐसे नियम कैसे बना सकते हैं?' मेघनाद ने निराशा में अपना सिर हिलाया।

'वह एक अच्छा शासक है, बेटा। तुम यह जानते हो।'

मेघनाद ने अपनी मूंछें घुमाते हुए अपनी जीभ काट ली। मुझे पता है।

'और अगर तुम उन पर हमला भी करोगे, तो उन्हें तुम्हें जान से मारने का पूरा अधिकार है और दशानन कुछ नहीं करेगा क्योंकि...' कुंभकरण का अंत होना जरूरी नहीं था क्योंकि मेघनाद को इसका कारण पता था।

अगर आपकी मृत्यु होती है, तो यह आपके कर्मों का परिणाम है। और यह आपकी गलती है। बदला लेना तो सरासर मूर्खता है।

वास्तव में।

मेघनाद ने आह भरी। 'तो मुझे सीरम नहीं मिला और मैंने इंद्र को जाने दिया?'

अक्षय हकलाते हुए बोला, 'सुधार, तुमने उसे मार डाला।'

मेघनाद मुस्कुराया। उसे इन मामलों में सुधार सुनना अच्छा लगता था। 'खैर, कभी जीत होती है, कभी हार। लेकिन मुझे वह सीरम ज़रूर मिलेगा।'

'तुम कर लोगे, बच्चे,' कुंभकरण ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, 'लेकिन उससे पहले तुम्हें कहीं अधिक महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटना है।'

‘नागलोक,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।

'हाँ।'

‘लेकिन क्या मैं उस वीरान जगह पर जाने का कारण पूछ सकता हूँ?’ मेघनाद को कुंभकरण की कही बात याद आई।

विशालकाय राक्षस ने आह भरते हुए कहा, “ठीक है, क्योंकि नागलोक के नागराज भगवान अनंत ने एक शर्त पर हमसे गठबंधन करने और अपनी सेना और संसाधन हमें देने पर सहमति जताई है। और तुम्हारे पिता का मानना है कि तुम्हें बिना किसी विरोध के उस शर्त का पालन करना होगा।”

‘मेरी सहमति?’ मेघनाद को यह बात अच्छी नहीं लगी। ‘सिर्फ मैं ही क्यों?’

कुंभकरण ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'खैर, क्योंकि इसमें नागलोक की राजकुमारी से आपकी शादी का मामला है।'

‘शादी?’ मेघनाद ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। ‘मेरी शादी?’

और यह सुनकर अक्षया जोर से हंस पड़ी।

16. सुपर्निका

'वह मरा नहीं है। तुम्हारी योजना विफल हो गई,' कुम्बिनी ने दरवाजा खटखटाने के बाद कहा।

मीनाक्षी किताब पढ़ रही थी जब उसने यह बात कही और एक पल के लिए उसका दिल धड़कना बंद हो गया।

नहीं।

इससे समस्या उत्पन्न होती है।

हालात और भी बदतर हो जाते हैं।

‘उस राजकुमारी के बारे में क्या?’

कुम्बिनी ने चिंता से हाथ जोड़ते हुए कहा, 'उसने उसे अगवा कर लिया है। वह उसके साथ अतिथि कक्ष में है। वह उससे बात करने की कोशिश कर रहा है। शायद।'

नहीं।

उस लड़की ने आखिरकार यह खुलासा कर दिया कि मैंने ही उसे माणिक दिया था।

पढ़ते हुए पन्ना पलटते ही वह तुरंत खड़ी हो गई। उसे एहसास हुआ कि जल्दबाजी में पन्ना पलटने से वह उसे खराब कर रही है, इसलिए उसने पन्ना सीधा कर दिया। उसने बीच में एक पत्ता रखा और कुंबिनी को साथ लेकर कमरे से बाहर निकल गई।

'वह मरा क्यों नहीं?' उसने अपनी दासी पर गरजते हुए कहा।

'क्योंकि उसने अच्छी तरह से योजना बनाई थी, मेरी महिला।'

'बेशक, उसने किया होगा।' मीनाक्षी ने अपने भाई को कम आँका था। धिक्कार है भगवान पर!

उसे जल्द से जल्द कोई योजना बनानी होगी।

वह धुंधली रोशनी वाले गलियारों से गुज़रते हुए उस अतिथि कक्ष तक पहुँची, जिसकी ओर कुंबिनी ने मीनाक्षी के निर्देशानुसार शहर में विमान के बरामदों की जासूसी करते हुए इशारा किया था। और इससे पहले कि वह दरवाज़े पर दस्तक दे पाती, उसने दशानन को बाहर निकलते देखा, जिसका चेहरा उदास था और परछाइयों में छिपा हुआ था।

मीनाक्षी की नजरों से ओझल होने से पहले उसने उससे एक नजरें मिलाईं।

क्या उसने उसे बताया है?

उसके गले में अटकी हुई बात को उसने किसी तरह निगला और सीता से मिलने के लिए दरवाजा खोलने का फैसला किया, लेकिन फिर यह उल्टा पड़ जाता। उसे अपने भाई से बात करने की कोशिश करनी चाहिए। उसने कुंबिनी को पीछे रुकने का आदेश दिया और खुद दशानन के पीछे-पीछे सम्मेलन कक्ष में चली गई। वहाँ बीच में एक बड़ी ओक की लकड़ी की मेज थी, जिस पर शहर के मंत्रियों के लिए योजनाएँ और उनके कार्यान्वयन पर चर्चा करने के लिए कुर्सियाँ लगी थीं।

मीनाक्षी ने कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि दशानन कोने में अपने गिलास में शराब डाल रहा था। उसकी पीठ मीनाक्षी की ओर थी और उसके चेहरे के भाव स्पष्ट नहीं थे।

'उसने मुझे कुछ बताया।' उसने मीनाक्षी की उपस्थिति को भांपते हुए कहा।

उसकी नब्ज़ तेज़ चल रही थी और उसे महसूस हो रहा था कि उसकी धड़कन धीमी होती जा रही है।

मुझे पकड़ा नहीं जा सकता। नहीं।

'क्या?' मीनाक्षी की आवाज लड़खड़ा गई, लेकिन उसने थोड़ा खांसकर अपना गला साफ कर लिया।

दशानन अपनी कुर्सी पर बैठा था, उसके मोटे हाथों में गिलास लटक रहा था, और वह सोच रही थी, 'मैं उसके लिए सबसे घिनौना आदमी हूँ जिससे वह कभी मिली है। क्या मैं सच में ऐसा हूँ? शायद जब मैं उसे बताऊँगा कि मैं उसका पिता हूँ, तो वह मेरे बारे में अपनी राय बदल लेगी।'

उसने उसे नहीं बताया है। मैं अभी भी खतरे से बाहर हूँ।

'तुम नहीं बैठ सकते।' मीनाक्षी तुरंत अपने भाई के पास गई और उसके सबसे नजदीक वाली कुर्सी पर बैठ गई।

उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'तुम्हारा क्या मतलब है कि मैं नहीं कर सकता? वह मेरी बेटी है। उसके गले में खानदानी धरोहर है।'

'तुम ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि...' मीनाक्षी जानती थी कि अगर सीता उससे यह कह दे कि वह उसका पिता है क्योंकि उसके पास खानदानी धरोहर है, तो सीता स्पष्ट कर देगी कि यह धरोहर मीनाक्षी ने खुद दी है। 'क्योंकि, वह इस पर विश्वास नहीं करेगी।'

दशानन एक आकर्षक व्यक्ति थे— तीक्ष्ण चेहरे की बनावट, मजबूत जबड़ा, पतली भौहें और करीने से संवारी हुई दाढ़ी। उनके लंबे, लहराते बाल पीछे की ओर कंघी किए हुए थे। मेघनाद दिखने में दशानन से सबसे अधिक मिलते-जुलते थे, लेकिन दाढ़ी के बजाय उनकी मूंछें थीं, जिनके कोने ऐसे मुड़े हुए थे मानो उन्होंने उन्हें बड़े करीने से तेल लगाया हो।

'तुम सही कह रहे हो। वो इस समय मुझसे नफरत करती है,' दशानन ने अपने पेय की एक घूंट ली।

'तुमने उसे अभी क्यों नहीं बताया?' मीनाक्षी उत्सुक थी।

'मुझे डर लग रहा था।' दशानन के चेहरे पर एक असहनीय उदासी छा गई। 'मुझे डर था कि वह मुझे ठुकरा देगी।' वह आगे झुक गया। 'मैं डरा हुआ हूँ, मेरी प्यारी बहन। जिस आदमी को मेरे दुश्मन रावण कहते हैं, उसे अपनी बेटी के ठुकराए जाने का डर है, जिसे उसने बहुत समय पहले खेत की क्यारियों के पास छोड़ दिया था क्योंकि उसे लगा था कि वह मर गई है।' और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे।

एक पल के लिए मीनाक्षी को उसका एहसास हुआ। उसने उसे आगे आकर गले लगाने दिया, उसने मीनाक्षी का चेहरा अपने हाथों में कसकर पकड़ लिया, और मीनाक्षी ने अपनी उंगलियाँ उसके बालों में फिरा दीं।

उसे उस पर दया आई।

क्या मेरे द्वारा सही चीज की जा रही है?

लेकिन तभी विद्युत का चेहरा मीनाक्षी के सामने आ गया—वह खून से लथपथ था और रो रहा था। और उसके ऊपर दशानन खड़ा था। और उसे अपने अंतिम शब्द भी कहने का मौका दिए बिना, मीनाक्षी के अपने भाई ने उसके प्रिय को मार डाला।

और उसने दशानन के प्रति अपनी बहन जैसी भावनाओं को दबाते हुए कहा, 'उसे थोड़ा समय दो।'

'मेरे प्रिय, मेरे पास बस समय की कमी है। हर दिन मेरी जान खतरे में है।' वह पीछे हट गया। 'राघव एक चुनौती था। उसने मारियाची और यहां तक कि अतिकाय के आदमियों को भी हरा दिया था। यह चमत्कार ही है कि मेरा बेटा सुरक्षित है। आगे चलकर वह एक बड़ी मुसीबत बनेगा।' उसने अपना सिर हिलाया। 'मैं बाल-बाल बच गया, लेकिन मुझे लगता है कि मैं उससे जल्द ही फिर मिलूंगा। फिलहाल, मुझे बड़े मुद्दों पर ध्यान देना है और वह है भरत। वह महत्वपूर्ण सहयोगी बना रहा है, गुप्त सहयोगी जिनके बारे में मेरे जासूस मुझे बताते हैं।'

मीनाक्षी ने सिर हिलाया। तुम्हारा जीवित रहना तय नहीं था। 'उसे राक्षस संस्कृति दिखाओ। उसे दिखाओ कि हम वो दुश्मन नहीं हैं जैसा वो समझती है, हम जानवर नहीं हैं। और फिर, उसे सब कुछ बता दो। आराम से करो। जल्दबाजी करना ठीक नहीं है। और उसे बताने से पहले, मुझसे सलाह ले लो। मैं भी किसी की बेटी हूँ। मुझे पता है कि इस स्थिति को कैसे संभालना है।'

दशानन ने मुस्कुराते हुए अपने मजबूत हाथों से उसका चेहरा थाम लिया। 'यहाँ होने के लिए धन्यवाद। मुझे नहीं पता तुम्हारे बिना मैं क्या करता। मंदोदरी हंगामा खड़ा कर देगी। वह बहुत अधीर है, तुम्हें पता ही है।'

और यह बात समझ में आती है, लेकिन उसे इंतजार करना चाहिए। मेरा विश्वास करो।

दशानन ने सिर हिलाकर सहमति जताई। 'ठीक है। लेकिन मैं जनस्थान में नहीं रुक सकता। मुझे लंका जाना होगा। मैं सीता को अपने साथ ले जाऊंगा। इससे उसे चीजों का दूसरा पहलू देखने का मौका मिलेगा—कि राक्षस भी महान होते हैं, अच्छे इंसान होते हैं। वीर होते हैं। और सिर्फ जानवर नहीं, जैसा कि मानव कवि हमें चित्रित करते हैं। क्या आप जानते हैं कि भरत राज्य के कवि हमें क्या कहते हैं?'

मीनाक्षी ने अपना सिर हिलाया।

‘मुझे दस सिर वाला राक्षस माना जाता है,’ वह हँसते हुए बोला और अपने गले में पहने हुए बचपन में मिले मोतियों का हार दिखाया। उस हार में उसके चेहरे की छवि दस हिस्सों में बँटी हुई थी, जिससे ऐसा लग रहा था मानो उसके दस सिर हों। ‘और तुम्हें बदसूरत राक्षसी चुड़ैल।’

‘लेकिन मैं तो माया विद्या का अभ्यास भी नहीं करती,’ वह हंस पड़ी।

वह भी इसमें शामिल हो गया।

‘लेकिन बदसूरती के बारे में वे गलत नहीं हैं,’ मीनाक्षी ने आगे कहा। ‘हमारे दादाजी ने मुझे यह याद दिलाया था। मैं कितनी काली थी, इन आँखों के साथ पैदा हुई थी,’ उसने अपनी तिरछी आँखों की ओर इशारा करते हुए कहा।

दशानन ने अपनी बहन की ओर मुस्कुराते हुए कहा, 'सुमाली को सुंदरता में कुरूपता देखने का शौक था। विडंबना यह है कि जब वह बीमार पड़ा तो तुमने ही उसकी देखभाल की थी।'

मीनाक्षी ने कुछ नहीं कहा, बस उसकी पीठ थपथपाई। वह जाने ही वाली थी कि दशानन ने पूछा: 'क्या तुम हमारे साथ लंका चल रही हो?'

मीनाक्षी ने सोचा।

उसके मन में एक नई योजना पनप रही थी। 'नहीं।'

'क्या आप निश्चित हैं? मैं चाहता हूं कि आप और मेघनाद फिर से मिलें, और पहले जो मतभेद थे उन्हें सुलझा लें।'

मीनाक्षी ने एक पल सोचा। दशानन के सबसे बड़े बेटे के साथ उसके मतभेद ज़रूर थे, खासकर जनस्थान की रानी बनने से पहले उनके रिश्ते के अंत में। लेकिन उसके दिमाग में राक्षस जनजाति के खिलाफ़ और भी साज़िशें और राजनीतिक दांव-पेच चल रहे थे। वह जानती थी कि अब उसे क्या करना है - राघव से दोबारा मिलना है।

और उसे लंका जाने का निर्देश दें।

लेकिन इसके लिए उसे वहां की बजाय यहां होना जरूरी था।

'हां, मैं बिल्कुल ठीक हूं। मुझे अभी-अभी याद आया कि मेरा कुछ काम बाकी है,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'यह बहुत महत्वपूर्ण काम है।'

17. मेघनाद

अक्षया जा रही थी।

मेघनाद ने उसे अपने कमरे में अपना सामान पैक करते हुए देखा। एक संदूक जो तरह-तरह के कपड़ों, गहनों और अलग-अलग आकार और प्रकार के हथियारों से भरा हुआ था।

मैं शादी करने जा रहा हूँ।

यह सोचकर वह डर गया। वह हमेशा खुद को कुंवारा ही समझता था। लेकिन वह जानता था कि वह शादी क्यों कर रहा है - गठबंधन के लिए। यह उसके साम्राज्य की प्राथमिकता थी।

मेघनाद को अपने भीतर ही अंदर प्यार से डर लगता था। उसे प्रतिबद्धता से, किसी एक व्यक्ति से बंधे रहने से डर लगता था। ऐसा लगता था जैसे कोई उसका गला घोंट रहा हो।

लेकिन यह सिर्फ गठबंधन के लिए है।

उसने खुद को शांत किया।

‘भाई, तुम्हें शुभकामनाएँ,’ मेघनाद ने बाँह से बने धनुष को हाथ में पकड़े हुए मुस्कुराते हुए कहा। उसने वली के राज्य जाने से पहले उसके लिए यह धनुष बनवाने का सोचा था।

अक्षया मुड़ा और उसने धीरे से कहा, 'दे-दे-देखो कौन आया है। शादीशुदा आदमी।'

‘अभी नहीं, ठीक है?’ मेघनाद ने अपने भाई के बालों को सहलाते हुए भौंहें चढ़ाईं। ‘मुझे परेशान करना बंद करो।’

अक्षया ने हल्की सी हंसी हंस दी। कमरा नाममात्र का सजा हुआ था, कोने में लकड़ी के खिलौने, पूरे परिवार के चित्र और अध्ययन की मेज पर किताबों का ढेर लगा हुआ था। अक्षया हमेशा से हर चीज में अच्छा बनने की चाह रखता था। यह उसके हकलाने की कमी को पूरा करने का एक तरीका था, क्योंकि वह खुद को परिवार में सबसे कमजोर समझता था।

लेकिन मेघनाद को उसका राज़ पता था। वह एक कुशल गायक था और तभी तो उसकी हकलाहट उसके गायन में बाधा नहीं बनती थी। लेकिन उसने गाना बंद कर

दिया था—कम से कम दशानन द्वारा इलवर्ती में लगातार विजय प्राप्त करने के बाद से। क्योंकि एक आज्ञाकारी पुत्र होने के नाते उसे इसमें शामिल होना ही था। यह उसके लिए सामान्य जीवन जीने का एक तरीका था।

‘अच्छा, मैंने तुम्हारे लिए कुछ खरीदा है।’ मेघनाद ने उसे धनुष दिखाया। ‘इस पर तुम्हारे नाम के पहले अक्षर हैं। एके। अक्षय कुमार।’

अक्षया ने हैरानी से उसे देखा। 'वाह! आप तो कभी कुछ उपहार नहीं देते, दादाजी।'

‘मैं कंजूस नहीं हूँ, बेवकूफ।’ मेघनाद अपने आरामदायक बिस्तर पर बैठ गया। ‘यह तुम्हारा पहली बार अकेले रहना है, है ना?’

अक्षय ने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया।

मेघनाद को अक्षय के साथ हुए उस भयानक हादसे की याद आ गई। यह अचानक हुआ था। और तब से उसे बोलने में दिक्कत होने लगी थी। उसके बाद लोग उसे गंभीरता से नहीं लेते थे। वह देश के सबसे खूंखार शासक का पुत्र था और बोल नहीं सकता था। अपनी इस अक्षमता की भरपाई के लिए वह अपने भाइयों के साथ ज्यादा समय बिताने लगा, युद्ध लड़ने लगा और तीरंदाजी सीखने लगा।

यह सब उनकी क्षमता को साबित करने के लिए था। यह साबित करने के लिए कि वह किसी से कम नहीं थे।

लेकिन मेघनाद के लिए यह मायने नहीं रखता था। वह उसका भाई था। हकलाता हो या न हकलाता हो, वह एक बेहतरीन लड़का था।

‘मेरे साथ बैठो,’ उसने उसे पकड़कर अपने बगल में आराम से बिठा दिया। अक्षय ने ऊपर देखा, जैसा वह हमेशा मेघनाद की ओर देखता था। ‘तुम अकेले किष्किंधा जा रहे हो और सच कहूँ तो, वली थोड़ा मनमौजी है।’

‘मुझे पता है।’ उसने सिर हिलाया।

'अच्छा। और वही करना जो मैं करता हूँ, ठीक है?'

‘पी-प्लान।’

'हां। और अमल करो। योजना को अमल में लाना मत भूलना। तुम्हें आगे बढ़कर मारना होगा। आक्रमण से बेहतर कोई बचाव नहीं है।'

अक्षय मुस्कुराया। ‘मैं तुम्हारे जैसा बनूंगा। बिलकुल तुम्हारे जैसा। तुम हमेशा ऐन मौके पर बच निकलने में कामयाब हो जाते हो। तुम मेरे देखे सबसे ताकतवर योद्धाओं में से एक हो।’

मुझे यह पसंद नहीं है।

'क्या?' वह असमंजस में पड़ गया।

'ये भावनात्मक बंधन... ये मुझे बहुत बनावटी लगता है। मुझे इससे नफरत है,' मेघनाद ने अक्षय को बाहों में भरते हुए मुस्कुराते हुए कहा। 'और हाँ, मेरी तरह बनो और तुम ज़िंदा रहोगे। और हार मत मानो। कभी ऐसा मत करना। साहसी बनो। और अमरावती में तुम्हारे अंदर जो नैतिक चेतना थी, उसे छोड़ दो। हम युद्ध और मृत्यु की दुनिया में हैं। जीवित रहने के लिए हमें दूसरों को मारना होगा। किसी भी कीमत पर। ठीक है?'

अक्षय ने चुपचाप सिर हिलाया।

मेघनाद ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए अपना सिर खुजलाया। लेकिन जाने से पहले, उसने पीछे मुड़कर अक्षय से कहा: 'पत्र लिखना और मुझे सूचना देते रहना। मैं नागलोक में रहूंगा। तुम वहां कौवे भेज सकते हो।'

'ओ-ठीक है।'

'महान।'

'दादा?'

मेघनाद ने गुनगुनाया। 'हम्म?'

'क्या आपने वाकई शादी के लिए सहमति दे दी है?'

मेघनाद ने आह भरी। 'मुझे नहीं पता। ये गठबंधन के लिए है। तुम जानते ही हो।' एक व्यक्ति से बंधे होने के विचार से ही उसे घृणा होने लगी थी।

'क्या मैं सच बोल सकता हूँ, दादाजी?'

मेघनाद ने सिर हिलाया।

अक्षया ने कहना शुरू किया, 'मैं तुम्हें गांठ में देखना चाहूंगी...। यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा। काश मैं वहां होती।' वह मुस्कुराया।

'शुक्र है, तुम नहीं हो। इससे मुझे थोड़ी शर्मिंदगी से राहत मिलेगी।' वह मुस्कुराया। 'लेकिन तुम सही हो। मेरा मतलब है, मुझे उम्मीद है कि तुम सही हो। मुझे उम्मीद है कि वह लड़की सहने लायक होगी।'

उसका नाम क्या है?

किसी ने फोन किया...

18. प्रमीला

तुम्हारे पिता का तुम्हारे लिए एक संदेश है।

प्रमीला अपने महल के प्रांगण में थी और कतार में खड़े गरीबों को रसोई का भोजन दान कर रही थी, तभी दूत वहाँ पहुँचा और उसकी दिलचस्पी बढ़ गई।

यह क्या था?

और इससे पहले कि वह दूत से कुछ पूछ पाती, दूत ने आगे कहा: 'वह अपने कमरे की बालकनी में आपसे मिलना चाहता है।'

'बिल्कुल।'

प्रमीला ने दूत को जाते हुए देखा और फिर उसका ध्यान नागलोक के उन गरीब पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की कतार पर गया जो झुलसे हुए कपड़ों में भोजन की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे वह थैली से निकाल रही थी। प्रमीला ने बचपन से ही, राजपरिवार की सुख-सुविधाओं के बावजूद, हर समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच भेदभाव देखा था। प्रमीला को वर्गभेद से घृणा थी और इसे कम करने के लिए वह निम्न वर्ग के उत्थान के लिए हर संभव प्रयास करती थी—उन्हें भोजन कराना, अपनी जेब से धन देकर प्रतिष्ठित शिक्षकों को गरीब छात्रों की मदद करने के लिए भेजना। यह सिलसिला चलता रहता था।

उनके परोपकारी कार्यों को उनके पिता ने देखा और कहा कि वह अपनी दिवंगत मां से बहुत मिलती-जुलती हैं। एक ऐसी इंसान जो सहानुभूति रखती है, उन लोगों के लिए प्यार रखती है जिन्हें वह नहीं जानती।

और यह बहुत दुख की बात थी। प्रमीला की मां अब इस दुनिया में नहीं थीं।

जब यह घटना घटी तब वह बहुत छोटी थी। उसने अपनी माँ को लंबे समय तक हृदय रोग से जूझते हुए देखा था और इस तरह उसने यह सीखा था कि मृत्यु उन्हीं को आती है जिनका हृदय अच्छा होता है। और हर दिन जब तक प्रमीला अपने परोपकारी कार्यों में लगी रही, वह मृत्यु को चुनौती दे रही थी। यह जीवन पर विजय पाने और यह कहने का एक तरीका था: 'तुम मुझे मार नहीं सकते।'

जब उसे एहसास हुआ कि और भी लोग शामिल हो रहे हैं, तो उसने खाने का थैला अपने अंगरक्षकों और अपनी सौतेली बहन अंजनी को सौंप दिया। अंजनी उसकी

सौतेली माँ की बेटी और दुबली-पतली नाग राजकुमारी थी। वह युवा थी, प्रमीला की आधी उम्र की, लेकिन प्रमीला से लंबी थी।

प्रमीला महल के अंदर दाखिल हुई, उसकी निगाहें अपने शहर की खूबसूरत छतों पर टिकी थीं। नागलोक, अन्य शहरों के विपरीत, खुले में नहीं था। इसमें कई प्रवेश द्वार थे और यह धरती के नीचे स्थित था। एक गुफा जैसी संरचना में विशाल, चमकदार सुनहरी रोशनी से जगमगाता एक पूरा शहर बना हुआ था।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि पानी की कमी थी। वास्तव में, शहर के संगमरमरी फर्शों के नीचे बिछी पाइपों से नालों का पानी बहता था। यहाँ चट्टानों और फफूंद की गंध नहीं थी, बल्कि ट्यूलिप और लैवेंडर की खुशबू थी। प्रमीला नागलोक से बाहर नहीं निकली थी, लेकिन वह जानती थी कि नागलोक बाकी शहरों से कहीं ज़्यादा व्यवस्थित था।

वह अपने महल की छतों पर चली, जहाँ सीढ़ियों पर लगी मशालों की सतर्क छाया में सर्प की नक्काशी वाले कवच पहने पहरेदार पहरा दे रहे थे। वह ऊपर की ओर बढ़ी और अपने अन्य भाई-बहनों, चचेरे भाई-बहनों, मौसी-मामाओं के कमरों से गुज़रते हुए अपने पिता के कमरे तक पहुँची।

उसने दरवाजा खटखटाकर खोला और बालकनी की ओर चली गई, जहाँ से उसे दूर शेषनाग मंदिर दिखाई दिया, जो महल की ओर चमकती हुई दृष्टि धारण किए हुए था। मंदिर में एक लंबी सर्प की मूर्ति थी - एक कोबरा, और उसके मुँह में खाली जगह के बजाय एक बड़ा मणि था - एक नीलमणि पत्थर, जिसे उसी धरती से निकाला गया था जहाँ वे रहते थे।

और मणि पत्थर देखने लायक थे - दुर्लभ गुणवत्ता के पत्थर जिनका उपयोग तब सौंदर्यीकरण के लिए किया जाता था और वास्तव में, शहर के पूरे उच्च वर्ग ने धार्मिक पवित्रता के प्रतीक के रूप में और अपनी स्थिति दिखाने के लिए अपने घरों में मणि पत्थर लगवा रखे थे।

उसने नागलोक के नागराज भगवान अनंत को देखा, जिनके हाथ पीठ पर थे, उनके बाल काले थे और पेट पर सफेद लबादा लिपटा हुआ था। प्रमीला की उपस्थिति देखकर अनंत ने अपना सिर घुमाया, उसे गले लगाया और कहा, 'कुछ बात हुई है।'

उसकी आवाज़ का लहजा उसे चिंतित कर रहा था। लेकिन उसने पहले ही अफवाहें सुन रखी थीं। और अंजनी भी उन अफवाहों को फैलाने वालों में से एक थी।

‘तुम्हारी शादी हो रही है। मैंने मम्मी को पापा से इस बारे में बात करते सुना। वे दोनों बहुत उत्साहित हैं।’

जब उसने यह सुना, तो उसे इस तथ्य को समझने में कुछ समय लगा, और उसे इस पर यकीन ही नहीं हुआ। जीवन भर उसकी चिंता दो ही बातों तक सीमित रही थी - शिक्षा और विवाह। बचपन से ही, सब कुछ उसके और उसकी शादी की योजना और सजावट के बारे में ही था। क्योंकि उसे इस संस्था का विचार बहुत प्रिय था, कि चाहे कुछ भी हो जाए, अपने साथी का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

और उसके पेट में गुदगुदी सी होने लगी थी। उसके होठों पर मुस्कान नाच रही थी। लेकिन उस अफवाह के फैलने के बाद, मामला शांत हो गया। उसके पिता या सौतेली माँ की तरफ से कोई खबर नहीं मिली, लेकिन अब...

आखिरकार उसने उसे फोन कर दिया।

‘जी पिताजी?’ प्रमीला ने धीरे से कहा, जब उसका सिर कोने में खड़े काले लबादे वाले व्यक्ति को देखने के लिए घूमा, जिसे उसने पहले अनदेखा कर दिया था, तो वह मुस्कुराने से खुद को मुश्किल से रोक पा रही थी।

उसकी एक आंख कांच की थी, सिर गंजा था और चेहरा धंसा हुआ था। लेकिन उसमें कुछ बहुत ही विचित्र बात थी, क्योंकि वह लिंगहीन प्रतीत होता था।

और वह जानती थी कि ऐसा क्यों था, क्योंकि वह एक हिजड़ा था - लॉर्ड कालिया, सांस्कृतिक मामलों के मंत्री और अनंत के विश्वासपात्र।

वह यहाँ क्यों था?

लेकिन उसने इस बात को अनसुना कर दिया, हालाँकि कालिया की मोहक मुस्कान, शरारती अदाएँ और उसकी कांच की आँख, जो उसकी कुटिल गतिविधियों के बारे में सब कुछ बयां करती थी, उसे हमेशा बेचैन कर देती थी। वह उसके पिता के खिलाफ साजिश रचने वाले कई विद्रोहियों को गिरफ्तार करवाने का मास्टरमाइंड था और इसके लिए वह आभारी थी, लेकिन उसकी सूझबूझ यह मानने के लिए काफी थी कि ये विद्रोह नागराज का विश्वास जीतने के लिए कालिया ने खुद ही रचे थे।

लेकिन उसके पास इसे साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं था। वह केवल अपनी स्त्री सहज बुद्धि पर भरोसा कर सकती थी और वह जानती थी कि किसी भी शहर में एक महिला की आवाज़ कितनी सुनी या बोली जाती है।

‘राक्षस आ रहे हैं। उनका राजकुमार, भगवान इंद्र को हराने वाला कुख्यात योद्धा, तुमसे विवाह करने के लिए यहाँ आ रहा है।’

वह कुछ देर चुप रही। उसने सुना था कि उसकी शादी होने वाली है, लेकिन किससे होगी यह नहीं पता था। और राक्षसों का नाम सुनते ही उसे गहरा सदमा लगा क्योंकि उसने सुना था कि नागों के विपरीत, जो समानता को बढ़ावा देते थे, राक्षस कितने क्रूर और स्त्री-द्वेषी थे। 'क्या उन्होंने भगवान इंद्र को हराया था?'

'जी हां। सभी योद्धाओं का योद्धा। एक जादूगर। उसका नाम मेघनाद है।'

उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। ओह, उसने उसके बारे में सुना था। रावण का दुष्ट पुत्र, इतना सुंदर कि स्त्रियाँ उसकी सुंदरता पर तो मोहित हो जाती थीं, लेकिन उसके काले हृदय पर नहीं, जो हिंसक था और भगवान ही जानते हैं कि वह और क्या-क्या कर सकता था।

‘क्या आप उसे जानते हैं?’ भगवान कालिया ने अपनी मटकती, फुसफुसाती आवाज़ में पूछा। उनकी आवाज़ में एक विशिष्ट पुरुष-स्त्री का मिश्रण था।

‘बिल्कुल। मैं यात्रा तो नहीं करती, लेकिन देश में क्या हो रहा है, इसकी जानकारी जरूर रखती हूँ।’ उसने कालिया पर तीखी टिप्पणी की, फिर अपने पिता की ओर मुड़ी। ‘और आपको क्यों लगता है कि वह मेरा आदर्श वर है?’

‘वह ऐसा नहीं है, मेरी प्यारी। लेकिन देखो, तुम्हें यह हमारे देश के लिए करना ही होगा।’ अनंत अलंकृत रेलिंग पर आगे की ओर झुक गया।

‘एक गठबंधन?’

‘हाँ,’ उसने कहा। ‘राक्षस फिलहाल सर्वोच्च जनजाति हैं। उन्होंने लगभग पूरे इल्लावर्ती पर कब्जा कर लिया है। उनके वली के साथ गठबंधन हैं और अगर हम उनके साथ गठबंधन नहीं करेंगे, तो वे हमारे खिलाफ एकजुट होकर युद्ध छेड़ देंगे। और आप जानते हैं, हमारे पास युद्ध के लिए संसाधन नहीं हैं। हम हमेशा से ही...’

'शांत।' प्रमीला ने पुस्तकालयों में पढ़े इतिहास को याद करते हुए कहा।

‘और हमें विश्वास है,’ कालिया ने कहा, ‘कि यह गठबंधन दो शक्तिशाली राज्यों को अयोध्या के विरुद्ध एकजुट कर सकता है। लेकिन प्रिय, कृपया हमें आश्वस्त करें कि जब आप लंका के राजकुमार से मिलें, तो उन्हें बताएं कि हम इस विवाह के लिए कितने उत्सुक हैं। उन्हें हमारी बेचैनी समझ आ जानी चाहिए, क्योंकि हम वास्तव में बेचैन हैं।’

प्रमीला चुप रही। उसने कालिया को कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि फिलहाल उसका कोई अस्तित्व ही नहीं था। 'अगर मुझे वो पसंद न आए तो क्या होगा?'

अनंत ने कोई जवाब नहीं दिया।

'तो मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करनी है जिसे मैं जानती भी नहीं?' उसने गुस्से से कहा, लेकिन उसकी आवाज में संयम था, क्योंकि उसे हमेशा बड़ों का सम्मान करना सिखाया गया था, चाहे वे अपने कार्यों में कितने भी उग्र क्यों न हों।

'हम आपको एक-दूसरे को जानने के लिए पर्याप्त समय देंगे,' कालिया ने कहा।

'क्या मैं आपकी जगह अपने पिता से बात कर सकती हूँ?' प्रमीला ने मंत्री पर चिल्लाते हुए कहा, जिस पर मंत्री तुरंत सदमे से हांफने लगे और चुप हो गए।

'क्षमा करें, महोदया। मेरा इरादा किसी का अपमान करने का नहीं था।'

अनंत ने उसके कंधे पर थपथपाया और फिर कालिया की ओर देखा। 'बस हमें थोड़ा समय दीजिए।'

कालिया ने सिर हिलाया और बालकनी के दरवाजे बंद करते हुए कमरे से बाहर निकल गया। प्रमीला को एक पल के लिए खेद हुआ, लेकिन वह अनंत के कुछ कहने का इंतजार करती रही, जो केवल आह भर रहा था।

'कृपया समझने की कोशिश करें, मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ वह इस राज्य की भलाई के लिए है।' उसने हताश स्वर में कहा। 'हम एक भयंकर युद्ध के बीच में फंसे हुए हैं, प्रिय। और हमें आपकी मदद की ज़रूरत है। आपको राजकुमार का विश्वास जीतना होगा।'

अनंत ने जब ऊपर देखा तो प्रमीला ने अनिच्छा से सिर हिलाया, उसकी निर्मल आँखें प्रमीला की ओर झपक रही थीं। 'याद है वो समय, जब तुम्हें बचपन में इस राज्य के विद्रोहियों ने अगवा कर लिया था और मैंने तुम्हें बचाने के लिए सब कुछ किया था? मैंने तुम्हें बचाने के लिए राज-पाट तक त्याग दी थी, मेरी बच्ची, लेकिन वे पकड़े गए। तुम मेरी अनमोल हो...' उसने अपना हाथ प्रमीला की ठुड्डी पर रखा, 'और मैं तुम्हें कभी चोट नहीं पहुँचाऊँगा। यह शादी महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं तुमसे वादा करता हूँ, तुम्हें इसमें कोई तकलीफ नहीं होगी।'

'ठीक है, मुझे तुम पर भरोसा है।' उसने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा। 'मुझे उम्मीद है कि मेघनाद अपनी बदनामी से बेहतर होगा।'

अनंत हँस पड़ा। 'मैं इस बारे में पक्का नहीं कह सकता। लेकिन मैंने तुम्हें बुरे लोगों को अच्छे लोगों में बदलते देखा है। शायद तुम यहाँ भी ऐसा ही कर पाओगे।'

प्रमीला को बस उम्मीद ही थी। उसने अपने पिता को गले लगाया, तभी उन्होंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा: 'और कालिया पर भरोसा रखो। बस वही करो जो वह कहता है।'

प्रमीला को उसकी बात समझ नहीं आई, और वह पीछे हट गई। वह बालकनी से बाहर निकली और कमरे में, अंधेरे में, कालिया खड़ा था। प्रमीला ने उसे एक नज़र देखा और इससे पहले कि वह अपने गुस्से के लिए माफी मांग पाती, कालिया ने खुद कहा: 'महादेवी, आपके पिता को कुछ पता नहीं है, लेकिन मेरे पास एक योजना है।'

प्रमीला चुप थी।

'मैंने ही इस समारोह को शुरू करवाया था क्योंकि मुझे यह जानना था कि राक्षसों के पास क्या है।'

‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ प्रमीला ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।

‘परमाणु हथियार,’ कालिया बोला, ‘वही हथियार जो उन्होंने अमरावती में और उससे पहले भी इस्तेमाल किए थे। मैंने तुम्हें मेघनाद को अपने पक्ष में लाने के लिए इसलिए कहा था क्योंकि... मैं चाहता हूँ कि वह तुम्हें बताए कि वह ये हथियार कैसे बनाता है, ताकि हम उनकी नकल कर सकें। तुम और मैं दोनों जानते हैं कि नागलोक को अपने हथियारों के जखीरे की ज़रूरत है। और तुम्हारे पिता को यह विचार बिल्कुल नापसंद होता क्योंकि वह कभी तुम्हारी जान को खतरे में नहीं डालते, इसलिए मैंने अपने मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिए गठबंधन का सुझाव दिया।’

‘क्या आप नागराज को प्रभावित कर रहे हैं?’

‘जब तक उसकी बेटी इस साजिश में शामिल होने के लिए तैयार है, तब तक कोई फर्क नहीं पड़ता।’ वह अंधेरे से बाहर आया, प्रकाश में उसके स्त्रीत्वपूर्ण चेहरे और मर्दाना शरीर की झलक साफ दिखाई दे रही थी। ‘कृपया समझिए, मैं आपके पिता का सम्मान करता हूँ, लेकिन आप और मैं... हम एक ही लक्ष्य पर काम कर रहे हैं: नागलोक को मजबूत करना। और यह उस दिशा में एक कदम है।’ वह रुका।

मैं तुम पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ?

‘तुम ऐसा नहीं कर सकते।’ वह मुस्कुराया। ‘तुम मुझ पर ही भरोसा कर सकते हो क्योंकि सच कहूँ तो, या तो यही करना है या फिर नागलोक को उसके दुश्मनों के

खिलाफ एक सैन्यवादी राज्य बनने में मदद करने का अवसर खो देना है।'

प्रमीला ने अपने जबड़े भींच लिए। मेरे पास यहाँ कोई विकल्प नहीं है।

'साथ ही, तुम्हें समारोह शुरू होने से पहले ही सारी जानकारी हासिल करनी होगी, वरना यह योजना विफल हो जाएगी और तुम्हारी शादी उससे हो जाएगी।' उसने घृणा से कहा। 'और तुम्हारे पिता या किसी और को भी इस योजना के बारे में पता नहीं चलना चाहिए। यह बात हम दोनों के बीच ही रहेगी।'

'क्यों?'

'क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम उस राक्षस से शादी करो,' कालिया ने सिर हिलाते हुए कहा। 'जिस क्षण हमें अस्त्रों की उत्पत्ति के बारे में पता चलेगा...' वह कुटिल मुस्कान के साथ बोला। 'हम उसकी हत्या कर देंगे और इसका दोष किसी और पर डाल देंगे।'

19. मेघनाद

उसका रेडियोधर्मी मीटर झिलमिलाने लगा।

ऐसा काफी समय से हो रहा था, जब से वे नागलोक में दाखिल हुए थे। मेघनाद अपने कुछ साथियों, अंगरक्षकों और कुंभकरण के साथ नागों के साम्राज्य में प्रवेश कर चुका था। वे घोड़ों पर सवार थे और मेघनाद के लहराते लंबे बालों पर मुकुट था। उसने नागों को हाथ हिलाकर अभिवादन किया, जो उसे विस्मय से देख रहे थे।

'क्या वह इंद्रजीत नहीं है?'

वाह! वह कितना सुंदर है!

लोग राक्षसों को दानव क्यों कहते हैं? उसे देखो। वह कितना सुंदर है।

मेघनाद ने कुछ लड़कियों को आँख भी मारी, जो शर्मा गईं और आपस में कुछ फुसफुसाने लगीं, तभी कुंभकरण को खांसी आ गई।

'क्या मैं तुम्हें याद दिला दूं कि तुम यहाँ क्यों आए हो, बच्चे?' उस चिड़चिड़े, अजीब नाक वाले जनरल ने ताना मारा।

तभी मेघनाद को अपनी कमर में बंधे थैले से मीटर की खटखटाहट सुनाई दी। उसने धूल भरी सड़कों पर गहनों की तरह सजे हुए मणि पत्थरों की ओर अपना मीटर

निकाला। मीटर थोड़ा सा हिला, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं। इतना ज़रूर था कि मेघनाद को आगाह हो गया कि नागों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे पत्थरों में कुछ गड़बड़ ज़रूर है।

'अध्यक्ष?'

'ह्म्म?' कुंभकरण ने आह भरी।

मेघनाद ने कहा, 'मुझे लगता है कि हमारे शहर में रेडियोधर्मी तत्व मौजूद है। हालांकि यह उतना शक्तिशाली नहीं है।'

'सच में? ये तो कमाल की बात है। हमारे जासूसों ने कभी ऐसी किसी बात का जिक्र नहीं किया।'

मेघनाद बहुत उत्साहित था, खासकर इसलिए क्योंकि यह यात्रा अब सिर्फ शादी के बारे में नहीं थी। अब यह उन मणियों के स्रोत को खोजने के बारे में थी जिनका उपयोग चिन्तामणि या सोमा के साथ मिलाकर किया जा सकता था।

'ये पत्थर क्या हैं?'

कुंभकरण ने कहा, 'नीलम, जैसा कि मैं अनुमान लगा सकता हूं, जिन्हें नागमणि कहा जाता है, लेकिन वे यहीं खनन किए जाते हैं।'

'मुझे पूरा यकीन है कि अगर हमें खदान मिल गई, तो हमें उसमें एक शक्तिशाली रेडियोधर्मी तत्व मिल सकता है। इसे देखिए।' मेघनाद ने अपना मीटर दिखाया और कुंभकरण ने देखा कि कंपास का स्विच धीरे-धीरे लाल रंग की ओर झुक रहा है, लेकिन बहुत तेज़ी से नहीं। 'खनन के बाद इन्हें संशोधित, जलाया और काटा जाता है। इसीलिए इनमें रेडियोधर्मिता अपेक्षाकृत कम है और जानलेवा नहीं है...' उसने मणि पत्थरों की ओर इशारा करते हुए कहा, '... लेकिन अगर हमें असली मणि पत्थर मिल जाए, जो सीधे ज़मीन से निकाला गया हो, तो वह शायद शक्तिशाली होगा।'

कुछ देर में वे महल के द्वार पर पहुँच गए, जहाँ अनंत—एक भद्दा सा दिखने वाला राजा, जिसका तोंद उसके सिर से भी बड़ा था—ने अपने प्रिय मंत्री कालिया के साथ उनका स्वागत किया। सच कहें तो, मेघनाद ने कालिया के बारे में सुना था। वह न तो पुरुष था और न ही स्त्री। और इसी वजह से मेघनाद बहुत बेचैन हो गया था।

घोड़े से उतरते ही कालिया ने मेघनाद से हाथ मिलाने की कोशिश की, लेकिन मेघनाद ने तेवर चढ़ाकर उसे अनसुना कर दिया। इसके बजाय, उसने अनंत को गले

लगा लिया, जिसने हिजड़े के प्रति मेघनाद की घृणा को नहीं देखा, लेकिन कालिया ने देख लिया।

हमने दावत तैयार की है! आओ, आओ!

मेघनाद ने आह भरी, जैसे ही वह कुंभकरण के साथ-साथ चलने लगा, मीटर अभी भी उसके हाथ में था, जैसे ही वह नीलम पत्थरों से जड़े चमकदार संगमरमर के फर्श पर चला, और एक बार फिर, मीटर का स्विच चालू हो गया।

और उसका उत्साह चरम पर पहुँच रहा था।

मैं यहाँ एक नया हथियार बना सकता हूँ। एक नया एस्ट्रा!

मेघनाद, जो दूल्हा बनने वाला था, का स्वागत करने के लिए बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। भोजन कक्ष की ओर बढ़ते हुए मेघनाद मुस्कुरा रहा था। वह उनमें से आधे लोगों को भी नहीं जानता था, लेकिन उसने सबसे हाथ मिलाया, मुस्कुराया और एक आदर्श पुरुष दिखने की पूरी कोशिश की, जैसा कि एक महिला से शादी करने की उम्मीद की जाती है। आखिर उन्हें कैसे पता चलता कि वह किन खून-खराबे का ज़िम्मेदार था और किन-किन महिलाओं के साथ उसने संबंध बनाए थे?

मुस्कुराने से सब कुछ सामान्य लगने लगता है।

मेघनाद और कुंभकरण रात के खाने पर बैठे। उन्हें पीतल की थाली के बजाय ज़मीन पर बैठकर पत्तों में खाना पड़ा। मेघनाद के लिए पालथी मारकर बैठना थोड़ा मुश्किल था, पर उसे इस देश के रीति-रिवाजों का पालन करना ही था। जब मछली और चटनी परोसी जा रही थी, तो उसने कुंभकरण से फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे लगता है हम रात में उन्हें लूट सकते हैं। मैं कुछ आदमियों के साथ खानों में जा सकता हूँ...'

‘वह तुम्हारे ससुर हैं, बेटा। तुम उनसे सीधे पूछ सकते हो,’ कुंभकरण ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘उपहारों का लेन-देन होता है और तुम उपहार के रूप में ताजा खोदे गए, अछूते नागमणि मांग सकते हो। इससे तुम्हें अपनी होने वाली पत्नी के परिवार को लूटने की सारी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। और मुझे यकीन है, वे तुम्हें दे देंगे क्योंकि उन्हें नहीं पता कि हथियार बनाने में इसका इतना महत्व है।’

मेघनाद ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। उसके चाचा की बात में दम तो था। आखिर वही तो यहाँ का मुख्य अतिथि था।

लेकिन हमें सावधान रहना होगा। हम उन्हें शक नहीं होने दे सकते। अगर उन्हें जरा भी अंदाजा हो गया कि उनके पास परमाणु हथियार हैं, तो हालात बिगड़ सकते हैं और यह गठबंधन टूट जाएगा क्योंकि वे सोचेंगे कि हम यहां उनके मणियों के लिए आए हैं, न कि उनके लिए।' कुंभकरण ने ये शब्द जल्दी से जोड़ दिए, मानो वह मेघनाद को कोई मूर्खतापूर्ण काम करने से रोकना चाहता हो। 'मेरा सुझाव है कि आप यह सुनिश्चित कर लें कि हमारे पास खजाना है, इससे पहले कि हम कोई बेकार काम करें और दशानन की आपके लिए बनाई योजना को बिगाड़ दें।'

'ठीक है, मैं सावधानी बरतूँगा,' मेघनाद ने अनंत की ओर मुस्कुराते हुए कहा, जो खाना खाते समय बनाई गई गोलाकार मानव श्रृंखला के दूसरी ओर खड़ा था। 'मैं आज रात चुपके से जाकर उनके रेडियोधर्मिता स्तर की जाँच करूँगा। अगर स्तर ज़्यादा नहीं है, तो उनसे पूछने का कोई मतलब ही नहीं, है ना? क्योंकि फिर हम उनसे अस्त्र नहीं बना पाएँगे।'

'बारूदी सुरंगों की कड़ी सुरक्षा की जा रही है। हमारे धुएं वाले बमों के इस्तेमाल से भी आप उन्हें पार नहीं कर पाएंगे।' कुंभकरण ने यह बात तब कही जब मेघनाद को पता चला कि वह राजनयिक संबंधों के लिए कई बार नागलोक जा चुका है।

और तभी घर की महिलाएं अंदर आईं, उनमें से एक ने मेघनाद की पसंदीदा लाल रंग की साड़ी पहनी हुई थी। उसका चेहरा चुन्नी से ढका हुआ था और जैसे ही वह अपने पिता के बगल में बैठी, उसने अपनी चुन्नी हटाई और मेघनाद की नज़र सबसे पहले उसकी नीली आँखों पर पड़ी, जो नाग मणि की तरह साफ थीं। उसका गोरा चेहरा मासूमियत से भरा था और उसके घने बाल चोटी में बंधे थे। उसकी नाक थोड़ी झुकी हुई थी और होंठ भरे हुए थे।

और एक मनमोहक मुस्कान के साथ, उसने शर्माते हुए मेघनाद की ओर देखा।

क्या वह मेरी पत्नी है?

कुंभकरण ने ऊपर देखा और सिर हिलाया। 'समारोह तक उसे मत छूना। भगवान के लिए, प्लीज़।'

'मुखिया, अगर आपको याद न हो तो बता दूं, मैंने तो आसमान को ही निगल लिया था।' वह हँस पड़ा। 'लेकिन मैं कोई वादा नहीं कर सकता। अब मेरे पास एक योजना है।'

उफ़, ये क्या है?

मेघनाद ने प्रमीला की ओर मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे अच्छी तरह पता है कि खदानों में प्रवेश करने में मेरी मदद कौन कर सकता है।' प्रमीला एक छोटे बच्चे की तरह शरमा गई। 'कोई अंदरूनी व्यक्ति, कोई ऐसा व्यक्ति जो मुझे प्रभावित करने के लिए कुछ भी करेगा।'

वह स्पष्ट रूप से उससे प्यार करती थी।

'कौन?' अधेड़ उम्र के राक्षस ने पूछा।

उन्होंने कहा, 'प्रमीला।'

कुंभकरण ने अविश्वास भरी निगाहों से उसे देखा। 'ऐसा मत करो।' उसने अपनी निगाहें चौड़ी कर लीं। 'यह एक बुरा विचार है।'

'चिंता मत करो, मुखिया जी। उसे देखो।' मेघनाद ने कहा, जब उसने प्रमीला को खिलखिलाते और बार-बार उसकी ओर देखते हुए देखा। 'वह बच्ची की तरह मासूम है। मैं आसानी से उसे बहला सकता हूँ। मैं उससे झूठ बोल सकता हूँ।'

कुंभकरण ने आह भरी। 'अगर तुमने इसमें गड़बड़ कर दी, बच्चे, तो इस शहर में हमारी खूब बदनामी होगी।'

मेघनाद को जोखिम का अंदाजा था, लेकिन वह लोगों की भावनाओं के साथ खेलना भी जानता था।

और दूर से ही प्रमीला एक आसान निशाना लग रही थी।

20. लक्ष्मण

वे जनस्थान के द्वार पर थे।

और राघव का एक ही मकसद था।

रावण को मारने के लिए।

लक्ष्मण आमतौर पर उग्र स्वभाव के थे। लेकिन सीता माता के अपहरण के बाद राघव की मानसिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी। वह व्याकुल थे, आपस में बड़बड़ा रहे थे और उनका व्यवहार आवेगी और अनियमित था। लक्ष्मण को उन्हें रोककर सोचने के लिए कहना पड़ा। सचमुच सोचने के लिए। लेकिन राघव को यह बात स्पष्ट थी कि जनस्थान राक्षसों का इलाका है।

और शायद... सीता मां भी वहां होंगी।

बिना सेना के, बिना किसी सहायता के, केवल अपने भाई के साथ राघव अपने रास्ते पर चल पड़ा। लक्ष्मण के पास उसके पीछे जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

जैसे-जैसे वे एक लंबे मेहराबदार पुल के द्वार के पास पहुँचते गए, उनके सामने की खाइयाँ गहरी होती गईं। वह पुल अपने खंभों जितना ही चौड़ा था। शहर में शंकु के आकार के बुर्ज बने हुए थे और किले जैसी विशाल दीवारें साँप की तरह कुंडली मारे खड़ी थीं।

'क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है? हमारा साथ देने वाला कोई नहीं है।'

लेकिन राघव ने कोई जवाब नहीं दिया।

'उनके पास तो पूरी सेना है, भाई। जबकि हम... हम तो बस दो ही हैं।'

राघव आगे की ओर झुका हुआ था, उसका सिर आगे की ओर झुका हुआ था, और उसने अपने धनुष-बाण को वार करने के लिए तैयार कर रखा था। उसने अपने तरकश में पिछली लड़ाई में मारे गए सैनिकों के शवों से बचे हुए तीर भर रखे थे, साथ ही उसके पास एक चुराई हुई कुल्हाड़ी और कमर से लटकती तलवार भी थी। लक्ष्मण देख सकता था कि अंधेरे में उसका चिन्ह चमक रहा था, और वास्तविकता में देखा जाए तो उसका चमकना असंभव था, लेकिन राघव साधारण नहीं था। वह विष्णु का अवतार था। लेकिन भले ही उसकी शक्ति दसियों लोगों के बराबर थी, वह पूरी सेना को नहीं हरा सकता था, और ऐसा सोचना तो सरासर मूर्खता थी।

वह बेवकूफी कर रहा था।

लेकिन लक्ष्मण, अपने कर्तव्यनिष्ठ भाई की तरह, उसके पीछे-पीछे चले और जैसे ही वे पुलों पर पहुँचे, पुल के पास बहने वाली तेज़ धारा उफान मारते हुए टकराई और घने बादलों में बिजली कड़कने लगी। वह एक अंधकारमय दिन था और लक्ष्मण ने जब उनके लिए आने वाले खतरे को देखा तो स्थिति और भी खराब हो गई।

मुख्य द्वारों पर केवल कुछ ही गार्डों के बजाय, पूरी सेना तैनात थी।

गुलेलें कतार में खड़ी थीं, तीरंदाज किले की दीवारों के ऊपर से निशाना साध रहे थे, और पुल पर तैनात सैनिक अपनी तलवारों के साथ तैयार थे।

और सबसे आगे थीं रानी मीनाक्षी।

वह महिला। हमारी सारी मुसीबतों की वजह।

लेकिन लक्ष्मण ने देखा कि राघव को कोई परवाह नहीं थी। बल्कि, उसने बाण चलाना शुरू कर दिया। उसके बाण मीनाक्षी के पास खड़े राक्षसों को भेदते हुए निकल गए, जो अपनी जगह पर जमी हुई थी। राघव तब तक बाण चलाता रहा जब तक कि कई राक्षस गिर नहीं गए, लेकिन मीनाक्षी ने पलटवार न करने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया था।

फिर राघव का तरकश खाली हो गया और वह गुस्से से हांफते हुए अपनी तलवार निकाली और मीनाक्षी की ओर दौड़ पड़ा।

वह पागल हो रहा है।

और उसने अपनी तलवार मीनाक्षी के चेहरे के करीब ला दी। मीनाक्षी ने अपने रक्षकों को हमला न करने का आदेश दिया था, जिसके कारण उनके चेहरे तनावग्रस्त हो गए।

'मैं उसकी मदद कर सकती हूँ। मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ,' मीनाक्षी ने फुसफुसाते हुए कहा।

लक्ष्मण ने पूछा, 'आपको कैसे पता चला कि हम आ रहे हैं?'

'क्योंकि मैंने बाहरी इलाके में जासूस तैनात कर रखे हैं, जो दुश्मन के आने पर हमें झंडा भेज देते हैं। मैंने अपनी दूरबीन से तुम दोनों को देखा। तभी मुझे आकर तुम्हें सच बताना पड़ा,' मीनाक्षी ने मासूमियत भरी आँखों से समझाया।

तभी राघव रुक गया। वह अपनी जगह पर जम गया, उसकी आँखें चौड़ी और लाल थीं और तभी लक्ष्मण समझ गया कि उसे राघव को काबू में करना होगा। उसने अपने भाई को पकड़ा और उससे हथियार नीचे करवाया। उसने राघव के लिए हथियार म्यान में रखा और उससे कहा, 'बस एक गहरी साँस लो और देखो कि उसके पास कितने आदमी हैं।'

राघव ने अपना सिर ऊपर उठाया और लक्ष्मण को वह सब दिखाई दिया जो वह देख रहा था— सौ से अधिक धनुर्धारी शिखर पर तैनात थे, उनके अग्नि बाण राघव की ओर तने हुए थे। लक्ष्मण ने पूछा, 'क्या तुम सीता माता को बचाने से पहले मरना चाहते हो?' यह सुनकर राघव थोड़ा शांत हुआ।

'मैं आपकी मदद कर सकती हूं,' मीनाक्षी ने फिर कहा।

लक्ष्मण ने राघव को बाहों में भरते हुए कहा, 'हमें तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं है, चुड़ैल।'

और जब वे जाने के लिए मुड़े तो मीनाक्षी ने कहा, 'मुझे पता है वह कहाँ है।'

लक्ष्मण रुक गया। राघव भी रुक गया। मीनाक्षी आगे आई और अपनी सेना से अलग हो गई ताकि वे उसकी आवाज न सुन सकें। 'मुझे पता है तुम्हारी पत्नी कहाँ है।'

'कहाँ?' लक्ष्मण ने उससे पूछा। राघव चुप रहा।

'लंका।'

'अभी तक?' राघव ने धीमी आवाज़ में पूछा। 'अभी तो बस कुछ ही दिन हुए हैं...'

'तुमने हमारा उड़ने वाला यंत्र तो देखा ही होगा। हम घोड़ों पर सवार किसी भी व्यक्ति से तेज़ चलते हैं।' मीनाक्षी ने कहा। 'सुनो, तुम दोनों, सीता के अपहरण में मेरा कोई हाथ नहीं था। दरअसल, मैंने उसे रोकने की कोशिश की थी, लेकिन उसने पहरेदारों से एक खूबसूरत औरत के बारे में सुन लिया था, और मेरा भाई—ओह, उसे औरतों से दिक्कत है और वह बस उसे देखने के लिए निकल पड़ा। वह एक हवस का आदमी है...'

'क्या उसने उसे छुआ है?' राघव ने नम आँखों से उससे पूछा। लक्ष्मण देख रहा था कि उसका भाई इस समय भावनाओं के कितने उतार-चढ़ाव से गुजर रहा है।

'नहीं, जब तक उनकी शादी लंका में नहीं हो जाती,' मीनाक्षी ने भावहीन चेहरा बनाए रखा।

'लेकिन वह तो पहले से ही...' लक्ष्मण ने विरोध जताया।

'मेरे भाई को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह सत्ता का भूखा और शैतानी है,' मीनाक्षी ने सिर हिलाते हुए कहा। 'मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह पागल हो चुका था। उसने अपना मन बना लिया था। ओह, कितना दुखद दिन था। भगवान राघव, मैं क्षमा चाहती हूँ। काश मैं कुछ और कर पाती।'

राघव ने सिर हिलाया। लेकिन लक्ष्मण को उस पर यकीन करना मुश्किल हो रहा था। वह इतनी मासूम नहीं हो सकती थी। शायद... शायद वह उन्हें बेवकूफ बना रही थी, लेकिन लक्ष्मण को अपने इस बयान को साबित करने के लिए सबूत चाहिए थे।

'मैं आपकी मदद कर सकती हूँ,' उसने फिर कहा। 'लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप ऐसा चाहते हैं या नहीं।'

लक्ष्मण और राघव सोच-विचार करने लगे। लेकिन लक्ष्मण अपने भाई के बोलने का इंतजार कर रहे थे, जो संकट के समय चुप रहा। 'हम तुम पर कैसे भरोसा कर सकते हैं?'

‘तुम्हें अपने साम्राज्य से निर्वासित कर दिया गया है और मेरे सिवा तुम्हारा कोई नहीं है। मैं तो हमेशा क्षमा मांगती और कृतज्ञ रही हूँ, भले ही भगवान राघव ने मेरे साथ निर्दयता दिखाई हो। क्या मैंने ऐसा नहीं किया?’ मीनाक्षी ने अपने शब्दों में सच्ची भावना भरते हुए कहा, एक ऐसी गंभीरता जिससे शायद राघव भी सहमत थे।

राघव ने आह भरी, ‘मुझे नहीं पता मेरे दिमाग में क्या गड़बड़ हो गई थी।’ ‘मैं... मैं... मैं यहाँ क्यों हूँ? क्या मैं पागल हो गया हूँ? मैं तुम पर इस तरह हमला कैसे कर सकता हूँ? मैंने अपने भाई की जान भी जोखिम में डाली।’ वह रोने ही वाला था, लेकिन मीनाक्षी ने सिर हिला दिया।

‘दुखी मत हो, क्योंकि आज तुम्हें योजना बनानी है। अब ध्यान से सुनो। मैं एक ऐसे व्यक्ति से मिलने जा रही हूँ जिसके पास सेना और सही लोग हैं जो दशानन के विरुद्ध इस युद्ध में तुम्हारी मदद कर सकते हैं, हालाँकि हमें नहीं पता कि वह तुम्हारी मदद करेगा या नहीं, लेकिन हम देखेंगे।’ उसने कहा। ‘चूँकि लंका एक द्वीप है और यात्रा के लिए तुम्हें जहाजों की आवश्यकता होगी, इसलिए तुम्हें उनसे गठबंधन करना होगा, क्योंकि दक्षिणी तट पर उनके संपर्क हैं जो तुम्हें उस भूमि तक पहुँचने और सीता को मेरे भाई से विवाह करने से रोकने में मदद कर सकते हैं।’

लक्ष्मण ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'आप हमारी मदद क्यों कर रहे हैं?'

‘क्योंकि मैं हमेशा सही का साथ देती हूँ, ठीक है?’ मीनाक्षी ने आह भरी। ‘अपने इकलौते साथी पर शक करना बंद करो। मेरे आदमियों...’ वह पीछे मुड़ी तो देखा कि शक करने वाले राक्षस उन्हें देख रहे थे, लेकिन तीनों की फुसफुसाहट के कारण कुछ सुन नहीं पा रहे थे, ‘...से झूठ बोलना पड़ेगा। मैं उन्हें बता दूँगी कि मैंने तुम्हारे साथ संधि की है, नहीं तो वे संदेश भेज देंगे कि मैं अपने साम्राज्य के साथ विश्वासघात कर रही हूँ। लेकिन यह मेरी समस्या है। मुझ पर भरोसा रखो, ठीक है? सूर्यास्त के समय ऋषिमुख पर्वत की गुफा के प्रवेश द्वार के पास मुझसे मिलो। वहाँ केवल एक ही गुफा है और तुम उसे देख लोगे।’

राघव ने पूछा, 'हम किससे मिल रहे हैं?'

लक्ष्मण से नज़रें मिलाते हुए, उसके चेहरे पर एक मददगार मुस्कान फैल गई और उसने कहा, 'वह एक विद्रोही नेता है, उसका एक शिविर है। वह सुग्रीव के नाम से जाना जाता है, और हनुमान नाम के एक वानर सेनापति द्वारा उसकी सहायता की जाती है।'

21. प्रमीला

उसके पास तीन दिन थे।

शादी समारोह से तीन दिन पहले, उसे यह पता लगाना था कि मेघनाद ने बम कैसे बनाए। और अगर वह असफल रही तो...

उसने एक विकल्प के बारे में सोचा था। लेकिन उसे कोई विकल्प नहीं मिला। शायद इसका मतलब यह होगा कि उसे सचमुच उस राक्षस से शादी करनी पड़ेगी और वह हमेशा के लिए उसके साथ फंसी रहेगी। यह सोचकर उसे घिन आती थी। क्योंकि उसके पिता हर हाल में गठबंधन चाहते थे और जिस मंत्री से वह नफरत करती थी, वह बम योजनाओं और राक्षस साम्राज्य के अंत की कामना करता था।

एक ही दरबार में दो विपरीत विचारधाराएँ थीं और वह इस खींचतान में फँस गई थी। उसके पिता इस गठबंधन में दखल नहीं देना चाहते थे क्योंकि इसका मतलब रावण से पंगा लेना होता। लेकिन अगर वह योजनाओं को हासिल कर लेती और मेघनाद की हत्या हो जाती, तो रावण का साम्राज्य पंगु हो जाता। और उनके पास रावण पर हमला करने के लिए अस्त्र बनाने, प्रमीला की पवित्रता बचाने और नागलोक को एक उभरते स्वायत्त राज्य के रूप में संरक्षित करने के लिए संसाधन होते।

इसलिए वह यह सब सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि अपने लोगों के लिए कर रही थी।

हे भगवान, मैं रावण के बेटे को देखकर मुस्कुरा रहा था।

यह सोचकर उसे घिन आती थी, लेकिन कालिया ने उसे राजकुमार को निहत्था करना, उसे अपने आकर्षण में बांधना सिखाया था। उसे मासूमियत का नाटक करना था। उसे नखरे दिखाने थे, यहाँ तक कि मोहक भी। और यह सोचकर कि कालिया को इस बारे में इतना कुछ पता है, उसके मन में एक सवाल उठता था: वह उसे और क्या सिखाएगा? और वह यह जानना भी नहीं चाहती थी क्योंकि वह पहले ही बहुत कुछ कर चुकी थी।

वह अपने कमरे में थी जब उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी।

एक सिर अंदर झाँका। यह अंजनी का जाना-पहचाना चेहरा था। 'वह यहाँ है।'

प्रमीला ने अपनी कमर सीधी की। कालिया के निर्देशानुसार उसका सीना खुला हुआ था, उसकी छाती की पतली सी झलक साफ दिखाई दे रही थी, जिसे वह छुपकर देख सकता था। अपनी कामुकता का इस्तेमाल करने के विचार मात्र से ही उसे उल्टी जैसा महसूस हो रहा था, लेकिन कालिया ने उसे समझाया कि किसी पुरुष को, खासकर मेघनाद जैसे व्यक्ति को, वश में करने का यही एकमात्र तरीका है।

दरवाजा थोड़ा सा खुला और उसने रावण के पुत्र को लंबे काले कुर्ते में अपने कमरे में प्रवेश करते देखा। वह नंगे बदन था, गले में एक गहना लटका हुआ था। उसने अपनी अच्छी तरह से तेल लगी मूंछों को दोनों तरफ घुमाते हुए कहा: 'तुम बहुत सुंदर लग रही हो।'

'धन्यवाद।' प्रमीला ने मोहक मुस्कान के साथ कहा।

'चाचा और तुम्हारे पिताजी चाहते थे कि हम एक-दूसरे को जान लें। अब मैं तो...' वह खिड़की की ओर बढ़ा। '...पार्क में टहलना पसंद करता, लेकिन तुमने... तुमने मुझे अपने कमरे में बुलाया। तुम बिलकुल भी पुराने ख्यालों के नहीं हो, है ना?'

प्रमीला जानती थी कि मेघनाद क्या सोच रहा है। हर पुरुष क्या सोचता है। लेकिन यही तो वह चाहती थी कि वह सोचे: कामुकता एक वासनापूर्ण पुरुष को वश में करती है। और राक्षस वासनापूर्ण स्वभाव के लिए जाने जाते थे। प्रमीला आत्मविश्वास से भरे, सुगंधित योद्धा मेघनाद के पास गई और उसने देखा कि वह मांसपेशियों से युक्त था, लेकिन अन्य राक्षसों की तरह भारी-भरकम नहीं था। वास्तव में, वह दुबला-पतला और आकर्षक था।

'तुम क्या कर रहे हो?' उसने पूछा।

'आप क्या चाहते हैं?' प्रमीला मुस्कुराई। 'हमारी शादी हो रही है, मुझे लगा कि आप यह देखना चाहते हैं कि मैं बिस्तर पर कैसी हूँ।'

उसने हिचकिचाते हुए उसके सीने को छुआ...

जब उसने उसकी बांहें पकड़ीं और उन्हें पीछे की ओर मोड़ दिया।

उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। और वह आश्चर्य से अपनी निगाहें चौड़ी कर लीं, जबकि मेघनाद बिना किसी भाव के बस उसके होंठों के कोनों को देखती रही।

और फिर वह उसे छोड़कर चला गया।

जैसे ही वह उससे दूर जाने लगा, उसने अपने तनावग्रस्त शरीर को ढीला छोड़ दिया।

मुझे लगा कि वह मान जाएगा और फिर मैं उसे बहला-फुसलाकर जानकारी निकलवा लूंगी।

लेकिन उनका आना एक आश्चर्य की बात थी।

'मेरी प्रियतमा,' उसने धीरे से कहना शुरू किया, 'मेरी प्रतिष्ठा मुझसे पहले ही फैली हुई है। मुझे अय्याश कहा जा सकता है, लेकिन मैं यहाँ आपके साथ बसने आया हूँ। जिस क्षण मैंने आपको देखा, मेरा दिल आप पर आ गया। आपका शरीर मेरी प्राथमिकता नहीं है, भले ही आप चाहती हों कि मैं उसे प्राथमिकता बनाऊँ।'

प्रमीला ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। क्या वह सचमुच ऐसा है? क्या रावण का पुत्र सचमुच अच्छा हो सकता है?

'इसके लिए मैं माफी मांगती हूं।' प्रमीला ने तिरस्कारपूर्वक अपना सिर नीचे कर लिया। 'मैंने आपको किसी और के रूप में समझा था।'

'हेह,' मेघनाद मुस्कुराई, 'तुम तो काफी समझदार लगती हो। बताओ, तुमने इस अनावश्यक शादी के लिए क्यों हाँ कहा?'

मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।

'मुझे तुम पसंद थे।' उसने झूठ बोला।

'सच में?' वह हँस पड़ा। 'और तुम्हें मुझमें क्या पसंद है?'

प्रमीला जानती थी कि यही उसका मौका है। वह उसके पास वापस चलते हुए, उसके गले पर हाथ फेरते हुए बोली: "आप एक वीर योद्धा हैं, एक नवप्रवर्तक हैं, विज्ञान और जादू के धनी हैं..." उसकी उंगलियां धीरे-धीरे उसके जबड़े पर फिरीं और उसने उसके भावों में बदलाव देखा। "आप अजेय हैं। आप एक चैंपियन हैं। आप एक हीरो हैं। और मैं ऐसे ही किसी से शादी करना चाहती हूं।"

प्रमीला अपने स्पर्श से उसे उत्तेजित कर रही थी, इसलिए उसने अपनी आंखें बंद कर ली थीं।

'आपकी खुशबू बहुत अच्छी है, मेरी लेडी।'

'सिर्फ तुम्हारे लिए, मेरे प्यार,' प्रमीला मन ही मन झूठ बोलने के लिए दांत पीस रही थी।

लेकिन केवल मेरे राज्य के लिए।

'मुझे कुछ बताओ...' उसने शुरू किया, '...क्या तुम बताओगे?'

‘क्या?’ मेघनाद ने अपनी आँखें खोलीं और उसकी आत्मा में देखा। और वह चाहती थी कि वह झूठ न देखे।

मुझे विज्ञान से प्यार है और मैं जानता हूँ कि आप जो एस्ट्रा बनाते हैं, या मैंने सुना है कि आप बनाते हैं, वह जादू नहीं, बल्कि विज्ञान है। आप इसे कैसे करते हैं? यह क्या है? मुझे बहुत जिज्ञासा है।'

मेघनाद मुस्कुराया। 'क्या तुम सच में जानना चाहते हो या सिर्फ मुझे प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हो?'

'नहीं, मेरी जान, सचमुच, मैं करता हूँ।'

मेघनाद ने झट से उसकी कमर पकड़ ली और उसे दीवार से सटा दिया, उसके होंठ उसके होंठों के करीब आ गए, उसके बाल उसके बालों को छू रहे थे। और अब उसकी उंगलियां धीरे-धीरे उसके स्तनों तक पहुंच गईं। 'मैं तुम्हें दिखा सकता हूं कि मैं यह कैसे करता हूं,' उसने कहा।

बिंगो।

'लेकिन क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ?' उसने अपनी उंगली से उसके क्लीवेज को घुमाते हुए पूछा।

प्रमीला ने धीरे से अपनी उंगली हिलाई और उसे अपने मुंह की ओर ले गई, और उसे चाटने लगी। एक पल के लिए, उसने देखा कि मेघनाद की आँखों में अपार आनंद और उसे पकड़कर बिस्तर पर पटकने और उसके शरीर को चूमने की बेकाबू इच्छा जाग उठी थी। लेकिन उसने सही समय पर खुद को रोक लिया। 'मैं लगभग तुम्हारी पत्नी ही हूँ और हम दोनों एक-दूसरे से राज़ साझा करेंगे। क्यों न हम किसी ऐसी चीज़ से शुरुआत करें जिसके बारे में हम दोनों उत्सुक हों?'

'सही कहा। वैसे, मुझे तुम्हारी जीभ का मेरी उंगलियों पर स्पर्श बहुत पसंद है, मेरी प्रियतमा।'

‘चिंता मत करो, तुम्हें कहीं और भी बहुत अच्छा लगेगा।’ प्रमीला ने शरारती मुस्कान के साथ कहा। ‘लेकिन इसके लिए तुम्हें मुझ पर भरोसा करना होगा।’

मेघनाद की मुस्कान गायब हो गई और उसकी निगाहें सोच में डूब गईं। 'ठीक है, लेकिन इसके लिए तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।'

'कुछ भी, मेरी जान।'

'आपको मुझे उन खानों में ले जाना होगा जहां नागमणि की खुदाई की जाती है।'

उसकी मुस्कान फीकी पड़ गई। वह किस मुसीबत में फंसने जा रहा था? 'क्यों?'

‘आप अस्त्रों के बारे में जो कुछ भी जानना चाहते हैं, मैं आपको केवल तत्वों को मिलाकर ही दिखा सकता हूँ। मेरे पास सोमा पत्थर हैं जिन्हें मैं अपने साथ रखता हूँ और नाग मणि एक अस्त्र बनाने के लिए एक अच्छा संयोजन हो सकता है।’

उन्होंने कहा, 'नागमणि रेडियोधर्मी नहीं है।'

'इस बात की पुष्टि करने के लिए हमें खदानों में जाकर इसका परीक्षण करना होगा।'

प्रमीला इसे हकीकत में होते देखना चाहती थी और फिर अपने देश के वैज्ञानिकों को भी यही सिखाना अच्छा होगा। 'पिताजी को यह पसंद नहीं आएगा। वह बाहरी लोगों को पवित्र खानों में प्रवेश नहीं करने देते।'

मैं तुम्हारा पति हूँ।

प्रमीला जानती थी कि उसे अपने पिता की नजरों में आए बिना चुपके से खदानों के अंदर जाना होगा, अन्यथा उन्हें पता चल जाएगा कि वह और कालिया क्या कर रही हैं।

‘ठीक है, चलो चलते हैं,’ उसने घोषणा की।

22. मेघनाद

वह बेहद कष्टदायक था।

मेघनाद ने प्रमीला को कम आंका था, लेकिन हे भगवान! वह तो उसे पूरी तरह से अपने वश में कर रही थी। और वह यह सब कैसे कर रही थी? उसके अंदर एक गहरी, अथक ऊर्जा थी, कुछ ऐसा जो उसे आकर्षित भी करता था और चुनौती भी देता था। हमेशा से महिलाओं को वही नियंत्रित करता था, लेकिन अब मामला अलग था।

प्रमीला ने उसकी गर्दन पकड़ रखी थी और उसे ध्यान केंद्रित करना पड़ रहा था कि उसे उससे क्या पूछना है।

लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, वह उससे अपनी मनचाही चीज हासिल करने में कामयाब रहा और यह सफल रहा।

फिलहाल वे खदानों की ओर जा रहे थे। लोगों की नज़रों से बचने के लिए उन्होंने अपने शरीर को लबादे से ढक रखा था। उन्होंने डरावने हिजड़े कालिया की मदद ली थी, जिसने उनके लिए एक गाड़ी और लोगों की नज़रों से छिपने के लिए भेस बदलने

का इंतज़ाम किया था। कालिया के अधीन एक गार्ड उन्हें गाड़ी चला रहा था और वे चुपचाप गाड़ी की छाया में छिपे हुए थे।

प्रमीला शांत और विचारशील थी। मेघनाद को समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसी इंसान है। वह भोली होने का दावा करती थी, लेकिन उसकी मोहकता मेघनाद के रोंगटे खड़े कर देती थी।

वह एक रहस्य थी। और इसी वजह से मुझे सावधान रहना पड़ता है।

वह चालाक हो सकती है और मेघनाद ने हमेशा अपने पिता के अलावा किसी और से ज्यादा अपनी अंतरात्मा पर भरोसा करना सीखा था।

वह अपने पिता का अंधाधुंध अनुसरण करता था।

उसने गार्ड से कहा, 'रुको।'

'क्या हम पहुँच गए हैं?' मेघनाद ने पूछा, लेकिन जब उसने अपना सिर घुमाया तो देखा कि वे एक सड़क के बीचोंबीच थे।

'नहीं, रुको,' उसने गाड़ी से उतरते हुए कहा, उसका चेहरा हुड से ढका हुआ था। मेघनाद ने बाहर झाँककर देखा तो वह एक भिखारी के पास जा रही थी, घुटने टेककर उसे दो सोने के सिक्के दे रही थी। भिखारी ने उसके पैर छुए, लेकिन उसने शर्म से खुद को पीछे खींच लिया क्योंकि वह इस तरह की बात के लिए पूजी जाना नहीं चाहती थी।

फिर वह वापस ठेले के पास गई और बैठ गई। 'चलो चलते हैं।'

गाड़ी चलने लगी और मेघनाद अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखने लगी, यह जानने के लिए कि वह क्या स्पष्टीकरण देगी, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा, वह चुप रही।

'अरे, ये सब क्या था?' क्या वो भिखारी जासूस था? मेघनाद के दिमाग में कई तरह की संभावनाएं दौड़ रही थीं, लेकिन उसका जवाब बस इतना था:

'कुछ नहीं, मेरे प्यारे,' उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

'यह तो वाकई कुछ खास होगा।'

'यह बस...'

'क्या आप उसे जानते थे?'

'नहीं।'

मेघनाद ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'तो तुमने एक अजनबी को सोना दे दिया?'

'हाँ।'

मेघनाद हालात को समझने की कोशिश कर रहा था। और प्रमीला समझ गई कि वह मुश्किल दौर से गुजर रहा है, तभी उसने कहा: 'यह देने की बात है, मेरे प्रिय। मैं समाज के निचले तबके के लोगों को बहुत कुछ देती हूँ। मुझे लगता है कि हमें उनके उत्थान के लिए और अधिक प्रयास करने चाहिए।'

तो क्या उसे दान-पुण्य करना पसंद है?

लेकिन खैर, वो तो...

'बेवकूफी? मुझे पता है। बहुत कम लोग समझते हैं कि मैं ऐसा क्यों करती हूँ। और मैं नहीं चाहती कि वे समझें। मैं हमेशा से ही लेने के बजाय देने में निस्वार्थ रही हूँ। मुझे लगता है कि यह आदत मुझे मेरी माँ से विरासत में मिली है।'

'वह कहाँ है?'

'उसकी मृत्यु बीमारी के कारण हुई।'

मेघनाद चुप हो गया। 'सच में? तो तुम्हारी माँ ने तुम्हें ये सब सिखाया?'

उसने सिर हिलाया। 'बचपन से ही मैंने उसे दलितों के अधिकारों के लिए लड़ते देखा है, क्योंकि कुलीन वर्ग हमेशा उनकी जरूरतों के प्रति तुच्छ और अज्ञानी रहता था। मुझे हमेशा से विश्वास था कि अगर वह बीमार न होती, तो वह इस दुनिया को बदल देती। और मुझे उम्मीद है कि मैं इसे आगे बढ़ाऊंगी।'

मेघनाद ने पलकें झपकाईं। उसके जीवन में कभी माँ जैसी कोई शख्सियत नहीं थी। मंदोदरी एक शांत स्वभाव की महिला थीं, जिनके साथ उसका कभी तालमेल नहीं बैठा। केवल मीनाक्षी मौसी ही थीं जिनसे उसे लगाव था... जिन्होंने उसे अच्छा इंसान बनना सिखाया था, लेकिन विद्युत की मृत्यु के बाद सब कुछ बदल गया।

मेघनाद ने बुरी यादों को याद न करने की कोशिश की, बल्कि अच्छी यादों को खोजने का प्रयास किया।

'लेकिन एक अकेला व्यक्ति बदलाव नहीं ला सकता,' मेघनाद मुस्कुराया, 'मैंने मूर्खों को समाज के लिए काम करते देखा है और समाज ने उन्हें ही पलटवार किया है।'

प्रमीला ने मुस्कुराकर जवाब दिया, लेकिन वह एक खामोश व्यंग्यपूर्ण मुस्कान थी। 'मैं कर्म के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखती हूँ। जो दूसरों का भला करते हैं, उन्हें भला मिलता है। और इसका उल्टा भी सच है।'

मेघनाद इस बात पर विश्वास करना चाहता था, लेकिन उसके पिता ने इतनी तबाही और मौत फैलाई थी और बदले में उन्हें यश, प्रतिष्ठा और... 'डर' मिला था, उसने कहा।

'क्या?'

'डर बदलाव का सूचक है, मेरे प्रिय। डर से तुम इस शहर को बदल सकते हो। कल्पना करो अगर तुम उन रईसों का पीछा करना शुरू कर दो जो गरीबों को नुकसान पहुंचाते हैं, क्या तुम्हें नहीं लगता कि इससे कम की तुलना में कहीं अधिक फर्क पड़ेगा?'

प्रमीला ने उसके प्रस्ताव पर विचार किया और उसने देखा कि वह चुपचाप और शांति से उसकी बात सुन रही थी, लेकिन फिर उसने अपना सिर हिलाया और अपना बचाव करने के लिए तैयार हो गई, तभी ड्राइवर ने रूखे लहजे में कहा: 'हम पहुँच गए हैं।'

मेघनाद और प्रमीला गाड़ी से उतरे और मेघनाद की नज़र खदानों पर पड़ी - वे मिट्टी के खेतों के कब्रिस्तान जैसे लग रहे थे। खदानें गहरी खोदी गई थीं और उनके पास मशालें रखी थीं। उनके सामने मिट्टी का एक टीला था जो पृष्ठभूमि में छाया की तरह दिख रहा था। एक गुफा जैसा प्रवेश द्वार, जिसमें एक टेढ़ी-मेढ़ी सुरंग थी, गश्त कर रहे नागा सैनिकों द्वारा सुरक्षित था। प्रमीला ने तुरंत मेघनाद का हाथ पकड़ा और उसे खदान के दूसरे छोर पर कांटों से ढके एक छोटे, सुनसान प्रवेश द्वार की ओर ले गई। उसके आगे, और भी पहरेदार खनिकों के आसपास घूम रहे थे जो आधी रात में खेतों के पास छोटे-छोटे पॉलिएस्टर तंबुओं में सो रहे थे।

उसने अपना खंजर निकाला और झाड़ियों को काटना शुरू कर दिया, अंततः उसने फाटक को खोल दिया।

लेकिन जब गेट खुला, तो एक भयानक चीखने की आवाज सुनाई दी, जिससे अफरा-तफरी मच गई और सभी गार्ड गेट की ओर बढ़ने लगे।

नहीं।

प्रमीला ने डर से आंखें फाड़कर पीछे मुड़कर देखा। 'हम पकड़े जाने वाले हैं।'

23. मेघनाद

उसे पता था कि उसे क्या करना है।

उसने रुई जैसी मुलायम गेंद को बाहर निकाला, जिसकी बनावट रुई जैसी थी लेकिन उसमें बांस की बनी एक छोटी सी बेल थी।

‘यह क्या है?’ प्रमीला ने डिवाइस को देखते हुए पूछा।

'ध्यान भटकाने का एक तरीका,' उसने मुस्कुराते हुए उसकी कमर पकड़ ली और उसे दीवार से सटाकर अंधेरे में छिपने के लिए धकेल दिया, क्योंकि गार्ड उस गेट के चारों ओर आ रहे थे जिसे वे खोलने की कोशिश कर रहे थे।

दीवार के कोने में मशाल की रोशनी चमकी जब उसने अपनी गेंद की रस्सी में आग लगाई। उसमें से चटकने की आवाज़ आने लगी और उसने गेंद को गली के दूसरे छोर पर, गेट से दूर फेंक दिया।

‘अपने कान बंद कर लो,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा और प्रमीला ने वैसा ही किया...

यह पल भर में फट गया और एक भयंकर विस्फोट के बजाय, यह घरघराहट, सीटी और चटकने की आवाज के साथ हवा में गूंज उठा, जिससे पहरेदार सतर्क हो गए और उन्होंने अपनी तलवारें निकाल लीं और उस दिशा में दौड़ पड़े।

'वह क्या था?'

लेकिन मेघनाद के पास जवाब देने का समय नहीं था। इसके बजाय, उसने उसे गेट के अंदर खींच लिया और बारूदी सुरंगों से भरे मैदानों से होते हुए अंधेरे रेगिस्तान को पार करते हुए तेजी से भागा। मिट्टी की गंध उसकी नाक में घुस गई और तेज हवा उसके चेहरे से टकराने लगी, जब वे खनिकों और पहरेदारों की झोपड़ियों से दूर, छोटी-छोटी गुफाओं के करीब पहुँच गए।

‘यह क्या था?’ उसने दोबारा पूछा।

मेघनाद ने कहा, 'पोटेशियम नाइट्रेट को एक छोटी गेंद में संपीड़ित किया जाता है, इसमें लेड ऑक्साइड होता है जो आग के संपर्क में आने पर लेड परमाणु में परिवर्तित हो जाता है, जिससे वह विस्फोट होता है जो आपने अभी देखा।'

प्रमीला कुछ देर तक चुपचाप बड़ी-बड़ी आंखों से उसे देखती रही।

‘क्या तुम प्रभावित ही रहोगे या मुझे दिखाओगे कि नाग मणि कहाँ से निकाली जाती है, मेरे प्रिय?’ मेघनाद मुस्कुराया।

प्रमीला ने गले में अटकी गांठ को किसी तरह निगला और सिर हिलाते हुए उसका हाथ पकड़ा और उसे गुफा के अंदर ले गई, जहाँ एक छोटी सी खाई बह रही थी। वहाँ

की गंध भयानक थी, लेकिन मेघनाद ने इससे भी कहीं ज़्यादा बुरी गंधें सूँघी थीं। छत तंग थी और दीवारें इंसानों द्वारा बनाई गई थीं और उनमें दरारें थीं, मानो उन पर कठोर हथियारों से वार किए गए हों।

मेघनाद ने पूछा, 'तुम्हें इस जगह के बारे में कैसे पता?' 'तुम्हारी माँ को?'

'अधिक सटीक रूप से कहूँ तो, मेरे पिता। वे हमेशा चाहते थे कि मुझे विज्ञान में होने वाले नए विकासों से प्यार हो।'

'वाह! यह जानकर आश्चर्य होता है कि आपकी संस्कृति महिलाओं को घरेलू दायरे से बाहर जाकर काम करने की अनुमति देती है। हमारी संस्कृति में तो नहीं। हमारे लिए तो आप बस...' मेघनाद ने अपने होंठ दबा लिए। वह महिलाओं के प्रति अपनी घृणा को छिपा नहीं सका। 'कुछ नहीं। मतलब, कुछ तो है, लेकिन जैसे...'

'मैं राक्षस संस्कृति के बारे में सब कुछ जानती हूँ।' उसने मेघनाद का उपहास किया, लेकिन मेघनाद उस पर हँस पड़ा, क्योंकि वे अंदर की ओर बढ़ते गए और रोशनी धीरे-धीरे कम होती गई।

'आप और उम...' मेघनाद ने सावधानी से पूछा, '... आपके पिता, क्या आप दोनों करीब हैं?'

प्रमीला ने कुछ देर सोच-विचार करने के बाद जवाब दिया: 'मुझे उस पर सबसे ज्यादा भरोसा है। उसने मुझसे कभी झूठ नहीं बोला। इसलिए हां, हम एक-दूसरे के बहुत करीब हैं।'

'मैं समझ गया। मेरे पिता के बारे में ऐसा नहीं कह सकता। तो आप वैज्ञानिक बनना चाहते हैं? मुझे लगता है कि आप ऐसे व्यक्ति हैं जो बच्चे नहीं चाहते? बस काम में व्यस्त रहना और घर के कामों के लिए समय न होना?'

'एक महिला घर और काम दोनों को संभाल सकती है, या क्या तुम इतने मूर्ख हो कि यह बात समझ नहीं सकते, मेरे प्रिय?'

एक मीठा और ज़हरीला जवाब। आम तौर पर मेघनाद अपने खिलाफ बोलने वाली महिला को जान से मार देता, लेकिन प्रमीला अलग थी। वह मेघनाद की ही तरह उग्र स्वभाव की थी।

और नहीं, मेरा वैज्ञानिक बनने का कोई इरादा नहीं है। मेरा इरादा एक संगठन शुरू करने का है।

'किस?'

लोगों की मदद करने के बारे में।

'गरीब लोगों की बात कर रहे हो?'

प्रमीला को जवाब देने की जरूरत नहीं थी। यह बात तो सभी को पता थी।

वे कुछ देर तक जिस संकरी और खड़ी ढलान पर चल रहे थे, उससे निकलकर एक खुले मैदान में पहुँचे, जहाँ उन्होंने देखा कि फावड़े और भाले ज़मीन में खोदे जा रहे थे ताकि नीले पत्थरों को निकाला जा सके, जो आकार में बड़े और सड़क पर सजावटी पत्थरों के रूप में प्रदर्शित किए गए पत्थरों की तुलना में अधिक चमकदार थे, वे पत्थर जिन्हें मेघनाद ने अपने आगमन पर देखा था।

उसने अपना रेडियोधर्मिता मीटर निकाला और उस कीचड़ भरे पत्थर के पास घुटने टेककर बैठ गया, जैसे ही उसने अपने उपकरण पर रेडियोधर्मिता की रेटिंग की जांच शुरू की, वह तुरंत ही अत्यधिक लाल रंग पर पहुंच गई।

यह बेहद घातक है और इससे वैष्णवास्त्र या पशुपतास्त्र से भी बड़ा हथियार बनाया जा सकता है।

वह मन ही मन मुस्कुराया।

‘इसका क्या मतलब है?’ प्रमीला की आवाज ने इशारा किया।

वह लगभग भूल ही गया था कि वह उसके पीछे खड़ी है।

‘उह...’ क्या मुझे उसे सच बता देना चाहिए? ‘क्या वह संगठन गैर-लाभकारी है?’

‘किस प्रकार का परोपकारी संगठन लाभदायक होगा?’

‘अरे, दुख की बात है। मैंने सोचा था कि मैं इसमें निवेश करूँगा,’ मेघनाद होश में आते हुए हँस पड़ा। उसे पता था कि उसे पत्थर के बारे में क्या करना है। ‘कोई बात नहीं, मेरे प्रिय, लेकिन गरीबों की मदद करने वाले ऐसे संगठन का क्या फायदा? वे बदले में तुम्हें कुछ दे नहीं सकते।’

उसे हर हाल में उसके पिता से दहेज के रूप में यह लेना ही होगा। और अगर वह नहीं मानता, तो उसके पास शहर को तबाह करने के अलावा कोई चारा नहीं बचेगा।

यह तत्व किसी भी गठबंधन से अधिक महत्वपूर्ण था और यदि वह अपने पिता को नाग मणि की शक्ति समझा पाता, तो वे मान जाते।

‘क्या आपने कभी किसी व्यक्ति की मदद की है, भगवान इंद्रजीत?’

अपने नए नाम की आवाज़ उसे अच्छी लगी। उसे ताकत का एहसास हुआ। मेघनाद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा नहीं है। मैंने अपने पिता की मदद के लिए कई

शहरों को तबाह किया है, लूटपाट की है और न जाने क्या-क्या किया है। क्या इसे गिना जाएगा?'

प्रमीला करीब आई, उसके होंठ बस कुछ इंच दूर थे। 'तुमने यहाँ तक पहुँचने के लिए हत्याओं के सिवा कुछ नहीं किया है। तुम जिससे भी मिली हो, उसे ठेस पहुँचाई है और उससे नफरत की है।'

मेघनाद की मुस्कान फीकी पड़ गई क्योंकि उसने उसकी आँखों में जहर देखा। उसकी आवाज में एक कपटीपन था।

'होने वाली दुल्हन के लिए चालाकी भरे शब्द।'

'मैं बस इतना ही कहती हूँ कि तुम पूरी जिंदगी हत्यारे रहे हो और इस पर तुम्हें गर्व होता है,' प्रमीला ने आह भरी। 'लेकिन जब तुम किसी की जान बचाओगे, तो यकीन मानो, तुम्हें खुशी और संतोष का एहसास होगा और इसीलिए मेरे काम का एक मकसद है और तुम्हारे काम का नहीं।' उसने अपनी नाक फुलाई और मेघनाद समझ गया कि उसने उसे नाराज कर दिया है। 'तो मैं तुमसे फिर पूछती हूँ, मेरे प्रिय,' उसने गुस्से से कहा, मानो राक्षस साम्राज्य के राजकुमार से उसका मन भर गया हो, 'मुझे यहाँ तक घसीटकर ले आए हो, मेरे अपने पहरेदारों से दूर, उस गंदगी में, उस चीज़ के लिए जिसका तुमने अभी-अभी खुलासा किया है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि मुझे यह जानने का पूरा हक है कि वह क्या है?'

मेघनाद ने एक पल सोचा। क्या वह इस औरत पर भरोसा कर सकता है? लेकिन इतने लंबे कष्ट के बाद, यह पहली बार था जब उसने उसे असली रूप में देखा था—दुखी, गुस्से में और अस्थिर। यह असली प्रमीला थी, न कि वह बनावटी कामुक दरिंदा जिसका वह दिखावा कर रही थी।

और मेघनाद को उसकी सहजता में एक खास तरह का आकर्षण नज़र आया।

'तुम गलत हो, तुम्हें पता है,' मेघनाद ने घोर अंधेरे में, जहाँ चट्टानों के बीच से चाँदनी की हल्की-हल्की किरणें चमक रही थीं, सीधे उसकी आँखों में देखते हुए कहा। चाँद की किरणें उनके चेहरों पर नाचती दो परछाइयों को चीरती हुई तलवार की तरह आगे बढ़ रही थीं। 'मैंने एक बार किसी की मदद की थी। और मैं नाकाम रहा।' वह अपने आँसू रोकने की कोशिश कर रहा था। 'और इसी वजह से, जिस औरत को मैं अपना आदर्श मानता था, उसी ने मुझसे नफरत की।'

मीनाक्षी आंटी...

प्रमीला ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन मेघनाद को मेघनाद की ईमानदारी के प्रति थोड़ी सी समझ दिखाई दी। 'इसका क्या मतलब है?' उसने पत्थरों की ओर इशारा किया।

'इसका मतलब है, मेरी प्यारी, हमारे समारोह के बाद सिर्फ तुम ही नहीं जाओगी, यह भी चला जाएगा।'

'आपका मतलब यह है कि...'

मेघनाद ने आह भरी। वह और कुछ कहना नहीं चाहता था। 'शादी के बाद मैं तुम्हें अस्त्र बनाना सिखाऊंगा। मैं तुमसे वादा करता हूं।'

'तुमने मुझसे वादा किया था, अब मुझे दिखाओगे।'

'हालात बदलते हैं।' मेघनाद जानता था कि फिलहाल उसकी जीत हो चुकी है। 'लेकिन हां, तुम्हारी भूमि में एक घातक तत्व मौजूद है जो साम्राज्य के लिए लाभदायक साबित हो सकता है।'

'आपके साम्राज्य के लिए।'

'नहीं, मेरी जान,' उसने अपनी हथेलियों से उसके लाल गालों को थामते हुए कहा, 'अब से, हमारा साम्राज्य।'

24. सुपर्निका

हड्डियों के जाले ने उनका रास्ता रोक दिया था।

मीनाक्षी ने अपने सिर पर फन ओढ़कर ऋष्यमुख पर्वत की ओर जाते समय खुद को छिपाने की कोशिश की, तभी उसे अपने सामने एक बाधा दिखाई दी। जलती हुई हड्डियों से आती गंध जलते हुए बालों जैसी थी। उसके साथी राघव और लक्ष्मण ने अपने चेहरे शॉल से ढक लिए। मीनाक्षी ने राघव के चिन्ह पर एक नजर डाली - जो चमक नहीं रहा था, लेकिन उसमें एक हल्की सी चमक थी।

उसके पास जो कुछ है, वह वाकई जादुई है। मेरे पिता बिल्कुल सही थे। यह आदमी हमारे साम्राज्य के लिए अभिशाप है, लेकिन मेरी खोज के लिए मुक्तिदाता है।

'यह क्या है?' राघव ने पूछा।

पेड़ के तने के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हड्डियाँ उनका रास्ता रोक रही थीं, जिसके बाद गुफा का प्रवेश द्वार था।

मीनाक्षी अपने घोड़े से उतरी और हड्डियों के पास गई। उसने हड्डियों के कोनों को छुआ और पाया कि वे बहुत कठोर थीं—लगभग अटूट। उसने अपनी कमर से लटकती तलवार निकाली और हड्डियों पर वार करने की कोशिश की।

लेकिन तलवार टकराकर वापस उछल गई और हड्डियां बिल्कुल वैसी ही रहीं, एक इंच भी नहीं हिलीं।

'ये बहुत मजबूत हैं,' उसने कहा। 'मुझे लगता है कि यह किसी दानव का रहा होगा। इसका आकार तो देखो।'

'दानव?' लक्ष्मण लगभग चीख पड़े और उनका जवाब वही था जिसकी मीनाक्षी को उम्मीद थी। दानव इलवर्ती में रहने वाले विशालकाय प्राणी थे, जो वामन अवतार द्वारा उनके साथ की गई संधि के बाद चुपचाप पाताल द्वीप पर चले गए थे, जो उनका मूल निवास स्थान था।

'लेकिन दानवों को अब इस भूमि पर आने की अनुमति नहीं थी,' राघव ने धीरे से कहा।

'लेकिन कुछ लोग आते हैं,' मीनाक्षी ने अपने पति विद्युत के साथ बिताए समय को याद करते हुए कहा। विद्युत भी एक असुर थे, जो दानवों के भाई थे और धन की खोज में इलवर्ती आए थे, लेकिन इस भूमि से उन्हें प्रेम हो गया। 'यहाँ रहने के लिए, अपने देश में उत्पीड़न होने पर यहाँ छुपने के लिए। कुछ विद्रोही संधि तोड़ देते हैं। और कुछ अपने सपनों की तलाश में आते हैं। वे शरणार्थी हैं, सबके सामने छिपे हुए।'

'तो आपका मतलब यह है कि हम आज असुरों और दानवों के बीच रहते हैं?' लक्ष्मण हँसे। 'जो हमसे छिपते हैं!'

मीनाक्षी ने चुपचाप सिर हिलाया। ये हड्डियाँ विद्युत की अवशेष थीं और इन्हें देखकर उसकी आँखों में आंसू आ गए।

'विडंबना यह है कि एक समय मानव उनसे छिपते थे,' लक्ष्मण हँसे, लेकिन राघव नहीं हँसे।

दरअसल, मीनाक्षी लक्ष्मण की जलती हुई निगाहों को अपने ऊपर देख सकती थी, मानो वह उसके चेहरे के भावों को परखने की कोशिश कर रहा हो। मीनाक्षी के यह कहने पर लक्ष्मण की हंसी थम गई, 'शायद सुग्रीव जानबूझकर ऐसा कर रहा है।'

‘लेकिन आपने उसे सूचित कर दिया था?’ राघव ने धीरे से पूछा।

'हां। उसे पता था कि हम आ रहे हैं। मैंने एक कौआ भेजा था।'

‘यह कैसा घिनौना आदमी है!’ लक्ष्मण ने नथुने फुलाते हुए नीचे उतरकर हड्डियों की ओर चलना शुरू किया। उसने अपना धनुष-बाण निकाला और हड्डियों और उन्हें बांधने वाले जाले पर तीर चलाने लगा, लेकिन वह टूटा नहीं। ‘उसकी हिम्मत कैसे हुई हमें रोकने की।’

‘सच कहूँ तो, मेरी प्यारी, तुम उसकी संगत में कुछ भी नहीं हो,’ मीनाक्षी ने ताना मारा।

‘ये तो भगवान राघव हैं!’ लक्ष्मण ने अपने भाई की ओर इशारा किया।

‘अयोध्या में। यहाँ, वह सुग्रीव की दया पर निर्भर है!’

‘यह कैसा बंदर है,’ लक्ष्मण ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘मुझे लगता है हमें यहाँ से चले जाना चाहिए। चलो कोई दूसरा विकल्प ढूंढते हैं, भाई।’

राघव अपने विकल्पों पर विचार कर रहा था। वह घोड़े से उतरा और धीरे-धीरे सड़ी हुई हड्डियों पर उंगलियां फेरते हुए जाले की ओर बढ़ा। मीनाक्षी समझ गई कि वह बहुत सोच-विचार कर रहा है। उसने मीनाक्षी से पूछा, 'आपने पत्र में क्या लिखा था, मेरी देवी?'

‘यह आप ही थे और आप ही अवतार हैं।’

‘तुमने उसे क्यों बताया?’ लक्ष्मण चीखते हुए मीनाक्षी के करीब आया। ‘हम इस प्रतीक को एक खास वजह से छिपाते हैं।’

राघव ने अपना हाथ ऊपर उठाया। 'मत करो, लखन।'

कुछ दिन पहले जो आदमी उसे जान से मारने ही वाला था, वह आज बेहद संयमित और शांत दिख रहा था, मानो उसे स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त समय मिल गया हो। कम से कम मीनाक्षी को तो यही लगा।

‘मैंने उसे इसलिए बताया क्योंकि अगर मैं नहीं बताती, तो वह आपको गंभीरता से नहीं लेता। वह कई ऐसे लोगों से मिलता है जिन्हें उसकी मदद चाहिए होती है और मुझे लगा कि अवतार होने के नाते आपकी मौजूदगी उसकी जिज्ञासा जगा सकती है। यह एक रणनीतिक निर्णय था। महाराज, अगर आपको बुरा लगा हो तो मैं क्षमा चाहती हूँ।’ मीनाक्षी ने सिर झुकाया, हालाँकि मानव के सामने झुकना उसे थोड़ा अपमानजनक लगा।

राघव ने सिर हिलाया। 'कोई बात नहीं। मुझे पता है सुग्रीव ने ऐसा क्यों किया।'

लक्ष्मण और मीनाक्षी प्रतीक्षा करते रहे।

राघव ने मुट्ठी भींचकर हड्डियों पर घूंसे मारते हुए कहा, 'वह मेरी परीक्षा ले रहा है।'

दबाव के कारण हड्डियाँ चटक गईं।

'किस बात का?' लक्ष्मण ने पूछा।

'ये दानव की हड्डियां हैं,' मीनाक्षी ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'इन्हें तोड़ना आसान नहीं है।'

राघव मुस्कुराया। उसके चेहरे पर अटूट आत्मविश्वास झलक रहा था, मानो वह घमंडी मुस्कान दे रहा हो, जैसे ही उसने अपना दाहिना पैर उठाया और तेज़ी से हवा में घुमाते हुए हड्डियों पर वार किया - जिससे हड्डियाँ टूट गईं।

राघव ने आखिरकार उसे चीरते हुए मकड़ी के जालों को हटा दिया और पूरी रक्षा पंक्ति को ध्वस्त कर दिया।

मीनाक्षी प्रभावित हुई। दानव की हड्डी तोड़ना ही अपने आप में सराहनीय था, और वास्तव में, किसी भी नश्वर प्राणी के लिए यह असंभव माना जाता था। राघव चुपचाप मुड़ा, अपने घोड़े की ओर बढ़ा और उस पर सवार हो गया।

'सुग्रीव यह परखना चाहता था कि मैं सचमुच अवतार हूं या नहीं।' राघव ने लक्ष्मण को जवाब दिया।

'हिम्मत कैसे हुई ...'

और फिर एक आवाज़ सुनाई दी। तेज़ गुर्राहट और चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आईं - और तुरंत घने कोहरे से ढके जंगल की घनी छतों से बालदार दिखने वाले आदमी शाखाओं से लटके हुए दिखाई दिए। उनके हाथों में भाले और तलवारें थीं, लेकिन सभी जंगल में पाई जाने वाली सामग्री से बनी थीं।

और मीनाक्षी जानती थी कि ये बंदर जैसे दिखने वाले आदमी कौन थे, जो सबके सामने छिपे हुए थे।

वानर।

वे जमीन पर उतरे और उनमें से एक ने कहा, 'भगवान राघव, अयोध्या के राजकुमार, कृपया... आप अपने साथियों के साथ प्रवेश करें।'

मीनाक्षी ने राघव को देखा और दोनों मुस्कुराए। तीनों अपने घोड़ों को छोड़कर उस विशाल गुफा में चले गए जिस पर चित्रकारी थी और रास्ते में मशालें लगी हुई थीं।

मीनाक्षी उन्हें देख रही थी तभी लक्ष्मण ने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम सुग्रीव को कैसे जानती हो? क्या तुम्हारा भाई वली का करीबी नहीं है?'

'जब दशानन खेल-खेल में वली से कुश्ती लड़ने आया था, तब मैं यहीं थी और संयोग से मेरी मुलाकात सुग्रीव से हुई और हम दोनों के बीच एक गहरी दोस्ती हो गई। उसके साथ जो हुआ वह अन्याय था। वली ने बड़ी चालाकी से उसकी हार की साजिश रची थी।' मीनाक्षी ने कहा, हालांकि वह खुद नहीं जानती थी कि उसकी बातें कितनी सच थीं, क्योंकि वली और सुग्रीव दोनों के इस मामले में अलग-अलग विचार थे।

'लेकिन क्या सुग्रीव तुम पर भरोसा करेगा?'

और इस सवाल का मीनाक्षी के पास कोई जवाब नहीं था। दरअसल, सुग्रीव का राघव से मिलने के लिए राजी होना एक आश्चर्य की बात थी। यह एक संयोग था। लेकिन राघव की मदद पाने का यही उसका एकमात्र मौका था, क्योंकि सुग्रीव ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसके इलवर्ती तट के पास स्थित जहाज निर्माताओं से अच्छे संबंध थे, इसलिए राघव लंका की यात्रा कर सकता था।

और साथ ही, सुग्रीव के पास एक सेना थी जिसका वे उपयोग कर सकते थे।

जैसे ही वे गुफा के अंतिम खुले स्थान पर पहुँचे, उन्होंने खुद को विभिन्न रंगों और आकारों के सैकड़ों बंदरों के बीच पाया, लेकिन जब उन्होंने गौर से देखा, तो वे बंदर नहीं थे - वे इंसान थे, लेकिन बालों वाले और कपड़े से बनी कृत्रिम पूंछ वाले, क्योंकि वे बंदरों के उपासक थे।

बीच में भूरे रंग का एक वानर था, जिसके सिर पर टूटा हुआ मुकुट था, वह बांस के सिंहासन पर बैठा था और उसके बगल में सफेद फर वाला एक वानर था।

मुकुटधारी वानर अपने पैरों पर खड़ा हुआ और सबसे पहले उसने जमीन पर छलांग लगाई, जिससे उसके अनुयायी चौंक गए और हांफने लगे। वानर ने कहा: 'माफी चाहता हूं, मेरे स्वामी। मैंने बाहर जो किया उसके लिए। मेरा इरादा आपका अनादर करने का नहीं था।'

राघव ने तुरंत सुग्रीव के हाथ पकड़े और उसे गोद में उठा लिया। 'कोई बात नहीं, महाराजा।'

'मुझे बताया गया था...' उसने मीनाक्षी की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए कहा, '... कि तुम यहाँ हो, लेकिन मुझे विश्वास नहीं हुआ कि तुम वही हो जिसके बारे में उसने

बताया था। और तुम समझ सकती हो कि मुझे ऐसा क्यों लगा, क्योंकि तुम्हारा ज़िक्र संदिग्ध स्रोतों से आया था।'

मीनाक्षी को गुस्सा आया, लेकिन उसने सिर्फ अपनी नाक फुलाई और चुप रही।

'जी हां, बिलकुल,' राघव मुस्कुराया।

'महाराजा सुग्रीव, आपको मुझ पर शक नहीं करना चाहिए था। मैं सच बोलती हूँ, और कुछ नहीं,' मीनाक्षी ने कहा और सुग्रीव उसकी ओर बढ़े, उनकी चमकीली आँखें और गोल मुँह अब साफ दिखाई दे रहे थे क्योंकि वे मीनाक्षी की ओर देखकर मुस्कुरा रहे थे।

'बिल्कुल, मेरी प्यारी। लेकिन तुम्हारा भाई हमारे प्रति दयालु नहीं रहा है।' वह झुक गया। 'वह मेरे भाई का समर्थन करता है जबकि मैं इस पहाड़ पर फंसा हुआ हूँ जहाँ मैं उससे, यहाँ तक कि अपने आदमियों से भी छिपता हूँ।' उसने दूसरे वानरों की ओर अपना हाथ लहराया।

मीनाक्षी को घटना के बारे में पता चल गया था। वाली, वानर राज्य किष्किंधा का राजा था और वह हर महीने कुश्ती का आयोजन करता था। जब उसे पता चला कि एक असुर ने उसकी गद्दी छीनने के लिए उसकी गुफा में घुसपैठ की है, तो वाली ने उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी। लेकिन इस मुकाबले में वाली को जानलेवा चोट लगी। वाली ने सुग्रीव से कहा था कि वह गुफाओं में मरना चाहता है और जब सुग्रीव ने उसकी बात मान ली, तो उसे पता चला कि वाली फिर से जीवित हो गया है। वह चट्टानों को तोड़ते हुए बाहर आया और सोचने लगा कि सुग्रीव उसकी गद्दी छीनने की कोशिश कर रहा है क्योंकि वाली की मृत्यु के तुरंत बाद सुग्रीव ने उसका सिंहासन हथिया लिया था। वाली ने अपने भाई को चुनौती दी और गुस्से में उसे गुफा से बाहर निकाल दिया और धमकी दी कि अगर उसने कभी भी किष्किंधा के आसपास कदम रखा, तो वह उसे मार डालेगा।

लेकिन इस मामले में वैली की राय अलग थी।

'और इसीलिए मैं आपको, भगवान राघव, विष्णु के अवतार, अयोध्या के राजकुमार, लाकर उनका उद्धार करती हूँ। वे वाली के विरुद्ध आपकी सहायता करेंगे,' मीनाक्षी ने घोषणा की और सभी वानरों ने अपनी छाती पीटकर जयकार की, जिसकी गूंज ऋष्यमुख पर्वत की एकांत गुफाओं में सुनाई दी।

राघव मुस्कुराया और बोला, 'मैंने अपने भाई भरत को एक संदेश भेजा है, जो आपके विद्रोह के लिए धन देने में बहुत खुश होगा।'

मीनाक्षी ने राघव से कहा था कि वह भरत से बात करे ताकि वे कुछ ऐसा कर सकें जिससे सुग्रीव खुश हो जाए और फिर वह बदले में स्वेच्छा से मदद करेगा।

'सचमुच, बहुत बढ़िया,' सुग्रीव मुस्कुराए, 'लेकिन, आप आंकड़े स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। हमें धन की आवश्यकता नहीं है, महाराज। हम तालाब के पानी और फलों से ही अपना गुजारा कर सकते हैं।'

राघव चुप हो गया।

"पर फिर भी, यह इशारा किसी दैवीय हस्तक्षेप से कम नहीं है," सुग्रीव खांसते हुए अपने सिंहासन की ओर झुके हुए वापस चले गए। वे उस पर बैठ गए। "मेरा अनुमान है, भगवान राघव, आप हमसे कुछ चाहते हैं।"

मीनाक्षी ने कहा, 'दक्षिण में जहाज़ बनाने वालों से आपके संबंध हैं।' वह जानती थी कि वली के ऐसे कोई संबंध नहीं थे क्योंकि वह संबंध बनाने में कभी माहिर नहीं था, बल्कि जहाँ था वहीं खुश रहता था।

'अरे, तो आप यात्रा करने की योजना बना रहे हैं?' सुग्रीव हँसते हुए बोला। 'अगर मैं पूछूँ तो कहाँ जा रहे हैं?'

राघव के जवाब देने से पहले ही मीनाक्षी ने कहा: 'मेरे भाई ने सीता देवी का अपहरण कर लिया है और भगवान राघव उन्हें बचाना चाहते हैं।'

'कितना नेक उद्देश्य है,' वानर महाराज ने खांसते हुए कहा, 'तुम्हारा भाई तो बड़ा दुष्ट लड़का है, मैं तुम्हें बता रहा हूँ।'

आप तो कमाल हैं!

मीनाक्षी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं, जबकि माथे पर शिकन लिए सुग्रीव बैठ गया और गुनगुनाते हुए बोला, मानो उसकी अपनी आवाज़ ही उसे आनंद दे रही हो। 'और तुम्हें सेना चाहिए, जबकि राजशाही नियमों के अनुसार भरत तुम्हें सेना नहीं दे सकता?'

राघव ने सिर हिलाया। 'वह व्यक्तिगत रूप से केवल उतना ही समर्थन कर सकता है जितना उसके बस में है।'

'जी हाँ। तो तुम्हें मेरे रिश्तेदार और मेरी सेना चाहिए?' सुग्रीव ने आह भरी। 'और बदले में, तुम मेरे विद्रोह के लिए धन दोगे?'

इससे सब कुछ स्पष्ट हो गया।

‘लेकिन महाराज, मुझे एक और चीज़ की भी आवश्यकता होगी।’ सुग्रीव ने सफेद फर वाले वानर बजरंग की ओर देखा, जिसे उसके साथी हनुमान के नाम से जानते थे क्योंकि उसका जबड़ा विकृत था। ‘मेरे विद्रोह में आपकी भागीदारी।’

लक्ष्मण क्रोधित होकर आगे बढ़े, लेकिन मीनाक्षी ने तुरंत अपना हाथ उठा लिया। ‘और आप ऐसा क्यों चाहेंगे, महाराजा सुग्रीव?’ उन्होंने कोमल स्वर में पूछा।

“ओह, क्योंकि वह एक अवतार हैं। हमने बाहर उनकी क्षमता स्पष्ट रूप से देखी थी, मेरी देवी। वे साधारण हड्डियाँ नहीं थीं, बल्कि दुदिचि की हड्डियाँ थीं, वही दानव जिसे वली ने एक समय पर परास्त किया था।” सुग्रीव को फिर खांसी आई और अब मीनाक्षी को समझ आ रहा था कि उनके फेफड़ों में कुछ समस्या है। “भगवान राघव की मदद से मैं युद्ध जीत सकता हूँ और बदले में, हम उन्हें जो भी चाहिए, वह देंगे।”

मीनाक्षी ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। तीनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। मीनाक्षी मना करने ही वाली थी कि राघव आगे आया और बोला, 'ठीक है! मैं तुम्हारे विद्रोह में शामिल होऊंगा।'

‘अद्भुत!’ सुग्रीव ने ताली बजाई और बजरंग को छोड़कर सभी वानरों ने उत्साहपूर्वक ताली बजाई और अपनी छाती पीटते हुए कहा, ‘हे स्वामी, यह कितना अद्भुत प्रतिसाद है। आप ही हमारे रक्षक होंगे,’ उन्होंने राघव को प्रणाम किया। ‘और हां, देवी सुपर्निका भी हमारी सहायता करेंगी।’

किसकी प्रतीक्षा?

मीनाक्षी ने सुग्रीव की ओर मुड़कर पूछा, 'तुम्हारा क्या मतलब है?'

‘महामहिम!’ उसने हैरानी से कहा। ‘आप हमारे लिए विष्णु का अवतार लेकर आई हैं और हमारी मदद नहीं करेंगी? इससे मुझे इस मामले में आपकी ईमानदारी पर संदेह होता है और यह भी कि आप यहाँ जो कुछ भी कर रही हैं, वह क्यों कर रही हैं। मुझे लगा था कि आप यहाँ अपने भाई के खिलाफ जाने के लिए आई हैं, क्योंकि वह बहुत बुरा आदमी है।’

धिक्कार है उस बंदर पर!

मीनाक्षी ने राघव और लक्ष्मण की ओर रुख किया, जो संदेह भरी निगाहों से उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे थे।

मामला गंभीर था। मीनाक्षी कुछ समय से पर्दे के पीछे रहकर लोगों को कठपुतली की तरह इस्तेमाल कर रही थी, लेकिन अब वह सबके सामने थी। अगर वह हाँ कहती,

तो वह दशानन के साथ खुलेआम विश्वासघात करती और अगर वली को पता चल जाता, तो वह उसके भाई को बता देता। अगर वह ना कहती, तो राघव उस पर भरोसा करना बंद कर देता।

पृष्ठभूमि में वानरों की पिटाई जारी रहने के बीच, उसने गुफा में मौजूद हर चेहरे को देखा - चालाक सुग्रीव ने अपनी दाढ़ी खुजलाई, उसके सूखे होठों पर एक धूर्त मुस्कान नाच रही थी।

'बेशक,' मीनाक्षी ने कहा, क्योंकि वह जानती थी कि अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है, 'इसीलिए तो मैं यहाँ हूँ।'

25. प्रमीला

वह हार गई और राक्षस राजकुमार से उसकी शादी होने में केवल दो दिन बचे थे।

वह यह पता नहीं लगा पाई कि उसने अस्त्र कैसे बनाए। इससे भी बुरा यह हुआ कि उसने एक ऐसी बात का खुलासा कर दिया जिसके बारे में उसे खुद भी जानकारी नहीं थी—कि नागमणि में घातक बम बनने की क्षमता थी।

वह घंटों तक इस तथ्य पर गहन चिंतन करती रही, अपनी खिड़की से नागलोक की कृत्रिम रोशनी को देखती रही, जो रात के समय मंद हो जाती थी और उस वातावरण का निर्माण करती थी जिसे वह अपना घर कहती थी।

क्या उसके पिता को नागमणि की शक्ति के बारे में पता था? क्या कालिया को पता था?

मेघनाद अब उन्हें पाने के लिए कुछ भी करेगा।

हमारा साम्राज्य।

वह मूर्ख नहीं था। लेकिन फिर, वह उससे क्या उम्मीद कर सकती थी? इस आदमी में स्वर्ग को घुटनों पर लाने की हिम्मत थी।

उसके बिना राक्षस साम्राज्य का अस्तित्व नहीं होगा।

दशानन के पास बेहतरीन लोगों की टीम थी और उसने उन्हें पूरी तरह से प्रशिक्षित किया था। उसने शायद अफवाह सुनी थी कि वह ज्योतिषियों से मेघनाद के जन्म के लिए शुभ मुहूर्त और दिन पता करवाता था और फिर यह सुनिश्चित करता था कि

उसकी पत्नी उसी समय बच्चे को जन्म दे। उसने परिस्थिति को इस हद तक अपने हिसाब से ढाला कि उसकी गर्भावस्था और प्रसव में देरी हुई।

कितना क्रूर और सनकी इंसान है!

लेकिन अपने पिता के विपरीत, मेघनाद में कुछ ऐसे पहलू भी थे जिन्हें वह अपने बहिर्मुखी, कठोर बाहरी रूप के पीछे छिपाता था।

मुझे कालिया से इस बारे में बात करनी ही होगी कि क्या हुआ है। आखिर उसने बिना कुछ मांगे मुझे खदानों तक गाड़ी दी थी।

वह गार्ड को सूचित करने के लिए बाहर गई, तभी उसे कुछ सुनाई दिया - उसकी खिड़की पर दस्तक हुई।

अचंभित होकर वह लगभग चीखते हुए पीछे मुड़ी जब उसने अंदर झांकते हुए एक परिचित चेहरा देखा।

वह मेघनाद था।

क्या ...

प्रमीला दौड़कर कांच की खिड़की के पास गई और उसे खोलकर देखा तो पाया कि मेघनाद चौखट पर था और किसी तरह एक संकरी चौखट पर चलकर अपने कमरे से उसके कमरे तक आ गया था।

'तुम क्या कर रहे हो?' उसने आँखें चौड़ी करके पूछा।

'हेह।' वह गिरने ही वाला था, लेकिन उसके चेहरे पर वही सहज, मोहक मुस्कान थी। 'मुझे लगता है कि किसी महिला के कमरे में प्रवेश करने का यह सबसे अच्छा तरीका नहीं है, लेकिन मुझे कल से ही आपसे बहुत ज़रूरी बात करनी थी,' मेघनाद ने कहा।

हम इसे कल भी कर सकते थे।

'और एक और दिन के लिए आपको नज़रों से ओझल होने का जोखिम उठाऊं? मुझे संदेह है, मेरी लेडी।'

कितना नखरे वाला है! प्रमीला ने आह भरी, लेकिन उसे यह अच्छा लगा। उसने उसे अंदर खींच लिया और खिड़कियाँ बंद कर दीं। फिर वह अपने सामने के दरवाजे की ओर भागी और देखा कि पहरेदार हमेशा की तरह उसके गलियारे में जमा हैं। उसने दरवाजा बंद किया और अपने कमरे में ताला लगा दिया और जब वह मुड़ी तो देखा कि

मेघनाद पहले ही उसके बिस्तर पर आराम से बैठा था और उसकी अध्ययन मेज से चेरी खा रहा था।

‘मेरी जान, तुम क्या चाहती हो?’ उसने बड़ी मुश्किल से मीठे शब्दों में कहा, ‘रात के इतने सन्नाटे में?’

‘मुझे खुजली हो रही थी।’ उसने भौंहें चढ़ा लीं।

‘कहाँ?’ उसने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। ‘और तुम मुझसे उसे खुजलाने की योजना बना रहे हो, है ना?’

‘वो खुजली नहीं।’ वह हँस पड़ा। ‘तुम्हें गलत साबित करने की खुजली।’

'किस बारे में?'

मैं उतना बुरा नहीं हूँ जितना आप सोचते हैं।

प्रमीला ने देखा कि उसकी ईमानदार आँखें उसे देख रही हैं, लेकिन उसे नहीं पता था कि वह इस आदमी पर कितना भरोसा कर सकती है। वह अपने बिस्तर के सामने, अपनी कुर्सी पर बैठी और पीछे की ओर झुक गई, सिर आगे की ओर थोड़ा झुका हुआ था। 'और आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं आपको बुरा समझती हूँ?'

‘मुझे कुछ आभास हुआ था।’ वह रुका। ‘अगर मैंने अपनी बातों से आपको ठेस पहुंचाई हो तो मुझे माफ कर दीजिए और मुझे बाहर ले जाने के लिए मैं आपका हमेशा आभारी रहूंगा...’

और बदले में तुमने मुझे कुछ नहीं दिया। तुमने मुझसे वादा किया था।

‘मुझे पता है। मैं वादे निभाने में बहुत बुरा हूँ।’ उसने अपना सिर नीचे कर लिया।

‘तुम्हें इस बात की परवाह क्यों है कि मैं तुम्हारे बारे में क्या सोचता हूँ?’

मेघनाद ने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं और उसे ध्यान से देखने लगा। 'आम तौर पर तो मैं ऐसा नहीं करता। लेकिन कल से, तुम्हारे कहे हुए शब्दों के बारे में सोचकर मुझे चिड़चिड़ाहट हो रही है। लोगों की मदद करने के बारे में, और इस बारे में कि मैं हमेशा से एक बुरा इंसान रहा हूँ। और यकीन मानो, मैं हूँ भी। मैं कुछ लोगों के लिए काफी परेशानी का सबब हूँ, और दूसरों के लिए मददगार। और ज़्यादातर समय, मुझे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं होती कि कोई औरत मेरे बारे में क्या सोचती है। लेकिन तुम... तुम अलग हो।'

प्रमीला देख सकती थी कि उसके शब्दों का उस पर कितना गहरा असर हुआ था। और सौभाग्य से, उसे इसमें आनंद आ रहा था।

‘कृपया समझिए, मैं हमेशा अपने पिता के प्रभाव में रहा हूँ। और मेरे पिता कोई हीरो नहीं थे। वे हमेशा से ही थोड़े उलझे हुए इंसान थे। वे खुद को भगवान समझते थे। उन्हें यह भ्रम था कि शिव उनके पास आए और उन्हें अमरता का वरदान दिया। लेकिन मैं हमेशा उन्हें अपना आदर्श मानता था क्योंकि उनके अलावा कोई और नहीं था।’ मेघनाद ने आह भरी और प्रमीला ने देखा कि उसकी छाती कैसे धड़क रही थी। ‘मेरे लिए कोई और नहीं था जो सच में मेरे साथ हो...। चाचा कुंभकरण थे, लेकिन वे विज्ञान में रुचि रखते थे और चाचा विभीषण... वे हमेशा से ही दूर रहे क्योंकि वे मेरे पिता को कभी पसंद नहीं करते थे। पिताजी और मैं शिकार पर जाया करते थे, कुश्ती करते थे और एक-दूसरे की संगति का आनंद लेते थे। और मैंने देखा कि वे अपने आस-पास के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते थे।’

‘और तुमने उसकी नकल की?’

उन्होंने सिर हिलाया। ‘मैं आज भी वही करता हूँ जो वो मेरी जगह होते तो करते। ऐसा लगता है जैसे मैंने कभी अपनी पहचान बनाना सीखा ही नहीं। और मुझे नहीं लगता इसमें कुछ गलत है। वो एक महान व्यक्ति हैं। उन्होंने इल्लावर्ती को जीता है। क्या आप जानते हैं कि मुझे उन पर कितना गर्व है, भले ही वो मेरे जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण दिनों में अनुपस्थित रहे हों? राक्षस एक बिखरी हुई जनजाति थी जो गुलामों की तरह दूसरों के लिए काम करती थी। और अब हमें देखिए। लोग हमसे डरते हैं।’

‘तुम डर की बात ऐसे करते हो जैसे वो अच्छी चीज हो?’

'यही है ना?'

और सही काम करने के बारे में क्या?

यह सुनकर उनके चेहरे के भाव बदल गए। लेकिन उन्होंने बात को विषय से मोड़ दिया। ‘मेरी एक माँ हैं, लेकिन... वो मेरे जीवन में सक्रिय नहीं थीं। हमेशा चुप रहती थीं और मुझे लगता था कि हर औरत ऐसी ही होती है, सिवाय मेरी मौसी मीनाक्षी से मिलने के। मैं छोटा था और वो बिल्कुल तुम्हारी तरह थीं - शांत और जोशीली। तुम मुझे उनकी बहुत याद दिलाती हो।’ वो मन ही मन मुस्कुराए। ‘और इसीलिए मुझे लगता है कि मैं तुम्हें प्रभावित करने के लिए बेताब हूँ क्योंकि मैं उन्हें प्रभावित करने में नाकाम रहा।’

'आपने क्या किया?'

मेघनाद ने आह भरते हुए कहा, ‘मुझे उसके पति को बचाने का मौका मिला था। और मैंने कोशिश भी की। लेकिन वो पकड़ा गया। आप जानते हैं, वो हम जैसा नहीं था, लेकिन ये किसी और समय की बात है। और फिर मेरी चाची... वो इससे खुश नहीं थीं और उन्होंने मुझसे बात करना बंद कर दिया, इकलौती इंसान जिसका मैं सम्मान करता था, उसने ही मुझसे मुंह मोड़ लिया...’

‘और महिलाओं के प्रति तुम्हारी नफरत जारी रही।’ प्रमीला ने बात पूरी की।

उन्होंने कहा, 'मैं महिलाओं से नफरत नहीं करता।'

लेकिन आप उनका सम्मान भी नहीं करते, वरना आपकी प्रतिष्ठा भी इसी तरह खराब हो जाती है।

उसने कुछ नहीं कहा। उसके चेहरे पर पड़ रही परछाइयाँ जैसे नाच रही हों, वह चुप रहा। वह बिस्तर से उठा और प्रमीला के पास आकर उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया। 'मेरा यकीन करो, प्रमीला, मुझे तुम्हारे साथ रहने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे लगा कि तुम सिर्फ मेरी राजनीतिक सहयोगी हो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम मेरे अंदर महिलाओं की कमी को पूरा कर सकती हो। मैं बुरा आदमी नहीं हूँ। मैं अच्छा बन सकता हूँ। अगर तुम मुझे बदलने का साहस रखो।'

प्रमीला खुद को रोक नहीं पाई और उसने अपना हाथ उसके सुडौल जबड़े, उसकी सांवली त्वचा पर फेरा और उसके लहराते बालों को सहलाया। वह ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पाई। 'जब मैंने कहा कि तुम सिर्फ तबाही मचाते हो, तो क्या तुम्हें बुरा लगा?'

'मुझे जो दर्द हुआ, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है, मेरी जान।' और प्रमीला ने देखा कि उसकी आँखों में आँसू भर आए थे।

किसी पर इतनी जल्दी प्रभाव डालने की क्षमता एक ऐसा गुण है जो कुछ ही लोगों के पास होता है और वह भी बहुत कम लोगों के पास।

और उसके मामले में, वह सिर्फ वही था।

मैं माफी मांगता हूं। मैं बस...

‘कोई बात नहीं।’ वह मुस्कुराया। ‘मैं तुम्हें और जानना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि हम अब राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के कारण शादी करें, बल्कि इसलिए शादी करें क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे के साथ रहने की ज़रूरत और इच्छा रखते हैं।’ और उसने अपना सिर उसकी गोद में रख दिया।

और प्रमीला ने दरवाजे की ओर देखा, और अपनी उंगलियों से उसके सिर के बालों को सहलाने लगी क्योंकि वह दुविधा में थी।

क्या मुझे कालिया को बताकर मेघनाद को मरने देना चाहिए या मेघनाद से शादी कर लेनी चाहिए और संभावित रूप से अपने भविष्य को खतरे में डाल देना चाहिए क्योंकि हो सकता है कि वह मीठी-मीठी बातें करके मुझसे नाग मणि ले ले?

और प्रमीला के पास निश्चित रूप से इसका कोई जवाब नहीं था।

लेकिन वह इतना जरूर जानती थी कि उसे कल तक फैसला लेना होगा।

26. लक्ष्मण

वह राज्य बहुत विशाल था।

यह किसी चित्र की तरह फैला हुआ था और लक्ष्मण को यह पता लगाने में मुश्किल हो रही थी कि यह ठीक कहाँ से शुरू होता है और कहाँ खत्म होता है। दीवारें ग्रेनाइट की और विशाल थीं, फाटकों पर कांटे लगे थे और जाली लोहे और पीतल की बनी थी। इतना विशाल किला होने के बावजूद, राज्य को बड़े-बड़े पेड़ों से इस तरह घेरा गया था कि आम आदमी की नज़र से छिपा रहे।

लक्ष्मण, सुपर्निका और उसके भरोसेमंद राक्षसों के दल के साथ किले की ओर बढ़ रहा था। सुपर्निका ने इन राक्षसों को चुप रहने और उसका अनुसरण करने के लिए अच्छी रकम दी थी। वे खूंखार दशानन के विरुद्ध राजद्रोह में शामिल होने को तैयार नहीं थे, लेकिन किसी तरह सोने और अवतार के भय से उसने उन्हें अपने पक्ष में कर लिया था। लेकिन उनकी संख्या कम थी और सुपर्निका ने कहा था कि अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है।

दशानन को किसी न किसी तरह मीनाक्षी के धोखे के बारे में पता चल ही जाएगा, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं। उसने कंधे उचकाए और अपनी योजना पर आगे बढ़ गई।

पहला कदम था: मीनाक्षी की प्रतिष्ठा की मदद से राज्य में प्रवेश करना। वली आसानी से उसका स्वागत करेगा, जो वह दूसरों के लिए नहीं करता।

'वली के ज्यादातर पहरेदार जहां खड़े होते हैं, उस पर नजर रखना,' मीनाक्षी ने लक्ष्मण के ठीक बगल में अपने घोड़े पर सवार होते हुए कहा।

योजना का दूसरा चरण: राज्य की सुरक्षा व्यवस्था का अवलोकन करें और किले में सुरक्षित मार्गों के स्थान की पहचान करें।

दूसरी ओर, लक्ष्मण ने हेलमेट पहन रखा था और उसके सीने पर काले जामुनों के गहरे रंग के धब्बे लगे हुए थे। उसे राक्षस जैसा दिखना ही था। और वह यहाँ केवल एक ही कारण से आया था - मीनाक्षी को योजना को अंजाम देने में मदद करना और उस पर नज़र रखना, कहीं वह इस प्रक्रिया में उनके साथ विश्वासघात तो नहीं कर रही है।

आप किसी राक्षस पर भरोसा नहीं कर सकते।

सुग्रीव ने यह बात राघव और लक्ष्मण से अकेले में, उससे दूर, भरोसे में कही थी।

द्वार चौड़े खुल गए और लक्ष्मण की नजर द्वार के उस पार खड़ी लंबी मीनारों पर पड़ी। दो मीनारें।

'यह किष्किंधा का पश्चिमी द्वार है। पूर्वी द्वार दूसरी ओर है, जबकि उत्तर में नदी है और दक्षिण में बंजर भूमि है। आपको एक द्वार चुनना होगा जहाँ से सुग्रीव के आदमी प्रवेश करेंगे।' मीनाक्षी ने उसे निर्देश दिया, और वली के आदमी उन्हें कुश्ती के अखाड़े की ओर ले गए जहाँ वली इस समय मौजूद था।

'और राघव कहाँ से आएगा?'

'यह निर्भर करता है। उसका प्रवेश गुप्त होना चाहिए। आपको जल्दी योजना बनानी होगी और तुरंत कार्रवाई करनी होगी।' मीनाक्षी का चेहरा गंभीर था, लेकिन वह लगातार उन नागरिकों को देखकर मुस्कुरा रही थी जो उसके सामने झुक रहे थे।

वाली के राज्य में सभी लोग मीनाक्षी का सम्मान करते थे क्योंकि वह दशानन की बहन थी। झोपड़ियाँ और दुकानें कतारों में लगी थीं, सड़कें चौड़ी थीं लेकिन सुव्यवस्थित नहीं थीं, लहराते झंडों पर वाली के साम्राज्य का प्रतीक चिन्ह बना हुआ था। किष्किंधा के सभी नागरिक सुखी और संतुष्ट थे। मीनाक्षी ने शस्त्रागार, खजाना और मंत्रालय परिसरों की ओर इशारा किया, हालाँकि वहाँ रहने के लिए बहुत कम मंत्री बचे थे। वाली का विशाल महल अयोध्या में दिखने वाले भव्य और रत्नजड़ित महलों जैसा नहीं था, बल्कि बहुत ही साधारण था। यह कच्चे माल से बना था और शहर से अलग-थलग था।

मीनाक्षी ने कहा, 'वाली अपने राज्य को आम लोगों की तरह मानता है। वास्तव में, वह ऐसा ही करता है। वह सुग्रीव जैसा नहीं है। वह सिंहासन का घमंड नहीं करता। वह बिना किसी सुरक्षा के चलता है।' मीनाक्षी ने आगे कहा, 'जब से मैं पड़ोसी शहर जनस्थान में आई हूँ, तब से मेरा उससे संपर्क बना हुआ है। वह हमेशा मेरे प्रति दयालु रहा है, मेरे सैनिकों को अनाज मुहैया कराता है और जरूरत पड़ने पर सेना में मेरी मदद करता है, यहाँ तक कि इन जंगलों में रास्ता खोजने में भी मेरी सहायता करता है।'

'और तुम उसे धोखा दोगे? एक ऐसी औरत के लिए जिसे तुम जानते भी नहीं?'

मीनाक्षी ने कुछ नहीं कहा। लक्ष्मण को उसके इरादों पर संदेह हुआ, लेकिन फिलहाल उसके पास कोई विकल्प नहीं था - उसे मीनाक्षी का पीछा करना ही था।

वे पहलवानों के मैदान में पहुँचे जो एक बंजर मैदान था, जहाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने लोग ताली बजाते और शोर मचाते हुए जमा थे, जबकि बीच में, फटे-पुराने कपड़ों और लंगोट पहने हुए पुरुष एक-दूसरे से लड़ रहे थे, एक-दूसरे की हड्डियाँ और मांस तोड़ रहे थे।

'और ये है वली।' मीनाक्षी ने काले फर और पीले चेहरे वाले, मजबूत शरीर वाले विशाल वानर की ओर इशारा करते हुए कहा, जिसने आसानी से अपने प्रतिद्वंद्वी को रोककर उसकी गर्दन पकड़ ली और फिर...

उसे सीधे जमीन पर पटक दिया!

फिर उसने उसकी बांह को मरोड़कर उसके शरीर से अलग कर दिया और उसे मुर्गी की टांग की तरह उछाल दिया, जिससे वानार पहलवान असहनीय दर्द से चीख उठा।

लोगों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच वली खड़ा हो गया, और जब उसकी नजर मीनाक्षी पर पड़ी, तो उसने कहा, 'आह, क्या मनमोहक दृश्य है, मेरी प्रियतमा।'

मीनाक्षी मुस्कुराई और लक्ष्मण समझ गया कि यह मुस्कान बनावटी थी। 'और हां,' उसने धीमी आवाज़ में लक्ष्मण से कहा, 'मुझे यह भी बताना होगा। वह मुझसे प्यार करता है।'

धूल भरे खेतों से वली के आते ही भीड़ उससे अलग हो गई और उसने घोड़े से उतरी मीनाक्षी को कसकर गले लगा लिया। जनस्थान की राक्षसी रानी के शाही अंगरक्षक की तरह लक्ष्मण भी उसके बगल में ही खड़ा रहा।

‘जब मुझे आपका पत्र मिला, तो मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। आज के दिन अपनी उपस्थिति से आपने मुझे सम्मानित किया, यह कितना अद्भुत है!’ वली मुस्कुराया और उसका व्यक्तित्व बेहद आकर्षक था।

लक्ष्मण ने सुग्रीव और वाली के बीच एक बड़ा अंतर देखा: वे सगे भाई थे, लेकिन जहां सुग्रीव बूढ़ा, द्वेषपूर्ण, कुबड़ा और हर समय खांसता रहता था, वहीं वाली चुस्त, मांसल और गर्मजोशी से भरा हुआ था।

क्या हम सही व्यक्ति का समर्थन कर रहे हैं?

‘मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही थी, मेरे प्यारे,’ मीनाक्षी ने बड़ी सहजता से झूठ बोला। ‘उम्मीद है तुम्हें पुरानी यादें ताजा करने में कोई आपत्ति नहीं होगी। मेरा इरादा आज रात यहीं रुकने का है।’

वाली ने उसकी कमर पकड़ ली। 'अगर तुम्हें मेरा प्रस्ताव याद रहे तो तुम हमेशा के लिए यहीं रह सकती हो।'

अरे बाप रे, ये तो अजीब बात है। ये महिला उसे जान से मारने की साजिश रच रही है और वो अब भी उससे शादी करने की उम्मीद कर रहा है।

मीनाक्षी ने शरारती अंदाज़ में खुद को उसकी पकड़ से छुड़ा लिया। 'ज़रूर, मेरे प्रिय, लेकिन मैं विधवा हूँ और किष्किंधा के राजा जैसे इतने ऊँचे पद के साथ आप यह बोझ नहीं उठाना चाहेंगे। आख़िरकार, आपके पास तारा है। वह बहुत सुंदर है।'

‘अरे,’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘इस उम्र में भी एक आदमी की कई पत्नियां हो सकती हैं।’

उन्होंने शांत स्वर में कहा, ‘इसके अलावा, मैं माल्यावता पर्वतों की ओर हमारी विलय योजनाओं पर आपसे चर्चा करने की योजना बना रही हूं। कुछ वन जनजातियां ऐसी हैं जो राक्षसों के सामने आत्मसमर्पण नहीं कर रही हैं।’

‘और मुझे लगा था कि यह एक सामाजिक मुलाकात है।’

‘दोनों बातें हो सकती हैं। क्या मेरे सैनिक शहर में रह सकते हैं?’ उसने लक्ष्मण और अपने साथ मौजूद सैनिकों के दूसरे दल की ओर इशारा करते हुए पूछा।

वाली ने किसी और की ओर देखने के बजाय लक्ष्मण की ओर देखा और उनके पास चला गया। लक्ष्मण किष्किंधा के महान राजा की शक्ति को महसूस कर सकते थे—वह बलवान योद्धा, जिसका हाथ इतना शक्तिशाली माना जाता था कि एक ही थप्पड़ से किसी की जान ले सकता था।

मेरा मतलब है, ये वो कहानियां थीं जो आप रात में बच्चों को सुनाते थे।

उनकी उपस्थिति और उनकी तीखी निगाहों में, लक्ष्मण समझ सकता था कि वली एक ही समय में इतना खतरनाक और इतना स्नेही क्यों प्रतीत होता था।

'यह कौन है? मैंने इसे पहले कभी आपके साथ नहीं देखा।'

मीनाक्षी ने आत्मविश्वास से कहा, 'एक नई भर्ती।'

'कमजोर लगता है!' उसने हंसते हुए लक्ष्मण की पीठ थपथपाई। लक्ष्मण को लगा जैसे उसके कवच पर कोई धब्बा लग गया हो। 'तुमने उसे भर्ती क्यों किया?'

'वह बुद्धिमान है,' मीनाक्षी ने उत्तर दिया। 'और वह जितना दिखता है उससे कहीं अधिक मजबूत है।'

'क्या तुम कुश्ती करते हो, नौजवान?' वली ने पूछा।

लक्ष्मण ने मीनाक्षी से घबराहट भरी नजरें मिलाईं। लेकिन मीनाक्षी के कुछ कहने से पहले ही, वाली ने लक्ष्मण का हाथ पकड़ लिया और उसे मैदान की ओर घसीटने लगा। जैसे ही लक्ष्मण को होश आया, उसने उसे जमीन पर धक्का दे दिया।

मीनाक्षी ने डांटते हुए कहा, 'वाली! वह मेरा भर्ती किया हुआ है। तुम उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकते।'

वाली ने राक्षसी की ओर मुड़कर देखा। 'ये सब तो बस मज़ाक है, मेरी प्रियतमा। आख़िरकार, मैं तो बस ये परख रहा हूँ कि क्या वो सचमुच तुम्हारे आस-पास रहने और तुम्हारी रक्षा करने के लायक है। या फिर वो बस एक डरपोक है, क्योंकि वो देखने में बिल्कुल डरपोक जैसा लगता है।' और लक्ष्मण के कुछ समझ पाने से पहले ही, वाली लक्ष्मण की ओर दौड़ा, अपना विशाल सिर उसके कवच से टकराया और उसे ज़मीन पर पटक दिया।

लक्ष्मण लड़खड़ा गया और तनाव तथा उल्टी आने की अनुभूति से उसका पेट मरोड़ उठा। तभी उसने देखा कि दो विशाल मुट्ठियाँ उसकी ओर आ रही हैं।

उनसे तेजी से बचते हुए, लक्ष्मण ने अपने हाथ क्रॉस की मुद्रा में ऊपर उठाए और मुट्ठियों से दस्तानों पर प्रहार किया, लेकिन वह महसूस कर सकता था कि वे क्षतिग्रस्त हो रहे हैं।

लेकिन जब वली ऊब गया, तो उसने खुद को पीछे खींचा और लक्ष्मण को खिलौने की तरह उठाकर जमीन पर फेंक दिया।

धूल का बवंडर उठ रहा था और लक्ष्मण अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करने और अपने साथ हो रही घटनाओं को समझने की कोशिश कर रहा था।

वो ऐसा क्यों कर रहा था? सेना के एक अनजान आदमी से क्यों लड़ रहा था? क्या उसका स्वभाव ही ऐसा था? मैं राघव के इस बंदर को मार गिराने का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।

'चलो, उठो, दोस्त।'

लक्ष्मण ने दांत पीस लिए। उसे महसूस हो रहा था कि लोहे की तलवार उसके वजन को नीचे खींच रही है और कांसे का कवच उसके शरीर को जकड़ रहा है। उसने कवच की पट्टियाँ ढीली कीं और अंत में मुट्ठी भींचकर उसे पूरी तरह से छोड़ दिया।

'अरे वाह, किसी ने तो हिम्मत दिखाई!' किष्किंधा के राजा हँसते हुए बोले। 'जानते हो मैंने तुम्हें क्यों चुना, साहब?'

लेकिन इससे पहले कि वह कुछ जवाब दे पाता, लक्ष्मण उसकी ओर दौड़ा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। लेकिन उस पर झपटने के बजाय, लक्ष्मण तेज़ी से उसके पैरों के बीच से घूमा और उसके पैर खींचकर उसे ज़मीन पर गिरा दिया। जैसे ही वली उठने की कोशिश करने लगा, लक्ष्मण उसकी पीठ पर कूद पड़ा और वली के हाथ-पैरों को अपने हाथों से कसकर जकड़ लिया। वली ने हिलने की कोशिश की और लक्ष्मण ने उसे कुछ देर तक पकड़े रखा, जब तक कि वली अचानक खड़ा नहीं हो गया।

जैसे कि उसे कोई फर्क ही नहीं पड़ा हो, वली खड़ा हो गया और लक्ष्मण की पकड़ से खुद को छुड़ा लिया।

वानर राजा ने अपनी बलिष्ठ भुजाओं को एक साथ मिलाकर लक्ष्मण को ऐसे उठाया जैसे वह कोई पंख हो, लेकिन उसे वापस फेंकने के बजाय, उसने उसे ज़मीन पर सीधा खड़ा किया और मुस्कुराया। 'तुम बहुत अच्छी हो। यह बहुत अच्छा है!' उसने मीनाक्षी पर चिल्लाते हुए कहा, जो उस समय पसीने से तरबतर थी। 'तुम इसे कहाँ से लाई हो?'

'वह लंका से आया था,' उसने घबराकर मुस्कुराते हुए कहा।

लक्ष्मण ने अपनी त्वचा का रंग गहरा कर लिया था, लेकिन वाली ने कंधे उचकाते हुए लक्ष्मण को बाहों में भर लिया। जैसे-जैसे तनाव बढ़ने लगा, उसने कहा, 'मेरे प्रिय, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, लेकिन यह मुझे अंधा नहीं बनाता। वह कहता है, 'वह मानव है, राक्षस नहीं। सवाल यह उठता है, मेरे प्रिय...' लक्ष्मण को जब एहसास हुआ कि वाली

उतना बलवान और मूर्ख नहीं है जितना वह खुद को दिखाता है, तो उसकी मुस्कान और स्नेह एकदम ठंडेपन में बदल गए।

'आपने मानव को गार्ड के तौर पर क्यों रखा है? क्या कोई ऐसी बात है जिसके बारे में मुझे या आपके भाई को जानकारी नहीं है?'

27. प्रमीला

कालिया अंदर आ चुका था और उसे जवाब चाहिए थे।

प्रमीला अपने कमरे में अकेली थी और सोच रही थी कि क्या कहे। वह अब भी असमंजस में थी और अब सिर्फ एक दिन बचा था।

तभी उसने देखा कि हिजड़े की परछाईं दरवाजे से उसके कमरे में प्रवेश कर रही है और प्रमीला ने अपना सिर घुमाया। वह अपने बड़े से लबादे में था। उसका दुबला-पतला, कसा हुआ चेहरा उसे ध्यान से देख रहा था और उसने कहा, 'राजकुमारी, मैं कल आपका इंतजार कर रहा था। कल शादी है और मुझे उम्मीद है कि आपके पास जवाब होंगे।'

प्रमीला ने आह भरी. 'मैं असफल हो गया, भगवान कालिया।'

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया।

'उसने कुछ भी साझा नहीं किया।' उसने आगे कहा। 'उसने कहा था कि वह हमारी शादी के बाद करेगा। वह मुझ पर और अधिक भरोसा करना चाहता है।'

कालिया चुपचाप सोचती रही। 'क्या तुम्हें लगता है कि वह ऐसा करेगा?'

मुझे नहीं पता। उसने मुझे कोई बुराई नहीं दिखाई है।

'वह एक बुरा, दुष्ट आदमी है, राजकुमारी।' कालिया ने पूछा। 'तुम उससे शादी नहीं कर सकती। क्या मुझे शादी टालने की कोशिश करनी चाहिए?'

प्रमीला ने सिर हिलाया। 'मुझे लंका जाने दो और देखने दो कि क्या मैं उनसे कुछ सीख सकती हूँ। मुझे उनका विश्वास जीतने दो।'

कालिया आगे बढ़ा और उसने धीरे से अपनी उंगलियों से प्रमीला की ठोड़ी को छुआ। 'क्या तुमने वह सब किया जो मैंने तुम्हें उसे घुटनों पर लाने के लिए कहा था?'

'मैंने किया।' प्रमीला ने कम से कम कोशिश तो की थी। 'वह होशियार है।'

‘बेशक, वो है। आखिर उसने ही तो स्वर्ग को नष्ट किया था।’ कालिया ने अपने होंठ सिकोड़े। ‘और उस रात बारूदी सुरंगों वाले इलाके में जाने का क्या मतलब था?’

मुझे उम्मीद थी कि वह मुझसे यह सवाल नहीं पूछेगा।

प्रमीला को समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे। 'वह यह देखना चाहता था कि नागमणि रेडियोधर्मी है या नहीं।'

‘रेडियोधर्मी? यह क्या होता है?’

'एक ऐसी विधि जिससे पता लगाया जा सके कि क्या कोई साधारण वस्तु बम में बदल सकती है,' उसने कहा, जैसा कि उसने बचपन में शहर में अपने विज्ञान के गुरुओं से सीखा था।

‘नागमणि से बम बनाया जा सकता है?’ कालिया लगभग चीख पड़ी।

प्रमीला जानती थी कि अगर उसने इसका जवाब दिया तो मामला और भी पेचीदा हो जाएगा। मेरी वफादारी मेरे परिवार के साथ है, लेकिन अगर उन्हें पता चला कि मेघनाद नागमणि को नापाक इरादों से, बम बनाने के लिए चाहता है, तो वे उसे इसे लेने नहीं देंगे और इससे एक भयंकर युद्ध छिड़ जाएगा क्योंकि मेघनाद इसे हथियाने के लिए कुछ भी करेगा। 'नहीं, इसमें कोई रेडियोधर्मिता नहीं थी।'

कालिया उसके पास बैठ गया, उसकी निगाहें उसकी निगाहों में कुछ ढूंढ रही थीं। 'राजकुमारी, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?'

वह बहुत थकी हुई थी। उसने पूरी रात नींद नहीं ली थी और अगले दिन उसकी जिंदगी बदलने वाली थी, लेकिन उसने सिर हिलाकर हां कहा। 'हां।'

क्या तुम्हें उससे प्यार हो रहा है?

और तभी उसकी आँखें मानो बचाव की मुद्रा में ऊपर उठ गईं। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, उसकी ज़बान नहीं चली, उसका मुँह मानो उसे बोलने नहीं दे रहा था, मानो उसके अंदर, उसके सीने में कुछ उसे रोक रहा हो। 'उह...'

मैं उसे बदल सकता हूँ।

कालिया मुस्कुराते हुए तुरंत खड़ी हो गई। 'राजकुमारी, चलो तुम्हारी योजना पर चलते हैं। ठीक है? तुम उससे शादी कर लो और पता लगाओ कि वह कैसे करता है, और फिर बाद में तुम उसे कुत्तों के हवाले कर देना।'

प्रमीला ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'अच्छा विचार लगता है,' और इतना कहकर वह कमरे से चला गया, उसे एक विचार के साथ छोड़ गया - एक ताजा, सुखद विचार।

अगर कुछ दिन पहले किसी ने उससे कहा होता कि वह राक्षस के राजकुमार से शादी करके खुश रहेगी, तो वह उपहास उड़ाती।

लेकिन आज हालात बदल गए हैं।

वह सचमुच कल का बेसब्री से इंतजार कर रही थी।

मुझे उमीद है कि यह अच्छी तरह से पूरा हो।

28. सुपर्निका

जब हमला शुरू होगा, तब पूर्वी मीनार की मशाल लक्ष्मण द्वारा प्रज्वलित की जाएगी। और इसी बीच, मीनाक्षी को वली का ध्यान भटकाना था, जब वह बादाम का दूध पी रहा था।

वह अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था, सीना खुला हुआ और शरीर पर बाल थे, और मीनाक्षी को घूर रहा था। उसकी निगाहें इतनी सीधी थीं मानो मीनाक्षी के रोंगटे खड़े कर दें। उसमें एक अजीब सी कोमलता और साथ ही साथ खौफ पैदा करने का हुनर था। वे उसके महल के बैठक कक्ष में थे, जो छोटे-छोटे पौधों से सजा हुआ था, जिन्हें वह अक्सर पानी देता था और जिनसे उसे बहुत लगाव था। रंगीन गद्दियों और जलती हुई आग की रोशनी से कमरा जगमगा रहा था।

'तो आप चाहते हैं कि मैं यह मान लूं कि आपने उसे यूं ही काम पर रख लिया?' वली ने पूछा।

'मैं चाहती हूँ कि तुम सच पर विश्वास करो, और भले ही यह सुनने में कितना भी साधारण लगे, यही सच है।' मीनाक्षी ने कोई जटिल या पेचीदा योजना नहीं बनाई थी। 'मुझे पता है दशानन राजपरिवार के पास किसी अन्य आदिवासी रक्षक को, खासकर किसी मानव को, भरोसे की कमी के कारण नहीं रखना चाहता, लेकिन लक्ष्मण भरोसेमंद था। वह लड़का प्रतिभाशाली भी है। उसने तुम्हें तब काबू में कर लिया जब मेरा भाई भी ऐसा करने में नाकाम रहा।'

'आपका आदमी अवसरवादी है,' उसने दूध की घूंट लेते हुए कहा। 'लेकिन ठीक है। तो मैं दशानन से इस बारे में बात करूंगा। मेरे पास कई सक्षम योद्धा हैं जिन्हें मैं महाराज को सुझाना चाहूंगा।'

मीनाक्षी जानती थी कि इससे पूछताछ होगी, लेकिन वह शांत रही और मुस्कुराते हुए बोली, 'आप ही राजा हैं।' वली और सुग्रीव शारीरिक रूप से अलग थे, लेकिन आंतरिक रूप से वे दोनों ही चालाक थे।

'मैं किस चीज़ में आपकी मदद करूं?'

मीनाक्षी लाल पर्दों के पास खिड़की तक गई और बाहर देखने लगी। किसी भी क्षण लक्ष्मण उसके पहरेदारों का इस्तेमाल करके मीनारों पर हमला कर शहर में घुसपैठ कर सकता था।

और यही वो पल होगा। विनाश का क्षण। वो क्षण जब दशानन का साम्राज्य लड़खड़ाने लगेगा, क्योंकि वली, इलवर्ती पर उसके गढ़ में एक महत्वपूर्ण सहयोगी था।

किसी न किसी तरह से सब ठीक ही हो गया।

और उम्मीद है कि सुग्रीव इतना बड़ा एहसान करने के बदले में अपना वादा निभाएगा। उस बंदर के लिए इतना बड़ा एहसान।

प्यार के लिए आप क्या-क्या करते हैं।

‘तुम्हारे भाई ने तुम्हारे पति के साथ जो किया, वह दुखद है,’ मीनाक्षी को दंडक में अपनी उन झूठी समस्याओं के बारे में बोलने का मौका दिए बिना, जिन्हें उसने लक्ष्मण के हमले तक जारी रखने की योजना बनाई थी, वाली ने अपनी बात जारी रखी। ‘मैं अपनी संवेदना व्यक्त करना चाहती थी, लेकिन मुझे नहीं पता था कि कागज के टुकड़े पर लिखकर ऐसा करना उचित होगा या नहीं।’

मीनाक्षी ने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'अच्छा हुआ कि आप स्वयं आकर यह काम किया।'

वाली हँस पड़ा। ‘टकराव के लिए मुझे दोष मत दो। तुम जानते हो कि मुझे इससे नफरत है। हमेशा से ही रही है।’ वह रुका। ‘उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मेरा मतलब है, उसके अपने कारण रहे होंगे, ज़रूर। लेकिन उसे तुम्हारे बारे में सोचना चाहिए था।’

‘उसने एक पल के लिए ऐसा किया... और फिर उसने मेरे पति को मार डाला।’ मीनाक्षी ने आह भरी।

‘मैं विश्वासघात के बारे में सब जानती हूँ।’ वली उदास होकर मुस्कुराई। ‘मेरे भाई ने, जिसने मुझसे अटूट वफादारी का वादा किया था, मुझे एक गुफा में मरने के लिए फंसा दिया, जबकि वह खुद जानता था कि मैंने अभी आखिरी सांस नहीं ली है। उसने मेरी

सांसें जाँचीं, तुम्हें पता है। वह जानता था कि मैं सांस ले रही हूँ, लेकिन चेहरे पर उदासी बनाए रखने के लिए उसने दिखाया कि मेरी मौत से वह कितना दुखी है।'

'क्या आपकी उनसे मुलाकात हुई थी?' उसने सुग्रीव के बारे में पूछा।

'मैं ऐसा नहीं करूंगा। मैंने शहर को बताया है कि मैं उसका पीछा कर रहा हूं, सिर्फ एक मजबूत चेहरा दिखाने के लिए, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता।'

'क्यों?' मीनाक्षी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। वली हमेशा से ही प्रतिशोधी स्वभाव का व्यक्ति था, लेकिन अभी उसे इस हालत में देखकर उसके बारे में मीनाक्षी की धारणाएं कुछ बदल गईं।

"खैर," उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैंने छोटी-छोटी बातों पर लोगों को माफ करना सीख लिया है। व्यर्थ के युद्ध बेकार हैं। लोग सिर्फ बदला लेने के लिए मूर्खतापूर्ण काम करते हैं। सोचो, अगर लोग ऐसा करना बंद कर दें तो क्या वह आदर्श दुनिया नहीं होगी जिसका हमसे अक्सर वादा किया जाता है?"

'अगर अपनी संतुष्टि के लिए नहीं, तो हम किसलिए लड़ें?' मीनाक्षी ने पूछा।

वाली उठ खड़ा हुआ और उसकी ओर चलने लगा, साथ ही वह उस खिड़की के पास भी पहुँच गया जहाँ से पूर्वी मीनार स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। 'सही काम के लिए।'

मीनाक्षी को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने ऐसा कहा। सही बात के लिए? वह तो सिर्फ अपनी संतुष्टि के लिए एक मकसद के लिए लड़ रही थी, लेकिन इस प्रक्रिया में उसने सारे नैतिक मूल्यों को खो दिया था।

विद्युत ने कहा था, 'यह याद रखना कि तुम खुद को कभी मत भूलो।'

लेकिन मैं कौन हूँ? मैं तो बस एक राक्षसी हूँ जो किसी उद्देश्य के लिए नहीं जीती।

लेकिन क्या मैं किसी मकसद के लिए जी सकता हूँ? क्या मैं कोशिश कर सकता हूँ?

मीनाक्षी ने पूर्वी मीनार को रोशन होते देखा। चीखें सुनाई दे रही थीं। चीखों ने तुरंत वली को सतर्क कर दिया, जिसने खिड़कियाँ खोलकर बाहर देखा जहाँ नागरिक भाग रहे थे। उसके घर जल रहे थे। उसके सैनिक और पहरेदार कई हमलों का सामना कर रहे थे।

'ये सब क्या हो रहा है?' वह चिल्लाया और फिर मीनाक्षी की ओर मुड़ा। 'क्या ये तुमने किया?'

मीनाक्षी मुस्कुराई। और फिर, एक ज़ोरदार झटके के साथ, उसने उसे खिड़की से बाहर धकेल दिया।

29. मेघनाद

आज रात थी। लेकिन धरती के नीचे न तो कोई रोशनी थी और न ही कोई अंधेरा, केवल लोगों के कदमों की आहट सुनाई दे रही थी।

और जब वह अपना सर्वश्रेष्ठ रूप दिखाने की तैयारी कर रहा था, तब उसे अपने माता-पिता की कमी खल रही थी। वह चाहता था कि जब वह प्रमीला से प्रेम की प्रतिज्ञा करे और विवाह के वचन ग्रहण करे, तब वे उसके साथ हों।

हालांकि, उनका प्यार थोड़ा संदिग्ध था।

लेकिन हर किसी को उसका हक नहीं मिलता। मेघनाद शुरू से ही जानता था कि उसके माता-पिता उसे एक ऐसे बच्चे के रूप में देखते थे जो इतना परिपक्व हो चुका है कि अपने फैसले खुद ले सके और उन्हें अपने जीवन में लागू कर सके।

इसके अलावा, मेघनाद द्वारा किए गए कई विवाहों में से यह महज़ एक था। राक्षसी संस्कृति में एक ही स्त्री के साथ रहना एक घृणित अवधारणा मानी जाती थी, जबकि अन्य जनजातियों में एकविवाह प्रथा प्रचलित थी।

क्या उसने कल रात उससे जो कहा था, उसका वाकई वही मतलब था? मेघनाद को नहीं पता था। लेकिन उसे एक अजीब सी बेचैनी ज़रूर महसूस हो रही थी और उसके पेट में गुदगुदी भी हो रही थी।

दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी और जब वह दरवाजा खोलने गया तो उसने देखा कि हिजड़ा अपने दो अंगरक्षकों के साथ खड़ा है और मेघनाद को देखकर फीकी सी मुस्कान बिखेर रहा है। 'महाराज, क्या हम थोड़ी देर के लिए जा सकते हैं?'

क्या वे किसी बेहतर व्यक्ति को नहीं भेज सकते थे?

मेघनाद मुस्कुराया। 'हाँ।' उसने अपनी शादी की शेरवानी पकड़ी और उसे पहनने लगा, साथ ही उसने दरवाजा बंद कर दिया। वह उस मंदिर की ओर चलने लगा जहाँ समारोह होना था। 'मेरे चाचा कहाँ हैं?' उसने कालिया से पूछा।

‘उन्हें सूचना दे दी गई है। वे मंदिर में प्रतीक्षा कर रहे हैं।’ हिजड़े ने बिना दांत दिखाए मुस्कुराया, जिससे मेघनाद के हाथों पर रोंगटे खड़े हो गए।

और प्रमीला?

'उसकी भी।'

मेघनाद ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।

लेकिन कुछ गड़बड़ थी।

और उसे यह आभास हो रहा था कि उसे जल्द ही इसका पता चल जाएगा।

30. प्रमीला

कुछ गड़बड़ थी।

और जब उसने साड़ी पहनकर तैयार होने के बाद अपना दरवाजा खोलने की कोशिश की, तो उसका संदेह स्पष्ट हो गया - कि वह बंद था।

उसने दरवाजा खटखटाना शुरू किया, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया।

‘हेलो!’ उसने और जोर से चिल्लाया।

प्रमीला को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। वह वापस लौट गई, उसकी उंगलियां आपस में उलझी हुई थीं, वह यह सोचने की कोशिश कर रही थी कि आखिर क्या हो रहा है, तभी अचानक दरवाजा खुला और उसे राहत की लहर महसूस हुई, जब उसने देखा कि उसका गोरा, मोटा पिता उसके कमरे में दाखिल हो रहा है।

'हाय, मेरी प्यारी,' उसने उसके पीछे दरवाजा बंद करते हुए कहा।

‘क्या हो रहा है? आप यहाँ क्यों हैं?’ प्रमीला ने अपने पिता से सवालों की बौछार शुरू कर दी, जो बस वहीं खड़े होकर उसे देख रहे थे।

‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम यह जानते हो ना?’

प्रमीला ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'आखिर चल क्या रहा है?'

मैंने जो कुछ भी किया, वह तुम्हारे लिए किया। कृपया समझने की कोशिश करो।

‘पिताजी!’ उसने हैरानी से कहा। ‘मुझे बताइए।’

मुझे कालिया की योजना के बारे में पता था।

उसने अपनी आंखें सिकोड़ लीं।

दरअसल, यह विचार मैंने ही सुझाया था।

‘यह असंभव है। आप कभी भी मेरी जान को खतरे में नहीं डालेंगे।’

‘मुझे खेद है, मेरे बच्चे। मुझे पता था कि तुम मेघनाद की अस्त्रों का उपयोग करने की क्षमता के बारे में जानने में सक्षम थे, लेकिन तुम असफल रहे और यह समझ में आता है। तुम तैयार नहीं थे। लेकिन फिर भी, अब हमारे पास कोई विकल्प नहीं है।’

प्रमीला आगे आई। 'आप मुझे उसके करीब आने देते हैं? अगर वह बुरा निकला तो क्या होगा?'

‘वह अब भी बुरा है।’

‘वो ऐसा नहीं है। वो एक अच्छा आदमी है। लेकिन अब मुझे तुम पर शक है।’

‘हम इस शादी को होने नहीं दे सकते, मेरी प्यारी।’ वह पास आया और प्रमीला के कंधों को पकड़ने की कोशिश की। ‘हमारे पास एक दूसरी योजना भी थी। अगर तुम बम बनाने के बारे में संदिग्ध से जानकारी नहीं निकाल पाईं, तो हम बम बनाने वाले को ही मार देंगे। वह यही चाहता था।’

प्रमीला ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं। 'यह कौन है?'

‘मेरे साथी। अयोध्या के राजा भरत। क्या आप जानते हैं कि हमें अभी क्या पता चला? मेघनाद के पिता भरत की भाभी के अपहरण के पीछे थे? वह परिवार पागल है।’ अनंत की आँखों में आँसू आ रहे थे। ‘अब आप समारोह में नहीं जा सकते।’

‘तो मेघनाद को यहाँ बुलाकर मुझे एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना... यही तुम्हारी योजना थी?’ उसने सिर हिलाया। ‘और मैंने सोचा था कि मैं तुम पर भरोसा कर सकती हूँ!’

अनंत चुप रहा। 'तुमने मेरा दिल भी तोड़ दिया।'

'आपका क्या मतलब है?'

‘तुम्हें वह राक्षस पसंद है। वह हमारा दुश्मन है।’ उसने कहा।

'मैं कैसे करूं ...'

‘कालिया ने इसे तुम्हारी आँखों में देखा।’

प्रमीला ने अपने जबड़े भींच लिए। लेकिन फिर वह पीछे हट गई। 'मैं नहीं जानती। कालिया को कुछ नहीं पता। पिताजी, मैं तो बस इस शहर की भलाई चाहती थी। आप मुझे योजना में शामिल कर सकते थे। आप मुझे बता सकते थे कि आप शुरू से ही इसमें शामिल थे। आप मुझे भरत के शामिल होने के बारे में बता सकते थे। लेकिन

आपने नहीं बताया। और जानते हैं क्यों? क्योंकि आप मुझे अपना असली रूप नहीं दिखाना चाहते थे - कि आप चालाक और चोट पहुँचाने वाले हैं। आप मुझे वही पिता दिखाना चाहते थे, जिन्हें मैं अपना आदर्श मानती थी। आप डरे हुए थे, है ना?'

अनंत ने आह भरी। 'तुम्हें वो क्यों पसंद था?'

'मुझे वो पसंद नहीं है! मेरे पास एक योजना थी। मुझे परवाह नहीं कि वो मरे या नहीं। मुझे बस इस बात की परवाह है कि तुम मुझ पर भरोसा करो।' उसने तीखे स्वर में कहा।

अनंत ने सिर हिलाया। 'मुझे खेद है।' और उसने अपनी बाहें फैलाकर उसे गले लगा लिया, और प्रमीला ने भी अनिच्छा से उसे गले लगा लिया। 'मुझे मेघनाद से निपटने दो, उसके बाद हम बात करेंगे।'

उसने आगे पूछा, 'तुम उसे कहाँ मारने का इरादा रखते हो?'

दो बार सोचने के बाद उसने कहा, 'मंदिर के बाहर।'

'ठीक है पापा,' प्रमीला मुस्कुराई और सिर हिलाया। 'जब ऐसा हो जाए तो मुझे बता देना।'

अनंत कमरे से बाहर चला गया और जैसे ही उसके पीछे दरवाजा बंद हुआ, प्रमीला अपने बिस्तर के नीचे रखी हुई कटार उठाकर खिड़की की ओर भागी। उसने कांच की खिड़की खोली और बाहर निकलकर उस चौखट पर खड़ी हो गई जहाँ से मेघनाद अंदर आया था।

और उसने नीचे बिखरे हुए भूसे के ढेर देखे। अगर वह उसे बहकाने की कोशिश कर रहा था, तो वह भी ऐसा ही कर सकती थी। उसे यह दिखाना था कि मेघनाद की मौत से उसे कोई आपत्ति नहीं है, ताकि उसे उसके वर्तमान ठिकाने का पता चल सके।

मैं उसे मरने नहीं दे सकता।

आखिरकार, वह मेरे पति हैं।

31. लक्ष्मण

वह खिड़की से गिर गया। लेकिन इससे उसकी मौत नहीं हुई।

लगातार हो रही गोलीबारी और भयंकर क्रोध के बीच, लक्ष्मण अपने ऊपर हमला करने वाले पहरेदारों पर तीर चला रहे थे—आम नागरिकों की चीख-पुकार, खजाने का टूटना और मीनारों का गिरना—लक्ष्मण ने यह सुनिश्चित किया कि सुग्रीव के आदमियों को शत्रु वानरों को नुकसान पहुंचाने से रोककर कोई निर्दोष न मरे। रईसों के घर लूटे जा रहे थे और तोड़े जा रहे थे, जबकि आम नागरिक यह सब भयावह रूप से देख रहे थे।

और बीच में, राघव और लक्ष्मण ने किष्किंधा में आने वाली सेनाओं से लड़ाई लड़ी। राघव ने उन्हें खदेड़ दिया और सुग्रीव की मदद के लिए दूसरी तरफ चले गए, जो अब अपनी गदा लेकर घायल वाली की ओर बढ़ रहे थे। किष्किंधा के वर्तमान राजा को उनके महल की पहली मंजिल से सुपर्निका ने धक्का दे दिया था।

शायद हम आखिरकार उस पर भरोसा कर सकते हैं।

और इससे पहले कि लक्ष्मण देख पाते कि राघव सुग्रीव के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है, उन्हें अचानक एक जोरदार थप्पड़ महसूस हुआ।

वह गिर पड़ा और ज़मीन पर लुढ़क गया, फिर होश में आया और उसे समझ आया कि अभी क्या हुआ है। उसे एक पल के लिए सब कुछ धुंधला सा लगा, फिर उसने पलकें झपकाईं और अपने सामने एक वानर रक्षक को देखा।

उसने सुपर्णिका के पहरेदारों का इस्तेमाल करके द्वार खुलवाए, तंबू के पहरेदारों को मरवा दिया, जो तमाशा देख रहे थे, और फिर अंत में सुग्रीव के आदमियों को अंदर जाने दिया। अंदर घुसते ही उन्होंने वली के सभी समर्थकों के घरों पर हमला करना शुरू कर दिया; चाहे वे राजनेता हों या राज्य के धनी व्यापारी।

खत्म हो गया।

लक्ष्मण ने दांत पीसते हुए, अपनी तीरंदाजी का इस्तेमाल करने के बजाय, वानर को घूंसा मारा और फिर उसके पैरों के बीच लात मारी। एक तीर खींचकर, उसने उसका सिरा वानर की आंख में घुसा दिया। तभी एक रक्षक चीखता-चिल्लाता हुआ उसी दिशा से प्रकट हुआ, क्योंकि लक्ष्मण ने हमले को रोकने के लिए अपने धनुष को ढाल की तरह इस्तेमाल किया। लक्ष्मण ने वानर के पेट में घूंसा मारा और तीर खींचकर उसे सिर के बिल्कुल करीब से गोली मार दी, जिससे तीर का सिर चकनाचूर हो गया।

उसके पीछे एक और व्यक्ति आया और इससे पहले कि लक्ष्मण कुछ कर पाता, उसने एक सफेद, रोएँदार रोशनी को तेजी से आते हुए देखा जो पहरेदार को उससे दूर

ले जा रही थी। और जैसे ही उसकी नज़रें केंद्रित हुईं, उसे पता चला कि वह कौन था।

बजरंग!

सफेद फर वाले वानर ने लक्ष्मण को आँख मारी और वे अपने-अपने रास्ते से हटकर दूसरे रास्ते की ओर चल पड़े।

और तभी एक असहनीय दर्द शुरू हुआ...

लक्ष्मण को अपनी पीठ में कुछ महसूस हुआ। उन्होंने थोड़ा सा सिर घुमाकर देखा तो पाया कि एक तीर उनकी चमड़ी को भेद गया है। उन्होंने तीर को बाहर निकाला और चारों ओर देखने लगे कि वह कहाँ से आया था। हाँफते हुए उन्होंने देखा कि एक युवक, जो वानर नहीं था, धनुष-बाण लिए उनकी ओर ताने खड़ा था।

लक्ष्मण ने कहा, 'मेरा सुझाव है कि आप चले जाएं। आपका नेता हार गया है।'

लड़के ने एक और तीर चलाया और वह लक्ष्मण के कंधे पर जा लगा। लक्ष्मण दर्द सहन नहीं कर पाए।

धत तेरी कि।

लक्ष्मण ने अपना बाण तैयार किया। 'रुक जाओ वरना मुझे तुम्हें मारना पड़ेगा।'

लड़के ने बात नहीं मानी। वह अपने तरकश से तीर निकाल रहा था, तभी लक्ष्मण ने अपना तीर चलाया और वह लड़के की हथेली में जा लगा। खून बहने लगा और लड़का दर्द से चीखते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। लक्ष्मण ने एक और तीर कसकर खींचा और वह लड़के के घुटनों में जा लगा, जिससे वह फिर से दर्द से चीख उठा।

लक्ष्मण उसकी ओर बढ़ा, लेकिन लड़के ने किसी तरह अपना खंजर निकाल लिया और उस पर झपट पड़ा। लक्ष्मण ने लड़के की बांह मरोड़कर उसी के खंजर से उस पर वार कर दिया।

जैसे ही छुरी लड़के के शरीर में गहराई तक घुसी, लक्ष्मण ने देखा कि लड़के की जान निकल रही है। उसने गौर किया कि लड़का एक राक्षस था—काला रंग, तैलीय बाल और बादाम जैसी आंखें।

'वाली मारा गया है!' पीछे से किसी ने घोषणा की।

लक्ष्मण के चारों ओर आग भड़क रही थी, कुछ वानर रो रहे थे और कुछ खुशी मना रहे थे। उन्होंने सुग्रीव को अपनी गदा के साथ देखा, जिससे वाली का खून बह रहा था। भगवान राघव किष्किंधा के पूर्व महाराजा को उठाकर लोगों के सामने प्रदर्शित कर रहे थे, उनका बाण वाली की छाती में सीधे हृदय में जा लगा था।

और सुग्रीव ने घोषणा की कि अब वह राजा है।

लक्ष्मण ने अपना ध्यान उस लड़के की ओर केंद्रित किया, जिसकी निर्जीव आँखें अब उसे देख रही थीं। 'मुझे खेद है।' उसने भौंहें चढ़ाते हुए लड़के का खंजर निकाला, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि युद्ध के नाम पर उसे इतने कम उम्र के किसी व्यक्ति को मारना पड़ रहा है।

केवल सीता माता के लिए।

फिर उसकी नज़र धनुष पर पड़ी। वह बहुत ही बारीकी से बनाया गया था; बांस से बना हुआ था। लक्ष्मण ने उसे उठाया और उसकी बनावट को ध्यान से देखने लगा, तभी उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी। वे लड़के के नाम के शुरुआती अक्षर थे, संभवतः उसी लड़के के, और उन पर लिखा था:

एके

32. मेघनाद

मेघनाद जानता था कि उसकी मृत्यु निकट है।

जैसे ही वह मंदिर के बाहरी इलाके में पहुँचा, जहाँ शेषनाग की शिला प्रतिमा, जिसके दाँतेदार मुख में नागमणि थी, घोर क्रोधित दिखाई दे रही थी, और वह भी घोर अंधेरे में, उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं था। यह स्थान आम लोगों से दूर था। उसके आदमी यहाँ नहीं थे। कुंभकरण भी उपस्थित नहीं था।

क्या उसकी हत्या कर दी गई थी?

मेघनाद ने मुड़कर देखा तो कालिया और उसके पाँच अंगरक्षक उसके चारों ओर खड़े थे। मेघनाद के पास कोई हथियार नहीं था, न ही कोई छल-कपट। उसने उसे अपने कमरे में ही छोड़ दिया था और कालिया यह बात जानता था।

‘मेरे राजकुमार, मैं इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। लेकिन भगवान अनंत का मानना है कि आप उनकी पुत्री के योग्य नहीं हैं।’ कालिया ने कहना शुरू किया।

तो फिर समय बर्बाद करके मुझे यहां क्यों बुलाया?

‘तुम्हारी मौत को एक दुर्घटना के रूप में दिखाने के लिए,’ कालिया मुस्कुराई।

‘नागलोक में राक्षसों की पूरी सेना मारी जाती है और तुम इसका दोष किसी तीसरे पक्ष पर डालोगे। मेरे पिता तुम सबको मार डालेंगे।’ उसने उन्हें उकसाया, हालांकि वह जानता था कि दशानन कुछ नहीं करेगा क्योंकि मेघनाद के कर्मों का फल ही उसे यहाँ, उसकी मृत्यु के इस क्षण तक ले आया था।

कालिया हंस पड़ी। 'हमारे पास दोष देने के लिए काफी दुश्मन हैं।'

'आप ऐसा क्यों करेंगे?'

“दशनन के सबसे बलवान व्यक्ति को मारने के लिए, उसे यहाँ अकेले और असहाय अवस्था में लाना आवश्यक था,” कालिया ने समझाया। “राजा भरत यही चाहते थे, खासकर तुम्हारी भाभी के साथ जो तुमने किया उसके बाद।”

‘मैंने कुछ नहीं किया,’ मेघनाद ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

'ओह, क्षमा करें, आपके पिता। भरत आपको मारना चाहता है और फिर आपके भाई-बहनों के साथ भी ऐसा ही करना चाहता है।'

मेघनाद यह मानना नहीं चाहता था कि इस प्रक्रिया में अक्षय और अतिकाय को चोट पहुंचेगी।

‘और अंत में तुम्हारा पिता,’ कालिया ने अपनी बात समाप्त की और फिर उसने अपने आदमियों को हाथ में तलवार लिए आगे आने और मेघनाद को मार डालने का निर्देश दिया।

जैसे ही वे मेघनाद के पास पहुँचने लगे, उसने मुट्ठी भींचकर एक रक्षक को घूंसा मारा और उसकी तलवार से बच गया। तभी एक और रक्षक प्रकट हुआ, और मेघनाद ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उसे ही चाकू लग गया।

एक और वार!

और फिर एक और!

उसे अपनी ऊर्जा कम होती महसूस हो रही थी। और वह चाहता था कि काश वह सोमास लेकर खुद को ठीक कर पाता, लेकिन उसके पास सोमास नहीं थे।

मेघनाद जमीन पर घुटनों के बल बैठा था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, और वह अपने चारों ओर घिरे पहरेदारों को देख रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि उसके मुंह से खून रिस रहा है।

कर्म का फल हमेशा मिलता है।

मेघनाद धूल में गिरते ही अपने चेहरे पर एक घूंसा और पेट पर एक लात महसूस कर बैठा। अपने अंतिम क्षणों में, उसे अपने द्वारा किए गए सभी नुकसान याद आ रहे थे।

इस सारी गड़बड़ी के लिए वही जिम्मेदार था।

वह सही थी। मैं अच्छा आदमी नहीं रहा हूँ। मैं इसी का हकदार हूँ।

और तभी मेघनाद ने वह आवाज सुनी। एक तेज धार निकली और पहरेदार के सिर पर जा लगी, वह तुरंत गिर पड़ा। आवाज सुनकर मेघनाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। कालिया भी सदमे से जम गई थी।

प्रमीला ही उसे बचाने आई थी।

मेघनाद मुस्कुराया और उसने देखा कि प्रमीला डरी हुई और चिंतित थी, लेकिन उसके लिए बहादुरी से लड़ रही थी। मेघनाद ने गिरे हुए सैनिक की तलवार छीन ली और तुरंत उसे दूसरे रक्षक की छाती में घोंप दिया।

उसने तलवार को तीसरे गार्ड के सिर पर जोर से घुमाया और फिर चौथे गार्ड के सिर पर तलवार की मूठ से प्रहार किया।

और पांचवें रक्षक ने उससे बचते हुए उसकी तलवार को मोड़ दिया।

मेघनाद ने उसे तुरंत मारने के बजाय, अपनी चोटिल आंख से इशारा किया और अपनी तलवार उसकी ओर फेंक दी।

जल्दबाजी में सिपाही ने अपनी तलवार छोड़कर मेघनाद की तलवार उठा ली। उसी क्षण ध्यान भटकने पर मेघनाद ने उसे पेट में लात मार दी, जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा।

लड़खड़ाते हुए वह कालिया के पास गया और उसका गला पकड़ लिया। 'अरे कमीने... कुंभकरण कहाँ है?'

‘वे ... अकेले ... नहीं थे।’ कालिया ने संघर्ष करते हुए कहा।

मेघनाद को कुछ समझ आने से पहले ही, चारों ओर से और सैनिक आ गए और उसने किन्नर को पीछे धकेल दिया। उसने देखा कि प्रमीला घबरा रही है, और तुरंत मेघनाद की ओर दौड़ी। मेघनाद ने उसे बगल से गले लगा लिया। 'क्या यह कुछ ज़्यादा ही रोमांटिक नहीं है?' उसने उससे पूछा। प्रमीला ने उसे घूरकर देखा और बोली, 'उफ़, लगता है हमारी राय अलग है।'

आपको बहुत चोट लगी है।

'तुम्हें बिल्कुल सही जानकारी है, मेरी प्रियतमा।' उसने आह भरी, जब उसने देखा कि एक दर्जन से अधिक सैनिक आ चुके हैं और और अधिक सैनिकों को बुलाने के लिए सायरन बजाए जा रहे हैं।

'हमें क्या करना चाहिए?' प्रमीला ने पूछा।

उस पल मेघनाद को सचमुच एक स्मोक बम की ज़रूरत महसूस हुई। 'हम किसी चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' जैसे ही उसने यह कहा, चमत्कार हो उठा - मेघनाद को अंधेरे में घोड़ों के प्रकट होने की आवाज़ सुनाई दी और उनमें सबसे आगे कुंभकरण था।

अपने आदमियों के साथ, उसने दुश्मनों पर वार करना शुरू कर दिया, क्योंकि राक्षस और नाग दोनों आपस में लड़ रहे थे। कुंभकरण अपने घोड़े से कूदकर मेघनाद की ओर बढ़ा, 'हमें यहाँ से निकलना होगा। हमारे आदमी उन्हें रोके रखेंगे, जबकि हम भाग निकलेंगे।'

'क्या हुआ है?'

'पहरेदार आ गए। उन्होंने हम पर अंधाधुंध हमला करना शुरू कर दिया, लेकिन हममें से कुछ बच निकले; जिन्हें आप यहाँ देख रहे हैं। हमने यहाँ की हलचल देखी और आपको ढूँढा,' कुंभकरण ने समझाया। 'एक बार बच निकलने के बाद, हमें नागराज को मारना होगा। लेकिन अभी के लिए, चलिए चलते हैं।'

मेघनाद ने देखा कि उसके सैनिक उसके लिए, कुंभकरण के लिए और साम्राज्य के लिए लड़ रहे थे। और उसने देखा कि सड़क के दूसरी ओर से और भी नाग अपने घोड़ों के साथ आ रहे थे।

शेषनाग का मंदिर रक्तपात से त्रस्त था।

'ठीक है, चलो करते हैं।'

मेघनाद ने पास के घोड़े को पकड़ने का फैसला किया, हालांकि उस पर बैठते ही उसके शरीर में दर्द की एक लहर दौड़ गई। उसने प्रमीला की ओर मुड़कर देखा।

'नागमणि का क्या होगा? आप नहीं चाहते कि वह अस्त्रों का निर्माण करे?' प्रमीला ने नम आँखों से पूछा।

मेघनाद ने चारों ओर देखा; उसके आदमी मर रहे थे और उसके पास भागने के लिए कुछ ही सेकंड बचे थे। वह या तो अभी दाईं ओर जाकर मणि को ले आए या...

मेघनाद ने पूछा, 'क्या आपके मेरे साथ घर वापसी की यात्रा में शामिल होने की कोई संभावना है?'

‘क्या आपको मणि नहीं चाहिए?’

मेघनाद ने सिर हिलाया। 'मैं तुम्हें चाहता हूँ।'

‘क्या तुम मुझसे अपने साथ भाग जाने के लिए कह रहे हो?’ प्रमीला ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

‘अगर आप नहीं आ सकते तो मैं समझ सकता हूँ। यह आपका शहर है। यह आपका परिवार है। लेकिन अगर आप आते हैं, तो मैं वादा करता हूँ कि मैं आपका ख्याल रखूँगा,’ मेघनाद ने कहा और उसने यह बात दिल से कही।

बहुत समय बाद, पहली बार उसने किसी महिला से जो कहा, उसका उसने सचमुच में मतलब समझा।

मेघनाद मुस्कुराते हुए बोली, 'मैं तुमसे वादा करती हूं कि मैं बीमारी और सेहत, हर सुख-दुख में तुम्हारे साथ रहूंगी।'

प्रमीला ने उसकी तरफ देखा और मेघनाद ने कामना की कि काश उसे पता होता कि वह इस समय क्या सोच रही है।

काश ...

‘मुझे आश्चर्य हो रहा था कि तुम मुझसे यह सवाल कब पूछोगे।’ प्रमीला मुस्कुराई।

मेघनाद ने मुस्कुराते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया। प्रमीला ने उसका हाथ पकड़ा और घोड़े की पीठ पर चढ़ गई।

कुंभकरण ने हैरानी से हल्की सी हंसी हंसी और फिर मेघनाद के पीछे-पीछे भूमिगत शहर के निकास द्वार की ओर सरपट दौड़ पड़ा।

‘मैं आपको एक गुप्त रास्ता दिखाती हूँ। जिस रास्ते से हम जा रहे हैं, वह बंद होगा।’ प्रमीला ने चाचा और भतीजे को रास्ता बताना शुरू किया।

मेघनाद मुस्कुराया, उसके हाथ में घोड़े की लगाम थी और नाग राजकुमारी की बाहें उसकी कमर से लिपटी हुई थीं।

लेकिन वह यह भी जानता था कि उनकी यह कार्रवाई समाधान से कहीं अधिक समस्याएं पैदा करेगी।

और वह उनका सामना करने के लिए तैयार था। फिलहाल, वह यहाँ था, वह उसके साथ यहाँ थी और वे साथ थे।

33. मेघनाद

कुछ दिन बीत चुके थे।

और वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था—टूटा-फूटा, बिखरा हुआ। उसके शरीर पर पट्टियाँ बंधी थीं, चोटों पर आयुर्वेदिक मलहम से मालिश की जा रही थी। मेघनाद हमेशा से ही भागने वाला था, और इसी वजह से वह ज्यादातर हमलों से बच जाता था। लेकिन यहाँ... यहाँ, वह झुलसा हुआ और ज़ख्मी था।

तब तक कई लोग आकर उसके बिस्तर के पास बैठे उसका हालचाल पूछते रहे थे। उनमें से एक कुंभकरण भी था, जिसने कवच पहन रखा था। वह बैठते हुए बोला, 'बच्चे, कैसा महसूस कर रहे हो?'

मेघनाद की दृष्टि थोड़ी धुंधली थी क्योंकि वह अभी-अभी नींद से जागा था। 'मैं खुद को खूबसूरत महसूस कर रहा हूं।'

कुंभकरण हंस पड़ा। 'क्या तुम्हें पता है तुमने क्या किया है?'

‘तुम्हारे और मेरे भले के लिए, मैं यहाँ था। अगर कुछ हो जाता, तो यह मेरा हमशक्ल होता।’

मैं प्रमीला के बारे में बात कर रहा हूँ, बच्ची।

‘अरे, वो।’

आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। इससे मामला और जटिल हो जाता है।

‘इससे क्या जटिलता आती है?’ मेघनाद को याद नहीं आया कि प्रमीला उसकी देखभाल करती थी। और मन ही मन वह चाहता था कि काश उसने ऐसा किया होता।

‘तुम्हें पता चल जाएगा। तुम्हारे पिताजी तुमसे इस बारे में बात करेंगे।’ वह मुस्कुराया। ‘अगर तुम जाग जाओ तो मैं लैब में ही मिलूंगा। मैं फिर से छह महीने के डिटॉक्स के लिए जा रहा हूं, जो मैं आमतौर पर करता हूं।’

मेघनाद ने सिर हिलाया। वह कुंभकरण और उनके वैज्ञानिक एकांतवास के बारे में जानता था—अंतर्दर्शन पर काम करने के लिए तहखाने में जाना। यही उनका काम, उनका शौक, उनका जुनून था। लेकिन ऐसे दिग्गज को देखकर, जो अधिकांश विजयों

में नहीं मिलते, विरोधी दल उनके बारे में मजाक उड़ाते थे, कहते थे कि वे छह महीने सोते रहते हैं, जबकि सच्चाई यह थी कि वे हमेशा काम में लगे रहते थे।

शत्रु हमेशा अधूरे ज्ञान के आधार पर उपहास करते हैं।

कुंभकरण चला गया और मेघनाद अपने बिस्तर पर करवट बदल कर लेट गया, तभी उसने बाहर किसी से कुंभकरण की बात सुनी। 'वह जाग गया है।'

और तभी अचानक वह 'कोई' अंदर आ गया।

प्रमीला। उसकी आँखें गहरी और चमकीली थीं, जब उसने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा। वह बेहद खूबसूरत थी—बड़ी-बड़ी आँखें, घुमावदार होंठ, प्यारी सी नाक, खुले बाल और गोरी, कोमल त्वचा। उसने कहा, 'जब तक हम यहाँ पहुँचे, तुम मौत के बहुत करीब थे।'

'यही तो मेरा रोज़ का काम है। मौत के इतने करीब पहुंचे बिना मुझे संतुष्टि नहीं मिलती,' मेघनाद मुस्कुराया।

प्रमीला उसके पास बैठकर हँस पड़ी।

'तुम इतने लंबे समय तक क्या कर रहे थे? मुझे याद नहीं क्योंकि सब कुछ धुंधला सा है,' मेघनाद ने कहा।

'मैं तनाव में थी। मैंने तुम्हारी देखभाल की और लंका में घूमती रही। वैसे तुम्हारे पिताजी काफी अच्छे हैं,' प्रमीला ने कहा। 'वे काफी पढ़े-लिखे लगते हैं। वे मुझे अपनी लाइब्रेरी दिखा रहे थे।'

'हाँ, ठीक है, वो तो दिखावा करता है,' मेघनाद ने चिढ़कर कहा। वह दशानन को जानता था, जो ऋषि पुलस्त्य का पुत्र था, कम उम्र में ही विद्वान बन गया था और संगीत वाद्ययंत्रों में निपुणता, युद्ध तकनीकों में पारंगत होने और असाधारण रूप से बलवान होने के कारण विलक्षण प्रतिभा का धनी माना जाता था।

वह अधिकांश राक्षसों से भिन्न था क्योंकि वह शिक्षित और ज्ञानी था जबकि अन्य नहीं थे, और इसी बात ने उसे लाभ पहुँचाया। उसने इस अनुशासन को अपने वंशजों, अपनी प्रजा और अपने सैनिकों तक पहुँचाया। उसके पास इतने मानव ऋषि और गुरु थे जितने किसी भी कबीले के शासक की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

'तुम्हारा भाई, अतिकाया, बहुत बढ़िया है। वह मुझे अपना त्रिशूल दिखा रहा था और बता रहा था कि तुम कितने बेवकूफ हो,' उसने हंसते हुए कहा।

‘खैर, वो दिखावा भी करता है और मतलबी भी... मतलब मतलबी भी।’ मेघनाद ने अपना बचाव करते हुए कहा। ‘लेकिन अक्षय से मिलो तो देखना। वो तो बहुत प्यारा है।’

दूसरी ओर, तुम्हारी माँ का मेरे प्रति रवैया ठंडा था।

मेघनाद ने कहा, 'शायद उसे हालात के बारे में पता हो, क्योंकि तुम यहां आ चुकी हो।'

उसकी मुस्कान फीकी पड़ गई। 'मैं इसी बारे में सोच रही थी। लगता है मेरे पिता को लगता है कि तुमने मेरा अपहरण किया है। वो मुझे वापस लाने के लिए एक सेना तैयार कर रहे हैं।'

मेघनाद ने आह भरते हुए कहा, 'वह बहुत नाटक करता है। तुम्हें यह किसने बताया?'

‘कमांडर कुंभकरण।’

मेघनाद ने सिर हिलाया। कुंभकरण को इस तरह की बुरी खबरें सुनने में महारत हासिल है। वह एक घंटे से जागा भी नहीं था और उसे पहले ही इतनी परेशान करने वाली खबरें मिल चुकी थीं। 'यह सब बताने के बाद उसने क्या सुझाव दिया?'

‘एक पत्र भेजकर उसे यह बताना कि मैं स्वेच्छा से यहाँ हूँ।’

‘तुमने क्या किया?’ मेघनाद चिंतित था।

उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'मैंने वह पत्र दो दिन पहले ही पोस्ट कर दिया था, मेरे प्रिय।'

मेघनाद मुस्कुरा उठा। उसे यह बात बहुत अच्छी लगी... बेहद अच्छी। 'तो तुम यहीं हमेशा के लिए रहने आए हो, है ना?' उसकी हड्डियों में हल्का दर्द हो रहा था, फिर भी वह हँस पड़ा।

'हां, मैं हूं और मुझे लगता है कि मैंने अपने शहर के साथ विश्वासघात किया है, भले ही असल में मामला उल्टा था।' उसने अपनी उंगलियां उसके गाल पर फिराईं। 'शायद आने वाले समय में मैं उसे समझा सकूं कि मैंने शहर क्यों छोड़ा।'

मेघनाद ने शरारती लहजे में कहा, 'मुझे अभी इस बात का स्पष्टीकरण चाहिए।'

'तुम्हारी यही इच्छा है, मेरे प्रिय,' उसने आँख मारते हुए कहा और बिस्तर से उठकर अपने बालों को पोनीटेल में बाँध लिया।

मेघनाद ने उसे अपना हाथ बढ़ाया। उसने उसका हाथ थाम लिया और मेघनाद ने उसके हाथ के ऊपरी हिस्से को चूमा। 'मैं जानता हूँ कि तुम डरी हुई हो, भले ही तुम

इसे दिखा नहीं रही हो। लेकिन मैं तुमसे वादा करता हूँ, तुम्हारे इस फैसले पर तुम्हें पछतावा नहीं होगा।'

प्रमीला ने अपनी आँखें सिकोड़ीं। 'मुझे पता है।'

दरवाजे पर दस्तक हुई। और एक सिर अंदर झाँका। वह एक पहरेदार था। 'महाराज, आपके पिता आपसे मिलना चाहते हैं। वे अपने अध्ययन कक्ष में हैं।'

मेघनाद ने सिर हिलाया और फिर प्रमीला की ओर मुड़ा। 'तुम्हारी क्या योजना है?'

‘अतिकया को लगता है अपनी पसंद की महिलाओं को प्रभावित करने के कुछ तरीके सीखने हैं। मैं उसे सिखाऊंगी,’ प्रमीला ने कहा। ‘काम खत्म होने के बाद आंगन में आना। मैं तुम्हारे साथ टहलना चाहूंगी।’

जैसे ही सिपाही कमरे से बाहर निकला और दरवाजा बंद कर दिया, प्रमीला पास आई और फुसफुसाते हुए बोली: 'मैं मिथिला की सीता से मिली थी। तुम्हारे पिता ने उनका अपहरण कर लिया है। तुम्हें उनसे इस बारे में बात करनी चाहिए। यह गलत है।'

मेघनाद को समझ नहीं आ रहा था कि उसके पिता का वैवाहिक जीवन सुखमय होने के बावजूद वे दूसरे आदमी की पत्नी को क्यों छीनना चाहते थे। वह जानता था कि सीता का विवाह किससे हुआ था - राघव से। वह इस बारे में बात करने के लिए तैयार हो गया और जैसे ही प्रमीला चली गई, वह अपने लकड़ी के सैंडल पहने हुए पैदल ही आया। वह नंगे बदन था और उसने केवल धोती पहनी हुई थी। गले में शॉल डाले हुए वह कमरे से बाहर निकला और लड़खड़ाते हुए अपने पिता के अध्ययन कक्ष की ओर बढ़ा। और ऐसा करते हुए, उसे अपने अतीत के कर्म याद आ रहे थे - मैंने ऐसा क्या किया था कि मुझे प्रमीला जैसी लड़की मिली?

उसने अध्ययन कक्ष का दरवाजा खोला तो देखा कि उसके पिता मेज पर बैठे कलम से स्याही में डुबोकर कुछ लिख रहे थे। उसने ऊपर देखा और निराशा से सिर हिलाया।

मेघनाद ने अपने पिता को जीवन भर देखा था और हर बार जब वह उन्हें देखता, तो उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ जाती थी। न जाने क्यों, उस व्यक्ति में एक ऐसी आभा थी जो किसी को भी डरा सकती थी। वह कुंभकरण जितना लंबा तो नहीं था, लेकिन उसका शरीर चौड़ा था और उसके चेहरे पर बाल थे, और उसकी क्रिस्टल जैसी धूसर आँखों में एक तीखी नज़र थी।

‘मैंने तुम्हें भेजा था...’ उसने दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हुए पन्ने पलटे, ‘...शादी करने के लिए और बदले में, तुम उस महिला को बिना सहमति के और हमारे पीछे बढ़ती हुई एक भयभीत सेना के बीच ले आए।’

मेघनाद मुस्कुराते हुए सामने वाली कुर्सी पर आराम से बैठ गया। 'नागा कुछ नहीं कर सकते। उनके पास कुछ भी नहीं है।'

‘मुझे पता है। लेकिन फिर भी। अब हम उनसे संबंध नहीं रख सकते। और मैंने कुंभकरण से सुना कि नाग मणि रेडियोधर्मी थी?’ उसने अपनी भौंहें उठाईं। ‘और तुमने उसे वहीं छोड़ दिया और उसकी जगह उसे ले आए? कितना निराशाजनक है, बेटे!’

मेघनाद ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'वह इसके लायक थी।'

वह रुका। 'क्या तुम उससे प्यार करते हो?'

'मुझें नहीं पता।'

‘तुम उससे प्यार करते हो।’ उसने सिर हिलाते हुए कहा। ‘यह और भी बुरा है। मैं अपने साम्राज्य के सबसे प्रतिभाशाली दिमागों में से एक को एक... औरत के कारण डगमगाने नहीं दे सकता!’

मेघनाद ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'महाराज, बेशक, आपने भी अपने लिए एक स्त्री ले ली है।'

दशानन उठ खड़ा हुआ और कुर्सी पीछे धकेलते हुए आगे की ओर झुका। 'बेटे, तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?'

मेघनाद अपने पिता से नहीं डरता था, ‘सीता’। वह अपनी कुर्सी पर स्थिर बैठा रहा।

आपको हालात का पता नहीं है।

'मां बहुत नाराज होंगी।'

‘तुम्हें उसके बारे में कैसे पता चला? सीता के बारे में?’

मेघनाद ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैंने अफवाहें सुनी हैं कि लंका के महान राजा को एक राजकुमारी से प्यार हो गया और उन्होंने उसका अपहरण कर लिया।'

‘वह नहीं है...’ उसने सिर हिलाया। ‘वह तुम्हारी बहन है, बेटे।’

मेघनाद की रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन दौड़ गई। 'और तुम्हें यह कैसे पता चला?'

‘जो माणिक उसने पहना है, वह पारिवारिक विरासत है। मीनाक्षी के बताने तक उसे इसके बारे में पता ही नहीं था।’

मेघनाद को यकीन नहीं हो रहा था कि उसकी एक बहन है। और इसके बारे में सोचना भी अजीब लग रहा था। 'और क्या तुमने उसे बताया है?'

'मुझे उसे बताने की हिम्मत नहीं है,' उसने सिर हिलाया, हाथ पीछे की ओर रखे। 'पता नहीं क्यों। वह द्वेषपूर्ण है। उसने अपने दरवाजे बंद कर लिए हैं और किसी से बात नहीं करना चाहती।'

मेघनाद ने अपने होंठ दबाते हुए कहा, 'प्रमीला उससे मिली थी। शायद वह कर सकती है। वह एक महिला है।'

'तुम्हारी प्रेमिका में ऐसी क्या खूबी है जो तुम्हारी माँ में नहीं है?' दशानन ने मंदोदरी की ओर इशारा करते हुए पूछा, जो शायद सीता से बात करने गई होगी।

'मां बूढ़ी हैं। प्रमीला और सीता की उम्र लगभग एक जैसी हो सकती है। वे एक-दूसरे को समझ सकती हैं। मैं उनसे इस बारे में बात कर सकती हूं।'

दशानन ने सिर हिलाया। 'हाँ, आप कर सकते हैं, और यह एक अच्छा विचार है, लेकिन चूंकि मुझे आपकी सलाह की ज़रूरत है, इसलिए यह और भी शर्मनाक हो जाता है। हम उसके पिता का क्या करें?'

'उसका क्या होगा? उसे छोड़ दो, वह ठीक रहेगा।'

काश यह इतना आसान होता। हम एक और युद्धरत राज्य नहीं बना सकते, खासकर तब जब भारत पहले से ही हमारा शत्रु है।

'तो फिर आप आगे क्या करने की योजना बना रहे हैं?' मेघनाद ने अपने जबड़े भींच लिए।

दशानन ने आह भरी। 'कुंभकरण कहता है कि नागलोक को जलाकर राख कर दो।'

इसका मतलब होगा... प्रमीला के पिता की हत्या करना।

'और मुझे लगता है कि यह सही है,' दशानन ने मन ही मन सिर हिलाया। 'हमारे लिए ऐसा करना आसान भी है क्योंकि अयोध्या की तुलना में नागलोक काफी कमजोर है। आपका क्या विचार है? यह आप पर निर्भर है। मैं इसे आप पर छोड़ता हूँ।'

'मैं ही क्यों?' उसने पूछा। 'क्या तुम कोई फैसला नहीं ले सकती?'

'तुम उसे यहाँ लाए हो। अब तुम तय करो कि हम उसके परिवार से कैसे निपटेंगे। मैं कुंभकरण से सहमत हूँ। लेकिन तुम्हारा क्या कहना है?'

मेघनाद ने एक पल के लिए सोचा। अगर वह अनंत को छोड़ देता, तो वह एक द्वेषी व्यक्ति बन जाता जो कभी भी बदला ले सकता था। और अगर वह उसे मार देता, तो अचानक हमले की कोई संभावना नहीं रहती, लेकिन प्रमीला उससे कभी बात नहीं करती - बल्कि, वह उससे नफरत करने लगती।

दशानन ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'तुमने इंद्र को भी मार डाला। तुमने यह सुनिश्चित किया कि उसकी मृत्यु हो जाए क्योंकि तुम उसे बिना किसी नुकसान के जाने नहीं देना चाहते थे। तुम जानते थे कि वह तुम्हें मारने के लिए वापस आएगा। मेरा मानना है कि अगर हम अपने संबंधों को सुधार नहीं सकते, तो हमें उन्हें पूरी तरह से खत्म कर देना चाहिए। हमने उन्हें गठबंधन का एक मौका दिया था और उन्होंने उसे ठुकरा दिया, इसलिए हमें उन्हें नष्ट करने का पूरा अधिकार है।'

और मुझे इसे ठीक वैसे ही अंजाम देना होगा जैसे मैंने इंद्र के साथ किया था?

'बेशक,' वह अपनी मेज के चारों ओर घूमे और अपने बेटे के कंधे पर थपथपाया। 'तुम मेरे सबसे बेहतरीन और सबसे बुद्धिमान योद्धा हो।'

मेघनाद ने इस बारे में सोचा। लेकिन वह एक बात जानता था। यह प्रमीला के साथ उसके जीवन में किसी सार्थक, महत्वपूर्ण शुरुआत का संकेत था।

और वह इसे बिगाड़ भी नहीं सकता था।

उसने अपने पिता का हाथ पकड़ा और उसे अपने कंधे से नीचे गिरा दिया, फिर उनके सामने खड़ा होकर सीधी मुद्रा में बोला, 'नहीं, पिताजी। मेरा मानना है कि हमें अनंत को जीने देना चाहिए। नागलोक को जीने देना चाहिए।'

दशानन ने अपने जबड़े भींच लिए और मेघनाद समझ गया कि उसे यह अच्छा नहीं लगा। 'ठीक है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम्हें इसका पछतावा नहीं होगा। मुझे उम्मीद है कि हमें इसका पछतावा नहीं होगा।'

मेघनाद ने सिर हिलाया। हालांकि वह आत्मविश्वास से भरा था, लेकिन वह यह भी जानता था कि प्रेम के कारण कुछ करना खतरनाक होता है।

और इससे पहले कि वह अपने पिता को जवाब दे पाता, दरवाजे पर दस्तक हुई।

'अंदर आओ,' दशानन ने आदेश दिया, उसकी निगाहें अभी भी मेघनाद पर टिकी हुई थीं।

गार्ड ने अंदर झाँका। 'मालिक, एक नई खबर है।'

'हाँ?'

‘लेडी मीनाक्षी आ गई हैं।’

दशानन ने अपनी नज़र मेघनाद से हटाकर पहरेदार की ओर घुमाई, वह असमंजस में था। दरअसल, मेघनाद भी असमंजस में था।

वह दुखद खबर लेकर आई है।

और फिर मेघनाद और दशानन ने एक-दूसरे की ओर देखा।

34. लक्ष्मण

कई दिन बीत गए थे और कुछ भी नहीं हुआ था।

हमले के बाद शहर का पुनर्निर्माण किया जा रहा था। नागरिकों को मुआवज़ा दिया गया। वली के समर्थकों को या तो जबरन सेना में शामिल कर लिया गया या राज्य परिसर के बाहर मार दिया गया। सुग्रीव अपनी नई मिली प्रसिद्धि का आनंद ले रहा था।

और लक्ष्मण राघव के साथ इंतजार कर रहा था।

मीनाक्षी लंका के लिए रवाना हो चुकी थीं और जाने से पहले उन्होंने कहा था, 'जब आप आक्रमण करेंगे, तब मैं वहीं रुकूंगी, ताकि मैं आपको मार्गदर्शन दे सकूं कि प्रवेश करने के बाद क्या करना है।' उनकी बात में कुछ सच्चाई थी, लेकिन वह पर्याप्त नहीं थी।

लेकिन लक्ष्मण का उसके कार्यों पर कोई नियंत्रण नहीं था और जब उन्होंने उसे विदाई दी, तो राघव ने कहा, 'हम भाग्यशाली हैं कि वह हमारे साथ है। उसके बिना हम यहां तक नहीं पहुंच पाते।'

यह कुछ दिन पहले की बात है।

और यहाँ तक पहुँचने के बावजूद, कोई ठोस प्रगति नहीं हो रही थी।

लक्ष्मण और राघव महल की ओर जा रहे थे, जिसे अब वाली के समय की तुलना में अधिक विशाल और भव्य बनाया गया था। वानर रक्षक द्वार के बाहर खड़े थे और उन्होंने तुरंत उन्हें रोक दिया।

लक्ष्मण ने कहा, 'मैं राजा सुग्रीव से मिलना चाहता हूं,' जबकि राघव उनके पीछे शांत भाव से खड़ा रहा।

‘वह व्यस्त हैं, महाराज।’

'उन लोगों से मिलने से भी ज्यादा व्यस्त, जिन्होंने उनकी मदद की थी।'

‘वह रानी तारा के साथ है,’ गार्ड ने कहा।

सुग्रीव ने वली की पत्नी तारा पर अपना दावा ठोका था, जो कभी सुग्रीव की प्रेमिका हुआ करती थी। वली की मृत्यु के बाद सुग्रीव मौज-मस्ती कर रहा था, वहीं लक्ष्मण लंका जाने के लिए बेताब था। वह चाहता था कि सब कुछ तुरंत हो जाए। उन्होंने इसके लिए अपनी जान जोखिम में डाली थी।

और इससे पहले कि वह उसे रोकने के लिए गार्ड को पीट पाता, उसने पीछे से किसी की आवाज सुनी: 'भगवान राघव और स्वामी लक्ष्मण,' यह एक मधुर आवाज थी।

लक्ष्मण ने मुड़कर बजरंग को देखा, जो शहर में निर्माण कार्यों और नागरिकों के बीच काम के बंटवारे में मदद कर रहा था। वह सुग्रीव का प्रमुख था और राजा का भाई समान करीबी था।

‘क्या हुआ?’ उसने पूछा।

लक्ष्मण के क्रोधित होने से पहले ही राघव ने कहा, 'हम राजा सुग्रीव से मिलना चाहते हैं, लेकिन वह हमसे मिलने में असमर्थ हैं, बजरंग।'

बजरंग ने सिर हिलाया। उसने पहरेदारों की ओर देखा और उन्हें द्वार से बाहर जाने का आदेश दिया। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई भगवान राघव को अंदर आने से रोकने की, मूर्खों। मेरी नजरों से दूर हो जाओ।'

गार्डों ने कुछ बुदबुदाया और चले गए।

बजरंग ने द्वार खोले और लक्ष्मण और राघव के पास से गुज़रते हुए उनके सामने झुककर प्रणाम किया। “माफ़ कीजिए, महाराज। ये लोग आपको नहीं जानते।” उन्होंने उस भगवा शॉल की ओर इशारा किया जिससे राघव ने अपना चिन्ह छुपा रखा था।

राघव ने सिर हिलाया, लेकिन लक्ष्मण को यह अभी भी पसंद नहीं आया। उनके साथ परदेसी जैसा व्यवहार किया जा रहा था। उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार हो रहा था। जैसे ही वे दरबार में दाखिल हुए, जहाँ सिंहासन विराजमान था, उन्होंने स्वयं उस व्यक्ति को देखा: सुग्रीव झुके हुए अपनी कुर्सी पर बैठे थे और एक वानर स्त्री से बात कर रहे थे, जो स्वयं पूरे शरीर पर बालों से ढकी हुई थी, लेकिन उसकी गर्दन के चारों ओर गहरे बैंगनी रंग के बाल थे।

तारा।

उन्हें देखकर सुग्रीव तुरंत खड़े हो गए। 'मेरे स्वामी!' उन्होंने कहा और जैसे ही उन्होंने ऐसा कहा, लक्ष्मण ने देखा कि तारा भी उठ खड़ी हुईं और अपनी सीट से उठ गईं, मानो उन्हें सुग्रीव की उपस्थिति में कोई दिलचस्पी ही न हो।

कम से कम हम अकेले नहीं हैं जो उससे नफरत करते हैं।

सुग्रीव रंगीन वस्त्र पहने, गले में गहनों से सजी हुई माला जिसमें उनके पदक लटके हुए थे और सभी उंगलियों में अंगूठियां थीं, सोने के मुकुट वाले सिंहासन पर विराजमान थे। वली के पास इनमें से कोई भी भौतिक वस्तु नहीं थी और जैसे-जैसे लक्ष्मण सुग्रीव की इस मूर्खता को देखते गए, उन्हें वली को सिंहासन से हटाने का पछतावा होता गया।

'तुम इन दिनों कहाँ थे?' सुग्रीव ने आँखें फाड़कर पूछा।

'जब भी हम आते हैं, आपके आदमी हमें अंदर नहीं आने देते।' लक्ष्मण ने दांत पीसते हुए कहा। 'अगर यहां दयालु बजरंग न होते, तो हम बाहर ही फंसे रह जाते।'

इस पर सुग्रीव ने बजरंग को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, लेकिन फिर मुस्कुराते हुए अपने चिकने दांत दिखाए। 'मेरे आदमी तो मूर्ख हैं, लेकिन बजरंग... वह विष्णु का अनुयायी है, इसलिए आपका भी कट्टर अनुयायी है, भगवान राघव। मैं उसकी क्या सेवा कर सकता हूँ?'

राघव भावहीन बना रहा और लक्ष्मण को महसूस हुआ कि उसका भाई क्रोधित हो रहा है। 'तुम अपने वचन पर कायम रहकर शुरुआत कर सकते हो।'

'शब्द?'

लक्ष्मण ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'सीता को बचाने में हमारी मदद करो। या तुम भूल गए हो?'

'बिल्कुल नहीं, महाराज!' उन्होंने अपने हाथ आपस में टकराए, और लक्ष्मण को इसका एहसास हो गया। 'देखिए, मैं यहाँ के सारे झंझटों में बहुत व्यस्त था, चाहे वो समुदाय का विकास हो या समाज की मदद। महाराज, मुझे कुछ और दिन दीजिए, ताकि मैं इस शहर से जुड़े मामलों को सुलझा सकूँ। कृपया समझिए, मुझे अपने शहर पर भी नियंत्रण पाना है। सीता की मदद करने से पहले मुझे उसका विकास करना होगा। मेरा आपको मदद न करने का कोई इरादा नहीं है।'

राघव ने पूछा, 'किस तरह का विकास?'

"हम एक गंभीर खाद्य संकट का सामना कर रहे हैं। महाराज, वली इस राज्य की सही देखभाल नहीं कर रहा था," सुग्रीव ने कहना शुरू किया। "उसने मनोरंजन पर

बहुत अधिक खर्च किया – कुश्ती उसका पसंदीदा खेल था। हमें उस स्टेडियम को तोड़कर उसकी जगह एक शिक्षा केंद्र बनाना होगा। अभी बहुत कुछ होना बाकी है।"

लक्ष्मण आगे बढ़े और झुके हुए राजा से काफी लंबे दिख रहे थे, तभी राघव का हाथ उनके कंधे पर पड़ा।

'हम आपको दो दिन का समय देते हैं। अगर तब तक...' लक्ष्मण ने कहना शुरू किया, '...आप इस बारे में कुछ नहीं करते हैं तो...' और वास्तव में उनके पास कोई मोलभाव करने की शक्ति नहीं थी। 'तो आपको हमसे फिर से सुनना पड़ेगा और यह उतना सुखद नहीं होगा जितना अभी है।'

35. सुपर्निका

इसे समझदारी से खेलना होगा।

मीनाक्षी दरबार में खड़ी थी, लेकिन मंत्रियों और दरबारियों के बजाय वह खाली था। वह अपने सामने रखे सिंहासन को देख रही थी—वहाँ बड़े-बड़े झंडे लटके थे, और पर्दों पर राक्षस साम्राज्य का चिन्ह बना हुआ था। उसकी माता कैकेसी उसे राज-प्रशासन के बारे में, उसकी सारी कार्यप्रणाली के बारे में सिखाया करती थीं।

और यह ठीक इसी कमरे में हुआ था।

अंदर की आवाज़ गूंज रही थी और पीछे उसने अदालत कक्ष के दरवाजे खुलते देखे। मीनाक्षी ने मुड़कर देखा तो दशानन और उसका लाडला बेटा मेघनाद अंदर आ रहे थे। बच्चे को देखकर उसे ऐसा लगा जैसे पेट में मुक्का लग गया हो।

पहले वह उसके काफी करीब हुआ करता था...

इससे पहले कि वह विद्युत को मरने देता।

मीनाक्षी ने मेघनाद और दशानन की ओर मुड़ते हुए अपनी नाक फुला ली, जो बेहद चिंतित दिख रहे थे। मीनाक्षी को देखते ही दशानन ने उसे गले लगा लिया; दशानन धोती और ढीली काली कुर्ती पहने हुए था। मीनाक्षी ने भी उसे गले लगा लिया, और दशानन ने कहा, 'तुमने जनस्थान में अपने कर्तव्य छोड़कर यहाँ क्यों आ गई?'

'क्योंकि इसका कोई फायदा नहीं है, मेरे भाई, क्योंकि मैं बुरी खबर का संदेशवाहक हूं।'

उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

‘मेरा मतलब यह है,’ मीनाक्षी उन दोनों से पीठ फेरकर दूर चली गई और बोली, ‘वाली मारा गया है। किष्किंधा पर सुग्रीव का शासन है।’

उसे कोई जवाब नहीं मिला, लेकिन जब उसने मुड़कर देखा तो दशानन का चेहरा भयभीत और सदमे में था—उसका सबसे मजबूत साथी मारा जा चुका था। ‘राघव और लक्ष्मण ने उसकी मदद की।’ उसने मेघनाद की ओर देखा, जो भयभीत होने के बजाय भावहीन बना रहा।

मेघनाद आगे आया। 'और अक्षय के बारे में क्या?'

और तभी मीनाक्षी ने आह भरी क्योंकि यह सब अनचाहा था। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि अक्षय, वाली की सेना का हिस्सा था और जब उसने कई शवों के बीच उसका शव देखा, तो वह कोने में बैठकर रोने लगी। वह तो बस एक भोला-भाला लड़का था और दशानन के पतन में उसका कोई हाथ नहीं होना चाहिए था।

लेकिन फिर, वह क्या उम्मीद कर रही थी? अगर दशानन को गिरना ही था, तो उसके बच्चे भी तो मारे जाएंगे। और उसकी पत्नी भी।

और शायद खुद को भी।

फिर अंतिम क्षण में, जब सब लोग मरने वाले होंगे, मैं अपनी योजना प्रकट करूंगा।

मीनाक्षी ने मेघनाद को जवाब नहीं दिया, बल्कि दशानन को जवाब दिया। 'दुर्भाग्य से, वह अब इस दुनिया में नहीं हैं, कम से कम मेरी रिपोर्ट तो यही कहती है।'

दशानन रोते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा और ज़मीन पर अपने हाथ पटकने लगा। मेघनाद तुरंत अपने पिता को सांत्वना देने गया और यद्यपि उसकी लाल आँखें मीनाक्षी को संदेह से देख रही थीं, फिर भी वह उसके आँसू भी देख सकता था। ये आँसू नाटक करने के लिए नहीं, बल्कि सचमुच दुखी होने के कारण थे।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह खुद को बचा नहीं सकती थी। यहाँ तक आने का उसका एकमात्र कारण दशानन को यह दिखाना था कि वह अब भी उसके साथ है, इससे पहले कि कोई और उसे बताए कि वह निर्दोष नहीं है।

मीनाक्षी एक बात जानती थी—अक्षय की मृत्यु परिवर्तन का संकेत थी। अब हालात बदलने लगेंगे। राघव सुग्रीव की सेना के साथ आगे बढ़ेगा और दशानन उसके विरुद्ध अपनी रक्षा की तैयारी करेगा...

विद्युत की मृत्यु के बाद मीनाक्षी ने जिस युद्ध की योजना बनाई थी, राक्षस साम्राज्य के पतन का जो सपना उसने हमेशा से देखा था, वह शुरू हो चुका था।

36. प्रमीला

जब मेघनाद आंगन में नहीं आया तो उसे पता चल गया कि उसके साथ कुछ गड़बड़ है।

प्रमीला को अपना घर, अपने पिता, अपनी सौतेली बहन अंजनी को छोड़ने के बाद से ही अकेलापन महसूस हो रहा था—ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी दुनिया छोड़कर किसी अनजान जगह आ गई हो। और यह बहुत मुश्किल था। वह मेघनाद से अपने विचार साझा नहीं कर सकती थी, क्योंकि... वह अभी-अभी ठीक हुआ था और उसे तुरंत परेशान करना प्रमीला के लिए अनुचित होता।

लंकापुरी के अति संवेदनशील वातावरण में खुद को खुश रखने की कोशिश करते हुए उसे साहस दिखाना पड़ा। कवियों के वर्णन के विपरीत, लंका किसी भी तरह से शैतानों का स्वर्ग नहीं था। वास्तव में, यह काफी सभ्य जगह थी। यहाँ आम लोग, आम कपड़े पहने हुए, आम बातचीत करते थे। यहाँ मंडल थे, जो प्रशासनिक केंद्र थे जहाँ राज्य के राजनेता गुंबदनुमा इमारतों में विश्राम करते थे। यहाँ सुंदर, शंकु के आकार के बुर्ज थे जिनका उपयोग निगरानी चौकियों के रूप में किया जाता था, दीवारों पर आकृतियाँ बनी हुई थीं और रंग-बिरंगे पेड़-पौधे थे। सरकार द्वारा वित्त पोषित कई दान संस्थाओं के कारण गरीबी कम थी। दशानन को यह स्पष्ट था कि वह नहीं चाहता था कि अभिजात वर्ग गरीबों का शोषण करे और उसे यह देखकर अच्छा लगा कि जो वह हमेशा सोचती थी, वह यहाँ साकार हो रहा था।

दरअसल, महान रावण दशानन शैतान नहीं बल्कि एक पढ़ाकू और काफी विनम्र व्यक्ति था। अजीब बात सिर्फ सीता के बारे में थी। जब वह अपने कमरे के पास से गुजरी, तो उसने कुछ पहरेदारों को उसके बारे में बात करते सुना - कि दशानन की वासना के कारण उसका अपहरण कर लिया गया था।

लेकिन दशानन को देखकर कुछ ठीक नहीं लगा। वह वैसा नहीं दिखता था। वह किताबी ज्ञान वाला और नेक इंसान था। वह धाराप्रवाह बोलता था और उसमें थोड़ा

अहंकार भी था, जिसे उसने तब महसूस किया जब वे एक किताब पर चर्चा कर रहे थे और उसने उस पर ऐसी टिप्पणी की जो दशानन को पहले से पता होनी चाहिए थी।

प्रमीला ने खुद को संभाला और अतिकाया से बात करने के बाद महल की ओर चल पड़ी - इस बार वह सीधे दशानन के अध्ययन कक्ष में गई और दरवाजा खटखटाया। जब किसी ने जवाब नहीं दिया तो उसने दरवाजा खोला और देखा कि वह कमरा सुनसान था।

क्या उन्हें यहाँ नहीं होना चाहिए था?

वह मेघनाद के कमरे की ओर वापस चली, गलियारे के कोनों और दरारों में सजे हुए सुंदर और आकर्षक गहनों पर नज़र डालती हुई। इस महल की एक खासियत यह थी कि इसमें उत्कृष्ट कलात्मकता की चमक और झलक थी।

ऐसा कहा जाता है कि इंद्र के वास्तुकार विश्वामित्र को सुमाली ने मजबूर किया था कि वे लंका की राजधानी लंकापुरी में लंका को राजमहल बनाएं।

आखिरकार उसने दरवाजा खोला और पाया कि मेघनाद अपने बिस्तर से टेक लगाकर जमीन पर बैठा हुआ था, सोच-विचार में डूबा हुआ था और एक पुरानी धुन गुनगुना रहा था।

वह देख सकती थी कि उसकी आँखों में आंसू थे और वह पूछना चाहती थी कि क्यों, लेकिन उसने दरवाजा बंद कर लिया और अपने होंठ दबाकर सोच-समझकर शब्द चुने। मेघनाद ने ऊपर देखा और अब तक की सबसे उदास मुस्कान दी।

साम्राज्यों को नष्ट करने वाला वह व्यक्ति इतना... कमजोर था। उसने कभी इसकी कल्पना भी नहीं की थी। और शायद, यही बात उसे उसकी ओर और भी आकर्षित करती थी।

‘आपको पता है, जब उन्हें स्ट्रोक आया था...’ मेघनाद ने बात शुरू करते हुए कहा, ‘... मैंने ही दिन-रात उनकी देखभाल की थी। लोग कहते हैं कि किसी का कोई पसंदीदा भाई या बहन नहीं होता, लेकिन दिल ही दिल में होता है। अक्षय ही मेरा पसंदीदा था और यह बहुत दुखद है कि मैं यह बात उससे साझा नहीं कर सका।’

अतिकया ने अक्षय के बारे में उससे विस्तार से बात की थी - दशानन का सबसे छोटा बेटा, तीरंदाजी में माहिर, बचपन में ही उसे स्ट्रोक आ गया था, और इन सबसे बढ़कर, वह एक प्रतिभाशाली संगीतकार था।

'क्या हुआ?'

‘तुम्हें पता है,’ वह रोने से बचने की पूरी कोशिश कर रहा था और बहुत ज्यादा रगड़ने से उसकी नाक लाल हो गई थी।

प्रमीला मेघनाद के पास आई और उसके बगल में बैठ गई। उसने मेघनाद को अपना सिर अपने कंधों पर रखने को कहा और अपनी उंगलियों से उसके सिर की त्वचा को सहलाया। 'कौन था?'

मेघनाद ने उसे वह सब बताया जो उसे अपनी बुआ मीनाक्षी से पता था। नागलोक में उसके महल के कवि उसे सुपर्निका कहते थे क्योंकि उसके लंबे, नुकीले नाखून थे जिनसे वह अपने शत्रुओं को चोट पहुँचाती थी। लेकिन यहाँ... उसे बस मीनाक्षी कहा जाता था। यह अजीब बात है कि दूसरे साम्राज्यों ने ये कहानियाँ कैसे गढ़ीं। शायद यहाँ, उसका पिता दुष्ट नाग सर्प होता।

'तो सीता तुम्हारी बहन है?' उसने वह सवाल पूछा जो उसकी पूरी कहानी में एक कांटे की तरह चुभ रहा था, जब उसने उसे बताया कि दशानन ने सीता का अपहरण कैसे किया था, यह मानते हुए कि वह उसकी बेटी है क्योंकि उसके पास एक पारिवारिक धरोहर थी।

‘मुझे लगता है ऐसा ही है। मुझे नहीं पता। सच कहूँ तो मुझे परवाह भी नहीं है, लेकिन मेरे पिता चाहते हैं कि वह अपनी नियति को स्वीकार करे। इस दुनिया में बहुत कुछ होता है, लेकिन असल में बहुत कम ही मायने रखता है।’ उसने अपनी आँखें मलीं। ‘लेकिन फिर भी... उससे बात करोगे ना?’

प्रमीला ने सिर हिलाया। उसे नहीं पता था कि वह यह कैसे करेगी, लेकिन वह किसी न किसी तरह इसका हल निकाल ही लेगी।

‘पिताजी नहीं चाहते कि मैं जल्दबाजी और बदले की भावना से सुग्रीव पर हमला करूँ।’ उन्होंने आगे कहा। ‘उनका कहना है कि यह नुकसानदायक होगा। जो हो गया सो हो गया। हमें ठीक से तैयारी करनी होगी और योजना बनानी होगी। व्यक्तिगत रूप से, मेरा मन करता है कि उस राघव का सिर काट दूं और उसके हाथ-पैर उसके मुंह में डाल दूं। और सुग्रीव का भी – वह बंदर। उसे मेरे भाई की जान लेने का कोई अधिकार नहीं था।’

प्रमीला ने कहा, “तुम्हारा गुस्सा तुम्हें कोई मूर्खतापूर्ण काम करने पर मजबूर कर सकता है। सावधान रहो।” वह थोड़ी देर रुकी। “योजना क्या है?”

‘मुझे नहीं पता। हम एक परिषद बैठक बुलाएंगे और योजनाएँ बनानी होंगी, जासूस भेजने होंगे। मैं अब तक का सबसे शक्तिशाली अस्त्र बनाना चाहता हूँ, ताकि मैं उस बंदर की सेना को उड़ा सकूँ। मैं वहाँ मौजूद हर वानर को मारना चाहता हूँ, ताकि उन्हें पता चले कि मैंने कितना दर्द सहा है।’ उसने गुस्से में दांत पीसते हुए कहा और प्रमीला को उसके चरित्र का काला पक्ष दिखाई दिया।

प्रमीला ने उसका हाथ थाम लिया। 'लेकिन क्या इससे अक्षय वापस आ जाएगा?'

तो फिर आप क्या सुझाव देते हैं?

‘अपनी भावनाओं को हावी होने देने से पहले हमेशा स्थिति का आकलन करें। आपके पिता, जिनके बारे में आपने बताया, बदले की भावना से हत्या न करने में विश्वास रखते हैं क्योंकि जिसे मारा जाता है वह अपने कर्मों का फल पाता है और उनकी बात में दम है। अगर हम द्वेषवश एक-दूसरे को मारने लगें, तो क्या दुनिया अराजकता से भर नहीं जाएगी? उनका यह विश्वास एक सकारात्मक बदलाव ला रहा है,’ प्रमीला ने समझाया।

‘मुझे पता है। मुझे पता है तुम बिल्कुल सही कह रही हो, लेकिन क्या मुझे चुप रहना चाहिए? ये बहुत दुख की बात है...’ मेघनाद बात बदलते हुए बोला, ‘बात ये है कि आप किसी को उसके जीते जी बताना चाहते हैं कि आप उससे प्यार करते हैं, लेकिन आप समय को हल्के में लेते हैं, इसलिए बता नहीं पाते। और जब समय आखिरकार आपको जकड़ लेता है, अपनी जानलेवा उंगलियां आपके गले पर जकड़ लेता है और आपसे आपका सबसे प्यारा छीन लेता है, तब आपको एहसास होता है कि आपको ये काम बहुत पहले ही कर देना चाहिए था। मेरा मानना है कि लोगों को अपने प्रियजनों को ये बताने के लिए इंतजार नहीं करना चाहिए कि वे उनसे प्यार करते हैं।’ उसने प्रमीला की तरफ देखा और दोनों ने एक गहरी, भावुक निगाहें मिलाईं। ‘मैं अब समय को हल्के में नहीं लेना चाहता, मेरी प्यारी। मेरा मानना है कि हम कल मर सकते हैं। और मैं ऐसी दुनिया में नहीं जीना चाहता जहां हम दोनों शादीशुदा न हों।’

प्रमीला ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

अक्षय मुझे शादीशुदा देखना चाहता था। उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े। उसने सोचा, 'उसे लगा कि यह मेरे लिए अच्छा होगा, उसे लगा कि इससे मुझे आगे बढ़ने में मदद मिलेगी और वह सही था।' उसने अपनी उंगलियाँ उसके गालों पर फिराईं। 'मैं सच में अलग महसूस कर रहा हूँ। मैं... खैर... मुझे महिलाओं के आसपास इस तरह

रहने की आदत नहीं थी - उदास, निराश और हताश, लेकिन तुम्हारे साथ मुझे वह गर्माहट मिलती है जो मुझे कहीं और नहीं मिलती। क्या यह कहना स्वार्थीपन है?'

प्रमीला ने उसके माथे पर चुंबन किया। 'तुम कुछ ज़्यादा ही भावुक हो रहे हो, ठीक है? लेकिन प्यारे भी हो। मेघनाद, मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए अपना घर छोड़कर आई हूँ, एक खास वजह से। क्योंकि मुझे ऐसा एहसास हुआ जो मैंने किसी और के साथ कभी नहीं किया। मुझे वो गर्माहट महसूस हुई जिसके बारे में तुम बात करते हो।'

'मुझसे? मैं तो सबसे बेरहम शैतान हूँ।' वह हँस पड़ा।

'चलिए एक विधिपूर्वक, औपचारिक समारोह करते हैं। मैं आपसे शादी करना चाहता हूँ।'

मेघनाद मुस्कुराई और दोनों गले मिले, मेघनाद ने अपनी बाहें उसके चारों ओर लपेट लीं। फिर वह पीछे हटते हुए बोला, 'उह, मुझे एक बात कहनी चाहिए?'

'क्या?'

उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई, जैसे वह अपने होठों के कोनों को ऊपर खींचने की कोशिश कर रहा हो। 'राक्षसों की कोई शादी की रस्म नहीं होती। मेरा मतलब है, वे तो बस महिलाओं का अपहरण करने के लिए जाने जाते हैं और...'

प्रमीला ने उसके कंधे पर थपकी दी। और वह मुस्कुराया। उसे खुशी थी कि उदासी से घिरी दुनिया में भी वह उसके साथ खुशी के छोटे-छोटे पल ढूंढ रहा था।

फिलहाल तो यह ठीक रहेगा...

37. लक्ष्मण

उसे पता था कि उसने आधी रात को कुछ सुना था।

लक्ष्मण ने आंखें खोलीं तो उन्हें अपने भाई के खर्राटे की हल्की आवाज सुनाई दी, जो कुछ ही दूरी पर एक आरामदायक पलंग पर सो रहा था। उनके पलंगों के बीच एक अध्ययन की मेज थी, जिस पर एक छोटा सा दीपक जल रहा था। उन्होंने दीपक उठाया और अंधेरे में बाहर की ओर चल पड़े। अपनी बांस की झोपड़ी के द्वार पर उन्होंने देखा कि ये आवाजें महल से ही आ रही थीं।

वे वीणा और सारंगी की विचित्र ध्वनियाँ थीं। लक्ष्मण यह बात अच्छी तरह जानता था क्योंकि बचपन में उसने कई तरह के वाद्ययंत्र सुने थे। उसकी माँ हमेशा उसे लड़ाई-झगड़े के बजाय संगीत में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करती थी। लेकिन लक्ष्मण को तीरंदाजी से प्रेम था और उसने अपने जुनून को ही चुना।

उसने अपने सोए हुए भाई की ओर देखा और फिर महल की ओर। आह भरते हुए, वह यह समझने की उम्मीद में महल की ओर चलने लगा कि आखिर हो क्या रहा है।

वह सीढ़ियों तक पहुंचा, जहां उसने देखा कि पहरेदार बाहर आपस में बातें कर रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। लक्ष्मण को देखते ही वे तुरंत एक-दूसरे को इशारा करके उसके पास आ गए।

'भगवान लक्ष्मण... आपको सोना चाहिए।'

लक्ष्मण ने देखा कि वानर रक्षक नशे में चूर था, हाथ में बोतल लिए, सीढ़ी पर गिर पड़ा, घबराया हुआ और चेहरा लाल हो गया था। उसने अन्य रक्षकों को देखा, वे हिचकी ले रहे थे और उनकी आँखें धुंधली थीं।

अगर वली जीवित होता तो क्या ऐसा होता?

वली के शासनकाल में लक्ष्मण ने जितना कुछ देखा था, उससे यही लगता था कि किष्किंधा संयमी था और सेना अनुशासित थी, क्योंकि वली स्वयं एक अनुशासित व्यक्ति थे। लक्ष्मण द्वार पर आए और पहरेदार को धक्का देकर एक तरफ कर दिया, जिसने तुरंत उनका हाथ पकड़ लिया... और लक्ष्मण ने पहरेदार की तलवार छीनकर अपने सिर पर तान ली।

लक्ष्मण की फुर्ती देखकर गार्ड हैरान रह गया और चांदनी में उसकी चमकती हुई आंखें पीछे हट गईं।

लक्ष्मण ने महल के द्वार खोले और उनका सामना एक भयानक दृश्य से हुआ। वहाँ सैकड़ों वानर मौजूद थे, संभवतः उच्च वर्ग के लोग, जो सुंदर वस्त्र पहने, गले और उंगलियों में गहने सजे हुए थे, संगीत की धुन पर नाच रहे थे और अपने प्यालों से शराब पी रहे थे। लक्ष्मण ने गंदे फर्श और अस्त-व्यस्त छतें देखीं। उन्हें पुरुषों की चीखें, हँसी, मुस्कान और ठहाके सुनाई दे रहे थे।

जब लक्ष्मण ने शराब के नशे में धुत पहरेदारों को अपनी ओर आते देखा तो उसकी सांसें तेज हो गईं। लेकिन लक्ष्मण ने अपनी तलवार को मजबूती से थामे हुए तुरंत

सामने खड़े पहरेदार के कवच पर वार किया और उसे भीड़ में धकेल दिया। लेकिन भीड़ को इसकी कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि वे मौज-मस्ती में मग्न थे।

लक्ष्मण को समझ नहीं आ रहा था कि इस तरह का गुस्सा कहां से आ रहा है, लेकिन उसने चिल्लाकर कहा: 'सुग्रीव!'

उसकी निगाहें सीधे उस व्यक्ति पर पड़ीं, जो शोर-शराबे में लक्ष्मण की आवाज़ नहीं सुन पा रहा था। वह कमरे के दूसरे कोने में अपने सिंहासन पर बैठा था और तारा उसकी गोद में थी। तारा उससे दूर हटने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह उसे ऐसा करने नहीं दे रहा था। उसने सफेद वस्त्र पहना हुआ था और सिर पर मुकुट था, साथ ही एक प्याला भी था जिससे वह शराब पी रहा था।

यह पागलपन है।

लक्ष्मण आगे बढ़ने लगे और उनका सामना रक्षकों से हुआ, जिन्होंने उन्हें रोकने का प्रयास किया। उनमें से एक ने उनसे कहा, 'महाराज, आपका यहाँ स्वागत नहीं है,' लेकिन लक्ष्मण ने रक्षक की बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया और तलवार की मूठ से वानर की नाक पर वार कर दिया, जिससे वह खून बहती नाक के साथ गिर पड़ा।

एक और व्यक्ति आगे आया, और लक्ष्मण ने उसके पेट में घूंसा मार दिया। भीड़ से बाहर निकलते समय वह लगातार गार्डों को धक्का देता रहा, और जितना अधिक वह गार्डों को चोट पहुँचाता, उतना ही अधिक लोग लक्ष्मण की ओर आकर्षित होते और उससे दूर हटने लगे।

जैसे ही लक्ष्मण आगे बढ़ा, उसने देखा कि सुग्रीव अभी भी तारा के साथ व्यस्त था।

इस आदमी को जरा भी शर्म नहीं है।

उसकी निगाहें बजरंग को ढूंढ रही थीं, लेकिन वह वहां नहीं था। शायद इसलिए क्योंकि सुग्रीव के विद्रोह में वही एकमात्र नेक इंसान था।

लक्ष्मण ने महल के मुख्य हॉल में रोशनी फैलाने के लिए कोने में रखी मोमबत्तियों की ओर रुख किया और उनके पास गए। उन्होंने जलती हुई मोमबत्तियों को उठाया और लटकते हुए पर्दों पर फेंक दिया, जिससे सुग्रीव के चिन्ह की आग भड़क उठी। जैसे ही आग बेतहाशा फैलने लगी, भीड़ में मौजूद लोग भयभीत होकर देखने लगे और महल से बाहर भागने लगे, एक-दूसरे पर गिरते हुए, चिल्लाते और चीखते हुए, लक्ष्मण के पीछे नारंगी चमक और भी गहरी होती चली गई।

यह देखकर सुग्रीव ने तुरंत तारा को खुद से दूर धकेल दिया। तारा अपनी जान बचाने के लिए भागी... आग से या उससे, सुग्रीव को ठीक से पता नहीं था।

जब सुग्रीव अपने सिंहासन कक्ष के धधकते हुए खाली हॉल को देखते हुए खड़े थे, तभी लक्ष्मण आगे आए, उनकी तलवार छीन ली और उन्हें उनकी सीट पर धकेल दिया।

'क्या... क्या... क्या कर रहे हो तुम, यार?' सुग्रीव चीख उठा, जब एक धारदार चाकू उसकी गर्दन के इतने करीब था।

लक्ष्मण ने उसे अपने फर में और गहराई तक दबा लिया। 'मुझे लगता है कि आप इस शहर को बसाने की कोशिश कर रहे थे। आपके... ऐसे...' उसने गिरे हुए शराब के प्यालों की ओर देखा, '... नेक उद्देश्यों में बाधा डालने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि कल से आप शहर की मरम्मत पर कम और हमसे किए गए अपने वादे पर अधिक ध्यान देंगे।'

सुग्रीव ने गले में अटकी हुई बात को किसी तरह निगल लिया और लक्ष्मण समझ गए कि वे क्रोधित हैं। 'महाराज, मैं जानता हूँ कि आप इस बात से अंदर ही अंदर बहुत क्रोधित हैं कि आपके जैसे उच्च कोटि के राजा के साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है। लेकिन सच कहूँ तो, मुझे इसकी परवाह नहीं है।'

सुग्रीव ने सिर हिलाया। 'तुम्हें मेरे पर्दे जलाने की ज़रूरत नहीं थी, यार।' उसने घबराकर बुदबुदाया।

लक्ष्मण ने जाते हुए उसे वापस सिंहासन पर धकेल दिया। शायद इस दुनिया में मीठे शब्दों का महत्व कम हो गया है।

शायद साधनों तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता हिंसा ही है।

38. सुपर्निका

कुछ साल पहले...

दूर से देखने पर वह आदमी अलग दिख रहा था।

सबसे पहले तो, वह यहाँ के अधिकांश लोगों से बड़ा था—चौड़ा और लंबा, दशानन से भी अधिक, जिसकी घनी चोटी एक पतली सी बाँस की डोरी से बंधी थी। उसकी

मोटी कमर पर एक तंग कुर्ता था, और उसकी मजबूत, स्याही से रंगी हुई भुजाओं पर अजीबोगरीब डिज़ाइन बने हुए थे। उसकी घनी, झाड़ीनुमा भौहें थीं और उसकी एक आँख पर पट्टी बंधी थी।

वह किनारे पर खड़ा था, मछुआरों को मछलियाँ इकट्ठा करने और उन्हें गाड़ी पर रखने में मदद कर रहा था। एक बॉस की तरह उन्हें निर्देश देते हुए, मीनाक्षी जानती थी कि वह यहाँ बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति है।

लेकिन उसे ऐसा करने की अनुमति किसने दी? यह लंका का बाहरी इलाका था, लेकिन आखिरकार यह उसके भाई के अधिकार क्षेत्र में ही था।

'क्या तुम उसे जानते हो?' मीनाक्षी ने अपने भतीजे मेघनाद से पूछा—जो बीस साल का लंबा और दुबला-पतला लड़का था। उसके बाल छोटे थे और उसने दाढ़ी नहीं बनाई थी।

'मुझे कोई जानकारी नहीं,' मेघनाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

वे अपने लिए अच्छी किस्म की मछलियाँ लाने के लिए शहर के बाहरी इलाकों में यात्रा कर रहे थे और वे जानते थे कि शहर में मिलने वाली मछलियाँ यहाँ मिलने वाली मछलियों जितनी अच्छी नहीं होंगी, जो बिना किसी मिलावट के सीधे समुद्र से निकाली गई थीं। उनके पास खाली समय था, इसलिए वे लगभग एक दर्जन सुरक्षाकर्मियों के साथ घूम रहे थे, जो उनकी सुरक्षा के लिए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।

मेघनाद ने कहा, 'मुझे अक्षय के लिए कुछ टोकन खरीदने हैं, कुछ पिरोई हुई सीपियाँ और मोतियों का हार, आंटी।'

'अक्षय के लिए मोतियों का हार?' उसने मुस्कुराते हुए अपने भतीजे के कान पकड़ लिए, जो तुरंत कराहने लगा। 'प्यारे, तुम मुझसे झूठ बोलना कब बंद करोगे?'

'ठीक है, ठीक है, क्षमा करें।'

उसने उसके कान से नज़रें हटाईं। 'ये नई लड़की कौन है?'

'उह,' मेघनाद ने घबराकर अपने बाल खुजलाए। 'खैर, वो तो बस एक दासी है, पर तुम्हें पता था... उसे पता था कि मैं तट पर आ रहा हूँ... तो... उसने मुझसे उसके लिए कुछ लाने को कहा। वो बस एक ऐसी लड़की है जिसे मैं... प्रभावित करने की कोशिश कर रहा हूँ।'

'अच्छा,' वह मुस्कुराई। 'हमेशा याद रखना कि तुम्हें उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना है, ठीक है? नहीं तो मैं खुद आकर तुम्हें थप्पड़ मार दूंगी।'

मेघनाद हँसा, लेकिन वह डरा हुआ लग रहा था। 'लेकिन पिताजी कहते हैं कि अगर आप किसी को पसंद करते हैं, तो वह आपको मिल जाता है। राजकुमार होने का यही फायदा है।'

'लेकिन सज्जन होने के कुछ नुकसान भी हैं। एक महिला की सहमति महत्वपूर्ण होती है और अगर उसे पसंद नहीं है, तो आप आगे नहीं बढ़ते। तुम्हारे पिता मूर्ख हैं। वह हमेशा से ही मूर्ख रहे हैं,' मीनाक्षी ने कहा।

'जी महोदया।' उसने सावधानीपूर्वक सिर हिलाया और कुछ मोती लेने के लिए दौड़ पड़ा।

मीनाक्षी मछुआरों के बाज़ार में चलने लगी, जहाँ उसके पैर गंदी रेत में धंस गए। मछलियों की गंध और समुद्री हवा उसकी नाक में भर गई, जबकि हवा गर्म और सुहावनी थी। उसने एक झोपड़ी में कटी हुई एक लाल मछली को देखा और पूछा, 'यह कितने की है?' वह ताज़ी और मांस से भरपूर लग रही थी।

'आप शायद ऐसा नहीं चाहेंगी, मेरी महिला,' कोने से एक कर्कश आवाज आई।

उसने ऊपर नहीं देखा, लेकिन अपनी आँखों के कोने से उसने देखा कि वह वही आदमी था जिसे उसने पहले देखा था। 'और ऐसा क्यों?'

'यह सैल्मन मछली है। इसमें पोषक तत्व कम होते हैं,' उस व्यक्ति ने कहा।

मीनाक्षी उससे नजरें नहीं मिलाना चाहती थी, क्योंकि उसे अपनी आंखें दिखाने और उसके द्वारा आंका जाने का डर था।

'आप चाहें तो एक कॉड मछली खाना चाहेंगी?' उसने बगल वाली झोपड़ी से मछली उठाई और उसे दिखाते हुए कहा।

'हम्म।'

मीनाक्षी ने कुछ नहीं कहा, बस उससे मछली ले ली और उसकी जांच करने लगी। 'मुझे एक पौंड चाहिए।'

'और भी कई अच्छी किस्में हैं। मैकेरल, पर्च, सार्डिन, रेनबो ट्राउट,' उन्होंने सफेद, गहरे और बहुरंगी मछलियाँ दिखाते हुए और उपलब्ध प्रत्येक किस्म के बारे में समझाते हुए कहना शुरू किया।

मीनाक्षी ने ज्यादा कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह यथासंभव उसकी निगाहों से बच रही थी और केवल उन्हीं निगाहों को देख रही थी जो उसे दूसरों की तुलना में अधिक दृढ़

और ताजा लग रही थीं। अंत में उसने कहा, 'आपके मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद। आप काफी ज्ञानी हैं।'

'खैर, यही मेरी आजीविका है, महोदया।'

'मछली बेच रहे हो?'

‘समुद्र के करीब काम करना। यही मेरा जुनून है। जहाँ से मैं आता हूँ, वहाँ हम आम तौर पर मछली नहीं खाते।’ उसने कहा, और उसे उसकी आवाज़ में भारीपन महसूस हुआ, जो उसे बहुत अच्छा लगा। उसे अच्छी आवाज़ वाले पुरुष बहुत पसंद थे।

'आप कहाँ से हैं?'

'अगर आप मुझे देखेंगी, तो मैं आपको बता दूंगा, मेरी प्रियतमा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, मैं बदसूरत नहीं हूं।'

मीनाक्षी ने अपने जबड़े कस लिए। 'मुझे जाना होगा, महोदय।' और फिर जैसे ही वह जाने लगी, उसके मन में एक विचार आया। मैं अपना चेहरा दिखाने से क्यों डरती हूँ? मुझे तो इस पर गर्व होना चाहिए। वह मुड़ी और सीधे उसकी ओर देखा - उसके कठोर चेहरे के भाव, सुनहरी आँखें, हल्की दाढ़ी और मलाई जैसी त्वचा, दाहिनी आँख पर एक काला धब्बा - वह व्यक्ति निःसंदेह मजबूत और आकर्षक था।

‘और मैं आपको यकीन दिलाता हूँ...’ उसने उसकी तिरछी आँखों की परवाह किए बिना कहा, ‘...आप खूबसूरत हैं। क्या आप राजकुमारी हैं? किस क्षेत्र की?’

'लंकापुरी,' मीनाक्षी मुस्कुराई।

‘लेडी मीनाक्षी,’ उसने ऐसे कहा जैसे वह उसे जानता हो। ‘कितनी प्यारी हो आप,’ उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे चूमा।

मीनाक्षी मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी। हे भगवान, मैं तो बिल्कुल बच्चे जैसी हरकतें कर रही हूँ। 'और तुम?'

तभी उसने यह बात सुनी।

बाजार में घोड़े घुस आए थे। घावों से लदे और युद्ध के कवच व ढाल लिए हुए पुरुष भाले और तलवारें मीनाक्षी की ओर ताने मछुआरों के बाजार में दाखिल हुए। मीनाक्षी को देखते ही वे तुरंत पीछे हट गए और मीनाक्षी जान गई कि वे कौन थे - उसके भाई के आदमी।

‘महामहिम! हमने शाही रथ देखा था, लेकिन हमें नहीं पता था कि आप यहाँ होंगी,’ गार्डों के मुखिया ने कहा।

'इस का अर्थ क्या है?'

‘हम इस शरणार्थी को अपने साथ ले जाने आए हैं,’ उसने उस व्यक्ति की ओर इशारा किया जिससे वह बात कर रही थी, जो चिंतित दिख रहा था। ‘हमें पता चला है कि वह अवैध रूप से तटों पर काम कर रहा है और वह यहाँ का निवासी नहीं है।’

‘कोई बात नहीं,’ मीनाक्षी ने दांत पीसते हुए उनके बीच आकर कहा। ‘मैं उसके लिए वर्क परमिट बनवाने की जिम्मेदारी ले लूंगी और वह अब तक इसका इस्तेमाल न करने के लिए जुर्माना भर सकता है।’

गार्ड ने सिर हिलाया। 'यह इतना आसान नहीं है, महोदया। वह... असल में... उम्म...' उसने घबराकर दूसरे गार्डों की ओर देखा, मानो उसे उनसे मदद की ज़रूरत हो।

‘मैं दानव हूं।’ उस व्यक्ति ने आगे आते हुए घोषणा की। ‘और मैं पाताल द्वीप से आया हूं।’

मीनाक्षी को यह सुनकर कंपकंपी सी दौड़ गई। वह आदमी दानव था... और वह दानवों की तरह लंबा-चौड़ा नहीं था। दरअसल, दानवों की लंबाई पंद्रह फीट होती है, जैसा कि लोग कहते थे, उसके मुकाबले वह छोटा था और वहाँ मौजूद बाकी लोगों जैसा ही था। लेकिन उसकी सुनहरी आँखें ही सब कुछ बता रही थीं और उन पुतलियों का रंग तो केवल पाताल लोक से ही आ सकता था।

मैं इतना अज्ञानी कैसे हो सकता था?

लेकिन वह एक बात और जानती थी। दानवों और असुरों का इल्लावर्ती में, लंका की तो बात ही छोड़िए, पर प्रतिबंध था, क्योंकि दशानन इन विदेशियों से घृणा करता था, जिन्होंने राक्षस साम्राज्य के सत्ता संभालने से पहले उनकी भूमि की पवित्रता और शुद्धता को नष्ट कर दिया था। राक्षस इल्लावर्ती की दक्षिणी भूमि में ही जन्मे थे और वे ही सच्चे नेता थे, न कि असुर और देव जैसे विदेशी।

गार्डों ने उस आदमी को जंजीरों और रस्सियों से बांध दिया और उसे उससे दूर घसीटने लगे, लेकिन वह शांत था और उसने अपना सिर घुमाकर मुस्कुराते हुए कहा, 'मेरा नाम विद्युत जिह्वा है।'

और उसने आँख मारी।

उसे पता नहीं क्यों, लेकिन उस पल उसके पेट में अजीब सी हलचल हुई।

39. मेघनाद

अक्षय के अंतिम संस्कार के कारण उनकी शादी स्थगित करनी पड़ी, और शोक की अवधि के दौरान कुछ समय के लिए किसी को भी वैवाहिक मामलों में शामिल होने की अनुमति नहीं थी।

तब से कुछ दिन बीत चुके थे और मेघनाद कुंभकरण की प्रयोगशाला की सीढ़ियों से नीचे उतरा, जो उसके गुंबदनुमा घर के ठीक नीचे स्थित थी।

जैसे ही वह नीचे उतरा, गंध बहुत तीव्र और घनी थी, मानो नाक में घुस रही हो, जिससे उसे घृणा और मतली महसूस हुई। उसने अपने कुर्ते के कोनों से अपना मुंह ढक लिया और एक विशाल कमरा देखा जिसमें मेजें, स्टूल और कुर्सियाँ थीं। इन कमरों में कांच की बड़ी-बड़ी नलियाँ, मिट्टी के बर्तन और कांच से बने हस्तनिर्मित जार रखे थे, जिनमें रखी सामग्री दिखाई दे रही थी। कमरे में बहुत सारे रसायन थे, जो उस गंध का कारण थे।

मैंने अपना बचपन यहीं बिताया है।

मेघनाद ने कुंभकरण को देखा, जो अपने मोटे और विशाल शरीर पर सफेद लबादा ओढ़े काम कर रहा था। वह बड़ी सावधानी से रसायनों का प्रयोग करके सोमा पत्थरों के गुणों को रूपांतरित कर रहा था, गंध से अप्रभावित, शायद इसलिए कि वह यहाँ काफी समय से रह रहा था। सोमालता पौधों को विकसित करने और उनके रस का उपयोग करने में वही एकमात्र सफल व्यक्ति था।

'क्या तुम मुझे अंतिम संस्कार में न आने के लिए ताना मारने आए हो?' कुंभकरण ने अपने काम से नज़रें उठाकर मेघनाद की ओर देखा, उसकी आँखें फटी हुई थीं और वह थका हुआ लग रहा था, मानो उसने नींद ही न ली हो।

'क्यों? क्या मेरे पिता ने तुम्हें काफी परेशान नहीं किया?'

'तुम्हारी माँ ने ऐसा किया था। वह मुझसे काफी निराश थीं। लेकिन तुम जानते हो कि मैं एक खास वजह से छह महीने का विश्राम लेता हूँ, हर चीज से दूर रहता हूँ और अक्षय के असामयिक निधन से मुझे कितना भी दुख हो, काम जारी रखना होगा, नहीं तो लंका की समृद्धि रुक जाएगी।' कुंभकरण ने अपना बचाव किया।

‘मैं समझता हूँ,’ मेघनाद ने धीरे से जवाब दिया, क्योंकि वह कुंभकरण को जानता था —एक व्यावहारिक, मेहनती और अनुशासित व्यक्ति। वह अपने भाई की उपलब्धियों में ज़्यादातर समय शामिल नहीं होता था क्योंकि वह नीचे अपनी बदबूदार प्रयोगशाला में काम में व्यस्त रहता था। ‘मुझे अंत्येष्टि की अवधारणा बिल्कुल समझ नहीं आती, इसलिए मैं समझता हूँ कि आप क्यों नहीं आना चाहते।’ वह रुका। ‘बताइए, क्या मेरे पिता हमेशा से ऐसे ही थे?’

अब उसने क्या किया?

‘वह किष्किंधा पर हमला करके सुग्रीव को पराजित करने की तैयारी कर रहा है, लेकिन अक्षय की मृत्यु के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि वह इलवर्ती पर अपना नियंत्रण खो रहा है।’ मेघनाद ने दांत पीसते हुए कहा।

‘तुम्हारे पिता जो कुछ भी करते हैं, बदले की भावना से नहीं करते, बेटा। तुम यह अच्छी तरह जानते हो। और सच कहूँ तो, अब तक तो यही उनके लिए कारगर साबित हुआ है।’ कुंभकरण अपना काम छोड़कर मेघनाद के पास गया और अपने भतीजे के कंधे पर हाथ फेरते हुए बोला, ‘मुझे पता है तुम उन्हें याद करते हो, बेटा। मैं भी उन्हें याद करता हूँ। लेकिन हमें आगे बढ़ना होगा।’

‘जब तुम्हारा बेटा तुम्हें और चाची को ऊपर छोड़कर पिशाचों की जिंदगी जीने चला गया, तो क्या तुम भी आगे बढ़ गए?’ मेघनाद ने बड़ी नरमी से पूछा। वह अपने चचेरे भाई निकुंभ के बारे में जानता था, जिसे पिशाचों के तौर-तरीके पसंद आने लगे थे – ये नरभक्षी जनजाति जंगलों में रहती थी और खानाबदोश जीवन जीती थी। निकुंभ बचपन से ही अजीब था, बचपन में बोलता नहीं था, और यह साफ था कि वह कुछ न कुछ गलत जरूर करेगा। लेकिन अपने परिवार को छोड़कर नरभक्षी जनजाति के पास जाना तो हद से ज्यादा खतरनाक लग रहा था।

‘हां, मैंने किया,’ कुंभकरण ने अपने जबड़े कसते हुए कहा। ‘यह उसका फैसला था और इसमें मेरा कोई दखल नहीं है।’ वह अपनी मेज पर लौट आया और बैठते ही काम में जुट गया।

‘तुमने कैसे किया? मेरा मतलब है, आगे कैसे बढ़े?’

कुंभकरण ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'यही तो जीवन है। ऐसा होता रहता है। जीवन नश्वर है। आविष्कार नहीं, और इसीलिए मुझे नवोन्मेषी होना पसंद है।'

'आप किस पर काम कर रहे हैं?'

कुंभकरण मुस्कुराया और अपने बगल वाली कुर्सी पर हाथ फेरा। मेघनाद उस पर बैठ गया और सामने रखी मेज की ओर देखने लगा। उस पर एक चिंतामणि पत्थर, एक सोम पत्थर और एक नीले रंग का क्रिस्टल रखा था।

‘एक मिनट रुको...’ मेघनाद ने अपनी आँखें चौड़ी करते हुए कहा, ‘...क्या यह नाग मणि नहीं है?’

'ओह हां, ऐसा ही है।'

‘तो तुमने इसे चुराया?’ मेघनाद ने हैरानी से पूछा।

'मैं तुम्हें बताना ही चाहता था, लेकिन जब तुमने मुझे बताया कि इसमें शक्ति है, तो मेरा दिमाग तेज़ी से सोचने लगा। जिस दिन तुम अपनी होने वाली पत्नी के साथ रोमांस कर रहे थे, मैंने खदानों से कुछ चुरा लिया था।'

‘और तुमने मुझे बताया भी नहीं?’

‘मैं अभी बता रहा हूँ, है ना?’ वह मुस्कुराया। ‘ये बस कुछ ही हैं। मुझे नहीं लगता कि हम अभी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं क्योंकि सिर्फ़ परीक्षण में ही मुझे काफ़ी समय लग गया है, लेकिन मैंने तीनों तत्वों को गर्म करके एक प्रेशर क्यूब में अच्छी तरह मिलाया है और उनकी ऊर्जा का उपयोग करके एक पदार्थ बनाया है।’ उसने एक छोटे घनाकार डिब्बे में रखे सफ़ेद रंग के तरल पदार्थ को दिखाया।

वह मेघनाद को कोने में ले गया, जहाँ भूसे और रुई से बनी एक कठपुतली थी। उसने डिब्बा मुट्ठी में पकड़ा और बोला, 'देखो ये क्या करता है,' और उसने पूरी ताकत से उस घन को कठपुतली की ओर फेंका। पल भर में, घन टूट गया और कठपुतली के चारों ओर एक गैस फैल गई, जिससे बिजली का एक तीव्र झटका लगा और कठपुतली जलकर राख हो गई।

मेघनाद ने इसे अपनी आँखों से देखा और उसकी आँखें नीली बिजली की तरह चमक उठीं। जब बिजली थम गई, तो कठपुतली की हालत ठीक नहीं थी।

कुंभकरण ने कहा, ‘यह किसी को मार सकता है। और यह डिब्बा चीनी का बना है, इसलिए इसे व्यक्ति पर ज़ोर से फेंकना होगा, नहीं तो जादू नहीं होगा। है ना कमाल की बात, बच्चे?’

मेघनाद ने बचकाने अंदाज़ में सिर हिलाया। जब भी वह उदास होता, वह इन जादुई वैज्ञानिक आविष्कारों को देखता और उसका दिल खुश हो जाता।

कुंभकरण ने कहा, 'मैं इसे नागपाशा कहता हूं, यह दुश्मन को सांप के डंक की तरह स्तब्ध और भयभीत कर देता है।'

मेघनाद ने कहा, 'मैं इसका इस्तेमाल अक्षय की हत्या करने वालों के खिलाफ करना चाहता हूं।'

'और आप ऐसा कर पाएंगे, लेकिन इसमें थोड़ा और समय लगेगा।'

मेघनाद मुस्कुराते हुए बोली, 'मैं मदद करना चाहती हूं।'

'जी हां, आप बैठ सकते हैं... बैठ जाइए...'

तभी उन्हें तहखाने के दरवाज़ों पर ज़ोरदार दस्तक सुनाई दी। दरवाज़े खुले और एक गार्ड अंदर आया। वह एक संदेशवाहक था, जो हाँफते हुए बोला, 'राजकुमार मेघनाद, लेडी प्रमीला ने मुझे बताया है कि आप यहाँ होंगे। आपके पिता ने आपको युद्ध कक्ष में आने का आदेश दिया है।'

मेघनाद ने कुंभकरण से घबराहट भरी नजरें मिलाईं और आगे आया। 'क्या हुआ?'

गार्ड ने कहा, 'उन्होंने लंकापुरी के बाहरी इलाके में अशोक वाटिका में विद्रोही वानर के दल को देखा है।'

लंका? एक वानर यहाँ क्या कर रहा था?

'यह कौन है? क्या हम किसी को जानते हैं?' कुंभकरण ने पूछा।

गार्ड ने हां में सिर हिलाया। 'उन्होंने उसकी पहचान सुग्रीव के खास आदमी के रूप में की है। वह हनुमान नाम से जाना जाता है।'

40. प्रमीला

उसे किसी भी तरह उससे मिलना ही था।

न केवल मेघनाद चाहता था कि सीता से बात हो, बल्कि इसलिए भी कि कुछ गड़बड़ थी—सीता माँ के दशानन की पुत्री होने की कहानी मेल नहीं खा रही थी। इसका एक कारण यह था कि भले ही उनके पिता ने उन्हें खेत के पास पाया था और वे अनाथ थीं, बाद में पता चला कि वे म्लेच्छ परिवार का हिस्सा थीं जो मिथिला के बाहरी इलाके में रहता था।

उसने यह सब नागलोक स्थित अपने शहर से, वहां के रईसों की अफवाहें सुनकर और उनकी गपशप में शामिल होकर सीखा था।

दरवाजा बंद था और दोनों गार्ड कमरे की सुरक्षा के लिए बाहर चले गए। प्रमीला उनके पास गई और जैसे ही गार्डों ने उसे देखा, वे सीधे खड़े हो गए।

उनमें से एक ने आदरपूर्वक झुककर कहा, 'लेडी प्रमीला।'

उसे खुशी थी कि अब लोग उसे जानने लगे थे। भले ही कोई औपचारिक समारोह नहीं हुआ था, प्रमीला परिवार की नई दुल्हन थी। और भले ही मेघनाद के साथ रहने का यह सिलसिला जारी था, लेकिन इसके कुछ नुकसान भी थे - उनमें से एक यह था कि इतनी अच्छी लड़की मेघनाद जैसे इंसान के प्यार में कैसे पड़ गई। वह निर्दयी, दुष्ट और ऐसा व्यक्ति था जो कथित तौर पर शहर की सम्मानित महिलाओं की तुलना में दरबारियों के साथ अधिक समय बिताता था।

और उसे यह सब सहना पड़ा, क्योंकि मेघनाद उसका साथी था। लोग उसके बारे में कुछ भी कहें, वह उसका अतीत था और उसे इसे स्वीकार करना ही था।

'जब से वह यहां आई है, क्या वह कभी अपने कमरे से बाहर निकली है?'

पहरेदार ने सिर हिलाया। 'उन्होंने नहीं खाया है, महाराज।' वह रुका, दूसरे राक्षस पहरेदार की ओर देखते हुए बोला, 'और न ही वह किसी को अंदर आने देती हैं। हम फर्श और दरवाजे के बीच की जगह से खाना अंदर डालते हैं। और वह हमें थाली लौटा देती हैं। पहले तो वह यह सोचकर नहीं खाती थीं कि खाना ज़हर मिला है, लेकिन मुझे लगता है कि भूख उन पर हावी हो गई।'

प्रमीला ने सिर हिलाया। 'जाओ।'

लेकिन मेरी महिला, हमें राजा दशानन का आदेश मिला है...

‘कुछ मिनटों के लिए चले जाओ। तुम दोनों ने उसे डरा दिया है।’ उसने उन्हें घूरकर देखा और वे सिर हिलाकर दूसरे गलियारे की ओर चले गए।

प्रमीला ने दरवाज़ा खटखटाया और दूसरी तरफ़ से कुछ सुनने के लिए कान लगाए, पर कोई आवाज़ नहीं आई। उसने दोबारा खटखटाया और धीरे से बोली, ‘सीता जी, मेरा नाम प्रमीला है, मैं नागलोक की राजकुमारी हूँ। मैं आपसे मिलना चाहती हूँ क्योंकि हम दोनों एक ही स्थिति में हैं। मैं...’ वह एक पल के लिए रुकी, लेकिन उसे कहना ही था, ‘... मेरा भी मेरे घर से अपहरण कर लिया गया था। मुझे रावण के पुत्र इंद्रजीत ने

यहाँ लाया है। मैं डरी हुई हूँ और मुझे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जिससे मैं बात कर सकूँ।'

सन्नाटा छा गया।

अभी भी? मुझे लगा था कि यह काम कर जाएगा।

फिर उसने वह आवाज़ सुनी। दरवाज़ा खुलने से पहले कदमों की आहट सुनाई दी और उसने एक सांवली रंगत वाली लड़की को देखा जिसने काजल लगाया हुआ था और होठों पर गहरे बैंगनी रंग की लिपस्टिक लगाई हुई थी। देखने से लग रहा था कि वह रो रही थी और बिल्कुल बिखरी हुई लग रही थी। उसने प्रमीला को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर उसे अंदर जाने का रास्ता दिया।

प्रमीला ने शांत भाव से अपनी चुन्नी को पकड़े हुए, अपना चेहरा आंशिक रूप से ढकते हुए ऐसा किया। उसने झुककर कहा, 'महामहिम, मैंने आपके पति, भगवान राघव और आपके पिता, राजा जनक के बारे में बहुत कुछ सुना है। आपके साथ जो कुछ भी हुआ, उसके लिए मैं क्षमा चाहती हूँ।'

सीता ने सिर हिलाया। 'और तुम्हें भी। तुम्हारी कहानी क्या है?' उसने प्रमीला को बिखरे हुए पलंग पर बिठाया, जबकि प्रमीला की निगाहें खिड़कियों की ओर घूम रही थीं, जिन पर जाली लगी थी, शायद इसलिए ताकि वह भाग न सके।

प्रमीला ने अपनी कहानी सुनाना शुरू किया और उसने अपनी कहानी में जितना हो सके झूठ का सहारा लिया। सीता ने शांति से सुना और यहाँ फँसी हुई, घुटन और घुटन से पीड़ित महिला होने के बावजूद, उसने बहुत धैर्य दिखाया। प्रमीला की कहानी समाप्त होने पर सीता ने कहा, 'मुझे आपके लिए बहुत दुख है, प्रमीला जी। लेकिन डरिए मत।' उसके होठों पर मुस्कान आ गई। 'मेरे पति रास्ते में हैं।'

लेकिन क्या दशानन किष्किंधा की ओर नहीं जा रहा था?

क्या चल रहा है?

आप काफी आत्मविश्वासी प्रतीत होते हैं।

'जी हां, मैं जानती हूं।' वह मुस्कुराई। 'मेरी मुलाकात एक वानर से हुई, जिसे उन्होंने भेजा था। वह अपनी सेना के साथ लंका में युद्ध करने जा रहे हैं।'

'वनार?' उसने अपने जबड़े भींच लिए। 'कैसे?'

"उन्होंने इसे यहाँ पहुँचाया। वे चुपके से अंदर आ गए थे। अफवाहें थीं कि मैं अशोक वाटिका में हूँ, और वे मेरे आस-पास ही छिपे हुए थे, लेकिन उन्हें पता चला कि मैं अभी

भी महल में हूँ। इसलिए वे यहाँ आए, मेरे पति की अंगूठी देने और मुझे यह बताने के लिए कि सब ठीक है।" उन्होंने बताया।

प्रमीला ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। उनकी पीठ पीछे, रात के अंधेरे में बहुत कुछ हो चुका था। 'कौन था वो?'

'बजरंग नाम का कोई व्यक्ति।'

'मैं समझ गई,' प्रमीला ने सिर हिलाया। 'क्या आप जानती हैं कि आप यहाँ क्यों हैं, सीता जी?'

उसने भौंहें चढ़ा लीं। 'बेशक, उस राक्षस से शादी करना। मैं उसे अंदर नहीं आने दूंगी।'

'आपको यह किसने बताया?'

'उसके द्वारा मेरा अपहरण किए जाने का और क्या कारण हो सकता है? मैं उसे नहीं जानती।'

प्रमीला ने अपने गले में पहनी हुई माणिक्य की अंगूठी को देखा। 'क्योंकि वह तुम्हें अपनी बेटी समझता है।'

वह हंस पड़ी। 'कितना बेतुका विचार है। मैं तो...की बेटी थी...' उसने अपने होंठ दबाए। 'मतलब, यह बेतुका है। उसे ऐसा क्यों लगता है?'

प्रमीला ने रूबी की ओर इशारा किया.

'यह?' वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'यह तो ...ने दिया था' और उसकी मुस्कान गायब हो गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया। 'यह मेरा नहीं है, लेडी प्रमीला।' और फिर प्रमीला को सच्चाई पता चली। 'यह लेडी मीनाक्षी ने दिया था।'

41. मेघनाद

वह यहाँ है।

और मैं अपना बदला जरूर लूंगा।

अशोक वाटिका एक विशाल वनस्पति उद्यान था जिसमें अशोक के पौधे थे - दुर्लभ लाल रंग की झाड़ियाँ जो महल को गर्माहट प्रदान करती थीं, बीच में एक विशाल फव्वारा था और यह लंकापुरी के बाहरी इलाके में स्थित था, लेकिन लंका के तटों से

काफी दूर था। यह इस जगह पर स्थित था जहाँ से इसे आसानी से पहचाना नहीं जा सकता था, क्योंकि इसकी घनी छतरियाँ आपस में गुंथी हुई थीं।

मेघनाद विमान में सवार था और अतिकाय के मार्ग से होकर गुजर रहा था। दशानन ने उसे अतिकाय के साथ जाकर अक्षय को लाने का आदेश दिया था। बजरंग, सुग्रीव का सेनापति, अक्षय की मृत्यु के कई कारणों में से एक था।

जैसे ही वे जंगलों के पास पहुँचे, उन्हें अपनी सेना दिखाई दी—राक्षसों के शाही अंगरक्षक अपने हथियारों और दहाड़ते दाँतों के साथ, पीतल के हेलमेट पहने, वानरों के लाल तम्बुओं की ओर बढ़ रहे थे। उनके बीच वानरों द्वारा भाले और बाण चलाते हुए पत्थरों की बाधाएँ खड़ी कर दी गई थीं। राक्षसों ने पत्थरों को हटाया और वानरों से युद्ध करने लगे।

विमान के पीछे खड़े मेघनाद ने थैले से नागपाश का घन निकाला और अतिकाय की ओर देखकर मुस्कुराया।

‘अक्षय के लिए,’ अतिकया ने उदास मुस्कान के साथ आँख मारी।

मेघनाद ने अपनी मूंछों के एक हिस्से को घुमाया। 'हमारे भाई के लिए,' और फिर उसे ज़मीन पर फेंक दिया।

जैसे ही वह जमीन पर गिरा, नीली ऊर्जा की एक विशाल, सर्पाकार धारा ने उस छोटे से क्षेत्र में मौजूद वानरों को वाष्पीकृत कर दिया और उन्हें स्तब्ध कर दिया।

विमान से तलवार लिए हुए मेघनाद युद्ध के मैदान में आया, उसके चारों ओर धूल उड़ रही थी, और उसने अपनी तेल लगी मूंछों के दूसरे हिस्से को घुमाया।

उसने गुर्राते हुए बंदर जैसे आदमियों को पेड़ की शाखाओं से कूदते और उछलते हुए देखा, और फिर उन्होंने उसकी ओर भाले फेंकना शुरू कर दिया।

मेघनाद एक छोर से दूसरे छोर तक लुढ़कते हुए, अपनी कमरबंद से जुड़े चक्रों का उपयोग करते हुए उसे वानरों पर घुमाने लगा। लोहे से बनी होने के कारण, यह वानरों की त्वचा को छूते हुए निकल गई, जिससे वे चौंक गए।

एक वानर ने पीछे से मेघनाद का गला पकड़ लिया, तो मेघनाद ने उसकी कोहनी पेट पर जोर से मारी और अपनी तलवार से वानर की छाती में वार कर दिया। उसके चेहरे पर खून की तेज़ धार बह निकली और उसे वानरों को निर्दयता से मारने का भरपूर संतोष मिला।

उसने दर्जनों की संख्या में उसकी ओर दौड़ रहे वानरों की ओर एक और घन फेंका, और जैसे ही वह घन टूटा, बिजली के एक और झटके से वे स्तब्ध रह गए।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए, उसने स्तब्ध पड़े सभी वानरों को तुरंत मार गिराना शुरू कर दिया। खून बहा, आंतें बाहर निकाली गईं और मेघनाद ने किसी पर दया नहीं दिखाई।

उसे यह अच्छा लगा। उसे हत्या करना अच्छा लगा।

और युद्धक्षेत्र के बीचोंबीच, उसने अक्षय को अपनी ओर हाथ हिलाते हुए देखा और वह एक पल के लिए रुक गया। उसकी आँखों में आँसू आ गए और वह तब तक मौन रहा जब तक अक्षय ने हाथ उठाकर अपनी उंगलियाँ उसकी ओर नहीं उठाईं।

और फिर उसे एहसास हुआ कि वह किसी ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा कर रहा था जो पीछे से आया और मेघनाद के सिर पर थप्पड़ मारा।

एक पल के लिए सब कुछ एकदम धुंधला सा हो गया था।

लेकिन उन्हें ठीक से जागने का मौका भी नहीं मिला था कि उन्हें पेट में एक और तेज दर्द का झटका लगा।

उसने आंखें खोलीं तो देखा कि सफेद फर वाला एक वानर अपने गदा से लगातार उस पर वार कर रहा है।

मेघनाद ने अपने पैरों का इस्तेमाल करके अगले हमले को रोका और वानर को पीछे धकेल दिया। वह खड़ा हुआ और वानर के विकृत जबड़े को देखकर अपनी आँखें मलने लगा। 'यह आप ही हैं, है ना? महान हनुमान।'

उन्होंने शांत भाव से कहा, 'यह जनरल बजरंग हैं।'

मेघनाद ने अपने चारों ओर दो सेनाओं के बीच टकराव देखा – धूल और सूखे पत्तों पर खून बह रहा था और हड्डियों के चटकने की आवाज़ आ रही थी। उसने दोनों तरफ से सैनिकों को हारते देखा और बजरंग और वह – वे दोनों ही इस लड़ाई के कगार पर थे।

‘तुम इस दुनिया में नश्वरता के नाम पर एक दयनीय और व्यर्थ वस्तु हो, बंदर,’ उसने कहा। ‘तुम गलत लोगों का साथ दे रहे हो, उन लोगों का जो बच्चों को नुकसान पहुंचाते हैं।’

बजरंग कुछ पल के लिए असमंजस में पड़ गया और उसने अपनी गदा आगे बढ़ाई। मेघनाद ने तुरंत प्रतिक्रिया करते हुए अपनी तलवार से गदा को रोक दिया।

‘तुम भी गलत पक्ष में हो। तुम महिलाओं का अपहरण करने वालों का साथ देते हो।’

मेघनाद आगे बढ़ा और उसने अपनी तलवार से फर पर वार किया, लेकिन बजरंग को भ्रमित करने के लिए तुरंत पीछे हट गया।

और फिर उसने अपना चक्रा बाहर निकाला और उसे वानर की गर्दन पर फेंक दिया, जिससे उसकी गर्दन पर खरोंच सी आ गई और खून बहने लगा।

वानर पीछे हटते हुए घुटनों के बल बैठ गया। ‘तुम...’ उसने खांसते हुए, अपनी खून बहती गर्दन को पकड़ते हुए कहा, ‘... तुम एक विनम्र और परेशान जादूगर हो, एक मायावी। तुम कमजोर हो। तुम योद्धा नहीं हो।’

‘इससे क्या फर्क पड़ता है?’ मेघनाद ने वानर का सिर पकड़ लिया। ‘मैं जीत गया।’

‘तुम्हारी यही इच्छा है,’ बजरंग तुरंत मेघनाद पर झपटा, मानो खून बहने से उसे कोई फर्क ही न पड़ रहा हो, और उसने मेघनाद से हाथापाई करते हुए उसके चेहरे पर मुक्कों से वार करना शुरू कर दिया।

मेघनाद ने कुछ हमलों को चकमा दिया और उन्हें रोकने के लिए उसने अपने हाथ आगे कर लिए, ताकि हमले से खुद को बचा सके, तभी उसने अपनी जेब से एक गेंद निकाली और तुरंत बजरंग के सिर पर दे मारी।

वानर की आंखें चौड़ी हो गईं, क्योंकि जेब से निकले धुएं के गुबार के कारण सब कुछ धुंधला हो गया था।

मेघनाद ने इस मौके का फायदा उठाते हुए बजरंग का ध्यान भटका दिया और उस पर हावी हो गया। उसने बजरंग के चेहरे पर बार-बार घूंसे मारे, जिससे बजरंग के चेहरे से खून बहने लगा और वह बेहोश हो गया।

‘तू कमीना... सीधा-सादा... छोटा...’ वह हर बार उसे और जोर से घूंसा मारता था। ‘तेरा भाई, तेरे साथी... मारे गए...’

मुक्का। मुक्का। मुक्का!

'मेरा भाई!'

धुआं छंट गया और फिर उसने एक आवाज सुनी: 'मेघनाद!'

पसीने से तरबतर मेघनाद ने पीछे मुड़कर अतिकया की ओर देखा, जो घायल तो था, लेकिन उसे ज्यादा चोट नहीं आई थी। उसकी आँखें फटी रह गईं और उसने कहा, 'सब खत्म हो गया। हमें उसे पिता के पास ले जाना होगा।'

मेघनाद ने बजरंग को जमीन पर धकेलते हुए अपने बालों में उंगलियां फिराईं और खड़ा हो गया। उसने अपने चारों ओर दोनों सेनाओं के शवों का ढेर देखा और पसीना पोंछा।

अधिकांश वानरों को राक्षस रक्षकों ने गिरफ्तार कर लिया और मेघनाद ने आदेश दिया: 'इनमें से प्रत्येक को मार डालो। इन्हें जला दो। मुझे परवाह नहीं कि तुम क्या करते हो, बस इन्हें तड़पाओ।' रक्षकों ने एकमत होकर सहमति में सिर हिलाया।

मेघनाद ने अतिकाय की ओर देखा। और अतिकाय ने मेघनाद की ओर देखा।

शायद मैंने हद से ज्यादा बोल दिया है।

42. सुपर्निका

कुछ साल पहले...

सुनवाई शुरू हो चुकी थी।

दरबार में कुलीन, राजनेता और वकील मौजूद थे और सबसे आगे दशानन बैठे थे—उनके लंबे, चौड़े और शांत भाई। कई कैदी उन्हें रावण समझकर उनसे डरते थे। दरबार में कई लोग उनकी उपस्थिति में कांपते और कमजोर पड़ जाते थे। लेकिन वे नहीं जानते थे कि उनका जीवन कैसा था। वे नहीं जानते थे कि राजा बनने से पहले, वे एक छोटे लड़के थे जिन्हें उनके पिता ने ठुकरा दिया था और अपनी माँ के हत्यारों—विदेशियों, असुरों—के प्रति उनके मन में असीम क्रोध था। वह व्यक्ति, जिसे कुछ ही लोग जानते थे, एक मछुआरे के रूप में काम करता था, फिर एक स्थानीय यक्ष सरदार का रक्षक बना और अंत में लंका आकर अपने दादा से मिलने पर उसने अपनी विरासत को पाया और उसे अपना लिया। एक ऐसा खूंखार व्यक्ति बनकर, वह अपने भाइयों—विभीषण, खरा और कुंभकरण—के समर्थन से आगे बढ़ते हुए विजय और विभाजन का सिलसिला शुरू कर दिया था।

लेकिन सबसे बढ़कर, वह एक धार्मिक व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने जीवन का आधा हिस्सा भगवान शिव को समर्पित कर दिया, भगवान के नाम पर मंदिरों का निर्माण किया और अपने शहर के प्रत्येक भाग में लिंग स्थापित किए।

मीनाक्षी सुमाली की उपलब्धियों की सीमाओं को तोड़कर उसे और अधिक मजबूत और सम्मानजनक स्तर तक विस्तारित करने के लिए उनका सम्मान करती थीं।

उसने विभीषण को देखा और वह भाई-बहनों में सबसे छोटा था—घुंघराले बालों और गोल-मटोल चेहरे वाला। वह योद्धा नहीं बल्कि वकील था, जो दशानन द्वारा कैद किए गए लोगों के लिए पैरवी करता था। वह दशानन के तरीकों से हमेशा नफरत करता था, शायद इसलिए कि उनसे निपटने के बारे में दशानन का विचार अलग था। दशानन मृत्युदंड का पक्षधर था, जबकि विभीषण नहीं था।

'महाराज, वह एक किसान है जिसने जमींदारी की दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई लड़ी,' विभीषण ने कहना शुरू किया। 'निश्चित रूप से, उसके तरीके न्यायसंगत नहीं हैं,' उसने उस गरीब, दाढ़ी वाले आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा, जो नग्न खड़ा था, उसकी कमर के चारों ओर एक पतली सी पट्टी बंधी थी और उसके हाथ जुड़े हुए थे, और वह घबराकर कांप रहा था।

'क्या यह न्यायसंगत है?' दशानन ने कहा और अन्य मंत्री, जो एक छोटे से गलियारे में रंग-बिरंगे वस्त्र पहने खड़े थे, खिलखिला उठे। 'उसने अपने ही मालिक, भाई की हत्या कर दी।'

विभीषण ने आह भरी। उसके गाल लाल हो गए थे। 'मैं जानता हूँ, महाराज, लेकिन वह आजीवन कारावास का हकदार है, न कि...'

'और अगर आपको मौका मिले तो आपके हिसाब से बलात्कारी को कारावास की सजा दी जाएगी, भाई। कृपया, जान तो जान होती है। अच्छा हो या बुरा, ये सब बस विचार हैं,' दशानन ने समझाया। 'और किसी की भी जान लेना, चाहे वह कितना भी बुरा आदमी क्यों न हो, गलत है। और क्योंकि उसने ऐसा किया है, इसलिए उसे फांसी दी जानी चाहिए, जो मौत की सजा का सबसे तेज और साथ ही सबसे हिंसक तरीका है।'

'लेकिन इस तरह से, महाराज, आप उसकी जान भी ले रहे हैं। क्या यह विरोधाभासी नहीं है?' विभीषण ने तर्क दिया।

दशानन मुस्कुराया। 'तुम एक अच्छे वकील हो और अच्छी तरह बचाव करते हो, लेकिन मैं यहाँ मुकदमे का सामना करने नहीं आया हूँ। मैं जल्लाद हूँ।' उसने अपने अंगरक्षकों को अपराधी को ले जाने का इशारा किया।

विभीषण ने मीनाक्षी की ओर देखते हुए अपना पसीना पोंछा और घबराकर मुस्कुरा दिया। मीनाक्षी जानती थी कि उसे देखकर विभीषण हैरान होगा, क्योंकि वह दरबार में

हमेशा नहीं रहती थी। शायद ही कभी आती थी, अगर कोई दिलचस्प मामला होता। लेकिन आज बात अलग थी। आज विद्युत यहाँ होगा। और दरबार में जमा हुए लोगों को देखकर मीनाक्षी समझ गई कि लोग इतने उत्साहित क्यों थे - वे एक दानव को देखने वाले थे। इलवर्ती में पाताल वंश लगभग विलुप्त हो चुका था और जो कुछ लोग उन्हें देखेंगे, वे श्रद्धा से घुटने टेक देंगे।

और यह विडंबना ही थी कि विद्युत उन्हीं के बीच रहता था और किसी को पता भी नहीं था।

'अगला कैदी विद्युत जिह्वा है,' विभीषण ने परिचित चेहरे को अंदर आते देख घोषणा की। उसकी पट्टी हटाई जा चुकी थी और उसकी आंख की जगह सिर पर एक बड़ा निशान दिखाई दे रहा था। वह सिर झुकाए चल रहा था और मीनाक्षी उसके चेहरे पर घाव और चोट के निशान देख सकती थी। संभवतः जेल के पहरेदारों ने उसे पीटा होगा। 'उसका अपराध - लंका के तटों पर अवैध रूप से व्यापार करना और अपनी पहचान, अपने असली स्वरूप को छिपाना।'

तभी मीनाक्षी ने दशानन को अपनी गद्देदार सीट पर असहज होकर हिलते-डुलते देखा। वह पीछे झुक गया और दानव को घूरने लगा। दशानन ने पूछा, 'क्या तुम दानव के हिसाब से छोटे नहीं हो?' यह सुनकर भीड़ में मौजूद सभी लोग हंस पड़े।

विद्युत ने ऊपर देखा। 'मेरे पिता दानव थे लेकिन मेरी माता मानव थीं।'

मीनाक्षी जानती थी कि संकर संतानें अलग तरह से पैदा हो सकती हैं और वह चाहती थी कि दशानन उसे माफ कर दे क्योंकि वह भी एक संकर था, एक पुजारी और एक राक्षस का पुत्र, जो कि सबसे असामान्य संयोजन था।

'और आपने गैरकानूनी तरीके से व्यापार क्यों किया?' दशानन ने पूछा।

'क्योंकि अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता, तो मैं यहां पहले नहीं आ पाता,' विद्युत ने शरारती अंदाज में जवाब दिया और वह दशानन के सामने गिड़गिड़ाने वाला एकमात्र व्यक्ति नहीं था।

'मज़ाकिया है,' दशानन ने भावहीन चेहरे से कहा। 'विद्युत, मुझे एक बात बताओ। उस जाति का हिस्सा होने पर कैसा लगता है जिसने इलवर्ती की पूरी सभ्यता को नष्ट कर दिया?' उसकी निगाहें दानव पर क्रोध और घातक थीं।

वह इसे व्यक्तिगत रूप से ले रहा है।

मीनाक्षी जानती थी कि दशानन इतना भावुक हो सकता है कि दूसरों को दुख पहुंचा सकता है। भले ही वह दूसरों से कहता कि वह इसके खिलाफ है, मीनाक्षी अपने भाई को अच्छी तरह जानती थी। वह एक द्वेषपूर्ण व्यक्ति था।

भाई, मां को गुज़रे कई साल हो गए। उसका गुस्सा उस पर मत निकालो। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है।

'मुझे नहीं पता। पाताल में मैंने जिस नस्ल को देखा, वे काफी शांत स्वभाव के हैं।'

'कोई फर्क नहीं पड़ता, मेरे दोस्त,' दशानन ने सिर हिलाया। 'तुम्हारे जैसे लोग हमें काफी समय से कोसते आ रहे हैं। हम तो बस भाड़े के सैनिक थे, असुर साम्राज्य के गुलाम थे। क्या तुम्हें नहीं पता कि हिरण्यकश्यप किस तरह राक्षसों को मोहरे की तरह इस्तेमाल करता था? उस खूनी विदेशी ने हम आदिवासियों को अपने लिए खून बहाने पर मजबूर किया। वह खुद को क्या समझता है?'

'मुझे नहीं पता। मैं वहां नहीं था, महाराज।' विद्युत ने उत्तर दिया।

उसके साथ बदतमीजी मत करो।

मीनाक्षी के दूसरे सबसे बड़े भाई खारा ने सरदारों के एकांतवास से विद्रोह करते हुए कहा, 'इसे मार डालो, मेरे राजा। यह यहाँ रहने के लायक नहीं है।'

मीनाक्षी चाहती थी कि वह विद्युत को चेतावनी दे सके, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। विभीषण अपने कागजात समेटकर अपना बचाव शुरू ही कर पाता कि दशानन खड़ा हो गया और बोला, 'अपने किए का फल भुगतना पड़ता है।'

'लेकिन महाराज!' विभीषण आगे आया। 'उसे निष्पक्ष सुनवाई का मौका नहीं दिया गया है।'

'भाई, इससे क्या फर्क पड़ता है? उस आदमी को ज़रा भी शर्म नहीं है। मैं उसका गुस्सा देख सकता हूँ। वह मुझसे नफ़रत करता है। और वह एक हफ्ते में मर जाएगा।' दशानन ने घोषणा की, जिस पर लोग तालियाँ बजाने लगे और कुछ तो हैरान भी रह गए, लेकिन मीनाक्षी ने बस अपनी मुट्ठी भींच ली। 'नियम सीधा है: इस भूमि पर कोई विदेशी नहीं। और वे असभ्य जानवर जो मेरे साम्राज्य में आने की हिम्मत करते हैं,' और उसकी नज़रें विद्युत से मिलीं, 'मरने का विकल्प चुनते हैं। तुम्हें सबसे कड़ी सज़ा मिलेगी और वह है सार्वजनिक रूप से जलाकर मार डालना।'

43. प्रमीला

वह उसे बताना चाहती थी।

लेकिन वह युद्ध में चला गया था। वह दशानन को बताना चाहती थी, लेकिन वह इतना व्यस्त था कि उसने किसी को भी अपने कक्ष में प्रवेश नहीं करने दिया।

वह किसी को बताना चाहती थी, लेकिन उसे पता नहीं था कि सीता सच कह रही है या नहीं। सीता ने उसे बताया कि उसे वह पत्थर उपहार में मिला था और यह सुनकर वह चौंक गई। अगर यह सच था, तो यह सब, जो कुछ भी हो रहा था... उसकी गलती थी।

और यह पूरी तरह से एक व्यक्ति की गलतफहमी पर आधारित था।

प्रमीला अपने कमरे में सोच-विचार कर रही थी, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और एक संदेशवाहक प्रकट हुआ। 'महामहिम, लॉर्ड मेघनाद कैदी के साथ आए हैं। वे दरबार में हैं।'

प्रमीला मुस्कुराई और सिर हिलाया।

एक घड़े से पानी लेकर चेहरा धोते हुए, उसने अपने विचारों को शांत किया और पलक झपकते ही कमरे से बाहर निकल गई। वह महल के पूर्वी गलियारे से गुज़री और बाहर चली गई, जहाँ फव्वारों और क्रिस्टल की मूर्तियों से सजा आंगन था। वह महल परिसर से बाहर निकली, उसके पीछे पहरेदार थे, तभी उसने सामने स्थित न्यायालय भवन देखा - एक गुंबदनुमा इमारत जो फिर से लोगों से भरी हुई थी, जो अंदर झाँकने की कोशिश कर रहे थे।

क्या हो रहा था?

उन्होंने बजरंग को पकड़ लिया था।

और यह एक बड़ी बात थी, क्योंकि वह शत्रु का सबसे महत्वपूर्ण सेनापति था। जब वह लोगों के बीच से गुज़री, तो पहरेदारों ने लोगों को हटाकर उसे अंदर जाने में मदद की। प्रमीला दरबार के पास पहुँची, जहाँ आम जनता, सरदार और बीच में बजरंग थे, जिनके हाथ बंधे हुए थे। वे घुटनों के बल बैठे थे। उनके बगल में मेघनाद खड़े थे, जो लंबे और दृढ़ थे। लोग उनके बारे में फुसफुसा रहे थे, कि वे इतने शक्तिशाली थे कि

उन्होंने वानर हनुमान को, जो सूर्य देव से युद्ध करने के लिए प्रसिद्ध थे, बचपन में ही हरा दिया था।

ऐसी अफवाहें थीं कि उसने सूरज को खा लिया था, लेकिन फिर भी, क्या वे सच हो सकती थीं? कोई नहीं जानता था।

प्रमीला आगे की ओर खड़ी थी जहाँ ज़्यादातर औरतें थीं। काले घने बालों वाली मंदोदरी भी वहीं थी, उसके बगल में मीनाक्षी खड़ी थी। और प्रमीला की नज़र आखिरकार मंदोदरी पर पड़ी, उसने उसे टकटकी लगाकर देखा। देखने से लग रहा था कि वह बहुत ही शांत और निराश महिला है।

वह एक चतुर जोड़-तोड़ करने वाली महिला जैसी नहीं दिखती थी।

उसने ऐसा क्यों किया?

प्रमीला ने दशानन को सिंहासन पर बैठे देखा, और दशानन ने कहना शुरू किया, 'मेरे पुत्र, तुमने राज्य के शत्रु, हमारे साम्राज्य के शत्रु, सेनापति बजरंग को घुटनों पर ला दिया है। और इसके लिए तुम्हें सार्वजनिक रूप से सराहना मिलनी चाहिए।'

और देखते ही देखते सब लोग ताली बजाने लगे। प्रमीला के दिल में आशा और खुशी की एक किरण जगी, जब उसने मेघनाद की ओर मुस्कुराते हुए देखा, जिसने भीड़ में उसे ढूंढा और उसकी नजरें मिलते ही आँख मारी।

‘बंदर,’ दशानन ने अपनी निगाह उस वानर पर गड़ा दी, जिसके घावों का इलाज करके उसे जीवित रखने के लिए पट्टियाँ बाँधी गई थीं। उसकी पूंछ तो थी, लेकिन अधिकांश वानरों के विपरीत, उसके सफेद फर पर लकड़ी की एक अजीब परत चढ़ी हुई थी, और उसकी पूंछ ऐसे चमक रही थी मानो उसे किसी मजबूत चीज में डुबोया गया हो। ‘तुम्हारा राजा कहाँ है?’

‘क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?’ बजरंग ने थके-हारे स्वर में मीनाक्षी की ओर देखते हुए पूछा।

प्रमीला की निगाहें मीनाक्षी पर टिक गईं, जो अपनी जगह से उठकर कमरे के दूसरी तरफ जाने लगी।

वह क्यों जा रही है?

मेघनाद ने प्रमीला को जैसा बताया था, उसी तरह विभीषण अपने नोट्स लेकर वहाँ आया और कहने लगा, 'हे स्वामी, इस बंदर को यहाँ दंडित करना उचित नहीं है। हमें

इसे यातना देने की आवश्यकता नहीं है। हमें उन लोगों को ढूंढना होगा जिन्होंने इसे यहाँ भेजा है।'

मेघनाद हँस पड़ा। 'चाचा जी, ऐसा करना बुद्धिमानी नहीं होगी। यह बंदर हर तरह की मौत और सजा का हकदार है।'

'क्यों? क्योंकि उसने हमारी ज़मीन पर अतिक्रमण किया?' विभीषण ने विरोध किया। 'हमने पहले अतिक्रमण करने वालों को छोड़ दिया है, तो उसे क्यों? वह खास क्यों है?'

दशानन ने अपनी भौंहें चढ़ाकर फिर पूछा, 'बजरंग, मुझे अपने स्वामी के बारे में बताओ।'

'मेरे स्वामी सुग्रीव राजा हैं और उन्होंने ही मुझे यहाँ भेजा है।' बजरंग रस्सियों से बंधे होने के बावजूद खड़ा रहा, पर ज़रा भी नहीं हिचका। 'उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें बता दूँ कि किसी की पत्नी को चुराना बहुत बड़ी कीमत चुकाने जैसा है।'

मैंने उसे चुराया नहीं। मेरे पास एक वैध कारण था।

'अच्छा,' उसने कहना शुरू किया। 'यही कारण तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा।'

'तुम मुझे मार नहीं सकते। मैं इलवर्ती का शासक हूँ।' दशानन ने अपनी नाक फुलाते हुए कहा, 'कोई भी नश्वर प्राणी मुझे नुकसान नहीं पहुँचा सकता।'

नाम लेते हुए उन्होंने थोड़ा झुककर प्रणाम किया, 'भगवान राघव कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं। वे विष्णु के अवतार हैं और उन्होंने सीता का अपहरण करने के लिए तुम्हारी मृत्यु की शपथ ली है।'

प्रमीला ने मीनाक्षी को उस कोने की ओर जाते देखा जहाँ मोमबत्तियाँ महल को रोशन कर रही थीं। दरबार की कार्यवाही देखने के बजाय, प्रमीला मीनाक्षी की ओर चल पड़ी जब उसने यह देखा...

मीनाक्षी ने झटपट मोमबत्तियों को ज़मीन पर धकेल दिया, जिससे पर्दों में आग लग गई और वह तेज़ी से फैलने लगी। और उसने प्रमीला को देखा तक नहीं, क्योंकि वह तुरंत वहां से भाग गई।

आग जंगल की आग की तरह फैल गई और राक्षस समुदाय के नागरिकों, यहाँ तक कि बच्चों को भी अपनी चपेट में ले लिया। प्रमीला तुरंत बच्चों को बचाने के लिए दौड़ी और बेकाबू होती आग से बच्चों को दूर धकेलने लगी। दरबार में लोग एक-दूसरे का पीछा कर रहे थे, एक-दूसरे को कुचल रहे थे, जबकि प्रमीला हर संभव कोशिश कर रही थी कि वह ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों की जान बचा सके।

उसने अपना सिर मुख्य कमरे की ओर घुमाया, जहाँ बजरंग ने मेघनाद को लात मारी थी और अपनी पूंछ से उसे आग के पास ले जाकर, कूद-कूद कर आंगन के दूसरे छोरों को अपनी जलती हुई पूंछ से रोशन करने लगा था।

वह यह सब कैसे कर रहा था? ज़ाहिर है, उसकी पूंछ तेल में डूबी हुई थी और उसके ऊनी कपड़े अग्निरोधी थे।

प्रमीला ने सिर हिलाया। यह सब पहले से तय था।

प्रमीला तुरंत भागने लगी। लेकिन दूर जाने के बजाय, वह कमरे के केंद्र की ओर बढ़ती जा रही थी, तभी छत गिरने लगी और चारों ओर बिखर गई, जिससे कुछ सरदार दब गए। दशानन अपने अंगरक्षकों के साथ भाग निकला, और मंदोदरी और अतिकाय भी बच निकलीं।

और उसे बजरंग भी दिखाई नहीं दिया। आग की लपटों से जगमगाती पूंछ के साथ वह गायब हो गया था। ज़मीन पर बचे कुछ ही लोगों के बीच उसने परिचारकों की जान बचाने की कोशिश की। कुछ महिलाओं के शरीर का निचला हिस्सा कुचल गया था, लेकिन उसने मलबे को हटाते हुए उन्हें उठाने की कोशिश की। धुआँ घना होता जा रहा था और उसे लगातार खांसी आ रही थी।

मेघनाद?

प्रमीला की निगाहें उसे ढूंढ रही थीं, तभी उसकी नज़र उस पर पड़ी—वह छत के लकड़ी के लट्ठे के नीचे ज़मीन पर पड़ा था। उसने अंदर आए पहरेदारों को नागरिकों की मदद करने का आदेश दिया और खुद मेघनाद की ओर चल पड़ी।

वह लकड़ी के लट्ठे के पास गई और उसे उठाया, इस प्रक्रिया में उसकी उंगलियां जल गईं, लेकिन दृढ़ निश्चय और लगन से उसने उसे एक तरफ धकेल दिया। मेघनाद की छाती जल गई थी और वह सांस नहीं ले रहा था। वह बेहोश था। खांसते हुए उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे घसीटना शुरू कर दिया।

आओ आओ!

पीछे से आती नारंगी आग की लपटों के कारण उसकी सांसें फूलने लगीं और उसके घुटने कमजोर पड़ गए। वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ी।

यह बात है।

वह धुंधली होती जा रही थी।

सब खत्म हो गया।

‘प्रमीला!’ उसने एक आवाज सुनी और झट से उठ बैठी।

उसने फोन करने वाले व्यक्ति की ओर देखा और वह कोई और नहीं बल्कि कुंभकरण था।

वह यहाँ क्यों था? क्या वह उस धार्मिक सभा में नहीं था?

कुंभकरण अपने कुर्ते में था, उसने प्रमीला को कंधे पर उठा लिया और मेघनाद को भी अपने कंधे पर उठा लिया क्योंकि वह दो मनुष्यों का भार उठाने में सक्षम था। प्रमीला को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसे कोई उठाकर ले जा रहा हो, जब वह उस शापित मंडल से बाहर निकली, जो अब अराजकता और आग की चपेट में था। उसे मेघनाद के बगल में ज़मीन पर उतार दिया गया।

जब उसने आसपास के लोगों को खांसते देखा तो उसे अपने सीने में ताजी हवा का झोंका महसूस हुआ। लेकिन कुंभकरण पर इसका कोई असर नहीं हुआ। आखिरकार, उसने अपना असली रूप दिखा दिया।

वह मेघनाद की छाती पर थप्पड़ मारने लगा और उसमें हवा भरने लगा।

प्रमीला चिंता से मेघनाद को देखती रही, इस उम्मीद में कि वह होश में आ जाएगा।

'वह मौत के करीब है,' कुंभकरण ने गले में अटकी हुई बात को निगलते हुए कहा।

'चलो उसे अस्पताल ले चलते हैं,' प्रमीला ने लगभग चीखते हुए घबराकर जवाब दिया।

‘नहीं,’ उसने सिर हिलाते हुए कहा, ‘वे उसकी मदद नहीं कर सकते। आधुनिक चिकित्सा उसकी बीमारी का इलाज नहीं कर सकती।’

प्रमीला ने अपनी नाक फुला ली। 'तो फिर हमें क्या करना चाहिए?'

कुम्भकरण कुछ देर सोचता रहा, फिर चारों ओर मची चीख-पुकार के बीच उसे अचानक याद आया, 'मुझे सही जगह पता है। लेकिन मुझे नहीं पता कि वे उसे देखकर खुश होंगे या नहीं। उनके पास एक ऐसा पेय है जिससे मेघनाद को एड्रेनालाईन का अच्छा-खासा उछाल मिलेगा और वह एकदम तरोताजा हो जाएगा, लेकिन हमारे पास उसे बचाने के लिए बस कुछ ही मिनट बचे हैं, तो चलिए चलते हैं।'

‘यह कौन सी जगह है और यह कौन सा पेय है?’

कुंभकरण ने हताश मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'निकुम्बिला पहाड़ियाँ। इसे काली का रक्त कहा जाता है। लेकिन पिछली बार जब मेघनाद वहाँ गया था, तो उसे निकाल दिया गया था। इसलिए उम्मीद करते हैं कि वे हमारी मदद करेंगे।'

44. सुपर्निका

कुछ साल पहले...

मुझे पकड़े नहीं जाना चाहिए।

यह चौथी बार था जब वह जेल में दाखिल हुई थी।

अपने काले लबादे में लिपटी मीनाक्षी शांत भाव से कोठरियों के बीच से गुज़रते हुए अंतिम कोठरी की ओर बढ़ीं—वह कोठरी उसी व्यक्ति की थी, जिसकी तीन दिन बाद मृत्यु होने वाली थी। विद्युत जिह्वा ने अपने हाथ पीछे बांध रखे थे और कदमों की आहट सुनकर वे पीछे मुड़ गए।

मीनाक्षी ने विद्युत को देखकर मुस्कुराया और रेलिंग के पार से उन्होंने एक-दूसरे का हाथ थाम लिया। उसे विद्युत से अलग होने का मन नहीं कर रहा था। उसे जाने के कुछ ही दिन हुए थे, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे एक पूरी जिंदगी बीत गई हो।

विद्युत एक शांत, संयमित और दयालु व्यक्ति थे। चाहे दानव हो, असुर हो या क्रूर मानव, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे एक अच्छे इंसान थे जो मरने वाले थे। और वे इस मृत्यु के बिल्कुल भी हकदार नहीं थे।

उसने उसे उसकी कमियों के साथ स्वीकार किया, और उसने उसे उसकी कमियों के साथ। दोनों किसी न किसी रूप में जख्मी थे। उसके माता-पिता पाताल लोक में फैले एक वायरस से मर गए थे, और इसीलिए अधिकांश असुर और दानव शरण लेने के लिए इल्लावर्ती आ रहे थे। उसे समुद्र और मछलियाँ बहुत प्यारी थीं, जबकि उसे किताबें और लेखन पसंद था।

वह उसे रात के लिए कविताएँ देती और वह उन्हें पढ़ता। वह टूटे-फूटे शब्दों में जवाब देता और वह हँसती। वह पढ़ा-लिखा तो नहीं था, लेकिन हृदय से शुद्ध और नेक था।

मीनाक्षी ने पहरेदारों को पैसे देकर उन्हें भगा दिया था, ताकि वह जेल के बाहर, उस आदमी का हाथ थामे वहीं रुक सके जिसे वह कई सालों बाद पसंद करने लगी थी।
'क्या तुमने कुछ योजना बनाई है?'

विद्युत ने सिर हिलाया। 'आपने मुझसे उन लोगों के नाम पता करने को कहा था जो मेरी मदद कर सकते हैं, लेकिन मुझे किसी का नाम याद नहीं आ रहा। मैं यहां अकेला आया था और शायद अकेला ही जाऊंगा।'

'बकवास मत करो। मैं तुम्हारी सुरक्षा का पूरा ख्याल रखूंगी,' मीनाक्षी ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। पिछले कुछ दिनों में वह सचमुच निराशावादी हो गया था।

'क्योंकि मुझे अंत दिखाई दे रहा है,' उसने शांत भाव से कहा।

'मुझे अंत दिख रहा है। और मुझे दिख रहा है कि तुम सुरक्षित रहोगी।' मीनाक्षी ने अपने जबड़े भींच लिए।

'किसके साथ?' विद्युत ने पूछा। 'अगर मैं भाग निकला, तो मैं अकेला रहूँगा। कम से कम, मेरे अंतिम दिनों में, आप मुझे सांत्वना देने के लिए यहाँ हैं।'

'तुम मुझे सिर्फ चार दिनों से जानती हो, मेरी प्यारी।'

'चार दिनों में तुमने मुझे जीवन भर की खुशी दे दी। तुम्हारे जैसी स्त्री मैंने कभी नहीं देखी,' विद्युत मुस्कुराया। 'कृपया मेरी जल्दबाजी के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन मैं अकेले मरना नहीं चाहता। क्या तुम मुझसे विवाह करोगी, राजकुमारी?'

मीनाक्षी खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'मजाक मत करो।'

उसने उसकी हथेलियों को और कसकर पकड़ लिया। 'मैं झूठ नहीं बोलता। मैं सच कह रहा हूँ। अगर मैं भाग नहीं पाया, तो फिर...'

मीनाक्षी ने अपनी उंगली होठों पर रखी। 'तुम कर लोगे। मेरे पास एक तरीका है, असल में, यही एकमात्र तरीका है,' उसने आह भरी।

और अगर हम बाहर निकल गए, तो क्या तुम मेरे साथ आओगे?

मीनाक्षी सोचने लगी। 'मुझे नहीं पता... मेरा मतलब है...'

'तो मैं नहीं जाना चाहता,' उसने खुद की ओर इशारा करते हुए कहा। 'अगर तुम मेरे साथ रहने का वादा नहीं करतीं, तो मुझे नहीं लगता कि इस दुनिया में मेरी कोई जगह होगी।'

'ठीक है, ठीक है, महोदय,' वह मुस्कुराई। 'मैं आऊंगी।'

उसने मीनाक्षी की हथेली को अपने होठों के पास लाकर चूमा। मीनाक्षी ने उसे चाबी दिखाई। 'यह मुझे आज मिली। मैंने जेलर को सीधे रिश्वत देकर इसे हासिल किया।'

मीनाक्षी के दरवाजा खोलते ही उसकी आंखें आश्चर्य और खुशी से चमक उठीं। और जैसे ही उसने दरवाजा खोला, उसने उसे जोर से और कसकर चूमा, मानो यह लंबे

समय बाद उसका आखिरी और पहला काम हो। कुछ देर तक वे एक-दूसरे की बाहों में लिपटे रहे, फिर विद्युत ने अपना सिर पीछे झुकाया और कहा, 'क्या अब हम भाग नहीं सकते?'

'जेलर बेवकूफ नहीं है। उसने बाहर कई आदमी तैनात कर रखे हैं। उसने मुझे सिर्फ इसलिए इजाज़त दी है ताकि मैं आपके साथ जेल परिसर में रह सकूँ।' सुरक्षा कड़ी होने के कारण मीनाक्षी ने सिर हिलाया। उसे वह दिन ढूंढना था जब सुरक्षा कड़ी न हो।

तो फिर योजना क्या है? आपने कहा था कि एक ही रास्ता है?

मीनाक्षी का चेहरा उतर गया। और उसे नहीं पता था कि यह तरीका काम करेगा या नहीं। 'उसे मदद करने के लिए राजी होना ही होगा। लेकिन अगर वह नहीं मानता, तो मुझे नहीं पता कि हम और क्या कर सकते हैं।'

'यह "वह" कौन है?'

'जिस व्यक्ति ने तुम्हें बंदी बनाया था, उसी का पुत्र। लंका का राजकुमार।' उसने ऊपर देखा और उसकी सुनहरी, चमकती आँखों में गहराई से निहारते हुए बोली, 'मेघनाद।'

विद्युत ने एक पल सोचा, फिर उसे दोबारा चूमा, उसके होंठों पर, यहाँ तक कि उन्हें हल्का सा काट भी लिया। उसे वह एहसास बहुत अच्छा लगा, उसके होंठों पर जो सनसनी रह गई थी, वह उसे बहुत पसंद आई। उसने उसे दीवार से सटा दिया और अपने होंठ उसकी गर्दन के पास रख दिए। 'तो आज रात, मेरी प्रियतमा,' उसने रोमांटिक अंदाज़ में उसकी ओर देखा, उसकी उंगलियाँ उसके बालों को सहला रही थीं। 'मैं तुम्हारा होऊंगा और तुम मेरी।'

45. प्रमीला

वे पहुँच चुके थे।

वे पहाड़ियों के भीतर थे जहाँ देवी काली का मंदिर स्थित था, और जब मेघनाद को घोड़े की गाड़ी में ले जाया जा रहा था, तब प्रमीला ने कुंभकरण से पूछा, 'आप किसी भी कारण से अपना आश्रम कभी नहीं छोड़ते?'

उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा, 'मैं नहीं जानता।'

'तो फिर तुमने ऐसा क्यों किया?'

कुंभकरण ने अपने जबड़े भींच लिए। "मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि आग लगी है और मैंने जाने का सोचा, लेकिन फिर मैं रुक गया जब तक कि गार्डों ने उसे यह नहीं बताया कि मेघनाद को छोड़कर सभी लोग बाहर आ गए हैं। मुझे जाकर उसकी मदद करनी पड़ी, यह देखने के लिए कि वह अंदर है या नहीं।"

'तुमने उसके लिए अपना आश्रम छोड़ दिया?' वह स्तब्ध रह गई। कुंभकरण एक अनुशासित व्यक्ति प्रतीत होता था, और उसे यह बात स्वीकार करने में कठिनाई हो रही थी।

कुंभकरण ने आह भरते हुए कहा, 'वह मेरा इकलौता बच्चा है। मेरा बेटा बहुत पहले मुझे और मेरी पत्नी को छोड़कर चला गया था। सच कहूँ तो, हमारी कोई संतान नहीं थी। लेकिन फिर एक दिन एक मासूम सा बच्चा मेरे तहखाने में आया और बोला, मैं आपसे सीखना चाहता हूँ। सोचिए, वह दस साल का भी नहीं था। और उसकी आँखें इतनी चमकीली थीं कि मैं उसे मना नहीं कर सका। और हर दिन मैं उसे सिखाता था और जैसे-जैसे साल बीतते गए, वह मेरा बेटा बन गया। मेरा इकलौता बेटा।'

प्रमीला ने उदास मुस्कान के साथ मेघनाद की ओर रुख किया, जो सीने पर लाल जलने के निशान के साथ बेहोश पड़ा था। 'वह बच जाएगा।'

उन्होंने कहा, 'अगर उसे वो सीरम मिल जाए तो वो ज़रूर करेगा। और इसके लिए आपको सचमुच गिड़गिड़ाना पड़ेगा।'

जब वे द्वार के पास पहुँचे तो प्रमीला गाड़ी से उतर गई और उस दरवाजे की ओर बढ़ी जहाँ सफेद वर्दी पहने पहरेदार खड़े थे। उन्होंने उसे नहीं रोका क्योंकि उसके पास कोई हथियार नहीं थे।

वह विशाल प्रतिमा को देखने के लिए अंदर आई और बोली, 'मैं गुरु प्रचेता से मिलना चाहती हूँ।' उसने इधर-उधर घूम रहे पुजारियों की ओर देखा, जिन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन उनमें से एक पुजारी कमरे के अंदर भागा और एक बूढ़े, झुर्रियों वाले आदमी को ले आया जिसके सिर पर हुड था।

'जी?' उस आदमी ने कहा।

'हे भगवान... हे भगवान...' वह कांप रही थी।

'शांत हो जाओ, प्रिये। क्या हुआ?'

प्रमीला ने कहा, 'मेरे पति घायल हैं और उनकी हालत गंभीर है। मुझे आपसे उन्हें काली का रक्त नामक सीरम देने की आवश्यकता है।'

वह तुरंत चौंक गया। 'तुम्हें इसके बारे में कैसे पता चला?'

क्योंकि मेरे पति इंद्रजीत हैं, जो लंका के राजकुमार मेघनाद हैं।

प्रचेता का चेहरा पीला पड़ गया। 'बेशक, अब वह काफिर हमसे मदद मांग रहा है, लेकिन जब हमने उसकी मदद करने की पेशकश की तो उसने हमें ठुकरा दिया।'

उसने हाथ जोड़कर कहा, 'गुरुजी, मैं आपसे विनती करती हूँ। उनकी हालत बहुत गंभीर है और हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है। कृपया मेरी मदद कीजिए।'

प्रचेता ने निराशा और दया भरी निगाहों से उसकी ओर देखा और सिर हिलाते हुए कहा, "उसे यह नहीं मिल सकता।"

उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे, और वह चीखते हुए बोली, 'क्यों?' और सभी पुजारी उस व्याकुल महिला को देखने लगे, जो अचानक कहीं से आ गई थी।

प्रचेता ने उसे कंधों से पकड़कर शांत करने की कोशिश की। 'मेरी प्रिय, क्योंकि वह देवी काली को यज्ञ अर्पित करने में असमर्थ है। हम यह सीरम केवल उसी को दे सकते हैं जो हमारी देवी की पूजा करता है।'

प्रमीला ने सिर हिलाया। 'तो मैं ही करूंगी।'

'क्या?'

'मैं उसकी ओर से उससे प्रार्थना करूंगी। अगर वह असमर्थ है, तो मैं उसकी ओर से प्रार्थना करूंगी,' उसने दृढ़ता से कहा।

लेकिन तुम्हें सीरम की जरूरत नहीं है, मेरी प्यारी।

'वह मेरे पति हैं,' उसने कहा। 'हम एक हैं, है ना? उनका दर्द मुझे सहना है। मेरी कमजोरी, उनकी कमजोरी। मेरी ताकत... उनकी ताकत है। मैं आपसे विनती करती हूँ, मुझे यज्ञ करने दीजिए और वह मुक्त हो जाएँगे और मैं आपसे वादा करती हूँ, जब वह जागेंगे, तो वह स्वयं देवी काली से प्रार्थना करेंगे, लेकिन उन्हें हमारी मदद की तुरंत ज़रूरत है।'

प्रचेता ने पीछे मुड़कर देखा तो प्रमीला ने अपना सिर घुमाकर देखा कि कुंभकरण मेघनाद के बेहोश शरीर को बाहर ले जाकर जमीन पर लिटा चुका था। फिर प्रचेता ने उसकी ओर देखा, जो रो रही थी। 'ठीक है। आप जो चाहें कर सकती हैं।'

प्रमीला ने पुजारी के पैर छुए और तुरंत मूर्ति के पास जाकर उसके चरणों में गिर पड़ी और प्रार्थना करने लगी। मूर्ति के सामने अंगारों की छोटी सी आग जल रही थी। मेघनाद, उनके भविष्य की सुरक्षा और उसकी रक्षा के लिए प्रार्थना करने के बाद, वह खड़ी हुई और अपने सारे हार और अंगूठियां उतारकर आग में फेंक दीं। आग चटकने लगी और अंगारे फूटने लगे। उसे सोने की ज़रा भी परवाह नहीं थी।

'यहाँ,' पीछे से एक आवाज़ आई।

प्रमीला ने मुड़कर देखा तो प्राचेता के हाथ में एक ट्यूब लगी हुई थी, जो लाल रंग की थी और लगभग खून जैसी दिख रही थी। उसने पुजारी को गले लगाया, जो बदले में बस मुस्कुराया, और फिर वह कुंभकरण को देखते हुए जल्दी से बाहर भागी। 'अब वह कैसा है?'

कुंभकरण ने जवाब दिया, 'वह सांस ले रहा है। लेकिन उसकी सांसें अभी भी धीमी हैं।'

प्रमीला मेघनाद के पास घुटनों के बल बैठ गई और उसका सिर ऊपर उठाया। ट्यूब से तरल पदार्थ लेकर उसने धीरे-धीरे उसके मुंह में डालना शुरू किया। वह निगल नहीं रहा था, इसलिए उसने तरल पदार्थ को अंदर जाने देने के लिए उसका सिर पीछे की ओर झुका दिया। उसने उसे और पिलाया और धीरे-धीरे उसके होंठ चटकने और हिलने लगे।

वह जीवित है।

और पल भर में ही उसे रोमांच का झटका लगा, जैसे ही उसकी आँखें खुलीं और उसकी त्वचा का रंग लौट आया। उसके शरीर में ऊर्जा का एक प्रवाह भर गया, मानो सीने पर लगे घाव का उस पर कोई असर ही न हुआ हो। 'हाहाहा!' उसने कहा और फिर उसकी और कुंभकरण की ओर देखा। 'रुको, अभी क्या हुआ?'

कुंभकरण हँसा और प्रमीला भी हँसी। 'बच्चे, इस लड़की ने तुम्हारी जान बचाई है।'

46. सुपर्निका

कुछ साल पहले...

मेघनाद ने खुलासा किया, 'मुझे पहले से ही इसके बारे में पता था, आंटी।'

मीनाक्षी अपने भतीजे को देखकर दंग रह गई, जो अपनी कुर्सी पर बेफिक्र होकर बैठा था, उसके बाल बिखरे हुए थे और वह ध्यान से उसे देख रहा था। 'क्या तुमने ऐसा किया?'

'बिल्कुल। मैंने इसे जेलर से निकलवाया। मेरे इन लोगों से अच्छे संबंध हैं,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'और चिंता मत करो, मैंने पिताजी को नहीं बताया।'

मीनाक्षी मुस्कुराई। 'आह, राहत की बात है।' वह थोड़ी देर रुकी। 'लेकिन रुकिए, आपने क्यों नहीं बताया?' उसने ज़ोर से पलकें झपकाईं, मेघनाद का चेहरा समझने की कोशिश की, लेकिन वह समझ गई कि मेघनाद झूठ नहीं बोल रहा था। 'आप उनके चहेते हैं और आप हमेशा उनका सम्मान करते थे। लेकिन आपने उन्हें यह बात इसलिए नहीं बताई क्योंकि...' वह अपनी बात अधूरी छोड़ गई, उम्मीद कर रही थी कि वह उसकी बात पूरी करेंगे, लेकिन वह चुप रहे।

'सच कहूँ तो, आंटी, मैं इस बारे में सोच रही थी। लेकिन आपने मुझे पहले ही बता दिया था, इसलिए मैंने अभी उसे न बताने का फैसला किया है, क्योंकि... मुझे नहीं पता। आपको बताकर ऐसा करना ठीक नहीं लगता।' उसने धीरे से अपने होंठ ऊपर उठाए। 'क्या तुम उससे प्यार करती हो?'

मीनाक्षी ने सिर हिलाया।

'यह तो कुछ ज्यादा ही चिंताजनक है, आंटी। आपको नहीं लगता? वह कल मर जाएगा।' उसने अपना सिर हिलाया।

'इसीलिए मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, प्रिय,' मीनाक्षी आगे आई और गिड़गिड़ाती आँखों से उसके पास बैठ गई। 'तुम मेरी मदद कर सकते हो। तुम ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हो, जो मेरे करीब हो, जिस पर मैं भरोसा कर सकती हूँ।'

वह रुक गया, मानो अचंभित हो गया हो। 'क्या करने के लिए?'

मीनाक्षी ने जवाब देने से पहले एक पल सोचा। 'उसे भागने में मदद करने के लिए।'

वह तुरंत अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और कमरे में इधर-उधर बेतरतीब ढंग से घूमने लगा, साथ ही अपनी कठोर, तीखी निगाहों से मीनाक्षी को चुपचाप निहारता रहा। 'तुम्हें पता है कि यह पिताजी की इच्छा के विरुद्ध है।'

उसे उससे यही उम्मीद थी—दशानन से डरना, क्योंकि मेघनाद हमेशा वही करता था जो उसके पिता ने उसे सिखाया था। 'लेकिन तुम्हें पता है, यह गलत है।'

'पिताजी जो कहते हैं, वही सही है। बाकी सब कुछ गलत है।'

‘तुम्हारे पिता संत नहीं हैं।’ मीनाक्षी दांत पीसते हुए खड़ी हो गई। ‘एक स्त्री थी, मेघनाद। तुम्हारे जन्म से पहले। तुम्हारे पिता... उम्म... खैर... उन्होंने उसे एक दिन देखा और अपनी वासना पर काबू नहीं रख पाए और... उन्होंने उस पर इतना ज़बरदस्ती की कि उसे हार माननी पड़ी। उन्होंने यह सब तब किया जब वे तुम्हारी माँ से विवाहित थे। और उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि उस स्त्री का पति कब आया। उन दोनों में झगड़ा हुआ और मेघनाद ने उन दोनों को अपने हाथों से मार डाला, ताकि किसी को पता न चले।’

मेघनाद ने भय से पलकें झपकाते हुए उसे देखा।

‘उन्होंने मुझे यह बताया था,’ उसने कहा, और वह सच कह रही थी। वह देख सकती थी कि मेघनाद का चेहरा, जो पहले अपने पिता पर विश्वास करता था, अब संदेह करने लगा था। ‘जब वह शोक में डूबे थे और कमजोर व लाचार थे, तब उन्होंने सिर्फ मुझे ही यह बात बताई थी और उन्हें आज भी इसका पछतावा है, लेकिन इससे यह तथ्य नहीं मिटता कि उन्होंने ऐसा किया था।’

मीनाक्षी अपने भतीजे के पास गई और उसे पीछे से गले लगा लिया। ‘मेरे प्यारे, तुम्हारे पिता सबसे कमज़ोर और दुर्बल हैं जिनसे मैं कभी मिली हूँ। उनमें इतनी खामियाँ हैं कि अगर उनके राज़ साम्राज्य में खुल गए, तो उनका शासन ही गिर सकता है। वे आवेग में आकर काम करते हैं, इसलिए उन्होंने अपने चारों ओर नियम बना रखे हैं ताकि वे अनुशासित रह सकें। कृपया, मैं तुमसे विनती करती हूँ कि उनके प्रति अपने प्रेम को सही काम करने से रोकने न दो। विद्युत को मुक्त करना ही सही काम है।’

मेघनाद चुप रहा और मीनाक्षी उसे देख नहीं पाई, क्योंकि उसका सिर मेघनाद के कंधे पर था। और फिर जवाब आया:

‘ठीक है, चाची। मैं वैसा ही करूंगा जैसा आप कहेंगी।’

47. मेघनाद

युद्ध शुरू हो चुका था।

आग लगने की घटना के एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि राघव की सेना सुग्रीव के साथ अपने जहाजों और नौकाओं के साथ तट पर पहुँच गई, आक्रमण के लिए तैयार।

उन्होंने नौसैनिक आक्रमण की पहली पंक्ति को भेद दिया था और अशोक वाटिका के निकट तट पर पहुँचकर अपने तंबू लगा लिए थे, सैनिकों और तमाशबीनों से अपनी सीमाएँ घेर ली थीं और एक पूर्ण विद्रोही दल का गठन कर लिया था जो युद्ध की शुरुआत का कारण बनेगा।

मेघनाद राघव के तंबू से कुछ गज दूर अपने बैंगनी रंग के तंबू में था और कांच के एक टुकड़े में अपनी ही परछाई देख रहा था। उसका घाव लगभग भर चुका था और काली के रक्त के कारण, जिसने घाव भरने की प्रक्रिया को तेज कर दिया था, वह इतना मजबूत और ऊर्जावान हो गया था कि उसकी हृदय गति को धीमा करना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

उसके तंबू के कोने में दीपक जल रहा था, जहाँ उसके साम्राज्य का कवच बगल की मेज पर रखा था। इससे पहले कि वह उसे उठाकर पहन पाता, उसने देखा कि प्रमीला खूबसूरत, गहरे लाल रंग के लिनेन गाउन में उसके कमरे में प्रवेश कर रही है।

मेघनाद ने कहा, 'मुझे लगा था कि तुम नहीं आओगे।'

'मैंने तुम्हें चौंका दिया, है ना?' मेघनाद ने उसकी कमर में हाथ डालते हुए कहा, 'तुम्हारे पहले दिन के लिए शुभकामनाएं।'

मेघनाद ने सिर हिलाया। 'मैं घबराया हुआ हूँ,' उसने स्वीकार किया।

'मुझे पता है।' उसने अपनी भौंहें ऐसे रगड़ीं जैसे उन पर कुछ लगा हो। 'पता नहीं क्यों, मुझे पता है कि आजकल तुम कैसा महसूस कर रहे हो। मुझे बस यह पता चल जाता है कि तुम कब झूठ बोलते हो और कब नहीं।'

'मैं झूठ नहीं बोलता,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

प्रमीला मुस्कुराई और पीछे हटकर कवच ले आई, जिसे उसने उसके सीने पर पहनाया और कंधों व कमर पर बांध दिया। फिर वह हेलमेट लाई और उसके सिर पर रख दिया, जिसके बाद उसने उसे पीछे से गले लगा लिया और दोनों एक-दूसरे की परछाई देखने लगे। 'क्या हम इसके बाद शादी करेंगे?'

'मैं वादा करता हूँ,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

'आज के लिए तुम्हारी क्या योजना है?' उसने अपने बैग की ओर बढ़ते हुए कहा और उसमें से वह साड़ी निकाली जो वह चाहता था। 'तुमने मुझे सीता की साड़ी और उसका लॉकेट लाने को कहा था। क्यों? मुझे उसे बताना था कि दोपहर के भोजन के दौरान

मुझसे थोड़ा खाना गिर गया था, इसलिए इसे धोना ज़रूरी है। मैंने उसे एक अतिरिक्त साड़ी दे दी है।'

मेघनाद ने कोई जवाब नहीं दिया, और उन्हें हथियारों की तरह अपने साथ ले गया। 'तुमने सीता का विश्वास जीत लिया है। यह अच्छी बात है।'

'सीता एक अच्छी इंसान है, मेरी जान,' उसने कहा। 'मीनाक्षी से निपटने की तुम्हारी क्या योजना है?'

कल ही की बात है, प्रमीला ने मेघनाद को यह बात बताई थी और इससे मेघनाद को गहरा सदमा लगा था।

लेकिन उन्होंने प्रमीला की बात पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि वे बातें सीता के शब्दों पर आधारित थीं और केवल उसी के शब्दों पर। 'मैं अभी भी सोच रहा हूँ।'

प्रमीला ने कहा, 'तुम उसे इतना प्यार करते हो कि यह विश्वास ही नहीं कर सकते कि उसने इस पूरे घटनाक्रम को रचा है। उसी की वजह से तुम लगभग मरते-मरते बचे।'

मेघनाद ने जवाब दिया, 'यह आंखों का धोखा हो सकता है। वह अपनी जाति के निर्दोष नागरिकों को यूं ही राख में तब्दील नहीं होने दे सकती।'

'मैंने उसे ऐसा करते देखा,' प्रमीला ने पलटवार किया। 'क्या आपको मुझ पर विश्वास नहीं है?'

और उसने ऐसा नहीं किया। उसके लिए ऐसा करना बहुत मुश्किल था।

'यह युद्ध व्यर्थ है क्योंकि इसके पीछे का कारण नेक नहीं है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप इस बारे में अपने पिता से बात करें, ताकि उन्हें पता चले कि यह सब... नकली है।'

मेघनाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मैं यह बात आंटी से सुनना चाहता हूँ। मैं आज के बाद उनसे मिलूंगा।'

हम उससे मिलेंगे।

मेघनाद ने कुछ देर सोचा और फिर सिर हिलाया, क्योंकि उसके पास कोई विकल्प नहीं था। वह अपनी चाची से जल्द मिलना चाहता था, लेकिन दशानन ने उसे अपनी सेना के साथ शहर के बाहरी इलाके में जाकर युद्ध की रक्षात्मक पंक्ति तैयार करने का आदेश दिया था, क्योंकि शत्रु उसके गृह क्षेत्र में ही था।

एक गहरी आह भरकर वह बाहर चला गया।

*

मेघनाद अपने घोड़े पर सवार था। उसके एक ओर अतिकाय था और दूसरी ओर कुंभकरण, जो मेघनाद के लिए वापस न लौटने की शपथ तोड़कर अंततः युद्ध में शामिल होने के लिए अपने एकांतवास से बाहर आया था। उन्होंने सामने के युद्धक्षेत्र को देखा। उन्हें दुश्मन सेना पर व्यापक दृष्टि प्राप्त करने के लिए पेड़ों को जलाना और काटना पड़ा। अपने पीछे, मेघनाद ने धनुर्धारियों को पंक्तिबद्ध होते, गुलेलों को तैयार होते और युद्ध के लिए तैयार किए जा रहे मेढ़ों को देखा, जबकि हाथी चिंघाड़ रहे थे और पिंजरे में बंद शेर, जिन्हें बाद के लिए बचाकर रखा गया था, इन जानवरों की अप्रत्याशितता के कारण शायद ही दहाड़ रहे थे। ध्वज ऊँचे फहराए गए थे और हवा नम थी। माहौल मृत्यु जैसा था।

मैदान पर कोहरा छाया हुआ था, मेघनाद राघव को घूर रहा था - एक लंबा, गोरा व्यक्ति, जिसके बगल में उसका भाई लक्ष्मण खड़ा था। मेघनाद उनके बारे में जानता था, युद्ध में उतरने से पहले उनका अध्ययन किया था, और यह महत्वपूर्ण था। दोनों के बाल उलझे हुए थे, लेकिन लक्ष्मण अधिक उग्र स्वभाव का था। राघव अपने भूरे घोड़े पर स्थिर हाथों से सवार होकर शांत प्रतीत हो रहा था। सुग्रीव की सेना उसके पीछे खड़ी थी, हर आकार, रंग और कवच वाले वानर सैनिक। बजरंग लक्ष्मण के पक्ष में था, और मेघनाद ने अपनी योजना को अंजाम देने से पहले लक्ष्मण को आँख मारी।

वे कुछ ही गज की दूरी पर थे, लेकिन मेघनाद ने अपने दूत को लॉकेट और साड़ी लेकर राघव के पास जाने को कहा। लॉकेट पर सूअर का खून लगा हुआ था, और वह साड़ी खून से लथपथ थी, तभी दूत खेत के दूसरी ओर दौड़ पड़ा।

‘क्या आपको लगता है कि यह काम करेगा?’ अतिकाया ने पूछा।

कुंभकरण ने कहा, 'यह आत्महत्या है, बच्चे। तुम सिर्फ दुश्मन को गुस्सा दिला रहे हो।'

मेघनाद मुस्कुराया। 'गुस्से में इंसान बेवकूफी भरी हरकतें करता है। उसे युद्ध शुरू होने से पहले ही हार का एहसास होना जरूरी है।'

‘स्मार्ट,’ अतिकाया ने मुस्कुराते हुए कहा।

राघव ने साड़ी ग्रहण की और उसे देखा। एक क्षण के लिए बजरंग, लक्ष्मण और राघव आपस में चर्चा करने लगे और फिर मेघनाद ने देखा - विष्णु अवतार ने साड़ी को

अपने हाथ में जकड़ लिया और तीव्र क्रोध से ऊपर की ओर देखा, उनके चेहरे पर गुस्सा और हताशा साफ झलक रही थी।

वह लक्ष्मण को कुछ करने का आदेश देने लगा, बल्कि चिल्लाने लगा, लेकिन लक्ष्मण और बजरंग ने उसे शांत कर दिया।

मेघनाद ने कहा, 'उसके आस-पास समझदार लोग हैं। वे आज हमला नहीं करेंगे।' उसने कुंभकरण की ओर देखा। 'हम भी नहीं करेंगे। संसाधनों को बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं। हमने उन्हें दिखा दिया है कि उनका मकसद खत्म हो गया है। सीता मर चुकी हैं। हो सकता है कि वह पीछे हट जाए।' उसने वापस सेना की ओर देखा, जो उसे श्रद्धा और सम्मान से देख रही थी और वे हजारों की संख्या में थे। 'हम उन्हें एक दिन का समय देते हैं। अगर कल तक वे आगे नहीं बढ़ते, तो हम हमला कर देंगे।' और उसने आखिरी बार राघव की ओर सिर घुमाया, जो एक गंभीर संकट का सामना कर रहा था।

क्या होगा अगर यह सब कुछ नकली हो? क्या होगा अगर इसके पीछे का मकसद झूठा हो? क्या होगा अगर अक्षया की मौत महज एक गलतफहमी की वजह से हुई हो?

क्या सीता की बातें सचमुच सच हो सकती हैं?

उस प्रश्न की भयावहता उसके मन में घर कर गई, और उसने खुद से पूछा:

अगर यह बात सच थी, तो क्या इससे सब कुछ बदल नहीं जाता?

फिर उसे सींगों की आवाज सुनाई दी। उसकी निगाहें राघव और लक्ष्मण पर टिक गईं, जो अब आगे बढ़ने लगे थे।

युद्ध शुरू हो चुका था।

48. लक्ष्मण

दोनों सेनाओं के बीच भीषण संघर्ष हुआ।

चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। लक्ष्मण को महसूस हुआ कि उसका घोड़ा ज़मीन पर गिर पड़ा है और धूल उसके चेहरे पर उड़ रही है। उठते ही उसने अपनी तलवार पकड़ी और राघव को ढूंढने की कोशिश की, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आया। लक्ष्मण के पास हेलमेट नहीं था और उसे अफ़सोस हो रहा था कि काश उसके

पास होता। उसके पास तरकश और धनुष था, जो दूर से वार करने के लिए पीठ पर टंगा हुआ था, लेकिन अब सब कुछ उसके सामने था।

जैसे ही राक्षस आगे बढ़े, लक्ष्मण ने उन पर हमला करते हुए उन्हें चीर डाला, उनके धड़ और सिर पर वार किए, उनकी आंखें भेद दीं और उनके गले काट दिए। खून उनके चेहरे और कवच पर बह गया, और धूल उनके सीने को संक्षारक रूप से ढकने लगी।

आगे बढ़ते हुए उसे खांसी आई। घोड़े उसके चारों ओर कतार में खड़े हो गए थे, उसने अपना धनुष और बाण निकाला और बार-बार घुड़सवारों को मार गिराया।

तीर घोड़ों को भी लगे।

और तभी उसे अपनी पीठ में छुरा घोंपा जाने का अहसास हुआ।

और एक और!

लक्ष्मण ने मुड़कर तीर निकाले और देखने लगा कि वह कहां से आ रहा है - और वह पिशाच था।

वह तुरंत उस प्राणी की ओर दौड़ा और उस पर झपटा, उसके ऊपर कूद गया और उसके चेहरे पर कई बार वार किया जब तक कि मांस चूर-चूर नहीं हो गया और उसकी खोपड़ी चकनाचूर नहीं हो गई।

ये खूनी आदिवासी। इन्हें यहाँ रहने का कोई हक नहीं है। इनमें से कोई भी नहीं।

उन्होंने सीता माता का वध कर दिया और लक्ष्मण अपने भाई के साथ फूट-फूटकर रोने ही वाले थे, अगर युद्ध शुरू न हुआ होता तो वे और भी ज्यादा रोते। उन्होंने बहुत कोशिश की थी। वे सिर्फ सीता को इन भयानक राक्षसों के चंगुल से बचाने में कामयाब हुए थे और उनकी सारी उम्मीदें टूट चुकी थीं।

राघव युद्ध के मैदान में जाना चाहता था। सुग्रीव हमेशा की तरह डरपोक बनकर पीछे हट गया और कहने लगा कि ऐसा करने का कोई फायदा नहीं है। लेकिन बजरंग ने कहा कि बदला लेना जरूरी है और वह अपवाद था क्योंकि वह पूर्ण रूप से आदिवासी नहीं बल्कि मानव और वानर का पुत्र था। और लक्ष्मण ने दुष्ट मेघनाद पर आक्रमण करने का फैसला किया।

सुग्रीव निराशाजनक साबित हुए, लेकिन वह तो आदिवासी सदस्य थे।

मैं उससे ज्यादा उम्मीद नहीं कर सकता।

और वह गलत नहीं था। शुरुआत से ही, आदिवासियों ने अपने भीतर जरा भी सुधरने का संकेत नहीं दिया। वे अंधकार के प्राणी थे, वे जंगली, निर्दयी और स्वार्थी थे।

उसने अपनी पीठ को छुआ और उसे अपनी हथेलियों पर खून महसूस हुआ और अचानक दर्द की एक लहर उसके पीले चेहरे पर दौड़ गई।

उसने चारों ओर देखा और चारों ओर मौत और विनाश का भयावह मंजर छाया हुआ था। दोनों पक्षों के लोग एक-दूसरे को बेरहमी से मार रहे थे और चीर-फाड़ कर रहे थे, उन्हें आशा और हानि की कोई परवाह नहीं थी।

सरासर पागलपन। शुद्ध, घोर पागलपन।

और लक्ष्मण जानते थे कि ऐसा क्यों था। मानव इस लड़ाई में लड़ सकते थे। क्योंकि यह एक क्रूर युद्ध था। दूर से ही उन्हें इन क्रूर प्राणियों का स्वामी दिखाई दे रहा था, और वह मेघनाद था। वह युद्ध के दूसरे पक्ष में था, लेकिन वह घोड़े के बजाय रथ पर सवार था और उसके रथ के पहियों में धारदार ब्लेड लगे थे, जिनसे वह वानर सेना को चीरता हुआ, बड़ी आसानी और धैर्य से मार रहा था। लक्ष्मण ने उसका चेहरा देखा - लंका का मूंछों वाला राजकुमार, जिसके कंधे तक लहराते बाल थे; दुबला-पतला, बलवान और दृढ़ निश्चयी, मानो इसी काम के लिए पैदा हुआ हो। वह जादूगर के रूप में प्रसिद्ध था, लेकिन अब वह जो कर रहा था, वह जादू नहीं बल्कि विशुद्ध रूप से हिंसक नवाचार था। ब्लेड तेज धार वाले थे और त्वचा को चीरते हुए, शरीर के अंगों को फाड़ रहे थे और जैसे-जैसे पहिए घूमते थे, वैसे-वैसे ब्लेड भी घूमते थे, जिससे मौतें जल्दी होती थीं और शरीर क्षत-विक्षत हो जाते थे।

अभी भी अपने विचारों में डूबे हुए ही थे कि उन्हें कुछ सुनाई दिया - एक चीख!

उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक विशाल राक्षस गदा लिए उसकी ओर दौड़ता हुआ आया, जिससे लक्ष्मण चौंक गया।

लक्ष्मण पलक झपकते ही मुड़ गए और हमले से बच गए। उनकी फुर्ती देखकर राक्षस दहाड़ उठा और गुर्राते हुए लक्ष्मण के पास ही अपना गदा चलाया। लक्ष्मण ने तुरंत अपने धनुष से बचाव करने की कोशिश की, लेकिन उनका धनुष टूट गया!

लक्ष्मण ने अपनी तलवार निकाली, लेकिन वह म्यान में ही अटक गई। और जैसे ही उसने उसे निकालने की कोशिश की, गदा ज़ोरदार आवाज़ करते हुए उसके चेहरे की ओर बढ़ी...

फिर यह रुक गया!

लक्ष्मण ने हैरानी से देखा कि वह रुका और उसे लगा कि वह राघव होगा, तभी उसकी नजर ढाल लिए भूरे फर वाले वानर पर पड़ी, जो लक्ष्मण के ऊपर दुबका हुआ था। और वह वानर आसानी से पहचाना जा सकता था।

वह सुग्रीव था।

लक्ष्मण को अब तलवार निकालने और राक्षस की छाती में घोंपने का समय मिल गया। राक्षस जमीन पर पड़े सौ शवों के बीच गिर पड़ा।

सुग्रीव मुड़ा, अब भी झुका हुआ था, लेकिन उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

लक्ष्मण ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।

और तभी और भी राक्षस अपनी तलवारों, गदाओं और लट्ठों के साथ लक्ष्मण और सुग्रीव के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए, जो अब एक दूसरे की ओर पीठ करके खड़े थे।

'तैयार हो?' सुग्रीव ने पूछा।

लक्ष्मण अपने शरीर में तेज दर्द की लहरें महसूस कर रहा था, लेकिन उसने सिर हिलाकर कहा: 'हां, मैं तैयार हूं।'

49. सुपर्निका

कुछ साल पहले...

मीनाक्षी खेतों में विद्युत का इंतजार कर रही थी।

उन्हें सूर्यास्त के समय वहां होना था और जैसे ही वह अपने चारों ओर फैली विशाल घास के भ्रामक मैदान में छिपी, अचानक उसे एक बात का अहसास होने लगा।

क्या वो आएगा भी? क्या मेघनाद उसे लाने में कामयाब हुआ? क्या वो पकड़ा गया?

अंधकार के भयावह विचार उसके चेहरे पर छाने लगे, जैसे ही उसने घबराहट के मारे गले में अटकी गांठ को निगला और उस बैग को पकड़ने की कोशिश की जिसे वह वहां खेत में लेकर आई थी।

मुझे मेघनाद से मिलना ही होगा।

वह शहर की ओर चलने लगी, इस उम्मीद में... इस उम्मीद में कि कुछ भी गलत नहीं हुआ होगा।

*

मीनाक्षी शहर के केंद्र में पहुँची और उसने देखा कि राजमहल के बाहर एक विशाल चबूतरे के पास भारी भीड़ जमा थी। अपनी पहचान छिपाने के लिए उसने अपना नकाब ओढ़ लिया और यह देखने के लिए लोगों के बीच से आगे बढ़ने लगी कि वे सब क्यों खड़े हैं। जब वह चबूतरे के पास पहुँची, तो उसने चबूतरे पर देखा—

मेघनाद।

विद्युत को उसने रस्सी से बांध रखा था, जबकि दशानन और खरा उसके पक्ष में थे।

मीनाक्षी का दिल बैठ गया।

नहीं।

मेघनाद ने मीनाक्षी से नजरें नहीं मिलाईं, लेकिन मीनाक्षी ने उसे देखा और वह लोगों को हाथ हिला रहा था, मानो उसे इस बात का गर्व हो, उसे पकड़ने का गर्व हो।

दशानन ने अपने क्रूर वैभव के साथ घोषणा की, "कैदी ने भागने की कोशिश की, लेकिन मेरे प्रिय पुत्र, महान राजकुमार मेघनाद ने उसे पकड़ लिया। उसने हमारे पहरेदारों और मेघनाद पर भी हमला करने की कोशिश की, जो इस बात का प्रमाण है कि आज हम किस तरह के व्यक्ति को मार रहे हैं। विद्युत जिह्वा, वह अवैध व्यापारी, वह विदेशी, इतनी आसानी से मौत के मुंह में नहीं जाएगा। उसका भाग्य लिखा जा चुका है, उसकी मृत्यु मेरे हाथों में थी।"

'यह घोषणा करने के लिए है कि हम इस नई दुनिया में विदेशियों को बर्दाश्त नहीं करते,' खारा ने अपने गंजे सिर के साथ कहा, जो तेज रोशनी में चमक रहा था और उसके छोटे शरीर पर कसे हुए कपड़े लिपटे हुए थे।

विद्युत ने एक गहरी साँस ली, जब पहरेदारों ने उस पर तेल डालना शुरू किया। मीनाक्षी उसे देखती रही, उसकी आँखों में आँसू भर आए, हालाँकि उसने रोने से बचने की पूरी कोशिश की। उसने अपना मुँह कसकर बंद कर लिया, ताकि वह सबके सामने चीख न उठे और सबको पता न चले।

मेघनाद ही क्यों? क्यों?

फिर दशानन हाथ में मशाल लेकर आगे आया। लेकिन उसने उसके प्यार को आग लगाने के बजाय, वह मशाल अपने बेटे को दे दी।

मेघनाद और जनता दोनों ही स्तब्ध रह गए। उन्होंने मशाल की ओर देखा, उसे लेने से पहले वे कुछ हिचकिचाए। फिर शांत भाव से धीरे-धीरे उन्होंने उसे विद्युत के पास

रख दिया। नीली और नारंगी आग की लहर उसके शरीर पर फैल गई और वह जलने लगा, लेकिन बंधे होने के कारण वह हिल नहीं सका।

उसने खुद को दूर धकेलने की कोशिश की और करवट बदलने की कोशिश की, और लोग दहशत से हांफने लगे क्योंकि उसका शरीर काला और मृतप्राय होने लगा... लगभग राख जैसा।

और मीनाक्षी के हाथ उसके पेट पर फिर गए।

वह कभी भी उसके बच्चे को नहीं देख पाएगा।

हमारा बच्चा।

50. मेघनाद

आज का दिन समाप्त हो गया।

और वे जीत गए थे।

मेघनाद को भारी नुकसान हुआ था और उसने निश्चय किया था कि अगली बार वह अस्त्रों का प्रयोग करके आतंक फैलाएगा, एक बड़ा विस्फोट करेगा जिससे सुग्रीव की सेना का पतन हो जाएगा। उसने अंतिम क्षण में एक उन्नत रथ तैयार किया था, जिसमें उसने दो तलवारें जोड़कर पहिए के मध्य में बांध दी थीं, जिससे रथ के चलने पर वह एक घूमता हुआ मृत्यु जाल बन जाता था। इस रथ से वह अब तक कई सैनिकों को घायल करने में सफल रहा था।

और भले ही वह अगले युद्ध की कितनी ही उम्मीद कर रहा था - उसे मीनाक्षी आंटी से मिलना ही था और उनका सामना करना ही था।

युद्धक्षेत्र में उसका एक तंबू था, और जब वह प्रमीला का हाथ थामे उसकी ओर बढ़ा, तो उसने अपने आसपास का जायजा लिया—रात का समय था, लोगों को ठंड से बचाने के लिए लकड़ियाँ जलाई जा रही थीं, खाने के लिए सूअरों को भूना जा रहा था, पुरुष अपने हथियार साफ कर रहे थे जबकि महिलाएं उनके घावों पर मरहम लगा रही थीं। पानी के घड़े इधर-उधर ले जाए जा रहे थे और सैकड़ों तंबू एक के बाद एक कतार में लगे हुए थे, सबसे आखिरी में दशानन का तंबू था—जो सबसे बड़ा था और जहाँ युद्ध की योजनाएँ बनाई जाती थीं।

‘क्या तुम ठीक हो?’ प्रमीला ने उसकी बांह पर हाथ फेरा।

'मैं घबरा रहा हूँ।'

'मैं देख सकता हूँ कि।'

लाल तंबू के पास पहुँचकर बाहर खड़े होते ही मेघनाद मन ही मन मुस्कुराया। 'क्या तुम आना चाहते हो?'

प्रमीला ने सिर हिलाया।

बिना अनुमति के अंदर प्रवेश करते ही उन्होंने एक साधारण सी जगह देखी, जहाँ किताबें और चित्र रखे थे, और कलम व स्याही के डिब्बे के पास कविता की पांडुलिपियाँ पड़ी थीं। मीनाक्षी उन पर कुछ लिख रही थी और जब उसे एहसास हुआ कि कोई अंदर है, तो वह मुड़कर उन्हें देखने लगी और भौंहें चढ़ाकर बोली, 'जी हाँ?' और फिर अपना काम जारी रखा।

मेघनाद ने बातचीत शुरू करने की कोशिश की, लेकिन उसकी जुबान ने उसका साथ नहीं दिया। उसका मुंह खुल ही नहीं रहा था और वह घबराकर प्रमीला की ओर देखने लगा, जिसने उसकी उंगलियां पकड़ लीं और कहा: 'मीनाक्षी जी, हमें जानना जरूरी है।'

‘और वो क्या होगा, लेडी प्रमीला?’ मीनाक्षी ने शांत भाव से पूछा।

'लेडी सीता ने कहा कि ऐसा लगता है कि आपने ही उन्हें माणिक्य पत्थर दिया था,' प्रमीला ने कहा।

उसने कागज पर लिखना बंद कर दिया और मेघनाद ने देखा कि वह बेचैन हो रही थी। 'यह किस तरह का घिनौना संकेत है?'

'हम भगवान दशानन के पास जाने से पहले आपके पास आए क्योंकि हम जानना चाहते हैं कि क्या आप इस अपराध को स्वीकार करेंगे।'

‘तुम्हारी ज़बान बहुत तेज़ है, लड़की। मैंने तुम्हारे जन्म से पहले इस साम्राज्य की सेवा की है।’ मीनाक्षी मुड़ी और खड़ी हो गई, उसकी उंगलियों में नुकीला कलम था। ‘और तुम्हें लगता है कि मैंने ये सब किया है।’ वह मेघनाद की ओर मुड़ी। ‘क्या तुम उसके आरोपों पर विश्वास करते हो?’

मेघनाद उस महिला के बीच दुविधा में था जिससे वह प्यार करता था और उस महिला के बीच जिसने कभी उसका पालन-पोषण किया था। 'क्या आपने किया था, चाची? क्या यह सच है?'

‘ओह, बढ़िया,’ उसने आह भरी। ‘बेशक, तुम मेरी बात छोड़कर किसी और की बात सुनोगे। पिछली बार की तरह।’ उसने कंधे उचका दिए।

मेघनाद ने अपने जबड़े भींच लिए। 'पिछली बार मैंने तुम्हारी बात सुनी थी।' और प्रमीला उन दोनों को असमंजस भरी नजरों से देख रही थी।

‘तो फिर विद्युत को सार्वजनिक रूप से जलकर मरने की सजा क्यों मिली?’ उसने कहा। ‘तुमने ही तो उसे जलाया था... है ना?’

प्रमीला ने अविश्वास से अपनी आँखें चौड़ी कर लीं, और मेघनाद तुरंत समझ गया कि वह असहज महसूस कर रही है, जब उसने उसकी हथेली छोड़ दी और खुद को थोड़ा पीछे धकेल लिया।

मीनाक्षी ने प्रमीला की ओर देखते हुए मुस्कुराया। 'तुमने उसे बताया तो नहीं, है ना? खैर, मेरी प्यारी, उसने मेरे पति की मदद करने का वादा किया था और फिर उन्हें सबके सामने जला दिया। अगर तुम्हें लगता है कि तुम किसी अच्छे आदमी के करीब हो, तो तुम गलत हो। वह अपने बाप से भी बदतर है।'

मेघनाद ने प्रमीला को देखा, जो अब भी असमंजस में थी। 'ऐसा नहीं हुआ था। मैं आपको कभी सच नहीं समझा पाई, चाची, क्योंकि... क्योंकि मुझे लगता था कि इससे आपको बहुत दुख होगा, इसलिए मैंने सोचा कि किसी और को खलनायक बनाने की बजाय मैं आपकी कहानी में खलनायक बनना बेहतर समझूँगी।'

‘मैंने सच्चाई देख ली।’ उसने दांत पीसते हुए कहा, उसकी आंखों से आंसू छलक रहे थे। ‘यह मेरे सामने ही थी।’

'लेकिन तुमने उस दिन से पहले क्या हुआ था, वह नहीं देखा,' मेघनाद ने आह भरते हुए धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, क्योंकि उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा था।

'आपका क्या मतलब है?'

मेघनाद ने घोषणा की, 'विद्युत ने आपसे कभी प्यार नहीं किया, आंटी। असल में, उसने मुझे जान से मारने की कोशिश की थी।'

51. सुपर्निका

कुछ साल पहले...

यह था।

उसे यह करना ही था।

उसके हाथ में खंजर था जब वह उसके कमरे में दाखिल हुई। वह वहाँ बैठा अपने कागजात देख रहा था और उसने ऊपर देखा, उसकी धूसर आँखें शांति से उसे निहार रही थीं।

'यह क्या है?' दशानन ने पूछा।

मीनाक्षी भावुक थी और उसे बहुत दुख हो रहा था। उसने कटार को अपने दिल के पास रखा हुआ था और उसके हाथ बेचैनी से कांप रहे थे। उसकी आँखें आँसुओं से भरी और लाल थीं। दशानन की नज़र मीनाक्षी की कटार पर पड़ी और वह आगे झुका। 'कितना अफ़सोस!' उसने सिर हिलाया। 'मुझे तुमसे और उम्मीद थी, मेरी प्यारी।'

'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,' मीनाक्षी ने फटकार लगाई। 'तुम उसे छोड़ सकती थी।'

'तुम उस आदमी के प्यार में पड़ गई जिसने तुम्हारे भतीजे को जान से मारने की कोशिश की थी। कितनी अफसोस की बात है।'

'तुम झूठ बोलते हो, हमेशा की तरह,' उसने गुस्से से कहा। 'तुम एक दुखी, बूढ़े आदमी हो, क्या तुम्हें पता है?' उसने भौंहें चढ़ा लीं, क्योंकि उसे कुछ महीने पहले सुमाली द्वारा दशानन के बारे में बताई गई बात याद आ गई थी।

'मैं देख रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ। वह विष्णु के अवतार के हाथों ही मरेगा। केवल उन्हीं के हाथों।'

मीनाक्षी ने अपनी नाक फुलाई और फिर झट से दशानन पर झपटी, अपनी तलवार उसके चेहरे पर फेंकी, जिससे उसके गाल पर एक निशान बन गया, लेकिन वह चूक गई, क्योंकि दशानन कुर्सी पर पीछे झुक गया था। उसका पेट मेज के किनारे से टकराया और उसे तुरंत तेज दर्द हुआ। उसने अपने पेट को बचाने की कोशिश में मेज को पकड़ लिया।

दशानन ने यह देखा और उसके चेहरे पर घृणा के भाव फैल गए। 'कहीं तुम भी उसकी संतान की माँ तो नहीं हो?' दशानन ने सिर हिलाया। 'तुमने उस आदमी के लिए मुझे जान से मारने की कोशिश की। तुम इस साम्राज्य के लिए कलंक हो।'

मीनाक्षी ने बात नहीं मानी। वह मेज पर कूद गई और दशानन पर हमला करने के लिए उसे पार कर गई, लेकिन दशानन ने उसका हाथ पकड़कर मरोड़ दिया। दर्द से

चीखते हुए उसने उसे पीछे धकेल दिया और उसका पेट किनारे पर दे मारा, उसके दांत और मुंह उसके कानों के पास आ गए और वह बोली, 'मेरी प्यारी, मैं उस दानव के बच्चे को यहां जीने नहीं दूंगा... और मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि वह जन्म लेने से पहले ही मर जाए।'

फिर उसने उसका गला पकड़कर उसे खिड़की तक घसीटा और उसके माथे पर चुंबन किया। यह तो बस पहली मंजिल थी और मीनाक्षी को अपना अंत दिखाई दे रहा था।

इस राक्षस के साथ जीने से बेहतर तो मर जाना ही है।

'काश वह बेचारा भोला-भाला मेघनाद देख पाता कि तुम कौन हो, तुम्हारी हिंसक सच्चाई जान पाता, तुम सनकी हो,' मीनाक्षी ने लंका के राजा के चेहरे पर थूका, और उसने मुस्कुराते हुए उसे पोंछ लिया।

'वह ऐसा नहीं करेगा,' उसने सिर हिलाते हुए कहा। 'क्योंकि देखो, मैं इसे अच्छी तरह से छुपाता हूँ।'

और फिर उसने उसे धक्का दिया और उसने अपने चारों ओर धुंधलापन देखा, एक जोरदार आवाज के साथ उसकी उथल-पुथल का अंत हो गया।

52. सुपर्निका

और तब से उसने अपना एक बच्चा खो दिया था। कम से कम, वह जानती थी कि उसका यही इरादा था।

गिरने से उसे चोट लगी थी, उसके टखने टूट गए थे, लेकिन महीनों तक उसका मनोबल भी टूट गया था क्योंकि उसे अपना ख्याल खुद रखना पड़ा था। उसे दशानन को यह दिखाना था कि वह अब भी उसकी कर्तव्यनिष्ठ बहन है। उसने माफी मांगी और उससे क्षमा मांगी, जिस पर वह मान गया, जबकि वह मन ही मन उसके पतन की योजना बना रही थी।

अगर मैं यह नहीं कर पाता, तो मैं विष्णु के अवतार को यह काम करने के लिए बुला लेता।

और अब उसका बेटा वही झूठ बोल रहा है, जो उसने कई साल पहले बोला था। उसने मेघनाद की तरफ देखा और उसे महसूस हुआ कि वह झूठ नहीं बोल रहा है। इतने लंबे समय तक इतने सारे लोगों को अपने वश में करने के बाद, वह जानती थी कि कौन झूठ बोल रहा है और कौन नहीं।

'तुम्हारा क्या मतलब है?' उसने मेघनाद से पूछा, जो अपनी स्तब्ध पत्नी के साथ खड़ा था।

'मैंने वही किया जो आपने मुझसे करने को कहा था,' उसकी आँखों में आँसू थे। 'आंटी, मैं वहाँ गया था। मैं कसम खाता हूँ, मैं गया था। मैंने उसे बाहर निकाला और सबसे पहले उसने मुझे पकड़ लिया और मुझसे कहा कि वह मुझे मार डालेगा, फिर मेरे पिता को मार डालेगा और फिर... आपको चोट पहुँचाएगा।'

'यह तो बिल्कुल भी विद्युत की आवाज नहीं लग रही।'

मेघनाद ने बताया, "उस आदमी को दशानन को मारने के लिए भेजा गया था। वह दशानन से घृणा करता था। और वह सभी राक्षसों से घृणा करता था। मैंने उससे कहा कि वह तुम्हारे साथ शांति से रह सकता था, लेकिन उसे परवाह नहीं थी। उसने कहा कि दशानन ने अपने विजय अभियानों के दौरान उसके भाइयों पर अत्याचार किया और उन्हें मार डाला, इसलिए वह चुपके से लंका आकर दशानन की हत्या की साजिश रचने आया। उसने अफवाहें फैलाईं कि वह दानव है और जब वह पकड़ा गया, तो उसने तुम्हारे साथ संबंध बना लिया। तुम उसकी योजना का हिस्सा नहीं थीं, लेकिन जब उसने देखा कि तुम उसके प्यार में पागल हो रही हो, तो उसने अपनी योजना बदल दी। जैसे ही उसे भागने का मौका मिला, उसने मुझे मारने की कोशिश की। मैंने उसका बचाव किया और उसे पकड़ लिया।" उसने अपना सिर हिलाया। "उसके बाद मैंने अपने पिता को बताया क्योंकि मैं डरा हुआ था। उन्होंने फिर भी मुझे स्वीकार किया और मुझसे कहा कि विद्युत को अपने अपराधों का दंड भुगतना चाहिए।"

मीनाक्षी ने ध्यान से यह सब सुना, और उसकी धड़कनें तेज़ होने लगीं। अगर यह सच था, तो उसकी सारी योजनाएँ, उसके सारे काम एक ऐसे आदमी के कारण थे जिसने उसका इस्तेमाल किया था।

वहां प्यार नहीं था।

उसे लगा जैसे उसके साथ विश्वासघात हुआ हो।

लेकिन यह मेघनाद था और हो सकता है कि वह झूठ बोल रहा हो, उसे क्या पता। 'तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे तुम पर भरोसा नहीं है।'

'मैं नहीं चाहता कि आप मुझ पर भरोसा करें, चाची,' मेघनाद ने आह भरी। 'लेकिन अगर आपने सचमुच पिताजी से बदला लेने और बदले की भावना से यह युद्ध छेड़ा है, तो हम इसे आगे नहीं बढ़ने दे सकते। एक इंसान की जान दांव पर लगी है और वो हैं सीता देवी। वो इस सब की हकदार नहीं थीं।'

मीनाक्षी बोलना चाहती थी, लेकिन अपराधबोध से घिरी हुई थी। मुझे अपराधबोध क्यों हो रहा था? वह झूठ बोल रहा होगा।

'क्या तुमने ऐसा किया? क्या तुमने सीता को माणिक दिया?' मेघनाद ने पूछा।

मीनाक्षी ने सिर हिलाया, दशानन द्वारा उसे पहली मंजिल से फेंकने की घटना उसके सामने फिर से आ गई—विद्युत के जलने और राक्षसों के प्रति उसकी घृणा के दृश्य उसके चेहरे पर उभरने लगे। 'मैंने उसे इसलिए दिया क्योंकि तुम चाहे कुछ भी कहो, प्रिय, दशानन मरने लायक है और...' वह तुरंत कलम लेकर मेघनाद पर झपटी, 'तुम भी!'

मेघनाद ने मीनाक्षी का हाथ पकड़कर उसे दीवार से धक्का दिया, लेकिन मीनाक्षी ने उसकी हथेली पर वार कर दिया और वह दर्द से चीख उठा। खून रोकने की कोशिश करते हुए मीनाक्षी ने म्यान से तलवार निकाल ली। उसने तलवार मेघनाद की छाती पर चला दी, तभी...

उसे इसका एहसास हुआ।

उसके शरीर के एक तरफ से असहनीय दर्द उठा और जैसे ही उसने अपना सिर घुमाया, उसने देखा कि एक खंजर उसकी कमर में गहराई तक घुसा हुआ था और खून उसके गाउन पर फैलने लगा था। उसने ऊपर देखा कि यह सब कहाँ से आया है और वह कोई और नहीं बल्कि प्रमीला थी।

जैसे ही वह फर्श पर गिरी, उसे अपनी सारी ऊर्जा खत्म होती हुई महसूस हुई और उसका चेहरा पीला पड़ गया।

मेघनाद उसके करीब आया और भले ही उसने उस पर हमला किया था, मेघनाद ने उसे थामे रखा। 'आंटी... आप ठीक हो जाएंगी। प्रमीला! नर्सों को बुलाओ।' लेकिन प्रमीला मीनाक्षी को चाकू मारने के बाद एकदम सुन्न पड़ गई थी।

‘नहीं,’ मीनाक्षी मुस्कुराईं, उनके लंबे नाखून अपने भतीजे के सुंदर चेहरे को छू रहे थे। ‘तुम एक अच्छे इंसान हो, लेकिन तुम्हारे पिता बुरे हैं। मुझे उम्मीद है कि तुम यह बात समझोगे।’ और जैसे-जैसे उनके शरीर से जीवन निकल रहा था, वह आगे झुकीं और बोलीं: ‘चाहे कुछ भी हो जाए, आखिर में जीत मेरी ही होती है। यह बात अपने पिता को बताना।’ उन्होंने देखा कि मेघनाद उलझन में था, जब उसकी नज़र धुंधली होने लगी और आखिरी बात जो उसने सुनी वह थी...

युद्ध का बिगुल!

53. मेघनाद

हॉर्न जोर-जोर से बज रहे थे।

एक और लड़ाई।

मेघनाद असमंजस में था, जब उसने मृत मीनाक्षी को अपनी बाहों में लिया। उसने उसे आखिरी बार गले लगाया और फिर कांपती और रोती हुई प्रमीला के पास गया।

‘मैं... मैं... मुझे माफ़ कर दो,’ वह सिसकते हुए बोली। ‘मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। वह तुम्हें मार डालती।’

‘कोई बात नहीं,’ मेघनाद ने उसे कसकर गले लगा लिया। ‘मैं समझता हूँ।’ और फिर उसने उस महिला की ओर देखा जो इस व्यर्थ युद्ध के लिए ज़िम्मेदार थी।

उसे ऐसा लग रहा था मानो उसकी सारी ऊर्जा क्षीण हो रही हो, जैसे काली का रक्त उसे धो रहा हो, और उसके शरीर के घाव पहले से कहीं अधिक दर्द करने लगे थे। लेकिन उसने इन सभी विचारों को मन से निकाल दिया और कहा, 'मेरे पिता को चाची मीनाक्षी के बारे में बता दो। उन्हें बताओ कि उन्होंने इस युद्ध को भड़काने के लिए क्या किया है। हमें इसे रोकना होगा।'

प्रमीला ने सिर हिलाया। 'हमें करना ही होगा। सीता इसके लायक नहीं है। बिलकुल नहीं। तुम जानती हो ना?'

मेघनाद को समझ नहीं आ रहा था कि किस पर विश्वास करे और किस पर नहीं। "और मेडिकल टीम को यहाँ बुलाओ, ताकि वे शव को ले जा सकें," उसने मेघनाद के सवाल को अनसुना करते हुए उसे निर्देश दिया।

'करेगा क्या?'

'नहीं, सुनो,' वह कांपते हुए बोली। 'तुम्हें मुझसे वादा करना होगा। तुम उसे बचाने के लिए हर संभव प्रयास करोगे। अब यह युद्ध का मामला नहीं है। यह एक स्त्री का मामला है। मुझसे वादा करो कि तुम उसे बचाओगे।' उसने गहरी आँखों से उसकी ओर देखा। 'तुम इतने लंबे समय से अपने पिता के लिए लड़ रहे हो। और देखो क्या हुआ।' उसने मीनाक्षी के शव की ओर इशारा करते हुए कहा। 'अब सच्चाई के लिए लड़ना शुरू करो।'

प्रमीला ने फिर सिर हिलाया। मेघनाद को नहीं पता था कि वह कितना समझ पाई। वह तम्बू से बाहर निकला और सीमा की ओर दौड़ पड़ा, जो युद्धक्षेत्र के सबसे करीब थी। वहाँ उसने सौ राक्षसों के बीच कुंभकरण और अतिकाय को देखा, जो वानर सेना को अपनी ओर बढ़ते हुए देख रहे थे।

'क्या हो रहा है?' मेघनाद ने कहा।

कुंभकरण असमंजस में था। 'हमें हमला करना होगा, बच्चे। अपने विमान पर बैठो और अस्त्र का प्रयोग करो। यह अब तैयार है और मैंने इसे तुम्हारे विमान के पीछे रख दिया है। बस जाओ। हमारे पास इसे अंततः समाप्त करने का एक शानदार अवसर है।'

मेघनाद असमंजस और सदमे में था, जब अतिकया उसे विमान में खींचकर ले गया। आम तौर पर वह उड़ने वाली मशीन पर बैठकर खुश रहता था, लेकिन आज अपने सैनिकों को युद्ध में जाते और लड़ते देख वह खुद को मूर्ख महसूस कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानो अब तक जो कुछ भी हुआ था, वह सब व्यर्थ था।

वह विमान पर बैठा था, तभी अतिकया ने उसे उड़ाना शुरू किया, उसे ऊपर उठाया और उन्हें हवा में लटका दिया।

मेघनाद ने निर्देश देते हुए हेलीकॉप्टर को सेना की ओर ले जाना शुरू किया। कोने से झाँककर नीचे देखा कि यह सब कहाँ हो रहा था - आसमान से देखने पर वे सब चींटियों जैसे लग रहे थे।

'मैं उनके शिविर की ओर जा रहा हूँ। हमें उन पर सीधा हमला करना होगा,' अतिकाया ने आगे बढ़ते हुए कहा।

हवा चहचहाती और तेज थी, उसके चेहरे से टकरा रही थी और उसकी नसों में एक अजीब सी ठंडक ला रही थी।

मैंने अपना उद्देश्य खो दिया है।

‘मेघनाद!’ अतिकाया की आवाज़ सुनकर वह होश में आया। ‘बम छोड़ो!’

मेघनाद ने पलकें झपकाईं और घबराते हुए विस्फोटक अस्त्रों के बीच से एक को उठाया - चिंतामणि और सोम खनिजों से भरा एक संपीड़ित सिलेंडर। यह वही सिलेंडर था जिसका उपयोग उसने अमरावती को नष्ट करने के लिए किया था।

उसने नीचे देखा, और वे शिविर के पास, ठीक उसके ऊपर थे। इस बम के एक ही वार से शिविर का पूर्ण विनाश निश्चित था।

‘क्यों?’ उसने अतिकाया से पूछा।

‘तुम्हारा मतलब क्या है क्यों? क्या तुमने अमरावती को उसी कारण से नष्ट किया था, अक्षय के लिए, राक्षस साम्राज्य के लिए?’

मेघनाद ने सिलेंडर को अपने सीने से लगा लिया। 'मैं यह नहीं कर सकता। यह गलत है। यह युद्ध गलत है।'

‘तुम क्या बात कर रहे हो?’ अतिकाया ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘वह बम फेंको!’

मेघनाद ने सिर हिलाया। 'हमें वापस ले चलो।'

अतिकया ने बात नहीं मानी। इसके बजाय, उसने पहिए छोड़ दिए और मेघनाद के हाथ से सिलेंडर छीनने की कोशिश की। जब विमान छोटा होने लगा और शिविर से दूर पहाड़ियों की ओर बढ़ने लगा, तो दोनों के बीच हाथापाई हुई, क्योंकि उसे चलाने वाला कोई नहीं था।

‘हम दुर्घटनाग्रस्त होने वाले हैं!’ मेघनाद अपने भाई पर चिल्लाया, लेकिन अतिकाया ने आखिरकार बम पर कब्जा कर लिया और उसे फेंक दिया।

मेघनाद ने यह सब होते देखा और बिना सोचे-समझे विमान से छलांग लगा दी। हवा के झोंकों से उसके बाल लहराने लगे। उसने हवा में ही वैष्णवास्त्र को पकड़ लिया और पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि विमान अब अतिकाय के नियंत्रण में था और दूर जा रहा था।

लेकिन जब वह हवा में दोबारा मुड़ा, तो उसने देखा कि वह जमीन पर गिरने ही वाला है और उसे बस यही उम्मीद थी कि काली के रक्त की शक्ति और प्रवाह उसे मरने से बचाने के लिए पर्याप्त सहनशक्ति प्रदान करेगा।

लेकिन अगर उनकी मृत्यु हो भी जाती, तो उन्हें अपने फैसले पर पछतावा नहीं होता।

उसने बम को अपने कोट से लपेट लिया ताकि वह जमीन पर न गिरे, वह इस तरह मुड़ा कि उसकी पीठ पहले जमीन से टकराए और उसे उम्मीद थी...

मरने से बचने के लिए।

54. लक्ष्मण

उन्होंने दूसरी लड़ाई की घोषणा नहीं की।

और इसकी सहजता ही इसकी सफलता का कारण थी। साथ ही, मेघनाद आश्चर्यजनक और उलझन भरी बात यह थी कि युद्ध का हिस्सा नहीं थे।

सूर्य उदय होने के बाद लक्ष्मण आग के सामने आराम कर रहे थे, नारंगी रंग की किरणें उन पर मुस्कुरा रही थीं। युद्ध के घावों से सजे राघव अपने नए दोस्तों बजरंग और सुग्रीव के साथ लक्ष्मण के ठीक बगल में बैठे थे। उनके पास एक नक्शा था और वे अपनी अगली रणनीति बना रहे थे।

लक्ष्मण ने हताश स्वर में पूछा, 'यह कब तक चलेगा?' वह बुरी तरह घायल था और औषधीय जड़ी-बूटियों का तरल पदार्थ पी रहा था जिससे उसे बीच-बीच में ऊर्जा का संचार हो रहा था।

सुग्रीव ने कहा, 'हम ज्यादा देर तक नहीं टिक सकते। मेरे सैनिक घायल हो रहे हैं और मर रहे हैं। मैंने और सैनिकों को बुलाया है, लेकिन अगर वे लगातार लड़ते रहे, तो हमारे पास यहां से भागने और जीतने का कोई मौका नहीं होगा।'

राघव ने अपने होंठ दबाए और लक्ष्मण समझ गया कि वह सोच में डूबा हुआ है। 'अगर हम... खैर... मेघनाद को मारने का कोई तरीका ढूंढ लें तो? वह हमारी योजना में एक बड़ी बाधा है। पिछली लड़ाई में हम इसलिए विजयी होकर लौटे क्योंकि वह यहाँ नहीं था।'

लक्ष्मण होंठ सिकोड़ते हुए खड़े हो गए। “भाई, मेरी बात का बुरा मत मानना, लेकिन सीता माता मर चुकी हैं और मुझे इस युद्ध को आगे बढ़ाने का कोई मतलब नहीं दिखता ताकि हम अपना बदला ले सकें। क्यों न हम इस युद्ध को छोड़ दें?”

‘रावण ने मेरे साथ जो किया, मैं उसका बदला लूंगा,’ राघव जबड़े भींचते हुए खड़ा हो गया। ‘अगर तुम इसमें शामिल नहीं होना चाहते, तो ठीक है। और मुझे नहीं लगता कि

वह मरी है। वह मर ही नहीं सकती। जब तक मैं उसका शव नहीं देख लेता, मैं इस बात पर विश्वास नहीं करूंगा।'

लक्ष्मण ने आह भरी। वह थका हुआ था और जानता था कि अपने भाई से लड़ना-झगड़ना व्यर्थ होगा।

उन्होंने एक आवाज सुनी, 'मैं कुछ मदद कर सकता हूँ।'

सबकी निगाहें घूम उठीं और झाड़ियों में से एक मोटे पेट वाला, सिर पर नकाबपोश आदमी निकला। वह इलाका कोने में था और वहाँ कोई पहरा नहीं था, लक्ष्मण और उसके साथियों के बैठने की जगह के पास ही था।

'तुम कौन हो?' लक्ष्मण ने पूछा, और उस व्यक्ति ने अपना हुड हटाया, जिससे एक मासूम चेहरे वाला, लाल गालों वाला, घुंघराले बालों वाला व्यक्ति सामने आया।

'मेरा नाम विभीषण है। मैं लॉर्ड दशानन की अदालत में वकील हूं। मैंने इस रास्ते पर बहुत लंबा सफर तय किया है।'

'और उसका भाई,' सुग्रीव ने फुफकारते हुए कहा। 'तुम्हें क्या चाहिए, भाई?'

लक्ष्मण को दशानन का सगा भाई यहाँ देखकर आश्चर्य हुआ। लेकिन उन्होंने उसके बारे में सुना था— दशानन और उसके बीच बहुत बड़ा अंतर था। जहाँ विभीषण लोकतांत्रिक राजतंत्र में विश्वास रखता था, वहीं दशानन निरंकुश तानाशाही में विश्वास रखता था और दोनों के बीच वैचारिक मतभेदों का युद्ध चल रहा था।

मैं यहां आपकी मदद करने आया हूं, ताकि आप इस युद्ध को जल्दी जीत सकें।

राघव ने पूछा, 'तुम हमें क्यों जिताना चाहते हो? तुम हमसे झूठ बोल रहे हो सकते हो।'

"सीता जीवित हैं," उन्होंने कहा, और यह सुनकर सभी मुस्कुराने और जश्न मनाने लगे, हालांकि लक्ष्मण को इस बात पर यकीन नहीं था। "मेघनाद ने आपको धोखा दिया था। आपका युद्ध करने का उद्देश्य अभी भी शेष है।"

लक्ष्मण ने अपनी बाहें मोड़ लीं, हालांकि उसकी कोहनियों में दर्द हो रहा था। 'आप हमें यह सब क्यों बता रहे हैं?'

'क्योंकि मैं उसे मरा हुआ देखना चाहता हूँ, बिल्कुल तुम्हारी तरह। वह मेरे भाई को मारने में बाधा है। मेरे भाई ने यहाँ बहुत से लोगों को बहुत तकलीफ दी है। और मैं उन गिने-चुने लोगों में से एक हूँ जो उसे मरा हुआ देखना चाहते हैं,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'मुझे पता है कि उस बाधा को कैसे दूर करना है। मतलब, मुझे हाल ही में पता

चला है। और अगर तुम्हें यकीन नहीं है, तो तुम कुछ दिनों के लिए उस जगह पर नज़र रख सकते हो, ताकि तुम्हें पता चल जाए कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।'

'कौन सी जगह? आप किस बारे में बात कर रहे हैं?' लक्ष्मण ने पूछा।

विभीषण ने कहा, 'निकुम्बिला पहाड़ियां। मेघनाद को उसी दिन मर जाना था जिस दिन बजरंग ने दरबार में आग लगाई थी। लेकिन उसे पहाड़ों में स्थित एक मंदिर से ऊर्जा का सीरम मिलता है। अगर उसे यह सीरम मिलने से रोक दिया जाए, तो वह लड़ नहीं पाएगा।'

लक्ष्मण ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। यह दिलचस्प था। 'यह कहाँ है?'

विभीषण मुस्कुराते हुए उनके पास से गुजरे और आग के पास बैठ गए, जहाँ वे सभी पहले बैठे थे, और अपनी हथेलियों को सेंकने लगे। उन्होंने कहा, 'मैं विस्तार से तभी बताऊंगा जब सुग्रीव और राघव इस बात पर हस्ताक्षर कर दें कि दशानन के पतन के बाद मैं लंका का नया राजा बनूंगा।'

तो, यही उसकी योजना थी। तख्तापलट।

लक्ष्मण, राघव और सुग्रीव ने एक-दूसरे को गहरी नजरों से देखा और लक्ष्मण को उम्मीद थी कि वे इस बारे में और सोचेंगे, लेकिन जल्दबाजी में राघव ने जवाब दिया: 'ठीक है, हम सोचेंगे।'

विभीषण ने शरारती अंदाज़ में अपने हाथ आपस में टकराते हुए कहा, 'अद्भुत!'

'हम उस पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? क्या वह भरोसेमंद भी है?' लक्ष्मण ने विभीषण के सामने बैठे हुए पूछा।

वकील ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'आपके पास कोई विकल्प नहीं है। आखिरकार, मेरे प्रिय साथियों, यह जानकारी उस व्यक्ति से मिली है जो सीरम प्राप्त करते समय वहां मौजूद था। कुंभकरण।'

55. मेघनाद

मैं मर गया।

मेघनाद ने अपनी आँखें खोलीं, हमेशा की तरह कमजोरी महसूस कर रहा था। उसके शरीर पर पट्टियाँ बंधी थीं और तेज़ गंध वाली मरहम की महक उसके पूरे शरीर

पर फैली हुई थी। आयुर्वेदिक क्रीम पूरे शरीर पर लगी हुई थी। उसने ध्यान से देखा तो उसे एहसास हुआ कि वह अपने शिविर के अस्पताल में है।

मैं यहां कैसे पहुंचा?

नर्सों ने उसकी जांच शुरू कर दी, उसकी नाड़ी और दिल की धड़कन की जांच की और उसने देखा कि सूरज निकल आया था और परिचित आकृतियों की परछाईं दिखाई देने लगी थी - अतिकाय और कुंभकरण।

अतिकया चिढ़ गया था; मानो वह मेघनाद से घृणा करता हो, लेकिन मेघनाद को अतिकया की परवाह नहीं थी। उसके भाई को यहाँ की स्थिति की गंभीरता का अंदाजा नहीं था।

मेघनाद के उठने की कोशिश करते ही उसके सिर में तेज दर्द उठा। वह अपना सिर दबाने लगा तभी अतिकाया ने पलटकर पूछा, 'वहाँ क्या हुआ था? तुमने उन्हें उड़ा क्यों नहीं दिया?'

मेघनाद चुप रहा और उसने कुंभकरण के साथ एक नजर साझा की, मानो उम्मीद कर रहा हो कि वह समझ जाएगा।

'भाई, मुझे तुम्हारी जान बचानी पड़ी,' अतिकाया ने दांत पीसते हुए सिर हिलाया। 'मैं तुम्हारा हालचाल जानने नीचे आया था। शुक्र है कि तुम पहले पेड़ों की डालियों से टकराए और फिर ज़मीन पर, वरना टक्कर से तुम्हारी जान ही चली जाती। सच कहूँ तो, मुझे खुद नहीं पता कि तुम बच कैसे गए।'

काली का रक्त...

'खैर, मैं सीमा का जायजा लेने जा रहा हूँ,' अटिकाया ने जाने से पहले गुस्से से कहा।

'प्रमीला कैसी है? वो कहाँ है?' उसने पूछा, उसकी आँखें बेचैनी से उसे ढूँढ रही थीं, मानो उसे पता चल जाएगा कि वह यहाँ है।

'वह दशानन के साथ महल में है।'

मेघनाद के निर्देशानुसार। लेकिन फिर वे महल में क्यों थे?

सीता की खैरियत जानने के लिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि मीनाक्षी ने अब तक क्या किया है। ऐसा हो सकता है।

कुंभकरण ने धीमी आवाज़ में कहा, "मीनाक्षी की मौत हो गई। मुझे अभी पूरी जानकारी नहीं है। लेकिन नर्सों ने बताया कि प्रमीला ने उन्हें फोन किया था और उसे चाकू मारा गया था। आखिर चल क्या रहा है, बच्चे?" वह अपनी नाक फुला रहा था।

मेघनाद अपने चाचा की हताशा को समझ सकता था। पहले खरा चाचा का निधन हुआ, फिर अक्षया का, और अब मीनाक्षी चाची का। चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी।

‘मैं तुम्हें बताऊंगी,’ मेघनाद ने शांत स्वर में कहा।

कुंभकरण पलंग के पास बैठा था, बाहर देखता हुआ उसने मेघनाद की ओर देखा, जो एक बूढ़े व्यक्ति की तरह दुर्बल लग रहा था। 'युद्ध के मैदान में क्या हुआ था?'

‘मैं तुम्हें बताऊंगा,’ मेघनाद ने खुद से ही सिर हिलाते हुए वही बात दोहराई, वह इतना कमजोर महसूस कर रहा था कि पूरी स्थिति समझा भी नहीं पा रहा था। कांपते हुए उसने आगे कहा: ‘लेकिन मुझे लगता है...’ उसे खांसी आ गई। उसके शरीर में आग सी जल रही थी। ‘मुझे लगता है मुझे इसकी फिर से जरूरत है। वरना, मुझे नहीं लगता मैं ज्यादा दिन जी पाऊंगा।’

कुंभकरण ने उसके हाथों पर थपथपाते हुए कहा, 'मैं रथ ले आता हूँ।'

*

रथ को निकुंबिला पहाड़ियों तक पहुँचने में समय लगा, इस दौरान मेघनाद ने अपनी पूरी ताकत और शक्ति से कुंभकरण को सब कुछ बताना शुरू किया—शुरू से लेकर विद्युत के साथ बिताए समय तक, क्योंकि उस समय कुंभकरण एकांतवास में था। उसने बताया कि कैसे प्रमीला को सब कुछ पता चला और कैसे मीनाक्षी ने पूरी साजिश रची थी।

मेघनाद ने कहानी खत्म की, तब तक वे मंदिर पहुँच चुके थे। काली के रक्त का असर खत्म हो चुका था और उसे समझ आ गया था कि प्रचेता क्या कह रहा था - इसका असर बहुत बुरा होता है। अगर यह सीरम उसे जवान, जीवंत और सबसे ताकतवर महसूस करा सकता था, तो इसके बिना वह सबसे बुरा भी महसूस कर सकता था।

कुंभकरण ने जल्दी से कहा, 'मुझे आपको कुछ बताना है। मुझे माफ करना, मुझे पता नहीं था।'

मेघनाद ने ज़्यादातर बातें नहीं सुनीं, क्योंकि रथ से उतरते समय उसके पैर काँप रहे थे और उसने कुंभकरण की कमर पर हाथ रखा हुआ था। वह लड़खड़ाते हुए मंदिर की ओर बढ़ने लगा। 'आपने क्या किया?' उसने अपने चाचा से पूछा, जिन्होंने मेघनाद को मंदिर तक पहुँचाने में मदद की थी।

कुंभकरण ने कहा, ‘मैंने मीनाक्षी को काली के रक्त के बारे में बताया था। उसने मुझसे पूछा कि उस आगजनी के बाद तुम कैसे जीवित रहे और वह बहुत चिंतित लग रही थी। मुझे नहीं पता था कि वह साम्राज्य के खिलाफ साजिश रच रही थी।’

मेघनाद ने यह सुनकर हल्की सी हंसी हंसी। कदमों की आहट। मेघनाद और कुंभकरण ने मुड़कर देखा तो जंगल से बारह आदमी आगे आ रहे थे, जिनमें लक्ष्मण और राघव भी शामिल थे। पास से देखने पर वे भी टूटे हुए लग रहे थे, लेकिन मेघनाद जितने नहीं।

अब उसे समझ आ गया।

अंत में जीत मेरी ही होगी।

और उसने ऐसा किया।

मेघनाद ने अपने चाचा से कहा, 'यज्ञ करते समय मेरी रक्षा करना।'

कुंभकरण ने सिर हिलाया, अपनी तलवार निकाली और उन दोनों के बीच खड़ा हो गया। मेघनाद ने सामने द्वार देखकर अपने कदम और शरीर को घसीटना शुरू कर दिया। उसे पृष्ठभूमि में लड़ाई-झगड़े, झड़पें और अन्य आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। उसे लग रहा था कि कुंभकरण जीत रहा है, और क्यों न जीतता? वह तो विशालकाय था।

मेघनाद द्वार पर पहुंचा और उसने देखा कि उस दिन बाहर कोई पहरेदार नहीं था। उसने अपनी तलवार म्यान से निकाली और जैसे ही उसने अपना सिर घुमाया, सामने का दृश्य उसके सामने आ गया —

कुंभकरण ने अधिकांश वानरों को मार डाला था और वह लक्ष्मण के साथ तलवारबाजी कर रहा था। दोनों के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था और इसी बीच राघव ने अपने धनुष और बाण को कसकर चढ़ाकर कुंभकरण पर तीर चलाया, जिसका नोक उसके सिर को भेद गया। खून की बौछार हुई और उसका प्रिय चाचा बिना पलक झपकाए जमीन पर गिर पड़ा।

मैं इसे छोड़कर नहीं जा सकता।

मेघनाद ने अपनी तलवार को कसकर पकड़ रखा था और उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। कुंभकरण, अपने पिता के अलावा एकमात्र ऐसा व्यक्ति जिसका वह वास्तव में सम्मान करता था और जिसे अपना आदर्श मानता था, मर चुका था और वह भी बेहद भयावह तरीके से।

लक्ष्मण तलवार लेकर आगे बढ़ा और वह गोरे रंग के बर्बर योद्धा जैसा लग रहा था। पलक झपकते ही, उसकी तलवार मेघनाद की तलवार से टकराई और वह उसे धक्का देने लगा।

क्यों?

मेघनाद को एहसास हुआ कि वह उसे दरवाजे से धकेलने की कोशिश कर रहा था ताकि उसका यज्ञ पूरा न हो सके और वह कमजोर ही रहे।

अपने पैरों को जमीन पर जमाए मेघनाद ने प्रतिरोध किया। दोनों ने एक-दूसरे पर अपनी तलवारें गड़ा दीं, एक-दूसरे पर हावी होने की कोशिश और उम्मीद में। लेकिन मेघनाद के लिए यह मुश्किल होता जा रहा था, क्योंकि उसकी सारी ऊर्जा खत्म हो चुकी थी।

मेघनाद ने उसके पैर देखे।

वे मंदिर के बाहरी इलाके के करीब थे।

चलो भी।

'मुझे माफ कर दीजिए। यह सब एक गलतफहमी थी,' मेघनाद ने कहा, और उसे अपने चेहरे पर नमकीनपन और आंसुओं की चिपचिपाहट महसूस हो रही थी।

लक्ष्मण ने जवाब दिया, 'माफी मांगने का समय अब बीत चुका है।'

मेघनाद ने अपनी आँखें बंद कर लीं, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि उसमें अब कोई ताकत नहीं बची है। उसने हाथ छोड़ दिया और लक्ष्मण ने उसे धक्का देकर फाटक के पार धकेल दिया। मेघनाद का हथियार उसके हाथ में था, जैसे ही वह मंदिर के फर्श पर गिरा, तलवार के खड़कने की आवाज़ ज़मीन पर गूंज उठी।

सन्नाटा छा गया और मेघनाद समझ गया कि लक्ष्मण उसे चाकू मारने ही वाला था कि...

'लखन!' राघव ने कहा।

लक्ष्मण पीछे मुड़ा। 'क्या हुआ भाई?'

हम उन लोगों को नहीं मारते जो पहले से ही मर चुके हैं।

मेघनाद लक्ष्मण की दया भरी निगाहों को अपने ऊपर देख सकता था और वह बिल्कुल नहीं चाहता था कि लोग उसे इस नजरिए से देखें।

लेकिन भाई, अगर वह लौट आया तो क्या होगा?

‘तो हम उससे फिर लड़ेंगे, लखन। लेकिन हम उसे इस तरह नहीं मार सकते। उसे देखो।’

और लक्ष्मण ने वैसा ही किया।

मेघनाद ने दांत पीस लिए। वह कड़वी बातें कहना चाहता था, वह अपने शरीर पर नियंत्रण पाना चाहता था, लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ था।

‘और...’ राघव ने कहना शुरू किया, ‘... विभीषण ने हमें बताया था, है ना? कि अंदर हथियार ले जाने की अनुमति नहीं है। उसे काली का रक्त नहीं मिल सकता, इसलिए उसका वापस लौटना असंभव है। वह बस मर रहा है... धीरे-धीरे।’

‘उसे यही शोभा देता है,’ लक्ष्मण ने अपनी तलवार म्यान में रखी और वहां से जाने लगा।

और वे शब्द शांत हो गए।

उसने भी ऐसा ही किया।

और इससे पहले कि वह अपनी मृत्यु को स्वीकार कर पाता और इससे मुक्ति पा लेता, उसने मंदिर के अंदर से कदमों की आहट सुनी।

'मेघनाद, मेघनाद,' धीमी आवाजें आईं, जब उन्होंने उसे पकड़ लिया और वह देख सकता था कि कई पुजारी उसके कमजोर शरीर और अंदर मौजूद तलवार को निहार रहे थे।

उनमें से एक ने कहा, 'वह इसे यहां लाया था।'

और दूसरी, जो प्राचेता थी, जिसे मेघनाद पहचानता था, उसने कहा: 'हां, उसने किया। मैंने देखा। लेकिन वह मर रहा है। हमें उसकी मदद करनी होगी।'

‘हम यहाँ हर मरणासन्न व्यक्ति के लिए दान-पुण्य नहीं कर रहे हैं। नियम सरल हैं। कोई हथियार नहीं और पूर्ण यज्ञ।’ दूसरे पुजारी ने इसका विरोध किया।

‘लेकिन कम से कम उसे सोमा तो दे दो,’ प्रचेता ने कुछ रूखेपन से कहा। ‘उसे कलि का रक्त नहीं दिया जाएगा। कोई बात नहीं।’

पुरोहित आपस में चर्चा कर रहे थे, तभी उनमें से एक पुरोहित एक छोटे लकड़ी के कटोरे में नीला तरल पदार्थ लेकर आया, जिसे मेघनाद ने सोमा के रूप में पहचाना। उसने कभी सोमा का सेवन नहीं किया था, बल्कि इससे हथियार बनाने के लिए खेलता रहता था। राक्षसों को सोमा का सेवन वर्जित था, क्योंकि इससे वे पागल हो जाते थे और

उनके विचार अनियंत्रित हो जाते थे। लेकिन यह एक अत्यंत शक्तिशाली औषधीय तरल भी था।

प्रचेता ने उसे वह पिलाया और मेघनाद ने बिना विरोध किए उसे पूरा पी लिया, उसकी जीभ को अपने शरीर से सूखापन दूर होता महसूस हुआ। उसका शरीर कांपने लगा और उसका मन एक जगह से दूसरी जगह भटकने लगा, उसके सारे अपराधों की तस्वीरें उसके दिमाग में आने लगीं और उसे एहसास हुआ कि उसने क्या किया था, वह कौन था और उसे यह सब समझ आ गया...

उसने अब तक जो अपराध किए थे, उनके लिए वह क्षमादान का पात्र नहीं था।

वह मौत का हकदार था।

56. मेघनाद

वह तैयार था।

उन्हें बेहतर महसूस हुआ। वास्तव में, उन्हें जीवन का अहसास हुआ।

लेकिन वह जानता था कि यह महज़ एक क्षणिक एहसास है। काली के रक्त की अभी भी आवश्यकता होगी और उसे अगले दिन आकर उसे लेना होगा क्योंकि आज का दिन मंदिर के अंदर हथियार के इस्तेमाल से बर्बाद हो गया था।

वह देवी काली की मूर्ति के सामने खड़ा होकर उसे और उसके पास जल रही अग्नि को निहार रहा था। प्रचेता उसके पास आया और मेघनाद की पीठ थपथपाई।

मेघनाद मुस्कुराया। 'मैंने तुम्हारे साथ गलत किया, फिर भी तुमने मुझे बचा लिया। क्यों?'

प्रचेता ने कंधे उचका दिए।

मेघनाद को पता नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया, शायद मानवता के कारण या शायद उसके लिए दुख के कारण, लेकिन मेघनाद बस कृतज्ञ था और उसने पुजारी के पैर छुए। लेकिन जाने से पहले, वह घुटनों के बल बैठ गया और यज्ञ किया। उसने अपनी एक अंगूठी अग्नि में अर्पित की और फिर देवी काली से प्रार्थना की कि वह आगे क्या करेगा।

वह इस युद्ध को रोकने जा रहा था।

उसने ज़मीन को चूमा और फिर खड़ा हो गया जब उसने देखा कि प्राचेता उसे ध्यान से देख रही है। 'तुमने ऐसा क्यों किया? तुम्हें पता था कि आज तुम्हें सीरम नहीं मिलेगा क्योंकि तुमने दो नियमों में से एक को तोड़ दिया?'

मेघनाद मुस्कुराया। 'मैंने यह सीरम के लिए नहीं किया। मैंने यह अपने लिए किया।' और अब उसे देवी काली की शक्ति पर विश्वास होने लगा था, क्योंकि उन्होंने ही प्राचेता को उसकी जान बचाने के लिए भेजा था और उसे एक और मौका दिया था।

जब वह अपने छोड़े हुए रथ की ओर बाहर निकला, तो उसने देखा कि कुंभकरण का शरीर गायब हो चुका है। उसे गहरा दुख हुआ, मानो उसका दिल टूट गया हो। प्राचेता ने यह देखकर कहा, "हमने इसे उचित राजसी अंतिम संस्कार के लिए शहर वापस भेज दिया है। उह, इतना खून बहा और वह भी न जाने किसलिए।'"

मेघनाद को भी यह बात पता नहीं थी। वह रथ पर बैठा और लगाम पकड़ ली। उसने प्रचेता की ओर देखा, जो मेघनाद को देखकर मुस्कुरा रहा था। बूढ़े पुजारी ने कहना शुरू किया, 'तुमने मुझसे पूछा था कि मैंने तुम्हें क्यों बचाया।'

मेघनाद ने सिर हिलाया और जवाब का इंतजार करने लगा।

‘तुम्हें पहले ही पूछना चाहिए था कि मैंने तुम्हें काली के लहू के बारे में क्यों बताया...’ उन्होंने कहा। ‘... शुरू में ही। मेरे साथियों ने मुझे मूर्ख कहा, लेकिन क्या तुम जानते हो मैंने ऐसा क्यों किया? क्योंकि मैंने तुममें कुछ देखा। तुम दुष्ट थे, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि तुम अच्छे इंसान में परिवर्तित होने की क्षमता रखते थे। याद रखो, भगवान इंद्रजीत, मनुष्य पाप कर सकता है, लेकिन यदि वह अपने दुष्टता के मार्ग को छोड़ने का मन बना ले, तो वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है।’

मेघनाद जानता था कि वह इस बात को अपने दिल में बसा लेगा। 'गुरुजी, यह इंद्रजीत नहीं है।' वह मुस्कुराया, क्योंकि उसे एहसास हुआ कि यह नाम उन अनेकों के खून से जुड़ा है जिनकी उसने बलि दी थी। 'यह सिर्फ मेघनाद है।'

57. मेघनाद

वह महल पहुंच चुका था।

और उसने देखा कि यहाँ आसपास पहरेदारों की संख्या कम थी, क्योंकि कई लोग लंकापुरी के बाहरी इलाके में युद्ध में शामिल हो गए थे।

मेघनाद सिर ऊंचा करके सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया, क्योंकि उसने अपने पिता का सामना करने का निश्चय कर लिया था। वह किसी तरह पहली मंजिल पर पहुंचा और अपने पिता के अध्ययन कक्ष की ओर चल पड़ा। उसने दरवाजा नहीं खटखटाया। दरअसल, उसने बिना सोचे-समझे दरवाजा खोल दिया और देखा कि उसके पिता ने मोतियों का हार पहना हुआ था। उन्होंने कवच पहन रखा था और तलवार भी म्यान में थी, लेकिन उन्हें हार पहनने में कठिनाई हो रही थी।

दशानन ने कुछ नहीं कहा, मानो उसने मेघनाद के कहने का पहले से ही अनुमान लगा लिया हो। 'क्या तुम करोगे?'

मेघनाद ने सिर हिलाया और अपने पिता के पास जाकर गांठ बांधते हुए और हुक को संभालते हुए उन्हें अंगूठी पहनाने में मदद की। 'मुझे उम्मीद है कि आप जानते हैं कि मैं यहां क्यों आया हूं।'

दशानन ने पीछे हटते हुए और अपने बगल में खड़े मेघनाद की ओर मुड़ते हुए कहा, 'तुम्हारी प्रेमिका यही चाहती है - युद्ध को रोकना।'

मेघनाद देख सकता था कि उनके चेहरे कितने मिलते-जुलते थे। फर्क सिर्फ उनकी दाढ़ियों का था। 'तुम जानते हो कि वह ऐसा क्यों चाहती है।'

‘मुझे पता है। उसने मुझे बताया था। मैंने सीता से भी इसकी पुष्टि करवा ली थी।’ उसने मेज पर झुकते हुए खुद से सिर हिलाया।

तो फिर? हम अपनी सेनाओं को वापस क्यों नहीं बुला रहे हैं?

दशानन ने उपहास करते हुए कहा, ‘मेरे प्यारे बेटे, अब यह सीता के बारे में नहीं है। क्या तुम समझते नहीं? हम उसके लिए नहीं लड़ रहे हैं। मैं और वह मानव। वह सोचता है कि वह उसे पाने के लिए लड़ रहा है, लेकिन ऐसा नहीं है। शुरू से ही यह सत्ता का मामला था। मैंने उसकी सत्ता छीन ली। वह अपनी सत्ता वापस चाहता है। और अब मैं उस सत्ता को बनाए रखने के लिए कुछ भी करूंगा।’

मेघनाद ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। 'लेकिन तुम सीता को चोट पहुँचा रहे हो।'

‘इससे क्या फर्क पड़ता है? वो एक औरत है,’ वो हँसते हुए बोला। ‘तुम्हें क्या फ़िक्र है? असल में, ये सब खत्म होते ही मैं उससे शादी कर लूँगा। मुझे खुशी है कि वो मेरी बेटी नहीं है। उसे देखकर मेरे मन में नाजायज ख्याल आ रहे थे।’

मेघनाद को घृणा महसूस हुई। और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्यों। उसने कई विवाहित महिलाओं के साथ संबंध बनाए थे, लेकिन अब... यह सब उसे बहुत गलत लग रहा था।

लेकिन हम हार रहे हैं। मीनाक्षी की मृत्यु हो गई है।

दशानन ने कहा, 'अच्छा हुआ पीछा छूटा!' 'वह औरत इस परिवार के लिए कलंक थी। क्या तुम्हें पता है कि उस नाम की शुरुआत किसने की थी? सुपर्निका? क्या तुम्हें पता है कि वह कौन थी?' और फिर उसने अपनी ओर इशारा करते हुए कहा, 'वह इसी लायक थी, वह धोखेबाज औरत।'

और कुंभकरण भी...

मेघनाद ने जब निकुंबिला पहाड़ियों में हुई घटना के बारे में बताना शुरू किया तो दशानन ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। उसने ध्यान से सुना और फिर मेज पर मुट्ठियाँ पटकीं। 'वह कमीना मानव! उसे लगता है कि मेरे परिवार के सदस्यों की जान लेकर वह बच जाएगा।' मेघनाद समझ गया कि दशानन दुखी नहीं था, बल्कि उसे डर था कि कहीं वह हार न जाए, लेकिन फिर उसने ऊपर देखा और अपने बेटे को गले लगाते हुए मुस्कुराया।

मेघनाद ने ऐसा नहीं किया।

'बेटा, तुम अब भी मेरे साथ हो। तुम्हारे साथ हम कुछ भी जीत सकते हैं। तुम्हारा दिमाग बहुत तेज चलता है।' उन्होंने मेघनाद के कंधे पर थपथपाते हुए पूछा, 'क्या हुआ?'

उसने आह भरी, और बिना सोचे-समझे उसने संक्षिप्त रूप से कहा: 'पिताजी, मैं अब आपके लिए नहीं लड़ूंगा।'

'क्यों?'

'ये सही नहीं है।'

'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या सही है। तुम मेरा अनुसरण करो। तुमने हमेशा मेरा अनुसरण किया है।'

मेघनाद ने सिर हिलाया। 'अब और नहीं,' वह रुका। 'अगर तुम इस युद्ध को नहीं रोकोगे, तो मैं इसमें नहीं लड़ूंगा। अगर तुम रोकते हो, तो मैं तुम्हारा साथ दूंगा।'

'और उस मानव कृंतक को हमारा सब कुछ ले जाने दो!' वह चिल्लाया।

मेघनाद ने कहा, 'सीता कोई वस्तु नहीं है जिसे तुम अपने कब्जे में ले सको। वह एक स्त्री है। और एक पत्नी है, जिसका तुमने अपहरण किया है।'

दशानन ने कहा, 'तुम्हें इस हालत में देखकर बहुत दुख और निराशा होती है। अपने पिता के खिलाफ खड़े हो जाना, जिन्होंने तुम्हें वह बनाया जो तुम आज हो। लेकिन कोई बात नहीं, अगर तुम मेरे लिए नहीं लड़ोगे, तो कोई बात नहीं, मैं समझता हूँ। मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर सकता, बेटा।'

मेघनाद अचंभित रह गया। क्या वह मुझे युद्ध में शामिल न होने देने पर सहमत हो गया है?

लेकिन फिर मैं बस...' दशानन अपनी कुर्सी की ओर बढ़ा और बैठते हुए, होंठ सिकोड़कर कंधे उचकाते हुए बोला, 'मुझे बस प्रमीला की चिंता रहती है।'

'आपका क्या मतलब है?'

'और मेरे बेटे, तुम्हें भी उसकी चिंता करनी चाहिए,' उसने अपनी नाक फुलाते हुए कहा, और अपनी तीखी, घातक आँखों से घूरने लगा।

'तुम नहीं जीतोगे,' वह दांत पीसते हुए बोला।

'वह पहली महिला नहीं होगी जिसे मैं मारूंगा,' वह पीछे झुक गया और उसके चेहरे पर एक शांत मुस्कान फैल गई, भावहीन लेकिन घातक। 'और अगर तुम इस युद्ध का हिस्सा हो, तो मैं उस पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मैं वादा करता हूं। लेकिन अगर तुम नहीं हो... तो मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।'

मेघनाद को एहसास हुआ कि वह एक मुश्किल स्थिति में फंस गया है। वह जानता था कि अगर वह युद्ध में नहीं गया, तो उसे लगातार यह चिंता सताती रहेगी कि दशानन एक दिन आकर अपनी धमकी को अंजाम देगा। मेघनाद भाग सकता था, लेकिन दशानन उसे पकड़ लेगा और किसी न किसी तरह प्रमीला को अपने कब्जे में ले लेगा।

और अगर वह युद्ध के मैदान में जाता भी है, तो वह उन सिद्धांतों के खिलाफ जा रहा होगा जिनके लिए वह खड़ा था।

और उसे इससे निकलने का केवल एक ही रास्ता नजर आ रहा था।

युद्ध के मैदान में आत्मसमर्पण करना।

58. प्रमीला

दशानन ने कहा था कि वह उसे मुक्त करा देगा और युद्ध रोक देगा। और वह इस बात से खुश थी कि उसे दशानन जैसा ससुर मिला है, जो उस महिला की जरूरतों का ख्याल रखेगा।

मुझे नहीं पता कि लोगों ने उसे इतना बड़ा राक्षस क्यों बना दिया।

वह अपने चेहरे पर मुस्कान लिए अपने कमरे में जा रही थी, तभी उसने दरवाजा खुलते देखा और एक परिचित चेहरा अंदर आया।

वह मेघनाद था।

वह थका हुआ और चिंतित लग रहा था, और उसमें कुछ अजीब सा भाव था। वह पास आया और उसे गले लगा लिया। फिर वह अपने संदूक के पास गया और उसे खोला। उसने अपना कवच निकाला। उसने बीच में लाल गोले वाला चमकीला, सोने का कवच पहना हुआ था। कवच पहने होने के कारण उसने एक शब्द भी नहीं बोला, इसलिए प्रमीला ने खुद कहा: 'मुझे उम्मीद है कि आपने अपने पिता से बात की होगी। वह अपनी सेनाओं को वापस बुलाने के लिए सहमत हो गए हैं,' वह मुस्कुराई। 'वह इस सप्ताह संधि करने के लिए जा रहे हैं,' वह उत्साह से बोली।

मेघनाद ने अपनी छाती पर कवच बांधते हुए उसकी ओर देखा और जब प्रमीला ने उसकी मदद करने की कोशिश की, तो उसने इनकार कर दिया।

'तुम ठीक हो?'

‘हां, मैं ठीक हूँ,’ मेघनाद ने कहा। ‘अपना ख्याल रखना, ठीक है?’

‘तुम्हें क्या हुआ? तुम बहुत खराब हालत में लग रहे हो।’

मैं ठीक हूँ।

प्रमीला ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। उसकी त्वचा पीली पड़ गई थी और वह ठीक नहीं लग रहा था। क्या उसने सीरम लिया था? वह पूछना चाहती थी, लेकिन खुद को रोक लिया। 'क्या तुम वापस आओगे?'

उसने सहमति में सिर हिलाया।

'मुझसे वादा करो?' उसने पूछा, क्योंकि जब भी वह वादा करता था, तो उसे निभाने की पूरी कोशिश करता था।

इस पर मेघनाद ने बिना किसी भाव के सीधे उसकी ओर देखा, उसके गालों को थामते हुए उसे अपने हाथों में ले लिया। 'काश, हमारी शादी विधिपूर्वक हो पाती।'

'मेरी भी यही इच्छा है। लेकिन हमने युद्ध के बाद ऐसा करने का वादा किया था।'

‘अगर मैं वापस न लौटूं तो क्या होगा?’

‘तुम मरोगे। तुम मर नहीं सकते क्योंकि तुम्हारी रगों में काली का रक्त बहता है।’

मेघनाद मुस्कुराया, मानो उसे पता था कि वह यही कहेगी।

उसमें कुछ गड़बड़ है।

फिर उसने सीता के माथे पर चुंबन किया और धीरे से उसके कानों में कहा: 'सीता के पास ही रहना। राघव हर हाल में, सीता को बचाने आएगा।'

'आपका क्या मतलब है?'

लेकिन तब तक मेघनाद दरवाजे तक जा चुका था, और जैसे ही उसने दरवाजा आंशिक रूप से बंद किया, उसने उसे फिर से देखा, मानो वह आखिरी बार उस पर एक नजर डाल रहा हो... एक आखिरी बार।

प्रमीला ने घबराते हुए हाथ हिलाते हुए गले में अटकी हुई बात को निगल लिया। 'आपने वादा नहीं किया था।'

मेघनाद की आंखों में आंसू थे, और जाने से पहले उसने कहा: 'मुझे पता है।'

उपसंहार

लक्ष्मण

क्यों?

वह आत्मसमर्पण क्यों कर रहा था?

लक्ष्मण ने सामने घुटनों के बल बैठे उस व्यक्ति को देखा और वह उससे यह सवाल पूछना चाहता था, लेकिन किसी कारणवश, वह अपने भीतर की भावनाओं को महसूस कर सकता था, मानो वह अंदर ही अंदर जानता हो - मानो वह समझ गया हो कि यह क्या है।

मेघनाद ने चुप्पी तोड़ते हुए कहना शुरू किया, “मैं जी नहीं सकता।” लाल धूल उनके ऊपर से उड़ रही थी, लाशें ढेर हो रही थीं; तलवारों की खड़खड़ाहट आसमान में गूंज रही थी। “प्रमीला और सीता की खातिर।”

‘क्यों?’ लक्ष्मण ने अंततः पूछा, मानो उसे यह सवाल पूछने के लिए हिम्मत की जरूरत हो।

जब तक मैं जीवित हूँ, मेरे पिता की ही जीत होगी। उन्हें हराने के लिए आपको मुझे मारना होगा। लेकिन मुझसे वादा करो, तुम मेरी प्रेमिका प्रमीला को बचाओगे। तुम उसकी रक्षा करोगे।

लक्ष्मण ने सिर हिलाया। 'और क्या?'

‘और सबको बता देना कि तुमने मुझे आत्मरक्षा में मारा। कि मैंने तुम पर पहले वार किया था। कि मैंने अपनी आखिरी सांस तक हार नहीं मानी। मेरे पिता को पता होना चाहिए कि मैं उनके लिए लड़ते हुए मरा, वरना प्रमीला खतरे में पड़ जाएगी। कृपया, मैं आपसे विनती करता हूँ,’ मेघनाद ने आँखों में आँसू भरते हुए कहा।

लक्ष्मण ने देखा कि उनके आसपास के वानर जीत रहे थे और बुराई पर अच्छाई की जीत हो रही थी। लेकिन शायद, युद्ध में जो बुराई थी, वह पूरी तरह से काली नहीं थी, बल्कि उनमें भी कुछ अच्छाई छिपी हुई थी।

शायद राघव सही था।

उसने तलवार को मेघनाद के गले के करीब ला दिया, और मेघनाद ने अपनी आंखें बंद कर लीं।

और पहली बार लक्ष्मण को एक आदिवासी को मारने पर दुख हुआ।

वह एक राक्षस है। मुझे उस पर दया क्यों आती है?

फिर एक झटके में लक्ष्मण ने आंखें बंद कर लीं और राक्षस राजकुमार का सिर धड़ से अलग कर दिया। मेघनाद का सिर धड़ से अलग होकर धड़ के पीछे गिर गया और जमीन पर ढेर हो गया।

लक्ष्मण ने आंखें खोलीं और यह देखकर उन्हें यकीन नहीं हुआ कि मेघनाद मर चुका है। उनकी नजरें चारों ओर घूमीं और उन्होंने लाल रंग के उस परिदृश्य को देखा जहां वानर अपने मारे गए राक्षसों के शवों पर खुशी मना रहे थे। उनकी नजरें राघव से मिलीं जो कुछ ही गज की दूरी पर खड़ा था। उन्होंने बस सिर हिलाया और उसे आंख मारी। उन्होंने सुग्रीव को देखा, जो एक आदिवासी था, एक कायर जो अब योद्धा बन चुका था, एक दोस्त।

और उसने बजरंग को उसके चिकने सफेद फर और खून से लथपथ गदा के साथ देखा।

'इंद्रजीत मर गया!' वानर सैनिकों में से एक ने चिल्लाकर कहा।

और एक और चीख उठी।

और दूसरों ने भी ऐसा ही किया।

'इंद्रजीत अब हमारे बीच नहीं रहे!'

और सब लोग चिल्लाने लगे और उसका नाम जपने लगे: 'इंद्रजीत मर गया!'

सुग्रीव आगे आए और बोले, 'हम यह मैच जीतकर रहेंगे, यार।'

लक्ष्मण ने राघव को अपनी ओर आते देखा और लक्ष्मण के कंधे पर थपथपाते हुए पूछा, 'उसने तुमसे क्या कहा, लखन?'

लक्ष्मण ने अपने भाई से कभी झूठ नहीं बोला था, लेकिन किसी कारणवश, मन ही मन वह जानता था कि उसे उस योद्धा से किया वादा निभाना ही होगा जिसे वह कभी नीचा समझता था। लेकिन अब नहीं। बढ़ते हुए जयकारों के बीच, शहीद योद्धा के प्रति उसका सम्मान बढ़ गया था।

"अच्छा," लक्ष्मण मुस्कुराया, जब उसने सामने उज्ज्वल क्षितिज देखा, जहाँ सूरज उग रहा था और उसकी किरणें उसकी त्वचा को छू रही थीं। "उसने बहुत बहादुरी से

लड़ाई लड़ी, भाई। अंत में, उसने मुझसे कहा कि मैं उसे उसके असली नाम से पहचानूँ...”

‘वह क्या है?’ राघव की आंखें कांप उठीं।

‘मेघनाद... बस मेघनाद।’

***** *****

भारत में पहली बार साइमन एंड शूस्टर इंडिया द्वारा 2019 में प्रकाशित।
एक सीबीएस कंपनी
कॉपीराइट © केविन मिसल, 2019
केविन मिसल ने इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के अपने अधिकार को धारा 57 के अनुसार दावा किया है।
कॉपीराइट अधिनियम, 1957।
1 3 5 7 9 10 8 6 4 2
साइमन एंड शूस्टर इंडिया
818, इंद्रप्रकाश बिल्डिंग,
21, बरखंबा रोड,
नई दिल्ली 110001
www.simonandschuster.co.in
पीबी ISBN: 978-93-86797-73-5
ईबुक ISBN: 978-93-86797-74-2
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, संगठन, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग लेखक की कल्पना की उपज हैं।
या काल्पनिक रूप से प्रयोग किया गया हो।
सूर्या, नई दिल्ली द्वारा भारत में टाइपसेट किया गया
रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा भारत में मुद्रित और जिल्दबंद।

साइमन एंड शूस्टर इंडिया टिकाऊ जंगलों में उगाई गई लकड़ी से बने कागज का उपयोग करने और वन संरक्षण का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्टुअर्डशिप काउंसिल (FSC), अग्रणी अंतरराष्ट्रीय वन प्रमाणन संगठन। हमारी जिन पुस्तकों पर FSC का लोगो लगा है, वे FSC की प्रमाणित सामग्री से मुद्रित हैं।
प्रमाणित कागज।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक रूप से, पुनरुत्पादित, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से इसका उपयोग करना प्रतिबंधित है।
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से उपयोग में नहीं लाया जाएगा।
प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे प्रकाशित रूप के अलावा किसी अन्य रूप में वितरित या प्रसारित किया जा सकता है।